ॐ नमो जय श्री सत्सत् हरी ॐ

वेदोऽखिलो धर्म मूलम्–मनुस्मृति

पश्य देवस्य काव्यं, न ममार न जिर्यति । अ. वेद

श्री सतपन्थ ज्ञान साहित्य संगम

याने

गद्य–पद्य सार संग्रह

सद्ज्ञानवर्धक, ज्ञानामृत-सार सहिष्णुतापूर्वक

आगम (भविष्य) वाणी

वर्तमान कलियुग के अद्भुत भविष्यवेता कोण ?

प. पू. श्री सतगोरपात्र ब्रह्मा (ईन्द्रईमामशाह) जो के एक शुभ वरदहस्त सतपन्थाचार्य, महन्त, गादि अधिपति नाम निमित्तः—

कै. काकाश्री रामजी लखमणजी इनके सं. स्मरणार्थ तथा प. पू. श्री राष्ट्रपिता महात्मा गांधिजी के जन्म-शताब्दि निमित्त श्रद्धान्जलि सहित यह वर्तमान साहित्य

इदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्शयुक्तम्

श्री. सतपन्थ धर्मसार ·साहित्य संगम याने:—

संशोधन संग्रह; हिन्दी, संस्कृत, गुजराती भाषा-टिकासह—श्री सतपन्थ सनातन पवित्र धर्म जिज्ञासुपयोगी.

प्रकाशन—

For Reference See Pages: 8, 14.
For page numbers, see the page footer. Page numbers are in 'Page x of y' format

ॐ नमो जय श्री सत्सत् हरी ॐ

वेदोऽखिलो धर्म मूलम्-मनुस्मृति

पश्य देवश्य काव्यं, न ममार न जिर्यति । अ. वेद

श्री सतपन्थ ज्ञान साहित्य संगम

याने

गद्य-पद्य सार संग्रह

सद्ज्ञानवर्धक, ज्ञानामृत-सार सहिष्णुतापूर्वक

आगम (भविष्य) वाणी

वर्तमान कलियुग के अद्भुत भविष्यवेता कोण ?

प. पू. श्री सतगोरपात्र ब्रह्मा (ईन्द्रईमामशाह) जो के पक शुभ वरद्हस्त सतपन्थाचार्य, महन्त, गादि अधिपति नाम निमित्तः—

कै. काकाश्री रामजी लखमणजी इनके सं. स्मरणार्थ तथा प. पू. श्री राष्ट्रपिता महात्मा गांधिजी के जन्म-शताब्दि निमित्त श्रद्धान्जलि सहित यह वर्तमान साहित्य

इदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्शयुक्तम्

श्री. सतपन्थ धर्मसार साहित्य संगम याने:—

संशोधन संग्रह; हिन्दी, संस्कृत, गुजराती भाषा-टिकासह—श्री सतपन्थ सनातन पवित्र धर्म जिज्ञासुपयोगी.

प्रकाशन—

30

ॐ नमो जयश्री तत्सत हरी ॐ

: परमपिता परमात्माने नमो नमः :

: सर्वेषां शुभ मंगल भूयात :

'त्वम निहितम गुहायाम, महाजनो येन गतः सपन्थाः॥

सनातन, आर्यश्री, स्वधर्मनिधनम श्रेयः स ॥

परमो धर्म, वेदो खिलो धर्म मूलम् ॥

सत्या नास्ति परोधर्म ॥

विद्या जो है की- रक्षति रक्षिताः ॥

सदज्ञान वर्धक, ज्ञा...मिह विध्यते ॥

(संस्कृत,) सतपंथ ज्ञान साहित्य भी नही है ।

...पि

कदापी नही

ॐ नमो जयश्री, तत्सत् हरी ॐ

प. पू. श्री सतगोर पात्र (लायक) ब्रह्म। ईन्द्र ईमामशाहजी के एक शुभ वरदहस्त कै. काकाश्री सतपंथाचार्य महन्त गादी अधिपति साहेब नाम निमित्त काका, श्री रामजी लखमणजी इनके सं. स्मरणार्थ तथा प. पू. श्री राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जन्म शताब्दि निमित श्रद्धांजलि सहित यह वर्तमान पुस्तक टुंके टुंके गद्य-पद्य।

इदम सत्य सनातन आर्य पवित्र सतपंथ

धर्मसार साहित्य संगम

याने संशोधन संग्रह संस्कृत हिन्दी, गुजराती, भाषासह श्री सतपंथ सनातन पवित्र जिज्ञासु नोत्योपयोगी प्रकाशन—

લે. શંકર લાલ. સંપત. અથર્વવેદ = ખાનદેશ (ગામ ...)
મુ.પો. કુરગાલ. તા. ભુસાવલ = ૨૯૭૦
(પેજ નં. ૨૪.)

30

ा हरी ॐ
ात्र (लायक) ब्रह्मा (ईन्द्रईमा-
ेदू हस्त गादि–अधिपति सा. कै.
ामणजी इनकी यादगारी एवं प. पू. श्री
ना गांधी जन्म–शताब्दि निमित.—"हंसो यथा"
ा की, करकमल की, शोभा.

१९७० इ. स.) प्रथमावृत्ति (संवत २०२६

मूल्य
लोभ—वृत्ति

प्रथम पहेले आप श्रीमानजीका नाम लोख देनेकी कृपा मेहेर करोगे तो, बहुतही आसान होगा !

: मुद्रक :
भालचन्द्र डाह्याभाई पटेल
किरीट प्रिन्टरी
रतनपोळ फत्तेभाईनो हवेली
अमदावाद

ॐ नमो जयश्री तत्सत हरी ॐ

: परमपिता परमात्माने नमो नमः :

: सर्वेषां शुभ मंगल भूयात :

१–धर्मस्य तत्वम निहितम गुहायाम, महाजनो येन गतः सपन्था॥
२–इदम, सत्य, सनातन, आर्यश्री, स्वधर्मनिधनम श्रेयः स ॥
३–सत्य अहिंसा परमो धर्म, वेदो खिलो धर्म मूलम् ॥
४–आचारे प्रथमो धर्म, सत्या नास्ति परोधर्म ॥
५–सत्य मेव जयते, धर्मो रक्षति रक्षिताः ॥

नहि ज्ञानेन सदृष्य, पवित्र मिह विध्यते ॥

ज्ञान के सिवाय अन्य पवित्र कुछ भी नही है ।

न ज्ञानः न च मोक्ष, स्यातेषां जन्म शतै रपि

ज्ञान संस्पादन करे बगैर सो जन्म तक मोक्ष कदापी नही मीलेगा ।

ब्रह्मावेद न मात्रेण, ब्रह्मप्रित्येव मानवाः ॥

अत्र नास्त्येवः सनदेह, त्री वारं कथयाम्यहम ॥

वेद प्रमाणे गुरू भक्तिका जिन्होंने अनादर कीया उनको न ज्ञान है, न मोक्ष, इस बाबतमें कुछ भी शंका नहीं है, संदेह न हो कि–हम तीन वखत ब्रह्म साक्षी देकर शपथ–विधि ले सकते हैं ।

ॐ

ॐ नमो जयश्री तत्सत हरी ॐ

प.पू. श्री वर्तमान कली युगात्मा, श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनमः

स्वधर्म निधनम श्रेयः स...योगः कर्मसू कौशलम

इस जीवन संसारमें मायासे निर्लेप रहकर मायाकी पीछान करके जगतको असार समजते हुए, निलिसार कर्मण्ये वाधिकाराः

इसलिए समझाकर मायावी पदार्थोंसे मोहका त्याग करके कर्म करते हुवे भी निष्काम भावसे पुरुषार्थ भावसे कर्म करके जल और कमलकी भान्ति सम्बन्ध फरजको समजकर विषयों इन्द्रियोको काबुमें रखकर मन तावेमें रखके आत्म चिन्तनमें जीवनका समय बिताकर साथ व्यवहार हुन्नर उद्योग कलादियोको विकासके पथपर त्यागकी भावनासे भोक्ता बनकर प्रचलीत वर्तमान कलीयुग समय संन्धीमें वेद अथर्वको प्रधानपद पर रखकर वेद मान्यतानु सार ज्ञान विज्ञान याने "पहेली किली हिकमतकी कीजे," याने सच्चा जुठा परखने की जो कला है इसी ज्ञान विज्ञान से "एकम सद् विप्राबहुधा वदन्ती," ऐसे इस सर्व साकार स्वरुप दसवा अवतार विभूति पात्र विष्णुं भगवान चालू वर्तमान कलीयुगी आद्यपुरुष परमात्मा अध्यक्ष श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनकी पहिचान करके उनके नामसे जप, तप, तिरथ, व्रत, पुजन, अर्चन, ध्यान, धारणा, उपवास आदि ध्येय पूण्यदान सहकार सहायता वगेरे धर्मांगो धर्मेन्द्रियको "अध्यात्म ज्ञान नित्य त्वम" "यो वेत्ति तत्वतः" नु सार समज करके उनके ही नामका गुणगान गुणानुवाद से जन्म मरणकी फेरेको मिटाकर मोक्षगामी होना यही है वेदशास्त्र युक्त...योगाः कर्मसु कौशलम् ।

लिपी

संसारमें जितनी भी लिपियाँ है, उन सबमें अधिक वैज्ञानिक लिपी है "देवनागरी" ।

यदि इस "देवनागरी" लिपीको स्वीकारकर लिय जाये, और समस्त भारतिय भाषाओका साहित्य "देव-नागरी" लिपीमे हो, तो वहुतसी कठीणाइयोका और पूर्वाग्रहोका समाधान हो सकता है वास्तेः— संसार सोचे और समझे ।

—पंडीत नेहरू

भूमिका

जिस प्रकार संसारकी नष्ट मर्यादाओंको पुन्हः स्थापित करना तथा समाजमें फेली हुइ कुरीतिओंको मिटाना महा-पुरूषोका कर्तव्य है। उसी प्रकार उनके उन (वह) कार्योंको चिरंजिवी बनाना (जीससे आगे आनेवाली संताने उन्से लाभ उठा सके) अच्छे लेखको और कविओ पर निर्भर है। वैसे ही : सत्य : के संशोधन सत्य साहित्यके हंस रूपी मानवीयो पाठक गणो की भी सम साधारण फरज है कि–सत सत्य मानवताका अभाव विरोधाभास न हो, किसकी निंदा न हो ऐसी वाणीको संकलन सदा प्रकाशित करते रहे, ताकी भावी पिढी सोचे और समझे।

प्रस्तुत पुस्तक यद्यपि देखने में बहुत ही छोटी है किन्तु गुणोमें किसी वेद ग्रंथ से कदापी कम नहीं है। ईसीमें आदि से अंत तक संक्षिप्त रूपमें ज्ञान विज्ञान संपादन करने वालेके लिए स्वकर्म स्वधर्म स्वदेश प्रेम स्वहित स्वजाती समाजवाद और साम्यवाद इत्यादि संस्कृति और साहित्य पाठ अभ्यास-क्रम चारित्र रूपमें सुंदर ढंगसे गद्य, पद्य सारसमूह संग्रह संगम करके सार संग्राहक प्रकाशकने सागरको गागरमें भराकर दिखलादीया है और वह भूत, वर्तमान, एव. भविष्य वाणी युक्त संकलन है। समझमे लेने जैसा है।

इस पुस्तकका एक एक पाठ वाक्य शब्दादि बहुतही मार्मिक है। तथा धर्मकी बारे में निती–अनितिको–न्याय–अन्याय को समझने के लिये, धर्म इस शब्द का अर्थ–भावार्थ अन्वय अर्थ इत्यादी बाबतो समझने के लिये जिज्ञासु, श्रद्धावान, अभ्यासू व्यक्ति के लिये शिक्षा और साहस की तो यह पुस्तक जीती जागती तस्वीर है। बल्कि मेरा तो यहां तक विश्वास है कि–ऐसी रोचकपूर्ण सत्य तथा भावपूर्ण पुस्तक सुन्दर और साधा-रण सर्व धर्म समन्वय पुस्तक अविरोध अनिंदक यानें अथर्ववेद सार संग्रह जैसी सचेतन पुस्तक. इस पुस्तक के पहले सनातन, आर्य, पवित्र, श्रीसतपंथ साहित्य सबंधि सेवा करनार "प. पू.

श्री कै. बाबा साहेब ए. खाकीजी" के सिवाय अन्योन्य संशोधकोंकी तरफसे नही बनी होयगी ।

वास्ते—पढनेवाले पाठक गणने अपूर्व लाभ उठाना होगा। और पाठक गणभी कैसा हो कि

"हंसो यथा क्षिर मिवाम्बु मध्यात्" प्रमाणे ।

सतपंथ सदा यह है "सच राह बता देना ।
कह कह के सुना देना" कर करके दिखा देना ॥

खाकी श्री०

प. पू. श्री महात्मा गांधी जन्म शताब्दी याने नवीन भारतकी सिहस्त पर्वणी पूर्व-कर्म पूण्यकाल पर्व निमित्त इस वर्तमान प्रस्तुत पुस्तककी, इदम सत्य सनातन आर्य, पवित्र आदर्शयुक्त श्री सतपंथ स्वधर्म निधनम श्रेयस-भूत, वर्तमान भविष्य ऐसी त्रिकालदर्शी वेद. ईश्वर, गुरु, इस त्रिपदत्वम ज्ञान-सत्र सार साहित्य संगम याने, पाठक गणोकी कर कमलकी शोभा.

सामाजिक आस्था और सुधारवाद. दृष्टिकोण

लेखकका काम यह है कि........

मनुष्य हृदय आत्मासे महान है। उस में साहस करुणा और प्रेम है, अद्वितिय गुण है। और वह कभी पराजित नही होता।

कवि और बंदूक—अखबारों के द्वारा सुना जाता है कि—पटामें तारीख ३ डिसेम्बर १९६८ ई. स. को रात्री में कवि—संमेलन की समाप्ति पर गोली चल गई। अखबारोंमें केवल यही छाप दीया कि—गोली चलानेवाले व्यक्तियाँ यह चाहते थे कि—कवि संमेलन अभी जारी रहे, परंतु अंतिम कवि महोदय काव्य पाठसे विरक्त हो चुके थे। विरक्ति का कारण-खोज करते करते पता चला कि कवि संमेलन में महिलाओंकी उपस्थितो में अशोभन अभी व्यक्ति की कविताएँ चल रही थी। जो रोष उत्पन्न कर रही थी। महिलाएँ उठकर चल गई थी, और कवि महोदय फिर आग्रह करने पर भी कविताएँ सुनाने के 'मूड' में नहीं रहे. मूल प्रश्न यह है कि—आज के कवि संमेलनों में कुछ अश्लिल रचनाओं का और उनसे अधिक अश्लील और निम्नस्तर पर की गद्य टिप्पणोओंका विशेषकर महिलाओं पर कटाक्ष करते हुए पाठ करना एक रिवाज सा हो गया है।

जहाँ कुछ लोगोंकी यह भद्दा कविता—पाठ कुत्छित आनंद देता है। वहाँ महिलाओ और सम्भ्रांत नागरिको को वह अशक्य हो उठता है।

परिणाम—जो पटामें हुवा वह तो असाधारण है। परंतु कानपुरमें मेडिकल एसोसीएशन हालमें सुना था कि—एक महिला चंप्पल लेकर कवि—महोदय को घुरती हुई खडी हो गई थी. और उन्हें क्षमा माँगकर कविता बंध करनी पडी थी।

आगरेमें भी वोही कविता उन्होंने फिरसे एकबार भोले-पनसे चालु रख्खी थी और आपत्ति करने पर उसे बंध किया गया।

यहाँ शील—अश्लिलका प्रश्न साहित्यमें शील—अश्लिलके प्रश्न की तरह नहि उठाया जा रहा है। और उठभी नहीं सकता।

साहित्य अश्लिल नही होता. जो अश्लिल है वह साहित्य नहीं है. पर कवि संमेलनमें पढे जानेवाली. इसी तरहकी रचनाओंमें अश्लिलताका प्रश्न ईस लिये उठता है कि—वे काव्येत्तर प्रयोजनसे लीखी जाती है. उनका उद्देश्य रास्ते परके लोगोंका मनोरंजन करना ही नहीं। उनके स्तर पर उतरकर उनका समर्थन पाना होता है। बाजारूपन और अश्लिलता वहाँ पर पनप सकति हैं उससे बचजाना चाहिये।

मनुष्य नैतिक अपराध तभी कर सकता है कि—जब उसकी जरुरतें पुरी नहीं होती। याने जब मनुष्य के आत्माके बीच व्यवस्था याने अन्य शक्तियाँ दीवार खडी कर देती है। वह। मनुष्य के पतन के कारण—मनुष्य के भीतर नहीं बल्के समाज के भीतर देखना होगा।

इस गद्य पद्य महाकाव्यकी रचनाओका उद्देश्य सिर्फ मानव कल्याण है. आशा व्यक्त की जाती है कि–इस श्री सतपंथ ज्ञान साहित्य संगम से काफी योग्य ज्ञान–दान मिलेगा मिलता रहेगा अस्तु—

इस वर्तमान पुस्तकका नाम

दो विपरित क्षेत्रोमें से आनेवाली सरीताओका जब जहाँ पर सह मिलन होता है, तब उसे हम संगम कहते है. इसी प्रकारसे दो विपरित क्षेत्रोमें सोचने और काम करनेवालो व्यक्ती अपने विचारोका आदान प्रदानकर, जब उन्हें दूसरे के अनुसरणमें अर्पित कर दे, तब दो विचारधाराओका संगम हुआ तब ऐसा माना जाना चाहिये. ऐसे ही विचारधाराओका यह वर्तमान पुस्तकः–इदम. सत्य सनातन आर्य आदर्श युक्त पवित्र ऐसा

स्वधर्म निधनम श्रेय : स सतपंथ ज्ञान साहित्य संगम यानेः–गद्य–पद्य संग्रह मात्र हैं ।

इनमें अपने आधि देवी, आधि भौतिक, और अध्यात्मिक जीवन और उससे संबंधित क्षेत्रकी साधारण सभी क्षेत्रकी, साधारण सभी प्रकारकी शंकाओंका कदाच पुरेपुरा समाधान न होने जेसा हो तो भी, फिर भी समाधान पानेका प्रयत्न कीया गया है कारण—

इस वर्तमान पुस्तकमें लगभग साधारण सभी देश विदेश और वहाँ के प. पू. श्री. मानवंत साधुसंत, महंत, ऋषिमुनी गुरु ब्राह्मण, संन्यासी, फकीर, पीर, पेगंम्बर, ओलीया इत्यादिकी सत्यपरा मर्श, और सतसंगकी सभी साधारण अनुभविक जैसी ही बाते संगठीत कि गई है ।

कहना है की—साहित्य निर्विकार होना चाहिये किन्तु विश्व विमुख नहिः–उनका भविष्य जो यह है की, आगे भविष्यमें जो क्षेत्र साहित्यका आनेवाला है, वह बडा व्यापक है. मजहब (पंथो) का और राजनितिका ह्रास होगा विज्ञान और अध्यात्म को जोडनेवाली कडी होगी साहित्य सत्साहित्य ।

लेकीन आपको अपनी मरजी—प्रतिष्ठा होनी चाहिये.

उस परम पिता परमेश्वरने मनुष्यको एक बडी देन (बक्षीस) दी है, वह है "वाणी" भाषा नहि इसलिये आप कुछ मौनका अभ्यास किजीये लीखिये कम, चिंतन मनन जादा कीजिए. जो सहज मिलेगा–निकलेगा ओही सार्थक होगा कारण सत्य अहिंसा प्रेम मौन और समता यह प. पू. श्री. जगतगुरु शंकराचार्य के रसायण है, वास्ते पढो सोचो समजो और वर्तो ।

प. पू. राष्ट्रपिता श्री महात्मा गाँधीजीको याद करते हुए उनको जन्म शताब्दि निमित्ते श्रद्धान्जलि

पुत्र के हाथो पिताकी हत्या, इतिहासमें आश्चर्यजनक घटना है। इसी दुर्घटनाने भारतवासीयोको लज्जीत कर दिया है. सारा संसार जिस महापुरुषकी पूजा करता है, वह यूंकि हमारा था. अतः हमने उसकी महानताको नहि समझा. और जब समझा तब बात हाथसे निकल चूको है, एक ऐसी महान आत्माकी जिसने हमे जीवित रहनेका पाठ पढाया ऐसा स्वयं हमारे ही हाथो जीवित नहीं रहने दी गई. एक ऐसा महापुरुष जोसने संसारमें अहिंसासे हिंसा पर विजय प्राप्त करनेका उदाहरण पेश कीया. उसीको हिंसा द्वारा "शहिद" बना-दिया गया.

एक ऐसा नेता जीसने हमारे पराधिनता के बंन्धन काट डाले हमारे ही हाथो स्वर्ग के बंन्धनोमें रहने को भेज दिया गया. हमारे लिये इससे बडी नालायको और क्या हो सकती है ?

हम आज जो कुछ है उनके बनाये हुये है, हमारी प्रतिष्ठा, हमारा नाम, हमारा कार्य, जो भी कुछ है, सब उसका दिया हुवा है. फिर हम कौन है, जो उस महान आत्माको श्रद्धांजली अर्पित कर सके ? हम तो अपना सर्वस्व भी उसके नाम पर न्योछावर कर दे तो भी कम है ।

जगतनीयंतासे प्रार्थना है कि:-हम उनके बताये हुए मार्ग सर्व धर्म समन्वय याने:-इदम सत्य सनातन पवित्र आदर्श युक्त सत पंथ पर चलनेको शक्ति प्रदान करे ।

धर्म हमारा यही हमेशां सतपंथीयों के गुण गाये ।
आत्मा उनकी को होलमील रही, सुख सदैव पहोचावे ॥
यह पुस्तक जो लेना चाहे, पलकी देर न लगाये ।
आप श्री. श्रीजीका पूर्ण पत्ता लीखकर घर बेठे बेठे मंगवाये ॥
छपवायेंगे अगर तो होगी, हित के बदले हानी ।
ठहरो, वांचो, सोचो, समजो, सत्य सनातन सतपंथ की बानी ॥

सत्य यही परमेश्वर

ईश्वर ही एक सत्य है, सदा रखीये ध्यान ।
तिहुसन उत्तम मानीये, है सत्य यही भगवान ॥ १ ॥
सत्य छिपावे नहीं छिपै न जानिय सत्य ।
अन्तर ईश्वर सत्य मह, है यह बात असत्य ॥ २ ॥
जानीय सत्य उपासक ही, है भक्तन सिर मोर ।
जीवन मुक्ति प्राप्ति कर, इही तजी मंत्र न और ॥ ३ ॥
सत्य इस तिहो प्राप्ति ही, कहत साध्य सब कोई ।
साधन तिहीकर दृष्टि मम, सत्य अहिंसा दोई ॥ ४ ॥
हय निर्दोष अहिंसा कही, लीजे निश्चेय जानी ।
प्राणी मात्र प्रति द्वेष नही, है तिहीकर पहिचानी ॥ ५ ॥
निर्मल अन्तः करण माहि, जब जस होय प्रतित ।
सत्य तेही कह जानीये, साधक पूर्ण अतित ॥ ६ ॥
प्राण अहिंसा ही सत्य कर, नहीं असत्य कर लेश ।
नाही अहिंसा जासुजीय, है सो पशु नर वेष ॥ ७ ॥
त्यागी अहिंसा मार्ग नही, ईश्वर दर्शन हेत ।
नहीं इही मांही सपने हु मांही, दोष दिखाई देत ॥ ८ ॥
इश्वर दर्शन कर जतन, जग सेवाही जगमांही ।
कीहीसन हृदय न त्यागी सो स्वर्ग नर्क कोहु नाही ॥ ९ ॥
हरी नाम सम द्रव्य नही, कीहीसन शक्ति अपार ।
लहत विजय सर्वत्रसो, है जो इही आधार ॥ १० ॥
आत्मज्ञान उद्देष है, नर जीवन कर एक ।
सुत दारादिक दाइनी, खग मृग योनी अनेक ॥ ११ ॥
जीवीत सोही जा ही नारी, है जीवन कर लोभ ।
आत्मज्ञान बिन कलीयुगी, जब उपजावत क्षोभ ॥ १२ ॥

ॐ

ॐ नमो जयश्री तत्सत् हरि ॐ

धर्मस्य तत्व निहितम गुहायाम्, महाजनो येन गतः स पन्था ।
इदम सत्य सनातन आर्य, पवित्रोत्तम आदर्श युक्तम् ।।

श्री. सतपंथ की जय

हृदयकी एक बातः—-जननी जणजे भक्तजन, कां दाता कां शूर ।
नहि तो रहजे वांझणी, मत गुमावीश नूर ।।

प. पू. श्री सतगोर पात्र (लायक) ब्रह्मावतार ईन्द्र ईमाम-शाहजी ईनके:—अनेक शुभ वरदहस्त श्री सतपंन्थाचार्य महन्त गादी अधिपति साहेब. काका श्री रामजी लखमणजी ।

आप प. पू. श्रीजीका शुभ जन्म स्थान गाम मु. पो. अरलमें ता. नखत्राणा डी. भुज. कच्छ प्रदेश (गुजरात) स्वर्ग समाभूमिमें हुवा था ।

आप प. पू. श्रीजी के: - प. पू. पिताश्रीजीका शुभ नाम पेथाभाई था और प. पू. मातुश्रीजीका शुभ नाम मानबाई था. कुळ-छाबैय्या था, और "जाति भेदा प्राक्तने, अतिव कालेः कच्छ कडवा पाटीदार, ज्ञातिमें समावेश वर्ण क्षत्रीयमें था ।"

जो कीः—स्वदेश-भारत भरमें रहन-सहन, खान-पान और स्व-हक्क, स्व-कष्ट, कमाई से सात्विक भोजन आहार-व्यवहारमें उच्चतम, उत्साही, साहसी और एक दुसरेकी साथमें सत्य अहिंसा और प्रेम करनेमें नंबर १ ला प्रथम है ।

आप प. पू. श्रीजोने प. पू. मात पिताश्री और साथ सर्व सभी छोटी-बडी श्री सतपंथ, सनातन पवित्र धर्म जिज्ञासुसह जमात के उद्धार के लिये ही निमित्त मात्रं भवः-तरीके जन्म धारण किया था, या किया होगा ।

आप प. पू. श्रीने क्षत्रिय वर्णमें से, ब्रह्मजाने, सो ब्राह्मण ब्रह्म जाने वही ब्राह्मण इस ऐसे वेद विभाग युक्त उक्त-वाणीसे शोभायमान करके दिखां दिया. जैसा की-राजर्षि विश्वामित्रजीने साठ हजार वर्ष तक महान तपश्चर्या करके ब्रह्मर्षि पदको कमाई करी थीं. इसि. मुताबिकः--

आप प. पू. श्रीजीने पूर्वजन्म कर्मानुसारिताः सहज स्वभावसे आप प. पू. श्रीजी के प. पू. पिताश्रीजीका शुद्ध सात्विक तुखुम तासीर ओर प. पू. मातुश्रीजीकी शुद्ध सात्त्विक कोख ओर दुध को धर्म ज्ञानसत्रके साथ उज्वल कर दिया है. ओर पूर्णात्पूर्ण सत्य एवं श्रेष्ठ सृष्टि गोर ब्रह्म गादी, व्यास, ब्राह्मर्षि पर्णाको शोभायमान सम्भाल करके रखा, आभार स्विकार.

आप प. पू. श्री. जी पूर्वजन्ममें कोई योग-भ्रष्ट ऐसे महायोगी जरूर होंगे. ओही पूर्वजन्म के योग भ्रष्टताको पूर्ण योग योग्यता मिलाने के लिये "जननि जठरे शयनम" याने जन्म धारण किया होगा ।

आप प. पू. श्रीजीकी बालपणे की हकिकत मे ऐसा सुना है की-आप प. पू. श्रीजी बचपनमें स्वतन्त्रपणे चलने फिरने लगे इतनेमें एक सन्त नामे मालाजी श्रीजीके दरबारमें दर्शन करने गये थे, ओर उनको भेट दक्षिणा देकर सात प्रदक्षिणा करी. जब उन्होंने आप प. पू. श्रीकी बारेमें आगम (भविष्य) भाकित किया था की यह व्यक्ति आप प पू. श्रीजी (श्रीरामजी लखमणजी) हिमपुर (पिराणा) नगरी के दरबार (संस्था) के धणी मालिक बनेंगे. धर्माधिकारी महन्त बनेगें. इसी ऐसे विचारो से एक प्रथम पूर्वजन्म द्वारा 'योगः' कर्मसु कौशलम् 'योगक्षेम वहाम्यहम. ऐसे महात्तम' श्री कृष्णं वन्दे जगद्गुरु की कृपा वाणीनुसार कला-कुशलतासे संवत १९३९ ओगणीससो ओगणचालीस मिति. आश्विन वद अमावस्या रोज गुरुवार उस शुभ दिनांकको दुनियाके दैवी गुण सम्पत्ति के रखवारे, धर्म

दुलारे, याने श्री सतपंथाचार्य महन्त गादि अधिपती काका श्री रामजी लखमणजी याने 'श्री रामजी वन्दे जगद्‌गुरु' बने.

ईदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्श युक्त स्वधर्म निधनम श्रेयः स गत गंगा सहजमात के कुलतारण भव भय हरणं. गोवालिया राखणहार बने. समय जाते देर नहीं लगती और न लगो की योग योगानुसारीताः

आप प. पू. श्रीजी का शुद्धात्मा उस एक पूर्णात्पूर्ण जगत सर्जनहार. परम+आतमा=परमात्मा. परम पिता परमेश्वर मे संवत २०२५ दो हजार पच्चीस महा सुद १५ पुनम रोज रवि-वार ता. २-२-६९ ई. स. को विलिनिकरण करके ब्रह्मस्मि-भूत हुवे. और अपना वर्श-परम्परानुसार चलते आया हुवा शिरताज सभी संस्थान (दरगाह) का हक्क भावि पिढिके वास्ते—इदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्शयुक्त श्री सतपंथ धर्मका चलता-फिरता लहेराता मानव देहधारी धर्म, ज्ञान-कोषधारो नाम निमित मात्र प. पू. श्री भगवा साधु काका श्री साहेब श्री सवजी श्री रामजी इनको सोप करके, वर्तमान जन्म विसर्जन कर दिया.

जगत-जनार्दन याने श्री सतपंथ सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्शयुक्त जिज्ञासुओंको विश्वास है कि—

प. पू. श्री. सद्‌गोर नरपात्र ब्रह्म-विष्णु वंशावतार समा ईन्द्र ईमामशाहजीका अम्मर वारसा, "आचारे प्रभवोद्धर्म" प्रमाणे धर्म, न्याय, निति अनुसार धर्म, ज्ञान, सत्र, आप प. पू. श्रीजी के भावी प. पू. श्री गादी अधिपति याने श्री सतपन्थाचार्य महन्त काकाश्री साहेब नाम निमित्त मात्र मान्यवर श्री सवजी श्रीरामजी धर्म न्यायानुसार शिस्त पालन करेंगे. घणीका शुभा-शिवाद हो को जो सर्व शक्तिमान हैं।

आप प. पू. श्रीजोका देहावसान (दुनिया के परदे आड)

होनेसे सर्वत्र छोटी, बडी, गोर, गत, गंगा सहजमात एकाद झाड के टुटे हुवे फल अथवा फूल जैसे जल बिना सूकने लग जाते है, तथा पाणी वगर मछली तलमलाती हैं वैसे हो गती को प्राप्त हुई थो, फिर भो दुनियाका गतिशिल जोवन रहस्य-मयता के अनुसार पूर्वोक्त हो गयो.

आप प. पू. श्रीजी वेद, अथर्व और श्रीमद्भागवत-गीताजी चाणाक्य निति, बिदुरनिति, भ्रतृहरी शतक, पंचरत्न, गिता वगेरे. वेदशास्त्र, सम्मत इतिहासो के और श्री सतपन्थ शास्त्र साहित्य, सतवेणी' सदगोर शिखामण भाभाराम सुबोध आदि इत्यादि सत्साहित्य सागरके हंस थे वैसे हो, आचारे प्रभवोद्धर्म, प्रमाणे अद्भूत आचार्य थे.

आप प. पू. श्रीजो सर्वगुण सम्पन्न गुह्यादगुहय ऐसे कुशल कारीगर और अनुभवी थे. ठोकरे खाये हुवे थे, और सच्चे पीर के मुरीद थे. ब्रह्मास्मि थे. पीर थे.

आप प. पू. श्रीजीकी कुशलता, चातुर्यता यह थो को--

आप प. पू. श्रीजीकी के पास दर्शनार्थी शरणार्थी चाहे वैसे देव, मानव, दानव, देवताई गुण रहन-सहन पोशाख-लिबासमें सामने आते थे. फिर भो वह जो सामनेवाले दर्शनार्थी एव शरणार्थी आये हुये. विगेरेकी मनको गतिविधि भाव-भक्ति को पेछान तो ऐसी करते थे कि जैसा विजलीका करन्ट होता है. वास्ते--

आप प. पू. श्रीजी सतपंथ सनातन आर्य पवित्रोतम आदर्श युक्त संस्थान (दरगाह) गाम पिराणामें एक महान "पावरमेन" शक्तिशाली मानव थे ऐसा कहनेमें कुछ भी अतिशयोक्ति न होगी.

आप प. पू. श्रोजीमें महाव्रतधारी गुरू दत्तात्रेयकी समान चोवीस २४ ही गुरु के गुण ग्राह्यता थी.

आप प. पू. श्रोजी इस्म सत्य सनातन आर्य पवित्रोतम आदर्शयुक्त श्रो सतपन्थ धर्म के साथ न्याय-नितिकी सत्य,

अहिंसा और प्रेम को साक्षात ब्रह्म, विष्णु, महेश जैसी ही सत, रज, तम जैसी भी गुणात्मकरूप मय शुभ मंगल मुर्ति थी.

आप प. पू. श्रीजीका स्नान-सन्ध्या, पूजन अर्चन ध्यान, धारणा, जप-तप, तिर्थ-व्रत नियम, खाना-पिना, उठना-बैठना, चलना-फिरना इत्यादि सभी कुछ समयोचित था इसि बाबतो के:-

आप प. पू. श्रीजो कुशल कारीगर थे बने बनाय हुवे थे आरोग्य दृष्टिसे धन्वन्तरी थे. यह एक वह परम पिता परमेश्वर की तरफ से देन थी, या तो आप प. पू. श्रीजीका पूर्व सचित-कर्म याने वर्तमान प्रारब्ध-कर्म था.

आप प. पू. श्रीजी के सामने जैसे वेद वाणी के सामने परचुरण=चिल्लर=छुटक शास्त्र-पुराण, वन-(वगडे जंगल) के अन्य पशु जाति शियालको तरह कुही कुही करके बोलते है, परन्तु वेद-केशरी के जागने पर उनके सामने सभी शियाल जैसे छुटक शास्त्र-पुराणोकी बोली बोलना बन्द होती है वैसे ही जो कोई:--

आप प. पू. श्रीजीके सामने-झुठा आडम्बर से मान-बड़ाई करने वास्तेः--कोई भी व्यक्ति आयी होगी तो उन सभीका गर्व, अभिमान, अहंकार आपसे आप हरण हो जाता था.

आप प. पू. श्रीजी के सामने किसी औरोकी न चली. और जो कुछ समयानुसार चली भो होगी तो वह कुछ विशेष ईन्सानियत से नही चली होगी. परन्तु हेवानियत से हो चली होगी, ऐसी ईन्सानियत और हैवानियत आदि शक्तियो के तत्सम इनकी द्वारा मिले हुये सुख-दुःखो के:--

आप प. पू. श्रीजी जन्मभर के सन्मानानिय महेमान थे और रहे.

आप प. पू. श्रीजी अध्यात्मिक, आधिदेविक और आदि भौतिक सुख एव दुःखोकी भी त्रिपुटी जैसे थे इसीमे से--



परम पू. श्री. सतपन्थाचार्य महन्त गादि अधिपति
के काकाश्री रामजी लक्ष्मणजी
गादि स्थान—संस्थान-पिराणा
पो. गिरमथा, डो. अमदाबाद (गुजरात)
देहावसान ता. २-२-१९६९ ई. स.
मिति—महा सुद १५ पुन्नम रोज रविवार संवत २०२५

ॐ

ॐ नमो जय श्री तत्सत हरी ॐ



प. पू. श्री. सतगोर पात्र ब्रह्मा ईन्द्र ईमामशाहजी
और उनके पट्टशिष्य हाजरबेग
धाम—पिराणा पो०—गिरमथा
डी०—अहमदावाद (गुजरात)

आप प. पू श्रीजीके गुणानुवाद, गुणानुभव भाव आदि की बहुत ही कम संख्यावत जनताको समज थी.

आप प. पू. श्रीजी कभी चाहते तो पलभरमें ही हैवानियतको खलास, खत्म कर देते परन्तु--

परन्तुः--गरजुओके सामने चलती न कोई बात है ॥
मालुम यह होता है मुजे,-ईसमें भी खुदाका साथ हैं ॥

आप प पू. श्रीजी तो तत्सम सत्य, अहिंसा और प्रेम दया क्षमा शान्ति तथा इत्यादि सद्‌गुणोके ग्राह्य थे, दूत थे. पुजारी थे, और इसी बाबतमें:--

आप प. पू. श्रीजी को जगत-रूपो जनार्दन याने--
इदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्शयुक्त श्री सतपंथ धर्म जिज्ञासुओंका पूर्णात्पूर्ण सहयोग था. सभी छोटी-बडी सहजमातका विशेष प्रेम था.

आप प. पू. श्रीजीको आदि भौतिक सुखो के बदले आदिभौतिक दुःख विशेप रुपमें आकर मिलता था कारण यह कि--

आप प. पू. श्रीजीका जो गादि-स्थान है वह सूक्ष्म-दृष्टिसे देखना जाओ तो मालुम होता है कि-वह सही सलामत काँटेका बिस्तार है. भिष्म पितामहका शरपंन्जर हैं. अनन्त अनन्त असंख्यावत स. धन्यवाद के साथ साथ, अनन्त अनन्त असंख्यावत आभार-स्विकार है, ऐसे इस भिष्मपितामह के शरपन्जर गादी अधिपति स्थान भोगनेवाले-इदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्शयुक्त श्री सतपन्थ धर्म के साधु सन्त महन्त श्री सतपन्थाचार्यजी को. सत्य हक्क बात यह है किः--यह गादि स्थान ही. एक महान महत्पूर्ण साधु सन्यासि फकीर की गादी-स्थान है. और इसी गादि स्थानको भोगनेवालेका पूर्व-जन्म कृत-कर्म प्रारब्ध द्वारा प्राप्त किया हुवा-मिला हुवा. संन्यास.

याने--"लिया फकिरी" फिर क्या दिलगीरी ?

फकिरीमें मजा जिसको" अमिरी क्या ? बिचारी है. अच्छा

आप प. पू. श्रीजीको आदि भौतिक सुख खास करके किसी व्यक्तिकी ओर से न मिला, और किसी को तरफ से कदांच मिला ही होगा. तो वह सुख देनेवाली व्यक्तिकी नजर वैसे हो कि--जैसे कुत्ते की नजर मुर्दे की तरफ--मुरदार याने ?

किसीने ठीक ही कहा है कि-यह फानी दुनिया मुरदार है. और यह इस मुरदार फानी, दुनिया हरामकी चीज वस्तुओंकी आशा करनेवाला हि को कुत्ता कहाँ गया है. और अैसे-मेरे जैसे कुत्ते.

आप प. पू. श्रीजीकी तरफ देख देखकर वहुत ही भों-भों करके भोकते थे. तात्पर्य मन ही मन जलते थे. जिन्होंने कभी भी ख्याल ही नहीं किया होगा कि-यह पिराणा-धाम कौन से धणीका दरबार मकान है ? मालुमत होता है मुझे कि-किसीकी काशी और किसीको मक्का ऐसा ही यह हमारा.

इदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्शयुक्त श्री सत-पन्थ धर्म जिज्ञासुओंका धाम 'पिराणा' हैं. जो हिन्दु, मुसलमानो के लिये-ईन्सानियत को कुछ शिक्षा लेने जैसा है. मानवताका पाठ सिखनेका यह धाम 'पिराणा' है. और यह श्री सतपंथ जिज्ञासु मानव मित्र अल्प निद्रावश होंने के कारण ।

संभवामि युगे युगे "इस ऐसे 'कृष्ण' वन्दे जगद्गुरु" के वचन के अनुसार जाग रहे हैं, विचारकर रहे हैं. वास्ते यह श्री सतपन्थ धर्म जिज्ञासु मानव मित्र ऐसे अल्प निद्रावश होने के कारण कुत्तागुण युक्त है, और इनका नाम है 'मोतिया कुत्ता.' कू कू करो तो आये और हड हड करो तो जाये. गले बांधो दोरडो जीधर खेचो (प्रारब्ध रूपी कुदरत) इधर जाये. कारण यह ईतना जानते हैं कि

दोष दयालजीने केम करी दिजे ! कर्ममां लखिया सो ही लिजे,

और इस मोतिया कुत्ते के गलेमें दोरी-रस्सी बांधनेका

कारण को--इससे कोई भी पागल कुत्ते जैसा-जहर न दे सके, यह कायदा है कि, जिस कुत्तेके गलेमें दोरी (पटा) है उसीको जहर देकर मारनेकी किसीकी भी हिंमत नहीं हैं. वैसे ही यह श्री सतपन्थ धर्म ज़िज्ञासु हाथोंकी माफक भी है इसि कारण--

आप प. पू. श्रीजी हाथी चला बाजार "और कुत्ते भुके हजार" इसी कहावतकी माफक हाथी जैसे भी थे, मस्त थे, बे फिकर थे. एक सच्चे पीर के बनाये हुए थे, सच्चे पीर थे. मतवाले मस्त फकीर थे. बे फीकर थे.

सच्चे पीरके बनाये हुए थे, बे फीकर थे फकीर थे

ख्यो तनको धोये क्या हुआ, इस दीलको धोना चाहिए ।
बाकी कुछ भी ना रहे बीलकुल ही धोना चाहिए ॥
शील बनावो शीलकी ओर ज्ञान के साबुन सहि ।
प्रेम पानी बीचमें, सब दाग धोना चाहिए ॥
हिंसा, झुठ, चोरी ओर काम, क्रोध, मद, लोभका ।
मेल, बिलकुल ना रहे, तुम्हे पाक होना चाहिए ॥
इस दील खेतको करके सफा, पाप कंकर को हटा ।
हरी नामका फीर इसी खेतमें, बीज बोना चाहिए ॥
मुँहको धोती है बिल्ली, स्नान भी कौआ करे ।
ध्यान बग कैसा धरे! ऐसा न होना चाहिए ॥
श्री सद्‌गुरु प्रसाद से कहे...सुन लीजिये प्रेमीजन ।
जुठे, गवारोंकों छोड दो, सच्चे पीर होना चाहिए ॥
इसी ऐसे कारण कहा है की......

भाई, अमने वहालो ईन्द्र ईमामशाह पीर ।
भाई, अमने वहालो ईन्द्र ईमामशाह पीर...ध्रु० ॥

ऐसे सच्चे पीरको संस्थान (दरगाह) के हम सभी श्री सतपन्थ सत्य सनातन आर्य, पवित्रोत्तम आदर्शयुक्त धर्म और कर्म न्याय नीती के रक्षक (रखेवाल) कुत्ते जैसे है, और यह रक्षक (रखेवाल) कुत्ते श्री संस्थान (दरगाह) सतपन्थ सनातन आर्य, पवित्रोत्तम आदर्श युक्त धर्म, कर्म, वीर जीज्ञासुओंकी

सेवा शुश्रुसा धणी के मारफत निमीत मात्र जब तक हो, बन सके तब तक श्री सतपन्थ सनातन आर्य, पवित्रोत्तम धर्म संस्थानको कोई भी प्रकारकी आंच नहि आयेगी. अन्यथा विशेष—कुदरत जाने, अच्छा, जैसा कोई एकाद चित्रकार (पेइन्टर) अनेक रंगोसे चित्रकी सजावट करता है वैसी ही सजावट

आप प. पू. श्रीजी की कुदरत याने पूर्वकर्म संचित याने वर्तमान प्रारब्धने करी थी की...जैसे हथोडा छन्नी के घाव सहन करे वगर पथ्थरकी बनाई हुई मूर्तिको आकार (देवताइ-पणा) नहि आता वैसे ही नैसर्गिक शक्तिरुप प्रारब्धने.

आप प. पू. श्रीजी को अनुभव की ठोकरे दे देकर महानु भवी बनाया था. बीलकुल असे ही को श्री सद्गोर कहेते है की—

इयळ भमरी पठनतरो लई मंदिरमां जाय ।
इयळ जो टचका सहे, तो आप समानी थाय ॥
महेंदी रंग देती है, पथ्थर तले पीसाने के बाद ।
इन्सान सुर्खरु होता है, ठोकरे खाने के बाद ॥
महेंदी माहे रंग है, जाने सारा जग ।
पथ्थल तले पीसावे आप, तब लागे नवधा पग ॥

आप प. पू. श्रीजी को गती विधि असी ही रुपमरुप हुई है.

आप प. पू. श्रीजी इस दुनियाकी परदे आड (अवसान) होने से श्री सतपन्थ सनातन धर्म जिज्ञासुओके दिलको एकदम धक्का पहोंच गया की सभी छोटी-बडी जमात नन्हे-मुन्हे बच्चेकी तरह माता विहोणा बाळ 'भिक्षुक' जैसी गती हुई थी. जैसा एकाएक दीवा बुझ जानेसे अंधेरा छा जाता है. वैसा ही श्रावण भादरवेकी रात जैसा ही उस समयका वातावरण याद आता है. सत्य हकीकत.. चैत्र सु....मिति...तारीस...के समय श्री सतपन्थ सनातन आर्य, पवित्रोत्तम आदर्श युक्त कच्छ कडवा पाटीदार मित्रोका संघ आता है. उसी समयमें तो बहुत ही

भयंकर सुनसान सन्नाटा आप प. पू. श्रीजी के गेरहजर होनेसे मालुम होता होगा. छोटी बडी और सहजमात इसका दे देकर धीर स्मरणीय श्रद्धांजली अश्रुस्त्रोत के साथ आप प. पू. श्रीजी को समयोचितः–

करोमि यद्दत्सकलम, परिस्मै, नारायणे 'समर्पयामि, रुपमें समर्पणविधि करती थी. आप प. पू. श्रीजी: कच्छ कडवा श्री सतपन्थ सनातन धर्म जिज्ञासु पाटीदार संघ चैत्र सु....में गेर-हाजर आसन रथशय्या और रथको चलानेवाला ड्रायवर (बेलिया) बिलकुल निस्तेज असे थे. नोबत शहनाइ बजती होगी तो भी... आवाज गगनचुंबी गुंजारव करता होगा तो भी, सब नकाम जैसा ही मालुम होता होगा, निशान झंडा लहराता हो, (फरकता हो) धजा फरकती हो. फीर भी वह सभी आप प. पू. श्रीजी को गेरहाजरीका ही ढंढेरा पीटते होंगे और याद दिलाते होंगे की—

अय दिल दुनिया फना...इसमें लुभाना छोड दे,
चार दीनकी चांदनी...क्यु जुलम पर बांधी कमर,
हुकम रब्बका मानले..दिलको दुखाना छोड दे—अय.

रोजा ढोलिया और कचेरी वगेरे सभी स्थले.
आप प. पू. श्रीजी की याद करते होंगे...करते थे—

आप प. पू. श्रीजीका देहावसान शहेर अमदावादमे-दिन माध्यान्य (दोपहरमें) १२-४२ बार कलाक बेतालीस मिनिट पर हुआ था. असा समय प्राप्त होते ही आश्रय कार्य कर्ताओने देश विदेशमें तार, टेलिफोन, रेडीयो वगेरे भौतिकवादकी मारफत खबरें जाहेरात करनेमें आइ थी. खबरे मिलते ही के साथ—

आप प. पू. श्रीजी की अंतिम यात्रामें सामिल होने के लिए दूर दूरसे करीब दो अढाई-सो-तिनसो-माइलोपर से याने सुरत, नवसारी, भरुच, भीमपुर, डुम्मस, भाटाभाटपोर, धोलका, भावनगर, खेडब्रह्मा, हिम्मतनगर, मोडासा, कपडवंज विगेरे

शहेरो और शहेर विभागो के रहिस प्रेमी मानवमित्र धाम पिराना (हिमपुर नगरी) में जैसा श्रावन, भादरवेकी बरसातकी बुंदे गीरती है और नदी, नाला, भरपुर जलमें उभर जाते है वैसे ही जनसमुदाय जनमानव मेदनी शहेर अमदावाद से लेकर धाम पिराना तक उभरी हुई थी. लोक समुदाय उमट आया था. धाम पिरानाका यह दीवा (ज्योत) बुज जानेसे उसकी फ्रेम (देह) यथोचित जगह पर रखने के वास्ते एवं शेवटकी विदायगीरी देने के वास्ते महेमानगीरीमें सुंगधी द्रव्योको ईत्र, गुलाब जल. चंदन, अबिल, अगरबत्ती वगेरे की कुछ भी अछत (कमती) नहि थी. तरह तरह के फुलोका तो मानो के ढेर लग गया था.

आप प. पू. श्रीजी की सर–समाधी स्थान–कुमारिका स्थान धाम पिराना जो की—ईदम सत्य सनातन आर्य पवित्रोत्तम आदर्श युक्त स्वदेश भारतीय तीर्थोमें से एक "निर्वैर सर्व भूतेषु तीर्थ है. यही तीर्थ स्थानमें पवित्र भूमिमें जो की जहा पर पूर्व" विभाग (बाजु) में हाजर–बेग जाहेर परछा देवी शक्तिका समाचार देता हि और पश्चिम बिभाग (बाजुमें)—

घीरधरों शास्त्राभ्यास करो श्री गोर नर नू नाम स्मरो ।
सदा सनातन सतपन्थ केरो झंडो ऊँचो रहेशे अमारो ॥

ऐसे झंडे के नोचे की, जहा पर—

आप प. पू. श्रीजी की समाधी स्थल उपर श्री हीरजीभाई करसनभाई गाम–मानकुवा के रहिश डी. कच्छ–भूजवाले के तरफ से—

(गादीवाला काकाश्री रामजी लखमण संवत २०२५ ना महा सुद पुनमने १५ रवीवार देवलोक पाम्या छे. तारीख २–२–६९ ई. स.) और नोचे के भागमें लीखा है की—

(आ तकती बेसाडनार कच्छ भूज मानकुवाना घोरु हिरजीभाई करसनभाई अने तेमना धर्म पत्नी) ऐसा लिखा हुआ है ऐसी शुभ मंगल जगा पर

आप प. पू. श्रीजीओकी श्री रामजी और लखमनजीकी जुगलजोडी है. और साथमें प. पू. श्री लखमन करमसिंह और काकाश्री करमसिंह नथ्थु असी यह त्रिवेणी संगम सुमेळ है. सही बात यह है की—

आप प. पू. श्रीजी (काका श्री रामजी लखमनजी) ने त्रिवेणी संगमका त्रिविध ताप आध्यात्मिक आदि भौतिक और आदि दैविक दुःख बहोत ही सहन कीया है. वैसे ही बादमें उनको सुख सहुलियत भी आकर मीली है. फीर भी वह अंतर बाह्य दृष्टिसे बहोत ही सतेज थे. यही उनकी पूर्वापार गत जन्मकी तपोबल निष्ठा और वर्तमान जीवनकी चातुर्यता कला, कौशल्यता सत, सबुरी अहिंसा, प्रेम और स्वाभिमानी पण की, कट्टरतापणे की जीवन जागती ज्योती थी. की जो हमारा गतीशिल जीवनाधारे समयानुसार तत्वमें तत्त्व रुपांतर करके विलिन हो गई. लुप्त हो गई. अह्म ब्रह्मस्मी हो गई स्वप्नवत हो गई और उनका सारा जीवन एक कहानी बन गई. बाह्य दृष्टिसे—

आप प. पू. श्रीजी नहि दीखते हो, परन्तु अंतर दृष्टिसे तो हुबेहुब कहो क्या बात है ? असा प्रेम स्वर कानोद्वारा आनंद दे रहा है. और एक गुह्याह गुह्य संदेश भी—
"महाजनो येन गतः सपन्था"—

आखीरी मुलाकांत

आप प. पू. श्रीजी की आखरी छेवटकी मुलाकांत ता... माहे...ई. स....मिति...रोज.. हुई थी उस वर्तमान समयमें—

आप प. पू. श्रीजीको न जाने क्यों ? और क्या बाते—

आप प. पू. श्रीजीने मेरे जीवन जिंदगीमें वैसे ही मेरे जीवन जिंदगी के "न भूतो-न भविष्यति' याने अथः से इति तक जो भी कुछ, था और होगा, यह सब कुछ बताया था-कहेना था-सुनाना था विगेरे लेना और देना था वह सभी तरीके से क चूलभूलेना देना हिसाब चुका कर दिया था, याने—

आप प. पू. श्री सद्गोर महाद्य पात्र (लायक) ब्रह्मा अवतार ईन्द्र ईमामशाहजी और उनके सुत. नरअलीमहमद-शाहजीके बाबतमें वैसे ही उनको आल और औलाद् वंश परमपरा की बाबत...तत्सम...प. पू. श्री हाजरजामा गादी नशीन तक के वगेरे सभी बातोका इतिहास सार–असार जो भी कुछ भेदाऽभेद था, है, वह सब कुछ बता दिया–सुनादिया–नंतर–बादमें—

आप प. पू. श्रीजी की शेवट आखिरीका सुख-समाचार धर्म ज्ञानोउपदेश लेकर सच्चे घरकी—"साचा दीन रसुलका" यह ऐसा दीन–धर्मवाले घरकी धुन के साथ दुनियादारीका नाम निमित मात्रका घर कुटुंबमें पहोंच गया. परन्तु आश्चर्य और अंचबेकी बात यह है की—

आप प. पू. श्रीजी तो परम पिता परमेश्वर के असीम कृपासे जो कुछ उसका साचा जुठा खेल रचाया हुआ है, उसी मुताबीक प पू. श्री कृष्णावन्दे जगद्गुरुकी वाणी अनुसार 'तद्धाम परम ममः' वहा पर निश्चित और निश्चिंत निर्विकार रुपसे रुपमें रुप विलिन होने के बाद भी वह प्रभु "सर्वत्र समाना"...ऐसा होने से—

आप प. पू. श्रीजीका डाल्डा के असली ? चाहे वैसा हो, फिर भी आप प. पू. श्रीजी जिसके साथ पूर्णतः प्रेम अनुभव दान दिया करते थे. ऐसा नाम निमित जैसा पंडित श्री शंकर-लालजी संपत अथर्ववेदी–खानदेश (काहुरखेडे) वाला–मु पो. हरताला तालुका (भुसावळ) E. K. वाले के लिए कुछ प्रसादी देने की बाकी रह गई थी की...झट पट...

आप प. पू. श्रीजी धाम पिराना से To पंडित श्री शंकर-लालजी संपत अथर्ववेदी को C/o मुखीश्री साहेब शामुकेशव (चौधरी) मु. विटवे पो. पेनपूर ता. शवेर E. K. अंतर अंदाजे सरासरी (लगभग) ६०० (छसो) माईल उपर मेडी पर आकर रातके दो वजे मिले आभार स्वीकार—

तोबा असंख्य बार, आ बंदा गुन्हेगार-आभार-स्वीकार—

आप प. पू. श्रीजीका इतने दूर आकर मिलनेका कारण– एक समयमें इसी वर्तमान विचार दर्शकने 'भावोपहत स्वभाव' होकर खानदेश आदि देशके लिये.

आप प. पू श्रीजी को श्रीमानजीकी ईच्छाधिन आमंत्रित किया था, परंतु वह आमंत्रण हमारे (मेरे) पूर्व जन्मकृत संचित कर्म याने वर्तमान प्रारब्ध भाग्य वह अभाग्य पणेसे

पूर्वजन्मनो भाग हमारो, संच पहेलो, ऐसी मुताबीक ऐसे सच्चे उपदेशानुसार—

आप प. पू. श्रीजी की तरफसे नहि, परन्तु पूर्व खानदेशकी ही कोई अन्य व्यक्तिगत व्यक्तिकी तरफसे पूर्व खानदेशका आमंत्रण रद बातल कर दीया गया. और दिलकी बात दिलमे रह गई. शायद—इसी बात अनुसार क्यों न हो? की इसी वचनको पुरा करने के लिये ही—

आप प. पू. श्रीजी उपर लिखे हुए पत्ते पर मान्यवर श्री साहेबजी के वहाँ पर आकर मिले. दर्शन दिया. आभार—स्विकार पुनः पुनः

आप प. पू. श्रीजीका ऐसा एकाएक अकस्मात दर्शन लाभ (अमुक तारीखको) होने से यह—

आप प. पू. श्रीजीका आत्मवत, आत्मप्रिय जैसे की दिलमें, मनमें, तन बदनमें, बीजली पावर, करंट, जेसा ही कुछ भ्रम सा हो गया था, की झट पट उसने भी सच्ची बात क्या होगी? ईस सवालका जवाब मिलाने के वास्ते जो की–२६ (छब्बीस) रमजान के यात्राळुओकी ग्रामोग्राम जाकर और गली गली, दर, दर घुमकर व्यक्ति व्यक्तिको प्रश्न करना चालु किया तो जवाब मिलता रहा की–हम लोक पिराने (ईमामपुर) यात्रा गये थे. जब तो प. पू. श्री काकाश्रीजी को तबीयत तो अच्छो, भली, चंगी थी. तो फीर ऐसा कैसा हुआ?

तात्पर्य:..:ऐसा कभी भी नही हो सकेगा और आप (पत्र

समाचार) जो कुछ बता रहे है, वह सब गलत तरीका है. कारण स्वप्न कभी कीसीका इस ऐसे हळाहळ कलयुगमें सच्चा कैसा हो सकता है? गलत बात है परन्तु इस समाचार लेखकको कुछ खबर न होने से यह व्यक्ति (विचार लेखक) स्वयं स्वतः खुद ही कुछ यात्रीओंको साथमें लेकर ता...मा...ई. स...मिलि...रोज...को.

आप प. पू. श्रीजी के पवित्र पूज्य पावन भूमि (गुजरात) में अमदाबाद गिरमथा पिराना की कुंवारी धरतीमें आया की..वहा तो संस्थानमें इस कुछ वर्तमान विचार विनिमय लेखक को तो खुब सन्नाटी...अंधेरा..दिलमें तो प्रथम हुआ था की...वहाँ पर भी ओहो गति "गति सा मतिः"

होनहार, जो जैसा करे और जो जितना करे।
भलाईका भला फल है, बुराईका बुरा फल है॥
बुराई जो करेगा सो, बुरा फल क्यु न पावेगा।
भलाई जो करेगा सो, भला फल क्यु न पायेगा॥

प्रभु तेरी लीला अपरमपार है...

प्रभु तेरी अकळीत माया रे...तेरा भेद कीसीने नहि पाया
जो समजा सो हुआ दिवाना...मुरख सो डाह्या.
तुज से मिलिया सबसे बिगडा...यह कैसा रंग रंगाया—=प्रभु०
सत चले सो सबका वैरी...पांखडी शीर छाया,
ज्ञानी की कोई बात न माने...जुठे ने जग भरमाया...प्रभु०

आप प. पू. श्रीजी को याद करते हुए...(अपूर्णांक)

—आपका एक

१ 'एक घटना'

याद है ना आपको वह घटना?

सर वोल्टर रेले लंडन टावरमे कैद थे. उनका ईरादा हुआ कि इस फुरसदका फायदा उठा कर ''संसारका इतिहास'' लिख डाले. तभी खिड़की के नीचे शोर गुल सुनाई दिया. झांक कर देखा तो दंग रह गये. एक आदमी दुसरे आदमी पर घातक प्रहार कर रहा था.

जेलरो से पुछा कि--मामला क्या है? कोई कुछ ठीक ठीक न बता पाया, सर वोल्टर हताश हो गये, अपने आप पर ही झल्लाहट आ गई, बोले–जब मैं सामनेको आंखो देखी घटनाका रहस्य नहीं पता लगा पाया तो अतितका ''विश्व'' का इतिहास क्या खाक लीख पाँउँगा?

मित्रो– फीर भी इतिहास लिखे गये हैं. लिखे जा रहे हैं. लिखे जाते रहेगे. शोध, खोज, श्रम, तटस्थ वैज्ञानीक वृत्ति तथा जीवन और जगतके व्यापारोकी अंतर दृष्टिका जीतना अधिक बल जीस ऐतिहासीक कृतिको मिलेगा, वह उतनी ही अधिक प्रामाणिक होगी.

इसलिये इतिहास के लेखन और अध्ययनका 'प्रयोजन' है 'इतिहास' एक छोर पर उसे भविष्यकी निर्माणकी उपादान सामग्री के रुपमें प्रस्तुत करता है.

इसी प्रकार यह हमारे जातीय और अन्तर्जातीय जीवन समझने सवारने का महान साधन है.

हमारे देशमें 'इतिहास' को इससे भी अधिक व्यापक संदर्भमें देखा गया है.

उससे जीवन धर्म दर्शन और साहित्य के समवेत रुपमें प्रस्तुत किया गया है. इतिहासको एक परिभाषा है.

धर्मार्थी काम मोक्षाणा मुपदेश समन्वितम्.
पूर्ववृतम् कथा युक्तम् इतिहास प्रचक्षते

इतिहास वह है—जीसमें परंपरागत वृत्तांतकी कथा हो, और धर्म अर्थ काम और मोक्ष यह चारों पुरुषार्थका उद्देश हो.

२ मंजिलकी विषयमें

हे मानव मित्र—शास्त्रग्रंथ विलोकन करने से मालुम हुआ है की प्रथमतः यह आवश्यक है कि चलने से पहले हमें अपनी मंजिल के विषयमें खुब सोच लेना चाहिये. बिना उद्देशसे चलना, चलना नहीं है किन्तु भटकना मात्र है. हमें एक समय खुब सोचकर अपने ध्येयको निश्चित कर लेना चाहिये. और उसके उपरांत असे साधनोकी खोज करनी चाहिये जीसमें हमें अपने लक्षको प्राप्त करनेमें सफलता हो. एक बार निश्चय कर लेने पर फिर उसे छोडना नहीं चाहिये. गोरते पडते लक्ष पर बढते जानाही हमारा ध्येय होना चाहिये. संसारमें अनेक महा-पुरुषों के उदाहरण मिलते हैं कि—

जिन्होंने निरंतर चलते रहने के कारण नाम कमाया है. वे अपने लक्षमें तो सफल हुये हैं, यदि हम ध्यानसे देखे तो संपूर्ण जगतका 'इतिहास' एक प्रकार से महान पुरुषों के जीवनका ही 'इतिहास' है. यदी मनुष्यमें आगे बढनेकी लालसा न होती, तो वह कभी भी इतना आगे बढ सका न होता. वस्तुतः मनुष्य जीवनकी सार्थकता और सफलता गति=शिलता में ही है. इसी वास्ते सोच समजकर चलनाः—

रे मानव— इस तुच्छ देह के उपर, जरा नही तू इठलाना 'ध्रू'
,, संसारीक सब मरणशील है, जी में दर्द नहीं लाना–१
,, तू है बीच वडे आर्यों के, जरा नहीं तुम घबडाना–२
,, लोभ,काम,मद,मोह,छोडकर,अपना काम कीये जाना–३
,, कभी प्रेम लेना चकोरका, कभी ध्यान धरना तनका–४
,, पर सुषमामें पडे कंटको, भी तुम भुल नहीं जाना–५
,, कितना भी हो रहा कष्ट, सभी एक साथ सहते जाना–६
,, जीवनकी पतझड बेलामें भी, विचलीत मत तू होना–७
,, तुम पर ही सब निर्भर है, सीखो बढते ही जाना–८

,, इस जगमें कोई बंधु नहीं है,दुश्मन भी तेरा कोई नहीं–९
,, सब व्यवहारोंसे होते हैं, तू सोच समझकर चलना–१०

३ " आत्मनो मोक्षार्थं एवं जगद्धिताय च "

हे मानव मित्रोः—मनुष्य देह नश्वर है. और जगतमें कोई भी चीर स्थायी नहीं. फिर भी जब तक जगत है, तब तक सद्गुणोका आदर सत्कार होता ही रहेगा. इसलिये कि-यह चीर स्थायी है.

प्रतिभा सदां सर्वदां आदरणिय और पूजनिय मनायी जाती है॰ सत्य यह है की प्रतिभावाले मनुष्यों ही प्रकृति–देविके सूक्ष्म चित्त के परिचायक और हर एक मनुष्य को आदर्शरूप है.

प्रतिभामें दैवी शक्ति है, और यह शक्ति समस्त ब्रह्मान्डमें प्रसारीत है.

जीवन–वृत्तान्तकी समालोचना उपर लोक शिक्षणका मुख्य आधार है. करूणाकी प्रतिमूर्ति पुण्यशिला और सत्यमार्ग–दर्शक

"सनातन स्त्वं पुरूषो मतोमें" श्री सतगोर पात्र ब्रह्मा ईन्द्र ईमामशाहजीके जीवन चरित्रमें से बहुत कुछ सिखने लायक मिल सकता है. जिन्होंने विश्व व्यापि प्रेमरूप, चिद्शक्ति का पुरस्कार प्राप्त किया है. उन्होंकी जीवन की समालोचना करना यह महत् पुण्यका काम है.

महापुरूष और नारी रत्न जैसे जन्म ग्रहण करते है. उन्होंमें और साधारण मनुष्यमें एक ऐसा भेद देखनेमें आता है कि वह जो कुछ बोलते है वैसा कर सकते है. उनके बचन यही उनका यथार्थ जीवन है.

सामान्य मनुष्य बहुत बहुत शास्त्रादिकका अध्ययन करके मात्र सारयुक्तः उपदेश ही दे सकते है परन्तु स्वतः का जीवन वह महा पुरूषो जैसे. प्रतिबिम्बित कर सकते नही. जब महापुरूषो तो ऐसे शब्द पांडित्य के बदले कार्य पांडित्य को ही पसन्त करनेवाले होते है.

वह महापुरूषो तो जगतका कल्याण (भला) करने के लिये

तत्पर रहते है. वह मनुष्य जाति के उन्नति के लिये अलग अलग रस्ते निकाल सकते है, और उसी रिति से चलने के लिये लोगोको उपदेश देते है. दूसरे के उपर स्वत: की उपदेश की बराबर सच्चोट छाप पडे इसलिये:-वह स्वयं-स्वतः उसी कहे मुताबिक वर्तन करते है. वह साधारण मनुष्यकी तरह सिर्फ सुख-दुःख के विचारमें और हास्य रूदनमें ही स्वत: का अमूल्य जीवन व्यतित करते नही. जीवन के प्रथम भागमें ही वह स्वजन के दुःख और न्युनताओंको देखकर अत्यन्त दुःखी होते है. और जगतकी भी ऐसी ही अवस्था है कि क्या ? यह समझने के लिये अधिर हो जाते है, और इसीसे उनका विशाल हृदय विशेष जादा विशाल होकर धीरे धीरे समग्र जगतमें व्यापक हो जाता है.

और कोई भी खास करके केंन्द्रमें बन्धे हुवे रहते नहीं वह तो शुद्ध अन्तःकरण से सभी जगतको कल्याणमयी इच्छा भावनाये रखते है और स्वतः से जगतको भिन्न मानते नहीं.

"आत्मनः प्रति कुलानि परेषां न समाचरेत"

अर्थातः--जो आचरण अपने को प्रतिकुल होता है, वह वैसा दुसरे के प्रति आचरण कभी करते नहीं. सत्याचरण विधिका हो वह प्रथम "आत्मनो मोक्षार्थ एवं जगद्धिताय च कर्म करते रहते है.

४ पुरांणांक इतिहास

भुत, वर्तमान और भविष्य इन त्रिकालको समझनेवाले ही समझते है, और उनको ही त्रिकाल-दर्शि कहां जाता है. जो कि श्री. सतपंथ-मार्गदर्शक.

प. पू. श्री. सतगोर पात्र ब्रह्मा ईन्द्र ईमामशाहजो के काव्य सहिता के अनुसार.

ॐ ॐ ॐकार श्री. सर्व प्रथम से उस आद निरंजन निराकार तेज=वही नर-आकार विष्णू वंशावतार पात्र (लायक) अवतार=अव+तार अव=अवनी+तार=तारनेवाला, तारणहार ईस अवनो=भुमि उपर आकर तारनेवाला तारणहार वह

है 'अवतार' उपरसे निचे आना, निर्गुणमे से सगुणमे आना, वैकुंठमे से मानवमेदनी (मृत्युलोक) में आना. परन्तु, "अब जानान्ति मां मूढा, मानुषितनुमा श्रितम्" याने त्रेतायुगी सातवे विष्णू वंशावतार श्री रामचन्द्र प्रभुका अनादर एक धोबीने किया था. और वैसे ही द्वापार युगी आठवे विष्णू वंशावतार श्री कृष्णचन्द्र प्रभुका अनादर शिशुपालादि अन्योन्य मूढमति (दानवो, नराधमो) ने किया था. जैसे वैसे ही आज वर्तमान कलियुगमें भी द्वापार युगी विष्णू वंशावतार पात्र नवमे बुद्धावतार को तो पहिचाना ही नही. तो फिर इस वर्तमान कालियुगी वह आद विष्णू वंश अवतार पात्र 'श्री निष्कलंको नारायण जनार्दन का अनादर करनेवाले मानव-रूपमें घुमनेवाले दानव-नराधम असुर स्वभाववाले, मूढ, मुर्ख बहुत ही है. तो "परित्राणाय साधू नाम्, विनाषायच दुष्कृताम्" उसिमें वह परम परमेश्वरका कुछ दोष अथवा स्वार्थ नही.

निर्दोष और निःस्वार्थ भावसे अनेको उपाधियोंमें पडे हुवे मानवका स्व.कल्याण कैसा होगा? जवाबमें कहे जाता है कि मनुष्यने वह परम परमात्माकी कथा, किर्तन द्वारा उस लिलामयकी लिलाको समझने की चेष्टा करे.

उस लिलामयकी लिलाओंकी कथाये पवित्र से भी पवित्र मानी जाती है. संसारकी उपाधिका झटका (घां) लगा हो, तो तब हरीकथा रूपी मलम पट्टी ही उस उपाधिरूप घाव पर लगाने (बान्धने) के लिये एक महा-दवां के समान रामबाण यही (अवतार पात्रोकी हरीकथाए) लाभदायक है.

द्वापार युगी वह आद बिष्णू वशांवतार पात्र आठवे (८) गिता गायक "कृष्णं वन्दे जगद्गुरू" का आश्वासन है कि:— "संभवामि युगे युगे" यह उद्गार वह परम कृपालू कृष्णं वन्दे जगद्गुरू के है. और इस वैखरी को न समझनेवालेअगर तो समझकर अमलमें न लानेवाले को याने न माननेवालेको ही उस "कृष्णं वन्दे जगद्गुरू" ने

"अवजानन्तिमां मूढा, तनुमाश्रितम्" याने ईस मेरे अवतार धारण किये हुवे, मनुष्य (अवतार) रूप को न समझनेवाले

वही मूढ मुर्ख है । और "विनाशाय च दुष्कृताम्" याने इन अवतार पात्रकी विरोधिओंको ही दुष्कृत्य करनेवाले दुष्ठ, राक्षस नराधम चंडाल है, और आखिरमें इन ऐसे सभिका नाश होनेवाला है.

वह प. पू. दयालू दाता "संभवामि युगे युगे" बचन दिया करते है. और इन विश्वासु मानवो के खातिर हर हमेशा आया करते है. और वाद नंतर भविष्य के लिये फिरसे आश्वासन देकर चले जाते है. और ईस बचन को जो भूल जाता है तो उस (भुले हुवे) को ठिकाणे पर लाने के लिये साक्षात प्रथम वेदाचार्य प. पू. ब्रह्माजी सतगोर पात्र वेदाचार्य वेद वशिष्ठजी, प. पू. श्री सतगोर पात्र वेदाचार्य वेदव्यासजी, परब्रह्मरूपमें आये हैं. और अब भी है. है. और है. परन्तु, वहुत ही अचंबे की बात है, उन (श्रीहरी) के वचन उपर भरोसा, विश्वास न करने वाले के लिये उन (श्रीहरी) का कथन ठीक ही है की—

"उत्क्रामन्त स्थितं वापि, भुंजानवां गुणान्वितं ।
विमूढा नानू पश्यन्ति, पश्यन्ति ज्ञान चक्षुक्षां ॥"

आत्मा शरीर के साथ रहकर, मय ईन्द्रियोंके साथ भोग भोगता हैं, खाना–पिना, चलना–फिरना, सब कुछ कर्म करतां हुवां, तो भी मूढ, मुर्ख उस शरीरधारी आत्माको पहचान सकते नहीं. यह तो जिसको ज्ञानचक्षु है "अध्यात्मज्ञान नित्य त्वम्, तत्व ज्ञानार्थ दर्शनम्" हो वही देख सकता है, वास्ते, यह ऐसा "तत्वज्ञानार्थ दर्शनम्," होना यही जीवनका ध्येय होना चाहिये.

यह जीवनका ध्येय साध्य करने और अवतार पात्रको पहचानने के लिये एवं भक्तिभाव दृढ करने के लिये वेद, शास्त्र, पुराणोका सहारा (सहमत) लेना जरूरी चाहिए. कोई कहेगा की वह वेद, शास्त्र पुराणोका सहारा (सहमत) तो लेना आजभी प्रचलित है. क्या आज वर्तमान समयमें लोक वेदशास्त्र पुराणोंको नहीं पढते पढाते? परन्तु—

हे मेरे मानव मित्रो वेदशास्त्र पुराणोका अध्ययन पठन–पाठण तो दुनिया लोग आज भी बहुत करते और करवाते हैं. पण उसीमें विशेष तो ऐसा ही भाव भरा हुवा है कि—जो

उनकी आचरणसे विदित होता है वह कोनसा? और कैसा? जवाबमें वह अैसा है देखो सुनो,

"अशास्त्र विहितं घोरं, तप्यंन्ते ये तपोजनः ।
"दंभ, अहंकार स युक्त, काम राग, बलान्वितम् ॥

अैसा यह तप रखोळीकी अन्दर छुपे हुवे अग्नि के समान है. इसलिये काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आदि द्वेश भावनाए बढती रहती हैं.

ऐसे तपमें जबतक तप करो, तबतक योगिराज जैसे और तपकी सिद्धि होते ही असुरी स्वभाव छलकने लग जाते हैं. मानो के— हिरण्य, रावण, कंस

हिरण्यकश्यप तपमें, बलमें, सम्पत्ति और सत्तामें अजोड था और उसीने वैर घटाने के लिये नहीं, परन्तु, वैर बढाने के लिये तपादर किया था.

वेद, शास्त्र, पुराणो और भाविक सन्त, महन्त साधुओंका कहना है की जप. तप, तिर्थ, व्रतादि के आचरणको ही धर्मांग (आचारे प्रभवो ध्दर्म) अंग कहा गया है, यह सब धर्म के अंग याने क्रोध के बदले अक्रोध, अपकार के बदले उपकार, दंड के बदले क्षमादि कहे गये है परन्तु होना चाहिए. शास्त्रोक्त अशास्त्र नहीं. इसी वास्ते क्या कहा है कि—

जप, तप, तिर्थ, व्रत, उपवासी (पण) मुळ न जाने सो अन्धाजी,
वेदशास्त्र कहे नेम करवुं सही...(सतपन्थ, ज्ञान, साहित्य.)

आज कलके तप तो बहु धा. श्री सतपन्थ शास्त्र के विरोध (विरोधाभावसे) असुरी भावसे भरे पडे हुवे दीख पडते हैं. अच्छा अब अवतारपात्र की कथा लेंगे.

नमोस्तू ते व्यास विशाल बुद्धेः—यह विशाल बुद्धिवालेने वेदो के विभाग करके सुन्दर एवं विविध रचना करके अलग अलग वृक्षोकी डालियो जैसी. मानवो को अलग अलग (रूचि क्याद के लिये) भावयुक्त विशेष ख्याल रखकर सामान्य जनतामें उच्च शिक्षाका संस्कार होने के कारण अढराह पुराण लिखे है.

वन्दे महापुरुष ते चरणारविंदम् ॥ १ ॥
ततः कलौ स प्रवृत्ते, समोहायं सुरद्विषाम् ।
बुद्धो नाम्नाऽजनसुतः किकेटषु भविष्यति ॥

अर्थातः--किकट देशमें असुरोंको मोह निर्माण करनेवाला बुद्ध नामे भगवान अवतरेगा ऐसा प. पू. श्री सतगोरपात्र ब्रह्मा वेद व्यासजीने लिखां, तथा प. पू. श्री शुकमुनिजीने राजा परिक्षीति प्रति कहां, वैसे ही नैमिषारण्यमें अठयासि सहस्त्र ऋषियों के सन्मुख सुतपुराणीकी तरफसे प्रति पादित किया गया, और इसी तत्व को उस वखतमें सभी ने बगैर 'ओपरेशन' स्वीकार किया. फिर भी अपने आप. (श्री सतपन्थ) नास्तिकोने उन (प. पू श्री वेदव्यासजी को नास्तिक कहकर श्री बुद्धावतार को मानना नहीं, ऐसा कडी कोट ठोस दिया.

ब्राह्मण पंडीत पुराणोओंको पुछना की वेदव्यासजीको मानते हो? तो कहेंगे कि जी...हां. क्यों नहीं मानेगे ? नमोस्तूते व्यास विशालबुद्धे, ब्राह्मणोको पुछना के क्या आप ब्राह्मण, वेदव्यास-जीके पुराणोको मानते हो? तो कहेंगे की जी...हां परन्तु इसीमें से इतना ही मानने को तयार नहीं. कारण? स्वभाव इस भाव (स्वभाव) को ग्रहण करनेवाला एक मात्र गुण है. स्वभावकी ग्रहण गुणोसे होती है. सत, रज और तम, यह तिनो ही गुण स्वभावको ग्रहते है, इसीमें विकृति आती है. तब प्रथम स्वार्थ आकर खड़ा होता है. एव इस स्वार्थका धक्का पहुँचते (लगते) ही, इस स्वार्थ के उपर खड़ा रहनेवाला गिरने लग जाता है. बाद क्या? बाद. नंतर क्या? बादमे जमिन दोस्त ही है.

(१) ब्राह्मण=ब्रह्मको जाननेकी ताकाद रखनेवाला भडवीर "ब्रह्म जाणाति ते ब्राह्मण:" ब्राह्मण=ब्रह्म तेज छलकनेवाला, महासागर. शमो, दम, शौचका इजारदार.

(२) ब्राह्मण=निर्ममो, निरहंकारो, निस्पृहि एवं निपरिग्रह ऐसा ब्राह्मण इसी जगतका मालीकी हक वह परम परमेश्वरकी तरफसे वंश परंपरांगतको भोगने के लिये अधिकार लेकर आये थे,

" यद् किञ्चित जगत्याम जगत " यह सब कुछ ब्राह्मणोका ही था. परन्तु, कुदरत के पास जो कायदा है वह बहुत ही अच्छा है. कि नालायकको वारसा हक्क नहीं मिलता

था ब्राह्मण रावण, जाने दुनिया सारी परन्तु,
मद्य, मांस एवं परस्त्रो के कारण. राक्षस हुवां था भारी,

यह रावण तपोधारी होते हुवे भी ब्रह्म के बदले ब्रह्म राक्षस कहला गया.

राजपुत्र गादीका वारस (हक) दार होता हुवा भी नालायक निकले तो ? गादी मिल नहि सकती. और मिल सकती है तो भोग नही सकता. यह है कुदरतका न्याय वाहवा रे वाहवा.

ब्राह्मण=उदार भावी, ब्राह्मण याने विशाल दृष्टिवाला. परन्तु उदार भाव घिस गये और विशाल दृष्टि लुप्त हो गई. और " आत्मवत् सर्व भूतेषु " की पहिचान मिट गयी यज्ञ को निमित्ते हिंसामें प्रवृत्त हो गये. और ब्रह्म तेज मिट गया. तब श्री बुद्ध भगवान आय पहुँचे और जगतमें प्रवृत्त होता हुवा हिंसा धर्मकी जड़ निकाल कर जगतको सुखी करने के वास्ते पंडु पुत्र युधिष्ठिर उर्फे धर्मराजको बोध करके. श्री सनातनार्य धर्म मानव-सेवा धर्म मार्ग याने मानवता भरा हुवा श्री सतपन्थका सम्बोधन किया. परन्तु फिर भी ब्राह्मण देवताओंने स्वयं-स्वार्थ को छीनना बन्द और सत्यको सहन न करके और परम पूज्य श्री भगवान वेदव्यासजी के सामने भी वाद विवाद करके, उनकी बुद्धिको नास्तिक कहकर निन्द्या की. परन्तु, ब्राह्मणत्व भरा हुवा, उदार भावी श्री बुद्ध भगवान अवतार पात्र को हिन्दु सनातनार्य वर्त के धर्म शास्त्रांगमें समभावो किया होता तो आज का भारत कुछ जुदाही (दुसरा ही) मालुम होता परन्तु.

हे प्रभू तेरी लीला अपरंपार है.

श्री. सतपंथीयों ! जब नववा (९) अवतार पात्र बुद्धावतारका कोई इतिहास कोई अन्योन्य जगह पर प्रगट मालुम नही पडता और उनको नामसे कथा-किर्तन नामका जयघोष सुनाई नही

देता, तो फिर इस वर्तमान कलीयुगी भगवान श्री निष्कलंकी नारायण जनार्दनको एक श्री सतपन्थ मान्यवर वगैर कोन उनकी नामसे भजन, पूजन, अर्चन ध्यान धारणा विगेरे करेगा ?

बोलो—श्री निष्कलंकी नारायण देवकी जय.

५ सर्व. स्व. धर्मोन्नति के लिये एक विनम्र प्रस्ताव:—

प्रथम विषय—सनातन धर्मावलंबी एवं आर्य समाजीओंमें मत भेद है. हर वखत शास्त्रार्थ भी किये गये. लेखबद्ध प्रश्नोत्तर द्वारा भी आंदोलन हुवा. परन्तु आज दिन तक सन्तोषकारक कोई निर्णय हुवा नहीं. दोनो दल, पक्ष वेदानुयायी है. दोनो पक्ष वेदको समझने के लिये ब्राह्मण ग्रन्थोसे लेकर, श्रुति, स्मृति, शास्त्र, पुराणो, इतिहास, रामायण, महाभारत ई० ग्रन्थोंकी सहायता लेते है. तद्वत ईस ग्रन्थोसे प्रभावित होते है. परन्तु शोकको बात है कि, कितने एक विषयोंमें उन्होमें वाद-विवाद चलता आ रहा है. जीससे हिन्दु जातिका वातावरण कलुषित रहता है.

(२) चीरकालसे यह दास ईस विषय उपर मनन और विचारकर रहा था अनेक पुस्तक, अनेक ग्रन्थोंका अवलोकन किया, इसीसे जो विचार मेरे दिलमें उत्पन्न हुवे है, वह मै इन दोनो मतावलंबीयोंके सन्मुख रखता हूँ. और...

(३) आशा रखता हूं के वह पक्षपात छोडकर ठंडे दिलसे इसके उपर विचार करे, और जो भाव ईनके मनमें मेरे इस लेखसे उत्पन्न होंगे वह प्रगट करे. जिससे पक्षपाती मनुष्यको खबर पडे की सत्य क्या है.

(४) ऐसा करनेका मेरा उद्देश यह है कि—सनातन धर्मी और आर्य समाज भाईयो दोनो मिलकर स्वतः के मत-भेदोको वेदादि सच्छास्त्रो द्वारा निर्णय करके एक सिद्धान्त उपर आवे.

(५) मेरा हार्दिक भाव यही है कि, अब अपनने मिल जाना चाहिये. वाद-विवादका अब समय नहि. जो जो सिद्धान्त उपर इनका मतभेद है इसी लभि पर मैने यथाशक्ति विचार किया

है, और अब यथावकाश इस विचारों को "वैदिक" धर्म द्वारा प्रकाशित करके आशा रखता हूं के—

(६) मेरे से अधिक विद्वान बन्धुओं, इसके उपर अधिक प्रकाश डालनेकी कृपा करे.

(७) यह काम निःसन्देह विद्वानोका ही है. मेरे जैसे तुच्छ बुद्धि अल्पज्ञ पुरूषों के लिये यह, साहस करना हास्यास्पद बन सकता है. जैसा—

(८) एक बुंन्दकी देखा देखी समस्त बादल खेतमें गिर गया था, तैसी मेरे जैसे सामान्य जनकी त्रुटियो निरीक्षण कर (देखकर) कोई समर्थ विद्वान महानुभव स्वतः को लेखणी उठाने की कृपा करेंगे, ऐसा समझकर यह तुच्छ बुद्धिदास यह साहस करने वास्ते उद्धत होता है.

मनुष्य जीवनका अध्ययन करने से समजमें आता है की प्रत्येक मनुष्यकी अन्दर कुछ न कुछ भाव प्रधानपणे विद्यामान होता है, यही भाव इसके समग्र जीवनको बनानेवाला एवं चलानेवाला होता है, अनेक समान भाववाले समूह (संघ-संघठण) का नामजाति है. याने जातिमें भी कोई भाव विशेष रुपसे विद्यमान होते है, जो यह इस तमाम जातिका जीवनाधार होता है, जिस लोगोंने विविध जातियोंका इतिहास और उनकी संस्कृतिकी समालोचना करी है, वह कहते है कीः-पुराने समयमें मिश्र देश वासियों के जीवनमें कर्म-काण्डको, फारसि जीवनमें पवित्रताको, केल्डीयन के जीवनमें भौतिक विज्ञानको, (सायन्स) युनानियों के जीवनमें सौन्दर्य को और रोम निवासियोंके जीवनमें, नियम को प्रधान स्थान था इसी रीति से जिन्होंने आर्य (हिन्दु) जाति के पुरातन जीवन उपर समालोचना करी है वह कह सकते है कीः—यह जाति सदा धर्मप्रधान रही है.

(१०) (अ) यह नियम भी सर्व सामान्य है कीः-जो भाव (फिलिंग ओर झेलीमेन्ट) जातिमे प्रधान होते है, इसीसे प्रेरित होकर, वह जाति स्वयंका साहित्य, स्वतः का नित्य-नैमित्तिक

कर्म, स्वतः का दैनिक व्यवहार अनेक संस्थाओ (इन्स्टि ट्युशन) अथवा रिवाजों को स्वयंकी अन्दर स्थापित करते है. और उन्हीको सजीवन रखते है, यह भाव समझो की उनके जातिय जीवनका प्राण है. यह भाव गया और यह जातिका स्वरूप भी बदल गया समझो, अगर ऐसा कहो के यह भावना निकलते ही, जातिका जीवन भी निकल जाता है.

जो नेताओ कितनेक रिवाजोको इनके अन्तरिय भावोंको समझे वगैर बुरा समझकर दूर करना चाहते है. इनके लिये उचित है कीः—वह इस नियम को ध्यानमें रखे. प्रथम इन्होंने समझना चाहिये की इस रीवाजोकी अन्दर कोनसा भाव काम कर रहा है इनके जातिय जीवन उपर क्या प्रभाव था और अब क्या हो रहा है. ऐसी शोध करे वगैर जो नेता दुसरी जातियोंकी देखा देखी प्राचिनकालसे चले आये हुवे कुछ रिवाजो को उखाडे गा तो, संम्भव है की यह जातिय जीवन मंदिरकी आधार शिलाको उखाड कर जातिको नाश के पथ पर डाल देगा.

और विशेष यह भी देखनेमें आया है कीः—जहां तक इस रिवाजोंको वह उसी भाव के साथ सिधा (डायरेक्ट) सम्बन्ध रहता है. तहां तक यह रिवाज वह जाति के जोवनमें नये नये उद्वेग (इम्फल्स)भरा करता हैं. और जब कालकी चक्रमें पडने से रिवाजे और भावो के सम्बन्धको लोक भुल जाते है. तब रिवाज निर्जिव कलेवर ही बन जाता है. उसी समय ये रिवाज के अन्तर्गत भाव को समझकर उसीको पुनर्जिवित करना चाहिए. अगर ऐसे इसका सर्व था त्याग करना चाहिए. यह एक विकट समस्या है. जिसका समाधान कोई धर्म मर्मज्ञ आर्ष बुद्धि ही कर सकेगी. अन्य नही.

(१२) अब कदाच जोस किसी पुरुष के जीव्हाकी अन्दर कुछ दोष हो तो सम्भव है किः—इसिको इसीसे मिरचीका स्वाद नही आयगा, और जीस किसीके नाकमें कुछ दोष होतो. इसीको केवडेकी सुगन्धि नही आयगी, परन्तु मिरची और केवडा इसीमें

जरूर मौजूद है. इसी प्रमाण से अपनी इन्द्रिय विशेष बहिर्मुख होनेसे सच्छास्त्रका अन्तरंग गुह्यतम सुक्ष्मसे भी सुक्ष्म ऐसा ज्ञान संपादन करना मुश्किल जैसा है... फिर भी उपनिषदोंने इस ज्ञान समस्या उपर बहुत ही प्रकाशमय विदित उपाय बताये है. परन्तु शोकको बात है कोः—मनुष्य इसीका मनन–स्वाध्याय–निदिध्यासन, नही करता है.

वैदिकधर्म, सनातनधर्म, आर्यधर्म यह धर्म कोई एक व्यक्तिगत वैसे ही एक जातिगत धर्म नही है, यह एक सार्वभौम धर्म है. यह एक छोटासा (किंगडम) नही है. बल्के यह एक चक्रवर्ति राज्य (वेस्ट इम्पिरी) है. इसीमें कोई कुछ पुरुष विशेष के दृष्टिकोणको ही प्रधानत्व नही, इसीमें सभी प्रकार के दृष्टिकोणका समन्वित (समावेश) होता है. यह एक छोटोसी पाठशाला नही है. बल्के एक महान विश्वविद्यालय (युनिवर्सिटी) हैं. यह कुछ विचार विशेषका ही संकुचित प्रवाह नही परन्तु उलट अनेक विचार प्रवाहओंका अन्तिम समावेशका अगाध, अथाग अपरिमित पारावार सागर है. 'सत्य' सत्य यह एक आत्मिक जीवनकी अनादि अनन्तधाराका प्रवाहको गंगा है. जो किः—सतत आगे आगे ही बह रही है. जीसकी शाखाये विविध प्रकार से छोटी–बडी, लम्बी–चौडी अनेक रूपमें घूम रही है. और जो गंगा अन्तमें स्वतः की सभी शाखाओंको समेट करके अनन्त, अनादि, शास्वत, ज्ञानानन्द, सागरमें समाप्त होती है.

जो आर्य–समाज वेद के यह महत्वपूर्ण विस्तारको न समझे और स्वयंकी कार्य प्रणालोको यही तंग दायरेमें बन्ध रखना चाहे और कहे कीः—जो वेद मंत्रका भाव (इन्टर प्रेक्षेसव) हम आर्य समाजी ही समझते है. अन्य नहीं. और हम जो समझते है उसी दायरेमें से बाहर जानेको हम नही इच्छ ते तो निःसन्देह हमको विश्वास है किः—वह आर्य समाज को, सार्वभौम धर्म बनाने की इच्छा नही रखते. वह इसको आगामी उन्नति के रस्तेमें बाधा डालते है.

हमारी हार्दिक इच्छा यही है कि:—कोई भी रितीसे आर्य समाज और सनातन धर्म आपसमें प्रेमपूर्वक मिलकर स्वतः के मतभेदोंको निर्णय करके एक हो जाये. और जब तक अैसा शुभ अवसर नही आयेगा तभी तक मतभेदोंको वड़ा (विशाल) न करते हुवे इसीको कुछ न कुछ संकुचित करते जावो.

शेवट—वह परमात्माको हमारी कर जोड़कर शि. सा. न. वि. चि. वि. पूर्वक प्रार्थना है कीः—वह उनकी ही अपार कृपासे हमारी सभी को आखोंमें से पक्षपात की बिमारीको दूर करे. और हम सभी परस्पर भावयन्तः भ्रातृभावसे प्रेमपूर्वक हमारी जीवन-यात्राको पूर्ण करनेमें समर्थ बने. (वेदामृत)

६ गती–शिलता

हमारा गतीशील जीवन और उसका सनातन रहस्य

युगो युगो से मानव बुद्धि जीवन के वास्तविक रहस्यकी जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील रही है. ऋषि–मुनियो और पीर पैगम्बरोने जीवनको खोजा, फल स्वरुप उन्होंने जो कुछ पाया उसीसे मानव समाजका "मार्गदर्शन" किया. कितनोने जीवन के रहस्य को समझा. आत्मसाथ किया, किन्तु मानव समाज के लिये आज भी यह प्रश्न उतना ही जटील एवं रहस्यमय बना हुआ है. जीवन क्या है?

इस प्रश्नका समाधान करने के लियेः—प्रचुर साहित्य दर्शनशास्त्र आदि भरे पडे है. जिन्होंने इसका उत्तर प्राप्त किया, वे आज भी अपने अनुभव सिद्ध तथ्योंसे इसी प्रश्नका समाधान कर रहे है.

किन्तु जन साधारण के लियेः—यह प्रश्न उतना ही टेढा एवं रहस्यमय प्रतित हो रहा है.

जीवनकी एक कठीणतम ग्रन्थि है, किन्तु जीतनी कठीण है उतनी ही सरल भी हैं.

जीवनका एक और रहस्य है, वह महान रहस्य यह कि इसे जीस दृष्टिकोण से देखो, वह उसी रुपमें प्रगट हो जाता

है। जीसका जैसा दृष्टिकोण रहा, उसी के लीये जीवन वैसा ही दीखाई दिया.

उदाहरणार्थः - किसीने उसीको मिथ्या, नश्वर, भोगकाल समझा और कहा "ब्रह्मसत्यं, जगत मिथ्या" दार्शनिकोने देखा. जीवन प्रज्ञास्वरुप है. भक्तोने जीवन को भक्ति के अनन्त आनंद सागरमें सराबोर कर दिया. किसीने उसे बडी बडी ऋषि-मुनियोका सिद्धियोका खजाना देखा और वह खजाना ही समझे. किसीने इसे वसुंधरा पर सुख, आनंद, मौज, ऐश्वर्यभोग, शालिनता उपभोगका साधन मांग लिया, कइयोने अपनी समन्वय बुद्धिसे इसमें उसमेसे कई बातोका समन्वय भी किया. जीवन एक स्वतंत्र इकाई नहीं वरन्, विश्वकी प्राणधाराका अंग है. जिसका उद्देश है. निरन्तर की गति-शीलता सतत प्रवाह, इस अनन्त प्रवाह गति-शील प्राणधाराका कभी क्षय नही हो पाता, इसीका स्वभाव है प्राणवान रहना, आगे बढना.

कीसी भी पदार्थ तत्व आदिकी गति-शीलता प्रवाह धाराको कायम रखने के लिये आवश्यक है कि: - एक स्थान पर अपने आपको दुसरे स्थान के लिये उत्सर्ग किया जाय. साधारण शब्दोंमें अपने अस्तित्व के एक अंगको खोकर (गलाकर) दुसरे में मिलाया जाय. अपने स्थानको दुसरे के लिये छोडकर आगे बढा जाय. इसीसे प्रवाह स्थिर रह सकता है. यदि नदीमें बहने वाले प्राणिका कोई अंश अपने स्थानको छोडकर आगे नही बढे और पिछे से आनेवाले के लीये स्थान न छोडे तो गति अवरुद्ध हो जायगी. प्रवाह बंध हो जायगा. अतः प्रवाह को जारी (कायम) रखने के लिये आवश्यक है कि स्वयं सुखको दुसरे के लिये मिटाया जाय, अपने स्थानको दुसरे के लिये छोडा जाय.

तात्पर्य यह है कि:—अपने आपका उत्सर्ग करने पर ही गति-शीलता कायम रह सकती है. अर्थात् गतिमय होने के लिये अपने आपको देने के लिये तैयार करना (होना) आवश्यक है. गति ही इस सृष्टिकी प्राणधाराका मूल उद्देश यही है.

सुक्ष्म दृष्टिसे देखने पर पता चलेगा कि:—सृष्टिका प्रत्येक पदार्थ गतिशील और दुसरे के लिये अपने आपको

उत्सर्ग कर उसे अपना स्थान देता है. बीज अपना अस्तित्व मिटाकर वृक्ष बनता है, वृक्ष बनकर अपना सौन्दर्य फल-फूल दुसरो को उत्सर्ग करता है, अन्तमें अपनी प्राणशक्ति अनेको बीज को प्रदान कर अपने आपको मिटा देता है, प्रकृतिका ठीक यही सिद्धान्त मनुष्य जीवन पर लागु होता है. जींस जीवनमें यह परमपरा "पूर्णरुपेण" प्रतिष्ठित है ओही विश्वात्मा है अनंत परम्पराका अंग है (जो इसी के विपरीत है जो संकिर्ण है, जो क्षण भुंगुर, जो विनाश-शील है. जो अस्तित्व रहीत है, ओही मिथ्या है.)

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है की:—आखिर इस रहस्य को कैसे हृदयांगम् किया जाय? कैसे आत्म साथ किया जाय? जिसके दिव्य आ लोकसे सुखद एवं अमृत किरणो से जीवन अनन्त आनन्द के सागरमें लहरा उठे. और यह भी निश्चय है कि:—जब तक उक्तप्रवाह-धारा, गति-शीलताका अर्थ समजमें नही आयेगा, तब तक जीवनका सही उद्देश कभी भी प्राप्त होने वाला नही है.

यह प्रवाह इतना स्पष्ट और सरल है कि:—साधारण व्यक्ति भी उसे जान-पहिचान सकतो है. गमहिन भी देख सकता है. और संसार के सारे ग्रन्थो को पढकर भी विशाल शास्त्र-बुद्धि से यह समझमें नही आता.

ईस के लिये एक मात्र आस्था-निष्ठाकी आवश्यकता है. दृढ आस्था और निष्ठा भी जब पैदा होती है. जब मनुष्य में ईसीके प्रति विश्वास की गहरी जड जम जाती है. एक विश्वासके लिए : आवश्यक है कि उसका कोई न कोई आधार अवश्य मिले. उसके लिये जैसा कि—पहले व्यक्त किया जा चुका है मूक प्रकृतिसे उसका उत्तर प्राप्त किया जा चुका है, किया जा सकता है, ग्रह नक्षत्र की गति-शीलता, नदीका सतत् प्रवाह, ऋतुओंका क्रमशः बदलना, पेड-पौधोका पैदा होना फल-फुलका होना. अपनी प्राणशक्ति को दूसरे बीजोमे प्रतिष्ठापित करके अपने आपको उत्सर्ग करना, आदिसे इसकी जानकारीकी जा सकती है.

प्रकृतिकी प्रत्येक वस्तु अपने को दूसरे के लिये उत्सर्ग कर रही है. इस प्रकार उस संदेश को सुनकर विश्वकी उस गति-शील अनन्त अखंड प्राणधारा परम्पराके प्रति दृढ आस्था पैदा करनी अनिवार्य है.

आस्थावान व्यक्ति जीवनके रहस्य को अवश्य समझ जायगा और क्रियात्मक क्षेत्रमे उसको आत्मसाथ करेगा. आस्थावान व्यक्तिके समक्ष जीवन स्वतः अपने रहस्यको ठीक उसी तरह प्रगट कर देता है. अपने परदे अपने हाथसे खोल देता है जैसे कि—प्रातःकाल होते ही सूर्य अपने उज्वल धवल प्रकाशसे विश्वको आलोकित कर देता है. मनुष्यभी इसी प्रकार अपनेमे स्थित अमृत भंडारसे अपनी प्यास बुझाता है.

अपने विराट स्वरूपकी अनुभुति और उस अखंड प्राण परम्परासे सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये आवश्यक है कि—मनुष्य अपने जीवनको विश्व जीवनकी एक ईकाई अपने व्यक्तिगत व्यक्तित्वको विश्व मानवकी एक अभि छीन्न रूपमें अनुभव करे, किन्तु यह अनुभुति किसी बाह्य साधनसे प्राप्त होना असंभव है. बाह्यज्ञान उपकिरणोकी सिमा मात्र है. सिमित वस्तुसे अनन्तकी अनुभुति नही हो सकती. उक्त अनुभुति तर्क वितर्क अथवा शास्त्रोका बोझा लाद लेने पर नही हो सकती. इसीका आधार तो खास तोरपर अनुभव ही है. जीवनका अर्थ अनुभव गम्य है. जीवन अपने व्यवहारसे अपने अनुभवसे ही अपने स्वरूपको प्राप्त होता है.

सृष्टिके उक्त रहस्यको, प्रकृतिके मूक सन्देशको ध्यानमे रखते हुए अपना दृष्टिकोण बदल दीजीए, आपका जीवन अखंड विश्वप्राण परमपरासे बंधा हुआ अनुभव कीजोये, आपके पास आज जो कुछ भी है, वह कितनी मनुष्योकी देन है ? की आप एक नही, अनेकों जीवनमे भी यह सबकुछ दे सकते हैं, जो आपने अबतक प्राप्त कर लिया है. शास्त्रका आदेश है कि:—"अण्ड" ही ब्रह्मांडकी ईकाई है. फिर विश्वमेंसे लेते ही लेते रहने से काम नही चलेगा. देनेका काम जारी रखना आवश्यक है. जो जीवन आपको प्राप्त हुवा है. वह लेकर रख-

लेने के लिये नही, वरन् उसे अनेको गुणा बढाकर देते रहनेके लिये है. दुसरे दिपोको यह ज्योति सोपने के लिये ही वह तुम्हारे पास व अखंड रूपमें जलती रहनी चाहिये. धन्य है वह जो जीवनको प्राप्त कर उसिका समर्पण दुसरोको करते हैं. अपने आपको उत्सर्ग करनेवाला ही वास्तव मे जीवनको चाहता है, मनुष्यके समक्ष जीवन अपना रहस्य स्वतः प्रगट करता है. इसिलिये पूर्ण समर्पण करना ही जीवनका वास्तविक रहस्य है. हमारे पूर्वजोने ऋषि-मुनियोने इस रहस्यको समझकर ही जीवनको "यज्ञे वै पुरुषा...की उक्ति प्रदान कि थी. इसमें कोई संदेह नही" जीवन... विश्वयज्ञकी एक विनम्र आहुति मात्र है.

चित्तकी आहुति जो करे, ब्रह्माग्नी के माहो।
अग्नी होत्री ओही जानीए, और आहुति दुसरी नाही ॥

७ आज सह—चित्त की आवश्यकता :
ईश्वरने मनुष्यको वाणी दी है, भाषा नहीं

श्री सन्त प्रवरका मार्मिक उद्‌बोधन बुधवार ता. २-८-६०

श्री सन्त विनोबाजीने समस्त मराठी भाषी जनताको आवाहन किया है किः—वे दूध की शकर बने, अपनी बातको स्पष्ट करते हुए, आपने कहा किः—जीस प्रकार हम दूधमे शकर मिलाने पर भी उसे दुध ही कहते हैं परन्तु, असलमे उसीमें स्वाद तो शकरका हुवा करता है, ठीक उसी प्रकार आप सेवा करें, तब ही आपकी हाथोसे स्वच्छ-सुन्दर धर्मका उदया होगा. ईस अवसर पर आपने "सह चित्त" सूत्रका मार्मिक विश्लेषण किया.

श्री सन्त प्रवरने कहा कीः—मातृभाषामे बोलनेका प्रसंग मुझे आज डेढ १॥ वर्ष बाद आ रहा है. क्यो कि मातृ-देवता मधूर है, और जब पास-पडोसमे अन्य भाषा बोली जाती है. तब इसकी मधुरता विशेष प्रतित मालुम होती है. आपको आपकी भाषाकी संबंधमे चिन्ता है. परन्तु, मुझे इसका कोई डर नही है. ज्ञानदेवकी यह भाषा है. यह अथक है (वैसे, ही

आकथ भी) है. इसके लिये व्यवस्था हो या न हो इसिका बोलवाला सुनिश्चित है. ज्ञानदेवजीने कहा है कि:—"ऐसी अक्षरे रसिके मेळविन...और इसिलिये उन्होंने अमृत की गंगा निर्माण की है. श्रीमद्भगवत-गिताका रूप सभी को सुलभ स्पष्ट हो इसि लिये ज्ञानदेवजीने संस्कृतिक वाणी को मराठीमे ज्ञानेश्वरीके रूपमें सुन्दरता पूर्वक ग्रन्थीत किया और ज्ञानेश्वरी मराठीका धर्म-ग्रन्थ बना, कि:—बहु नाही केले धर्म किर्तन, सिद्दिस नेले. स्वयं ज्ञानदेवने इसका वर्णन किया है.

मुसलमानोका धर्म-ग्रन्थ 'कुरान' है. जिसमें कहा गया है कि:—हर एक जमातके लिये अल्लाह (परमात्मा) ने दूत भेजा है, यदि ऐसाही है तो.. मैं सोचता हूँ: मराठी भाषाओंके लियेः यह दुत कौन है ? और इसका मुझे पक्का यकिन है कि यह संदेश वाहक ज्ञानेश्वर है. और ज्ञानेश्वरी ग्रन्थ. धर्म-ग्रन्थ है. "फल और त्याग" की यह भाषा कहीं भी दबाई नहीं जा सकती, न वह थक सकती. असम्भव है. आप अपने हर मकानमे इस ज्ञानेश्वरी की शाखा खोले. इस प्रदेशमें आपने सेवा की है, परन्तु उसीमे सत्ता थी.

श्री अहिल्या देवी साहसी हुई. जिसने सत्ता और सेवा का समन्वय किया, दोनोंको एकरूप किया. परंतु आज हमारा हृदय संकुचित हो गया है.

श्री अहिल्यादेवीने उस जमानेमे विशाल हृदय के साथ देशकी सेवाकी आजहम सत्ता को छोड दे. और सेवामे लग जाय. मराठी भाषोओंके संबंधमे जनताके मुह यह उद्‌गार निकलने चाहिये कि:—"मराठी भाषिक" सेवा करना जानते हैं. उन्हें मेवा नही चाहिये, नाम नहो चाहिये, चाहिये सेवा.

आप मराठी भाषिको दुधकी शकर बने, नाम दुधका ही हो. परन्तु उसका स्वाद शकरका हो, उसीकी मिठास शकरकी हो, यदि ऐसा किया, तो ही आपकी हाथो स्वच्छ सुन्दर धर्म का उदय होगा. सत्य एक ही है उसे अनेक बिध नाम दिये है. वस्तु एकही है, केवल भाषाका झगडा है. मनुष्यको ईश्वरने

भाषा नही दी. वाणी दी है. आप भाषाका प्रेम रखे अभिमान नही.

आप अच्छी हिन्दी सिखे. मराठीमे आप बोलते ही है. आप हिन्दी सिखेंगे तो दो भाषाओंका ज्ञान होगा. शक्ति बढेगी. विशेषः-आपने शकर सा बनना चाहिये. प. पू. श्री विनोबाजीने आगे कहाँकि-आप सभीको "सह-चित्त, होना चाहिये. यह सही है की "पिन्डे पिन्डे मतैर्भिन्न" परन्तु फिरभी यही हमारा "सह-चित्त" बना तो ही हमारे प्यारे भारतका पार लगेगा, दुनिया बनी रहेगी. सह जीवन का सह अस्तित्वका जो प्रयास आज दुनियामे चल रहा है. वह योग्य दिशाकी ओर पहलु है. आज रूस और अमेरिका यही भाषा बोलने लगे हैं. बालक जब बोलने लगता है, तब आशा की जाती है कीः वह उसके अनुसार आगे चलेगा भी, और इसि लिये मैं इसे बहुत अच्छा प्रारंभ समजता हूँ. अब इसमें वृद्धि होने की आवश्यकता है. हमने अपने देशमे पुराने जमाने "सह अस्तित्व" का प्रयोग किया. इसि लिये जातियोंका निर्माण हुवा परन्तु आज की हमारी आवश्यकता सह-चित्त की है. यह कोई नयी मांग नही है दश (१०) हजार वर्ष पूर्व वेदोमे यह मांग की गई है.

श्री. पू. प्रवरजीने कहा किः—आज हमे दो बातों की नितान्त आवश्यकता है, पहली बात यह किः—तत्वतः हम सब एक हैं. इस भावनाका हमारेमे निष्ठा पूर्वक प्रादुर्भाव होना चाहिये. हमने मूलतः इस बातको अपने आपमे पूर्णतः समालेना चाहिये. इसे मै 'अद्वैतवाद" कहता हूँ. और दुसरी बात हमारा कोई समान कार्यक्रम होना चाहिये. एक अैसा कार्यक्रम किः—जिसके प्रति किसिका भी मतभेद न हो. वह (यह) अैसा कार्यक्रम हमारे आचरण के लियेः-बनान चाहिये किः-जिसके अनुसार हम काम मे लग जाय यही मेरा प्रयास है.

पू. श्री प्रवरजीने धर्मकी परिभाषा करते हुये कहा किः जो धर्म होता है, वह सबका होना चाहिये किसी अेकका वह धर्म नही है. परन्तु ख्याल रखने योग्य सुझावः "तस्माच्छास्त्र प्रमाणं" कृष्णं वन्दे जगदुरु, वचनानुसार, हो फक्त.

८ पू श्री. प्रवर सन्त विनोबाजीका ज्ञानयोग

पू. श्री प्रवर सन्त विनोबाजोने ज्ञान योगकी साधना करी है वह केवल बुद्धिको कसोटी पर चढाने के लिये नहो, परन्तु धर्मको जीवनमें उतारने पुरती ही. ज्ञान साधना उन्होंने करी है. दाखला तरीकेः—सन्त विनोबाजी २१ इकिस भाषाको समजते हैं. फिर भो मै इतनी सारी भाषाए सिखा हूं, ऐसा सिक्का मारने के लिये, इतनी सारी भाषाए वह नहो सिखे. परन्तु दुनिया के सभी धर्म के मूलग्रन्थ पढने के लिये वह संस्कृत, पाली, अर्धमागधी अरबी, फारसी, लेटीन वगैरे भाषाए सिखे हैं. वैसी हो भारत के सभी सन्तोको वाणीका प्रसाद उनकी मूल भाषामें (हृदय वाणो विनय-विस्तार) ज्ञानरुपो रस चाखने के लिये वह भारतकी सभी भाषाए सिखे है.

दक्षिण-भारतकी—तामिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड भाषा लिपिया वह वर्ण-माला नवशाकी उपर से सिखे नही. परन्तु जीस जीस लिपिमें छपी हुई गिताजीकी नकलो (उतारे) परसे अन्योन्य लिपियोका उन्होंने अभ्यास किया है इसमें सर्व प्रथम " धर्मक्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे" किस प्रकार से लिखा होगा ? इसी जैसे प्रथम श्लोक से एक एक वर्ण (अक्षरों को पहिचान कर करके अन्योन्य लिपियोंका ज्ञान मिलाया है.

भिक्षु अखंडानंदकी प्रसादीमेंसेः—प्रमुख मनु सुमेधारः—

सन्त कबिर (अध्यात्मिक पदो) के नामसे प्रगट साहित्यकी एव मुस्लीम महात्माये नामकी अतिरयुम, मुस्लीम सन्तो के चरित्रोपदेश के पुस्तकमें से भिक्षु अखंडानंदजो के मार्फत मानव के लिये मानवता रुप अनेक शुभ सन्देश याने मानवोंके लिये महा प्रसादः—

निवेदनः—पंधरावी और सोलावी इसवी शताब्दी के सुमारे हिन्दु और मुसलमान कोममें एक दुसरे के लिये आदर हो. एक दुसरेका धर्म मजहब और सिद्धान्त के लिये मान पैदा हो, और अलग अलग नामसे एक ही ईश्वरको भजनेवाले मनुष्यो सदाचारमें और ईश्वर भक्तिमें जोवन पूरा करे. ऐसे यह प्रयास

नानक, कबिर और दादु ई. के हाथोसे हुये. वैसे ही अकबर और दाराशिकोह के नाम भी यही दिशामें कहना चाहिये. उसके बाद प्रयत्न मजबुति से किसीने भी नही. किया. यह अफसोस की बात है.

हिन्दु समाज बहुतही संकुचित हो गया. न्यात-जात बढ गई, और भी ऐसे रुढियोंका जोर बढते ही गया. शुद्रो तरफ नहि परन्तु मुसलमानो के तरफ भी अभड-छेटको भावना बहुत प्रबल हो गयी. हम और तुम ऐसा मुसलमानो के साथ वरतनेका अलगपणा बहुत ही बढ गया. वह आज हिन्दुस्थान (भारत) की उन्नति के मार्गमें अलंघनिय पहाडकी माफक खडा है।

हिन्दु और मुसलमानो को अभी भी बहुत दुर्बल एवं हिन-दीन बनाने के लिये उन (दोनो) की बीचमें एक या दुसरी रीती से वैर-जहर के कीडे अज्ञानीयों फैला रहे है. ऐसे समयमें यह मुसलीम महात्माओके नामकी पुस्तक बाहर पाडनेका मुख्य हेतु यही है किः—हिन्दुओमें मुस्लीम धर्मकी विषयमें जो उलटी समज है वह कमी हो जाय. और मुस्लीम भाईयोंका ध्यान स्वतः के धर्म-सिद्धान्तो के उत्तम आदर्श तरफ जादा खेंचाय. और दोंनो कोमो के लक्ष (ख्याल) में यह बात उतरती चले किः—दुनिया के सभी मुख्य धर्म परमात्मारुपी एक ही वृक्षमें से और एक ही उद्देश से निर्माण हुये है. और वह अनेक डहाले (डंघाले-फांदिया) जैसे है. अगर चाहे उतने मतभेद होते हुये सर्वोपरी ध्येय, हेतु और साधन-साधना एक जेसी ही है.

आज भारत वर्षमें स्वराजकी भावना चौमेर जम रही है आज स्वराज मिलनेमें एक बडेमें बडे साधन है. हिन्दु-मुसलमान "ऐक्य" यह गिनतीमें तो गिना गया है, यह ऐक्य लानेमें बडेमें बडा साधन है. अरस-परस सम्पूर्ण पहिचान.

जो आचार-विचार, पवित्रता, गहनता ई. सभी हिन्दु धर्ममें है. ओही पवित्रता, गहनता ई. मुस्लीम धर्ममें भी है. यह जो एक वखत समजमें आ जाय तो बहुत सारी गैर समजुति

दूर होगी. यह गैर समजुत ऐसे विचार पुस्तकों द्वारा बहुत धीमे से और सहज गतिसे दुर हो सकती है.

जीस तरह गुजराती वाचक मिराबाई, नरसिंह महेता, सूरदास कबिर वगैरे भक्तो के चरित्र पढते है, और उसीमें से बोध ग्रहण करते है। उसी प्रमाण से यह इस्लामी भक्त गणो के चरित्र उपर से बोध लिया जाय ऐसे हैं.

हिन्दु धर्म के महापुरुषो के पहले कन्धे-कन्धा, उतने ही उन्नत स्थान पर ईस्लाम के तपस्वियो भी बेठ सके, ऐसे है. और ईस्लामके सच्चे आत्माका दर्शन भी यह पवित्र पुरुषोके जीवन चरित्रमें ही हो सकता है. वैसेही उसी प्रकारका साहित्य बहुत ही उपयोगी होगा. ईसमें संशय नही. और यह ऐसे ऐक्य साधने के हेतुसे ही ईस समय मुस्लीम महात्माओका पुस्तक तैयार करनेमें आया है.

हिन्दु-हिन्दुमें, मुस्लीम-मुस्लीममें, जैन-जैनमें मतभेद और झगडे है, इस जात के झगडे कमी करनेकी हर एक मानव की "फरज" है और सच्ची मानवता यही है.

विशेष-सूचनाः—

सभी मुसलमान बुरे नही, वैसे ही सभी हिन्दु देव नही.

—गांधी दिल्ली-डायरी

१० एकेश्वर वाद

० मुजे दावा है कीः—अगर हमने ठीक ठीक हिन्दु-धर्मको समजा होता हिन्दु-धर्मका पालन किया होता, तो यह मुल्क एक सेकन्ड के लीये भी गैरोका गुलाम नहीं हो सकता था. अगर हमने हिन्दु-धर्मका पालन किया होता तो हिन्दु और मुसलमानो के अन्दर वैमनस्य न दिखाई पडता.

१ धर्म तो एक दुसरे की सेवाकी चीज है. धर्म फाडने वाली चीज नहीं है. वह एक दुसरो को मिलाती है.

२ ऋग्वेद हिन्दुओंकी सबसे पुरानी किताब है. ऋग्वेदका जब समय था तो उस आदि कालमें आप देखेंगे किः—हिन्दु जातिका यह नाम भी नहीं था. हिन्दु नामको शुरु हुये अभी

स. ४

तीन हजार वर्ष भी नही हुये. इस जाति (हिन्दु) का नाम उस समय आर्य था. आर्यलोग उन दिनो ईन्द्र, वरुण, मित्र, सूर्य, चन्द्र आदि देवताओंके उपासक थे. उसके बाद यह धर्म आगे बढा, उसने उन्नति की वह अपने विकाश को प्राप्त हुवा तो उसने इन अनेकोमें एक परमात्माको देखने की कोशीस की. मै अपने को "मवहिद" यानी एक ईश्वरका उपासक गिनता हूं, परन्तु एक ईश्वरको मानते हुये भी, उसके अलग अलग गुणो अगर पहलूओंकी अलग अलग रुपोमें उपासना को में गलत नही कह सकता.

४ कोई भी ईन्सान उस परमपिता परमात्माको उसके असलीरुपमें नही देख सकता. यह एक मोटीसी चीज है कि:— जब कभी कोई मनुष्य ईश्वरकी कल्पना करने को कोशीस करता है. उस परवर्दिगाका ध्यान अपने मनमें लानेको कोशिस करता है. तो वह उसके किसी न किसी खास पहलु या गुण को कल्पना कर सकता है. शुरु को अनेक देवताओंकी पुजाका यही असली रुप था. और यही उसका मतलब था. मै एक छोटासा किस्सा इस बारेमें बयान करुँगा.

आपमें से कुछने मौलाना रूमका नाम सुना होगा. वह एक महशूर फकीर ओर सूफी सन्त थे। उनकी मस्नवीमें एक किस्सा आता है कि:—हजरत मुसा एक पहाड उपर चले जा रहे थे. उन्होंने देखा कि—उस पहाडकी ढाल उपर एक गडरियां पडा हुवा कुछ बक रहा है. गडरिया लेटा हुवा था. उसकी भेडे नीचे खड्डेमें चर रही थी. उसका दंडा दाहिने तरफ पड़ा हुवा था. कम्बल एक तरफ रखा हुवा था, और वह गडरियां कुछ बक रहा था ईरानी जबानमें खुदा (परमात्मा) को यजदान कहते है. गडरिया कह रहा था कि—

ऐ मजदान! अगर तू. मुजे कही मिल जाय तो तेरे पांव थक गये होंगे तो मै अपनो हाथो से तेरी मुट्ठी (चप्पी) कर दुंगा. तेरी चप्पल फट गई होगी तो मै अपनी हाथोसे तेरी चप्पल सी दुंगा. ऐ यजदान! तु भुखा होगा, तो मै जंगलसे लाकर तुझे ताजा शहदका प्याला पिलाऊँगा.

ऐ यजदान ! तूं कहाँ है ? तूं मुझे क्यों नहि मिलता ? अगर तू मुझे मिल जाय तो मै तेरे बिछोने को अच्छी तरह बिछाऊँगा. एक भी सलवट नही रहने दुंगा, अगर तु मुझे मिल जाय तो तेरी कम्बलमें जुये पड़ गये होगे. तो उन्हें मै एक एक करके बीन दूंगा.

ऐ यजदान ! अगर तू मुजे कही मिल जाय तो. तेरे बिस्तर पर मै रातको फुल बिछा दुंगा. फिर तुझे मिठी मिठी निन्द आयगी.

ऐ यजदान ! तू मुझे क्यों नही मिलता ? गडरीयां ईस तरह बक रहा था. उसकी आँखोंसे लगातार आँसूओंकी धारा वह रही थी.

हजरत मुसाने जब यह. गुफत गुं सुनी. तो उन्हें गुस्सा आया, उन्होंने सामने आकर उस गडरियाको देखा, दोनो निगाहे चार हुयी हजरत मुसाने कहा:—ऐ चोपान ! तू क्या कह रहा है ? उसने फिर ओही बाते दूहरा दी, और कहा कि:—मै यजदान से बाते कह (कर) रहा था.

हजरत मुसा बोले ! तू यजदानकी शानमें यह सब कुफ्र बक रहा था. तुने जो कुछ कुफ्र बका है. उसकी आग बन जाय तो, तू तो उस आगमें जल ही जायगा, लेकीन दोनो जहान भी उसमें जल जायेगा ।

गडरियाने घबराकर पुछा ! मूसा, मुझ से ईतना बडा कसूर हो गया है ? मेरे गुन्हाहका कोई हल, कोई कफपारा या प्रायश्चित नही है ?

मुसाने जवाब दिया:—नही. तूं उस अल्लाहकी शानमें कह रहा था कि:--जुये पड़ गये होंगे, चप्पल फट गयी होगी, तो क्या अल्लाह के जुये पड़ सकती है ? क्या उसे तेरी शहदकी जरुरत है ! तूने बहुत बड़ा गुन्हाह किया है, तूंने उस "बहद-हुला शरीक" की शानमें ईतनी गन्दी बाते कही है कि:--इसीका कोई प्रायश्चित नही.

गड़रिया बोला मुसा : फिर सोच ले, क्या मेरे गुन्हाहका कोई प्रायश्चित नही है ? जब हजरत मुसाकी तरफसे उसे कोई

जवाब तसल्ली देनेवाला नही मिला. तो उसने अपनी लाठी ली, कम्बल कन्धे पर डाला और अपनी भेडो को वही छोड़ चल दिया, मुसा खडे देख रहे थे. चौपान सामने की पहाडी पर उपर को चढा, जब वह पहाड़ीकी दुसरी तरफ जाकर, मुसाह की निगाहसे गुम हो गया, तब मुसा लौटे, उसी समय "आकाशवाणी" गैबी आवाज... हुयी. अल्लाहने मुसाकी दिलमें आवाज दी. मुसा को "ईलहाम" हुवा...

अल्लाहने मुसा से कहां कि:--हे मुसा तूने यह क्या किया? मुसाने पुछा! या अल्लाह! क्या मैने कोई कसूर किया?

अल्लाहने जवाब दिया मुसा क्या यह तुजे मालुम नही? कि हमारी असलीयत तेरी दिमागो कल्पना से भी उतनी ही दूर है, जीतनी उस मोटी अकलवालेकी मोटी कल्पनासे. मुसा! हम तक पहुचनेका रास्ता दिमाग नही है. हम तक पहुचनेका रास्ता दिल है, और वह गडरीयां, उस दिल के दरवाजे पर बैठा हुवा था, तू अभी उससे दूर है. तूने उससे सबक लेना चाहिये था. तूने उलट उसको उपदेश देना चाहा. अल्लाहने मुसासे कहा.

"मजहबे इश्क अज हमां मिल्लत जुदास्त"
"आशि कारा मजहबो मिल्लत खुदास्त"
"मुसिया! आदाबदाना दीगरन्द"
"आशिका सो जे दरूना दीगरन्द"
"तू ब रहां वस्ल करदन आमदी"
"ने बराए फस्ल करदन आमदी"

याने, मुसा इश्कका मजहब सब मजहबो से अलग है. वह खुदा ही मजहब और खुदा ही मिल्लत है.

हे मित्रो! हे मेरे धर्मावलम्बी बन्धू और भगिनीयो:--उपर के कर्मकान्ड दुसरी चीज है जीनके दिलमें आग लगी है. वह प्रेमी दुसरे होते है. और जाहेरी कर्मकान्ड जाननेवाले दुसरे हुवा करते है. ईश्कका मजहब, प्रेमका:— मजहब, अल्लाहकी चीज है. हमने तुजे मिलाने के लिये भेजा था. अलाहदा करने के

लिये नही भेजा था. तूने हमारे भक्त को "हक" से अलाहदा कर दिया। वगैरे.

मुसाने पुछा ! अल्लाह अब मै क्या करु ? अल्लाहने कहा कि:—हे मुसा उसी चौपान के पास जा और उससे कह कि:—उसके लिये सब कुछ माफ है, फिर मुसा चले उस गडरीया को ढूंढने ने के वास्ते. मुसाको तीन बरस उस चौपान को ढूंढनेमें लग गये, आखिर वह एक पहाड़ पर मिला मुसा, उसके पास पहुंचे. गड़रीयांकी आँखे आसमानकी तरफ लगी हुयी थी. वह अकेला जंगलमें खड़ा था, गड़रीयाने पूछा, मुसा अब कैसे आये ? मुसाने जवाब दिया कि:—मै तुझे यह खुश खबरी देने के लीये आया है कि अल्लाह कहता है कि:—तूं ठीक था, और मै गलत था. तेरे लिये सब कुछ माफ है, चौपानने जवाब दिया ! मुसा तुम किससे बात कर रहे हो ? उस वक्तसे आज तक मै सेकडो बरसका रास्ता ते कर चूका हूं...

मैने उस पुराने गड़रीया के दिलको पिसकर, उसके खुनमें स्नान कर रखा है, मेरी खुदी अब मिट चुकी है.

यह कहानी मैने आपको सामने ईस लिये रख्खी कि:—हम ईश्वरको अलाहदा. अलाहदा. कई तौरसे मानते है, और पूजते है. उसकी अंश-पूजा अलग अलग देवताकी रुपमें पूजाको मै जरुर तौर पर "तौ हिद" याने "एकेश्वरवाद" के खिलाफ नही समजता.

यस्य सर्वे समारंभा, काम संकल्प वर्जितः
ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणं, तमाहुः पंडित बुधाः

जीसके सभी उद्योग वासना और संकल्प याने मै करता हुं, ऐसे अभिमान रहित और जिनके कर्म ज्ञानरुपी अग्निसे भस्म हो गये ऐसे पुरुषको लोक बुद्धिमान पंडितं कहते है. (गि. ४-७९)

११

(१) सायणा चार्य के भाष्य का पठण

स्थानः—कलकत्ता. ई. स. १८९७

आज दस दिन हो गये. स्वामिजी के पास शिष्य ऋग्वेद का सायण-भाष्य पढ़ता है. स्वामिजी बाग बजार मे स्व. बलराम वसु के घरको ही रहते थे. मेक्ष मुल्लर ने अनेक संख्याओंमें संपादित किया हुवा, " ऋग्वेद " एक अच्छे भले सद्गृहस्थके घरसे आश्रम मे मंगवाया था. एक तो नूतन ग्रन्थ और फिर वैदिक भाषा इससे (स्वामिजी शिष्यको अरे बंगाली) पढते पढते शिष्यको अनेक गुचवण (अडथडा) आने लगा. इसि से स्वामिजी शिष्यको "अरे बंगाली !" ऐसे कहकर अनेक वखत स्नेह मश्करी करते थे। और कठिणता पूर्वक शब्दो का उच्चार और अर्थ कहकर समझाते थे. वेदका अनादित्व" सिद्ध करनेके लिये सायणने जो अद्‌भुत युक्ति कौशल्य दर्शाया है...उसीकी व्याख्या करते समय स्वामीजी भाष्य कारककी कितनी एक समय बहुत तारीफ किया करते थे. तो कोई समय किसी प्रमाण सम्बन्धि स्वयंका मतभेद है, ऐसा समझाकर सायण प्रति कटाक्ष भी करते थे.

(२) मेक्ष मुल्लर यह सायणचार्य का ही अवतार है !

एक समय इसि प्रमाणे वेद–पाठ चलता था. तब स्वामीजी ने मेक्ष मुल्लर सबन्धि बात–चितका प्रारंभ करते हुये समझाया है कि तु माने गा ? मेरे को तो ऐसा लगता है कि:– सायणाचार्य स्वयंही (स्वतः)का भाष्यका उद्धार करने के लिये मेक्ष मुल्लर रूपमे फिरसे जन्म–धारण किया है, बहुत ही दिनोसे मेरी यही धारणा थी, उसीमे भी जब मेक्ष मुल्लरका दर्शन किया तो तभीसे यह धारणा विशेष दृढ हो गयी है.

मेक्षमुलर जैसा खंतिला–उत्साही और वेद–वेदान्तमें पारांगत पंडित इस देशमे भाग्यसे ही कोई होगा. ईसके बाद भी पू. श्री. गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस जी प्रति भी कैसी अगाध

भक्ति ! श्री गुरुदेवको ईश्वरावतार रूपसेही मेक्षमुलर मानता था. मैं जब उनके वहाँ अतिथि रूपसे गया तब भी उन्होंने मेरा कितना सत्कार किया ?

यह वृद्ध स्त्री-पुरुषको देखते ही अैसाही प्रतित हुवा किः समझो वसिष्ठ और अरुन्धतिके समान वह उभयता संसार चलाये जा रहे हैं. मैं जब उनके पाससे विदाय हुवा; तब यह वृद्ध स्त्री-पुरुषकी चक्षुओंमें आँसु भर कर आये थे !

(३) सायणाचार्य म्लेच्छ प्रदेश मे कयों जन्मे ?

शिष्य ने प्रश्न किया किः हे पू. महाशय. अगर सायण स्वयं ही मेक्ष मुलर होवे तो इस पुण्य-भूमि देश भारत में जन्म न लेते हुए, वह म्लेच्छ रुपसे म्लेच्छ देशमे किस लिये जन्म धारण करे ?

पू. श्री. स्वामीजीने शिष्य के प्रश्न प्रति जवाब देते हुये कहा किः—"अज्ञानता को लेकर ही" मैं आर्य और वह म्लेच्छ अैसे विभाग पडे हैं। परन्तु, जो स्वयं स्वतः वेदका भाष्यकार हैं, और जो ज्ञानकी ज्वलंत मूर्ति है. उनके लियेः तो वर्णाश्रम जैसे—जाति विभाग कैसे हो सकते हैं ? पर उपकार के खातिर वह गमे वहाँ जन्म ले सकते हैं. खास कर के जीस देश में विद्या और धन ईन उभयता का बल है. तहां जो जन्म अैसे व्यक्ति न ले तो अैसे यह महान ग्रन्थोंका छपाने का खर्च कहा से मिले ?

सुना है कि ईस्ट इन्डिया कंपनीने यह ऋग्वेद छपाने के लिये नउ लाख रुपिया रोकडा निकाल कर दिया है। इतने से भी यह काम पूरा हो अैसा नही था, इस देश के सेंकडो वैदिक पंडितों को मासिक पगार देकर इस कार्यमें उन्हो (मेक्ष-मुलर) ने संघठित किया था।

विद्या और ज्ञान के पिछे, अैसा गंजावर खर्च और अैसी प्रबल ज्ञान तृष्णा इस देश (भारत) मे इस समय मे भी अैसा कहीं देखा है ?

मेक्ष मुल्लर ने स्वयं ही ग्रन्थकी भुमिकामे लिखा है किः—

उन्होको पच्चीस वर्ष तो केवल हस्त लेखीत प्रतो तैयार करने को लगे थे. और वीस वर्ष तो ग्रन्थ छपाने को लगे हैं (थे) ऐसे एकन्दर ४५ पंचे चालीस वर्षतक एक ग्रन्थ के पिछे. ऐसे इसी तरह से लगे रहना यह क्या सामान्य पुरुषका कार्य है ? अब विचार करके देख किः—सायण स्वयं नही होवे तो ऐसा बनेगा ? सही सच्ची बात है ना ?

(४) वेद अनादि किस रीतिसे ?

मेक्ष मुल्लर, सम्बन्धि ऐसी बात चीत होने के बादः—ग्रन्थ पाठ आगे चला। वेद के आधारसे ही. इस सृष्टिका विकास हुवा है. ऐसे सायण के मतको आगे रखकर, उनको टेका (आधार) देते हुये स्वामीजी बोलने लगे किः—

वेद, याने अनादि 'सत्य' की समष्टि = समस्तता, वेद पारांगत ऋषियोंने इस सभी 'सत्य' को प्रत्यक्ष किया, अति प्रिय दर्शि सिवाय अपने जैसे साधारण मनुष्यो की दृष्टि से वह प्रत्यक्ष हो सकेगा नही, इतने के लिये हीः—वेद. मे ऋषि...शब्द का अर्थ : मन्त्रार्थ दृष्टा...ऐसा करनेमें आया है.

एक मात्र जनोई (यज्ञ-पवित्र) धारण करने से ही वह ब्राह्मण बन गये ऐसा नही था. ब्राह्मणादि जाति-विभागो तो बादमें (पिछेसे) हुई है.

वेद 'शब्दात्मक' अर्थात:—भावात्मक अथवा अनन्त भावो की समष्टि मात्र है. 'शब्द' पदका वैदिक प्राचिन अर्थ है सूक्ष्म भाव ऐसा होता है. यह सूक्ष्मभाव, पिछेसे स्थूल रूप लेकर स्वतः को स्पष्ट करता है।

मतलब यह है कि:—जब प्रलय होता है, तब भावी सृष्टि के सूक्ष्म बीज वेदमें ही ढके हुए रहते हैं। इतने के लिये ही —अपन अपने पुराणोमें देखते हैं किः— मत्स्यावतार समय मे ही वेदका उद्धार होता है.

सारांश :—यह है कि पहले प्रथम अवतार (मत्स्य रूप) मे ही वेदका उद्धार हुवा। उसके बाद:—वो ही वेदमें से धीमे धीमे सृष्टि का विकास होने लगा अर्थातः वेद मे रहे हुवे

'शब्द' के अवलम्बन से विश्वके सभी स्थूल पदार्थका सूक्ष्मरूप 'शब्द' अथवा 'भाव' ही होता है पूर्व पूर्व के कल्पमे इसि प्रकार से सृष्टि की उत्पत्ति हुई थी. यह बात तो वैदिक सन्ध्या मंत्र मे भी स्पष्ट है.

सूर्या चन्द्र म. सौ धाता यथा पूर्वेम् कल्पयत् ।
दिवंच्र पृथिवी चान्तरिक्ष मथो स्वाहः

१२ सव धर्मान्पिरित्याज्यंः मामेकं शरणंव्रजाः

मैं ?.....कौन हूँ ? पिछानते नही ? मुझे जानो और पैछानो.

मैं लडको का लडक, पणाका खिलौना हूँ, मैं मिठाई हूँ, मैं जवानो की जवानी हूँ, मस्ती हूँ, मैं बुढोंकी बुढौति की लकडी हूँ-सहारा हूँ ।

मनुष्य, मेरा गुलाम है, मैं उसे हजारो वार नाच नचा सकता हुं, नचा चुका हुं, नचा रहा हूं ! दुनिया मुजसे दबती है, मै उसे उलट सकता हूं, उलट चुका हूं. उलट रहा हूं ! प्रकृति मेरी वश-वर्तिनी है. मै उसे बनाता हूं. बिगाडता हूं तोडता हूं. मरोडता हूं !

विशाल विश्वमे अगर कोई ईश्वर हो तो, मै हूं । धर्म हो तो मै हूं । प्रेम हो तो मै हूं । मै सत्य हूं । मै शिव हूं । मै सुन्दर हूं । मै सत हूं । मै चित्त हूं । मै आनन्द हूं । आलोक मै हूं । परलोक मै हूं । हर्ष मै हूं । शोक म हूं । क्षमता मै हूं । ममता में हूं ।

मेरी झण झणाहट मे जो अलौकिक मधूरीमां है. वह घिणा-पाणी (बहू-बेटी) सरस्वतिकी विणा मे कहां ? डमरु वालोके डमरुमें कहाँ ? मृदंग की मुरचंग मे कहां ? सितार जल तरंगमे कहां ? लक्ष्म पति के पांच जन्यमे कहां ? कोकिलकी कल काकली मे कहा ? कामिनी के कोमल कंठमे कहां ?

यहां कहां ? वहां कहा ? मे सप्त-स्वरो से उपर अष्टम स्वर हूं, परम मधूर हूं !

गिता के गाय को, चण्डी सप्त षतीके पाठको, भागवत भक्तो, सत्य नारायण के कथा के प्रेमियो, रामायण के अनुरा-गियो, महाभारत के मानने वालो, मेरा गीत गावो, मेरा पाठ

पढो। मेरे भक्त बनो। मेरी कथा सुनो। मुझसे अनुराग करो। मुझे मानो। मेरी शरण आवो। तारन-तरन मै हूं। भव-भय हरण मैं हूं। शरणा शरण मै हूं। जन दुःख हरण मै हूं। धवल वर्ण मै हूं। मंगल करण मै हूं। पुण्य-चरण मै हूं!

लंका सिताकी दृष्टि-तृष्टि से नही, मेरी दृष्टि-तृष्टि से जली थी. मै बिभिषण उपर प्रसन्न था। कौरव द्रोपदी के कोपसे नही मेरी कोपसे नष्ट हुए थे! मै पान्डवों पर प्रसन्न था। जर्मनो-ब्रिटेन या अमेरिकाकी धूर्ततासे नही. मेरी धूर्ततासे पराजित हुवा. मै ब्रिटेन अमेरीका पर प्रसन्न हूं!

ठाकूर जी (मंदिर मुर्ति, भगवानजी) बोलते नही, मैं बोलता हूं। मै उनसे बडा हूं! ठाकुर जी चलते नही मै चलता हूं। उनसे मेरी अधिक साक्षी-पुरावा है! देवताओमें वह आकर्षण नही. जो मुजमे है! यह युग तर्कका है. उदाहरणका है, प्रत्यक्ष वाद का है स्वयं प्रभुताका है! मै प्रत्यक्ष हूं। सद्यः फलका दानी हूं। स्वयं प्रभु हूं। आकर्षक हूं। ईश्वर हूं। ईश्वरसे बडा हूं!

मुझसे वरदान लेकर पाप करो, फिर भी तुम देवताओसे पूजे जावोगे! मुझसे वरदान लेकर एक-दो नही सात खुन करो, साफ साफ बच जावोगे! निर्दोष छुट जावोगे! साम्राज्य को रामराज्य से भीडी दों. मनुष्यकी बढो हुयी खेतीको बेरहमि से कटवा डालो. जलवा डालो. स्त्रीयोकी मर्यादाको मेरी तरफसे चाहे उतनी सेरकी हिसाब से, दिनमे चाहे उतनी बार खरीदी करो और बेच डालों, संसार के विधवाओ, बच्चो, बुढो और अपाहिजो की हाय से भर दो। भूकंप उठादो। प्रलय कर दो, चाहे सो करदो। मगर मुजसे वरदान लेकर मै सर्व शक्तिमान हूं! कहो मै कोन हूं? नही जानते? नही समजते? नही पहचानते? थोभो जरा विचार करो और सोचो कि इतनी सारी बाते आपके सामने मैने कही सुनायी. तो आखिर मै कोन हूं? कोंन होगा? ओर थोडीसी सुनो ध्यान दोः

सर्व धर्मान्परि त्याज्यं-मामेकंशरणं व्रजा।
अर्थात-सभी धर्मको छोडकर मेरी शरण आजा॥

સર્વ ધર્મ ત્યજી અને મારા શરણે આવ...

मित्रो—स्वर्ग-नर्क को पहुचानेवाला अेक मात्र मै हू ।
पैसा..पैसा हाय पैसा ! जैसी मति वैसी गति.

१३ बातको सोचो और समझो ।

धन के बिना श्रीमान, कैसे बनना ?

यह कह दो उनसे, जो पैसे पे जान देते हैं,
हर एक रोग की पैसा, दवा नही होता:-

धनको प्राप्ति ही यही कुछ सभी सुखो की प्राप्ति नही है. पैसे के बिना भी जीवन बिता जा सकता है. जीवन और मरण मे से जीन्दा रहनेकी तरकीब मालुमत हो जाय तो शानदार जीवन निभा जा सकता है.

डॉ. इमर्सन, कहते हैं कि:—किसी के पास बहुत साधन होवे तो, इसिसे उसको बडाई मारने देना चाहिये नही. और बता देना चाहिये कि:—मै पैसे के बिना चला सकता हूं ।

कोई भी मेरे को पैसा सुख और मान–पान देकर खरीद सकेगा नही.

लोकोडेर कहते हैं कि:-कोई भी वस्तुने मेरे हृदयको सबसे अधिक (विशेष) असर किया हो, तो वह यह कि:- छोटेसे मनुष्य के बडे अन्तःकरण ने करी है.

गोल्डन स्मिथका मत यह है कि:—जीस देशमें लक्ष्मिदेविका संग्रह बढने से मनुष्य वैभव–पतित होता है । और इसिसे उसी देशका अनिष्ट (हानि) जल्दी होती है.

आराम नही, प्रयत्न और व्यवस्था भी नहि. परन्तु मुश्किल ता ही उत्तमोत्तम मनुष्य (मानव और मानवता) की घडाई करती है. खुदापाक (पवित्र परमेश्वर) जब एक मनुष्यको शिक्षण देना चाहता है, तब वह उसीको सर्व सम्पन्न साधन वाले स्कूल (पाठशाला) मे नहि, परन्तु, जहाँ सभी प्रकारकी तंगी हो ऐसी पाठशालामे भेजता है.

श्री. सन्त ज्ञानेश्वर, तुकाराम महाराज, नामदेव, जनाबाई, मिरांबाई सन्त सलु बौद्ध गौतम, खिस्त ईशु, रामतिर्थ, कोन-फयुशियस, नानक; कबिर; नरसिंह महेता, सुदामाजी; ब्रुकस गेरिसन, इमर्सन, एडीसन, सेकसपियर वगैरे इ. यह सभी अैसे अैसे विरल आत्माए, पैसे के बिनाही श्रीमंत थे. वह पुष्प और पक्षियोंमें, सौन्दर्यमय घांस मे, प्रभु लिलाका झरना देखा करते थे। पाषाणमे उपदेशका और प्रत्येक वस्तुमे कल्याणका दर्शन किया करते थे, वह कहते थे, कि:—मनुष्यको अरण्य के सृष्टि सौन्दर्यको मजा लुटने के वास्ते कोई भी प्रकारका कर वसुल देना नही पडता।

उन (मनुष्य) को जगतका प्रत्येक पदार्थ सौन्दर्यमय महान सृष्टोकी पाससे खास सन्देश गुह्य–गुप्त रीति से मालुम होता था, और वैसे ही प्रत्येक पदार्थमें उसी एक परम परमेश्वर शक्ति और सुन्दरता उनकी नजरमें दिखाई दिया करती थी. मालुम होती थी.

जीस आतुरता से जंगलका तिसा (तरस्यो) प्रवासि वृक्षघट (घनघोर छाया) में झरनेका ठंडा जल पीता है. उसी आतुरतासे उनके अन्तःकरणको बीड (जंगल) खेती, पुष्प, पंखी, नदी, नाला, झाड, पहाड़, पर्वत और हरएक जगेह जंगल–जंगल, वन–वनसे, उसो एक नेक नाम परम परमात्मा अल्लाह, गोड़, इत्यादि विशेष नाम शक्तिकी और प्रेरणा खेंच ली थी. और इसि-रितिसे उन्होंने तत्वामृतका पान किया था.

अैसी रीतोसे प्राणी और पदार्थ मे रही हुई उस गुह्य सारभूत शक्ति और संपत्ति से जैसा अपन दुधमेसे मखन निकालते हैं, उसी माफक उन्होने सारभुत शक्ति निकाल ली थी। निकाला करते थे और निकालना चाहिये.

और अैसे इसि बाबतों के जोः—तत्वामृत के प्यासे और आतूर (आशक अल्लाह के नाम के जो) हैं, उन्ही आत्माओंके उपर तैसी वृष्टि करना उनका कार्य था। वह मानते थे और समझते थे. सोचते थे कि:—मनुष्यको सबसे अधिक महत्वकी

खुराक मुखद्वारा मिलती नही, परन्तु, मनद्वारा मिलती है। कारण किः—मनुष्य जो मात्र अन्न और पैसे से ही जीवित रह सकता होवे तोः—

वह केवल पशुओंकी स्थितिमें ही स्थित है। ऐसा समझनेमें कोई भी प्रकारकी हरकत नही है. वैसे ही यह कुछ अतिशयोक्ति भी नही.

विशेषः—मनुष्यमें विकाश होनेवाली जो शक्ति है, उसीके विकाशके वास्ते स्थुल खुराक से अधित्तर (विशेषतः) है, मानसिक खुराककी इस खुराक ही को मनुष्यको जादातर जरुरियात है।

इसी अैसी प्रमाण सेः—उन (महात्माओ) की समज भावना शोध और साधन उच्च कोटी के और अधिकतर होते रहने से उनके अन्त:करण विशुद्ध अैसे होकर वह सभी के कर्ता-हर्ता. और अधिष्ठाता खुदामय (प्रभुमय) बनकर रहे हुये थे. और है। इसीसे उन्होने विकासीत होनेवाले रोप (छोड) में हालती बनस्पतिमें, सुन्दर खेतो आमदानोमें, और मानव चारित्र्यमें उसी एक परम परमेश्वर (अल्लाह-गोड) खुदापाक, शक्ति, महाका दर्शन किया.

प्रत्येक झरनेमें, नक्षत्रमें, पुष्पमें झाकल बिन्दु (सबेरे की समयमें पडनेवाला ओस, बिन्दु, बुन्द) में, प्राणो हृदयमें, उसी एकका ही प्रतिबिम्ब देखा और पाया.

वह मानने थे किः—मानव प्रकृति और समग्र सृष्टि मानव मात्रकी एक महान शिक्षकरुप है. जो उसीका योग्य सदुपयोग करनेमें आयेगा तो असभ्य रीत-सभ्य बन सकती है.

आप (अपने) बेडोल जीवनको सुन्दर बनावे। सुन्दर जीवनको पवित्र बनावे। और वह सुन्दर पवित्र जीवनको प्रभुमय बनावे। यह इस बातमें शंकाको स्थान नहीं है। याने शंका रहित यह बात है और वैसी हो है विवेकशील.

उपर के विचारोंसे समजमें आता हैं कोः—अपन सभी जो स्थिति जीस वर्तमानमें रह सकते है. उसीसे अधिक नीच

कक्षामें बैठे हुये है और वैसे ही अपन अन्धःकारमय दुःखदायक खंडोमें भटक रहे है. वास्तेः—ज्ञान-रुपी दिव्य सूर्य के प्रकाशितामें चमकनेवाले चारित्र्यरुपी उच्च शिखर उपर चढजाना चाहिये.

राफेल भी बिना पैसे से श्रीमंत था, सभी द्वार उसीके लिये खुल्ले थे. उसीका सभी दूर आदर-सत्कार (मान-पान) होता था. और वह जहां जहां जाता था, वहां वहां वह सुमधुर भाषामें आत्मज्ञान चारित्र्य और वैसे ही आनंद और शान्तिका वातावरण फैलाता था.

हेन्तो विह्सन भी विना पैसे से श्रीमन्त था. स्वतः के उच्च दरज्जाको भौतिक उन्नतिका साधन बनाने के तरफ उसीको इतना तिरस्कार था किः—जब वह देशका व्हाइस-प्रेसिडेन्ट हुवा और उसीका समारंभ आयोजित हुवा, तब प्रसंग के खास जरुरी खर्च के लिये:—उसीने खतः के मित्रकी पाससे बीस पौन्ड उधार लेना पडे थे. प्रथमतः वह मोचीका धंधा करता था. तब बी वह गरीबोका परम सुहृद मित्र था. व्हाइस प्रेन्सीडेन्ट होने के बाद भी प्रत्येक कायदे बाबद वह हमेशा यही पुछ-परछ करता था किः—क्यों ? इसी कायदे से गरीबोका भला होगा की नहि ?

जो अपन बौद्ध गौतम, शंकराचार्य, महावीर काइस्ट, झरसतब्रेज (पोरशमस) वगैर इ. त्यागी महात्माओंका अनुकरण करके उनके जैसे उदार स्वार्थ त्यागी और प्रामाणिक बनेंगे. तो अपने पास धन-पैसा न होते हुवे भी अपन भयंकर श्रीमन्त की गिनतीमें गिना जा सकेंगे.

लगभग हर एक मनुष्य स्वतःकी पास जीतना धन होता है, उससे अधिक धनकी आंस करता है. लाखो और करोडो मनुष्य धनके पिछे दौडते हुये नाशीगात हुवे है. धन के पिछे होड़ लगाकर बरबाद हुवे है. इतना होते हुये भी धन के पिछे की किसीकी भी भुख और तृष्णा अभितक न गयी. और न यह वर्तमान कलीयुग जमानेमें (भविष्यमें भी) नही जायेगी.

केरोसिन (घासतेल) गिरने पर जैसी आगको ज्वाला बढे

जाती है, वैसी ही तृष्णा भी उत्तरोत्तर बढते हुवे जबरदस्त राक्षसकी समान होती है. यह लौकिक सम्पत्तिरुपी ढिगार जिस (किसी) को बहुत लम्बे समय तक मिला हुवा है, उसीको भी उसके तृष्णारुपी शरीर से भी छोटा ही पड़ता है.

फिलिफस बुक्स कहते है कि:—जैसी सुन्दरताकी पेटी भरी नही जाती, वैसे ही सद्‌गुणोका जहाज भराया नही जाता। वैसे ही पैसे की तरफ से किसीका भी मन भराया जाता नही.

केस्पीयन समुद्रमें एक जहाज डुबने की तयारीमें था. तब खलासीयोंमें से एकने आतुरता से खिस्सेमें पैसे भरने लगा तब उसके साथीयोंने उसीको होडीमें स्वतः को साथमें बैठ करके जीव बचानेका कहा। परन्तु, वह पैसेकी लोभमे उस जहाज का त्याग न कर सकाः और शेवट वह उसी जहाजकी साथ डुबकर मर गया.

एक निर्धन मनुष्य को:—धन पैसा चाहिये था. इस मनुष्य को एक अनोळ खिता मनुष्य मिला. उसीने उस धन के जरुर मन्द व्यक्तिको एक पैसे की थैली देकर कहा कि:—इस थैलीमें से जब इच्छा करोगे, तब एक एक रुपिया मिला करेगा परन्तु शर्त इतनी थी कि:—उसी थैलीको जबतक फेकोगे नही तबतक एक भी रुपिया खर्च करना नही.

प्रथम धन के जरुर मंद मनुष्य को बहुत ही राजी खुशी हुयी. और वह उस थैलीमेसे रुपिया पिछे रुपिया निकालने लगा. अमुक काम पुरती रकम रूपिया जमा होगा. तो उसके ब्याज उपर मोज शोक करते रहुंगा। ऐसे इस बिचारसे उसीने पैसा वापरना तहकुब (मुल्तवी) रखा और इस तरफ मनमें ठाणी हुयी (निश्चित की हुयी) रकम जमा होने के बाद पहेले प्रथम वह जोतना जरुर मन्द था. उससे अधिक बन गया.

उस धन लोभी मनुष्यको जोतनी आसथी उससे अधिकतर उसके मन मे अनेकानेक बिचार आया करते थे. इस प्रमाण से उसका धनका लोभ हजार से लाखोतक और लाखो से

करोडोतक पहुँच चुका. फिर भी वह पैसा मिला हुवा वापर्नेका उसका बिचार मुलतवी रख्खा छोडे. अन्तमें आयुष्य खुट गया. और वह रुपिया गिनते गिनते ही मर गया.

एक समय एक भिक्षुक को लक्ष्मिदेवी प्रसन्न हुयी तब लक्ष्मीदेवीने कहां कि:- तेरी झोलीमें तू कहेगा. उतनी सुवर्ण मुद्रा भर देने के वास्ते मै तय्यार हूं। परन्तु शर्त इतनी है कि तेरी झोलीमेंसे जमीन पर पडेगा उतना धुल-मिट्टी बनेगा. फिर भी तब वह भिक्षुक खुश मिजाजी होकर लगा झोलीमे पैसे भरने. झोली भर गयी. परन्तु उसकी तृष्णा न मीटी. नंतर पैसेकी बोजसे झोली फट गयी और झोलीमेंका सभी पैसा जमीन पर गिर पड़ा. और सब पैसा धन धुल-मिट्टी हो गया.

जब "सेन्ट्रल अमेरीका" नामकी आगबोट डुबनेकी तय्यारी पर आ गयी, तब उसकी व्यवस्था रखनेवाली स्त्रीने जीतना हाथमें आया उतना सारा द्रव्य कपडेमें बान्ध लिया, और आगबोट को छोड़कर शेवटकी होडीमें बैठने के वास्ते कूद पडी. परन्तु धनकी बोज के वजह से उसकी छलांग होडी तक पहुंच न सकी और आखीर दरियावमें गिरकर मर्महिन हो गयी. मर गयी.

असंख्य मनुष्य इस जीवनरुपी मधपुडामें से मधमाखीयों के डंख खाये बिना ही मध मिलाने के वास्ते कुदा कुद-दोडा-दौड़ कर रहे हैं.

नंद राजाने धनमें सुखका संशोधन किया. ब्रुटेने किस्तीमे सुखका संशोधन किया। सिजरने राज्य वृद्धिमे सुख शोधन किया। परन्तु इसीमे से इन सभी को विनाश ही मिला। दुसरेको अपमान मिला, तिसरेको तिरस्कार मिला. और शेवट नंबर को अकृज्ञता मिली। ऐसे इसी हिसाबसे जहाँ सच्चां सुख नही. वहां सुख शोधनेवाले नाहक दोड़धाम करते हुये आखरीमें फनाह हो चुके है. याने जैसे आये वैसे हो. खाली हाथ चल दीये.

डॉ. गोल्ड स्मिथ को एक गरीब स्त्रीने एक पत्र लिखा कि:- मेरी पतिकी भुख मर गयी है, और बहुत ही शोकदायक

...स्थिति है, वास्ते कुछ दवा भेजोगे तो बहुत आभार होगा, तब उसी वक्त वह दयालु कविने उस बाई के घर जाकर दरदी के साथ बात–चित्त की:—तो मालुम हुवा कि: – वह दरदी निर्धन. ...से दु:खी...दु:खी हो गया था। फिर जब गोल्डस्मिथ–घर जाकर एक डीबीमें दस गिनी (एक गिनी एक तोला सोनेकी हुवा करती है ऐसे दस तोले सुन्नेको) भरकर और उस पर एक चिठी चिपका कर भेज दी गयी कि:—जब जरुरत पडे तब ऐसा इसका उपयोग करना, धीरज रखना, इससे जरुर सब व्याधि मिट जायगी.

इस उल्लेखमें से अपने को एक ही सिर्फ एक ही बाबद याद रखने लायक है कि:—"सुख" धनमें नहीं । परन्तु धैर्य, संयम और स्वार्थ त्यागमें ही है ।

धन के बिना श्रीमन्त कैसे बनना ?
कहो कैसी बात है ?

१४ मनुष्य और दु:ख

मनुष्यका जीवन घडण करनेमें दु:ख ही मुख्य भाग कार्यान्वित कार्यकर है । जन्म के साथ ही मरण जोड दिया गया है । दु:ख की साथ सुख जोड दिया गया है वास्ते:—

दु:खको केवल दुश्मन न मानते हुये । सुख के वास्ते आकर मिली हुयी एक शानदार तक समझकर इसीका किस रीति से लाभ लेना चाहिये ? यह ऐसा विवेक विचार से सोच–समजपूर्वक वर्ताव करना जरुरी है. मनुष्य जाति और दु:ख इनका सम्बन्ध दीर्घ है । मनुष्य जाति के साथ सुख अल्प और दु:ख विशेष जुटा हुवा है । मनुष्य दु:खको दुश्मन और सुखको स्वमित्र समझकर बैठा है । परन्तु 'सत्य' हकिकत सत्य रीति से देखो तो मनुष्य जीवनमें दु:ख ही अगत्यका है, कारण कि जीवनकी वडाई दु:खकी मार्फत से ही होती है। सोना अनेक प्रकारकी कसोटी सहन करके अजमाइसका स्वरुप धारण करता हैं । वैसे ही कसोटी पर मनुष्यने दु:ख की असंख्य यातनाओं से कसोटी जैसा सहन करके सुखकी प्राप्ति कर सकता है,

मनुष्य जीवनमे सुख और दुःख चक्र की माफक चलते ही रहते है, जीवनकी जब चान्दनी खिल उठती है तब मनुष्य खुश खुशाल ऐसा नजर आता है। और जब दुःख का दर्शन करनेका समय आता है, तब वही मनुष्य निरस–अनुत्साही, निस्तेज ऐसा नजर आता है।

इसीका मूल कारण कि:—मनुष्य केवल सुखको ही याद किया करता है। सुखकी प्राप्ति के लिये मनुष्य रात और दिन अथाग परिश्रम करता है। फिर जमा खर्च करने के बाद शिल्लक में उसीको दुःख ही मिलता है। परन्तु सच्चा सुख स्वाद के वास्तेः—दुःख अनिवार्य है। दुःख सुख की मिठाश अनुभव लेने के बाद ही होती है। जादात्तर समय तक तो दुःख मनुष्य को नया ज्ञान देकर चला जाता है कि:—तब ही जीवनमें सुख उपयोगी हो जाता है।

मनुष्य जीवनकी यह विचित्रता है की:—सुखी मनुष्य दुःखी मनुष्यको स्थितिको समज सकता नहि। श्री धुमकेतूका एक वाक्य चिल्ला, चिल्लाकर समझाता है कि:—जो मनुष्य स्वतः की दृष्टि छोड़कर दुसरे की दृष्टि से देखे तो आधा जगत शान्त हो सकता है। सृष्टि उपरसे दुःखकों जड–मूल से नाश कर-नेका यही एक सुन्दर किमिया है।

मनुष्यने स्वयंको स्थिति अनुसार पराई स्थिति बाबद समजनेका प्रयत्न करना खास जरुरी है।

दरदी को उसकी दर्दका जो दुःख होता है, उसकी तन-दुरुस्थ मनुष्यको क्यो कर खबर पडेगी? दुसरेकी दृष्टि से देखनेकी उणप (कमतरता) से अपनी आँखो की रोशनी प्रका-शित कर सकते नही। एक मनुष्यने दुसरे मनुष्यकी यातनाओंको समजनेका प्रयत्न करना आवश्यक जरुरी है। एक मनुष्यने दुसरे (सामनेवाले) मनुष्य के जीवनमें उतर जाना चाहिये कि:—जिससे सच्ची परिस्थितिका ख्याल होवे, ऐसा हो तब ही एक मनुष्य दुसरेका भला कर सकेगा और ऐसे इसी बातोके परिणाम से ही सुखको समृद्धि बढेगी. इसीके समर्थनमें सॉक्रे-टिसका एक अमूल्य दृष्टान्त यहाँ पर योग्य हो जायगा.

एक समयमें सॉक्रेटीसको स्वतः के शिष्य समुदायमें से एक शिष्यको पसन्द करनेका था। तब उस (सॉक्रेटीस) ने नंबर बार स्वतः के शिष्यो को तलाबकी पाणीमें क्या दिखता है ? यह देखकर आवो, ऐसा कहा तब सभी शिष्योने देखकर आनेके बाद एक ही जवाब दिया की हमको हमारा ही प्रतिबिम्ब दिखता है। परन्तु उसीमेंसे एक शिष्यने कह दिया कि:— मेरे को पर छाई से विशेष मछलिया स्पष्ट दिखाई देती हैं। तरत ही सॉक्रेटीसने उसको स्वतः का शिष्य बना लिया। कारण वह स्वतः से विशेष दुसरेको अच्छी रीतिसे देख सकेगा। तभी वह स्वतः का और साथ दुसरेका भी भला कर सकेगा।

सुख और दुःख क्या है ? ऐसा प्रश्न स्वाभाविक रीतिसे हो सकता है। इसीका सुन्दर प्रत्युत्तर कोई महापुरुषने दिया है कि:—सुख और दुःख यह मन (कुभार) के चाक परसे उतारे हुये. मिट्टीके खिलौने जैसे है। मनरुपी चाक घुमते-घुमते एक के बाद दुसरा खिलौना तैयार होकर उतरने लगता है। चाक बंध होगा तो यह खिलोने उतरना भी बंध हो जायेगे। मन घुमता फिरता है, तब सुख और दुःखकी धुप-छांव दिखती है। परन्तु जब यह मन स्थिर होगा तब वह धुप-छांव भी बंध हो जायगी। इस बाबतमें सद्भाग्य जिस (किसी) का जो मन स्थिर हो जाय तो मनुष्य महा सुखीयारा बन जाय.

सुखकी प्राप्ति तो दुःखके पिछे से ही हो सकती है। दुःख वगैरका सुख अलभ्य है। दुःखरुपी तापमें तपकर ही सुखका सोनेरी पुष्प किस रितीसे प्राप्त करना इस विषयमें पू. गांधीजीने कहाँ है कि:—

दुःख हर एकको दुश्मन जैसा लगता है। परन्तु दुसरी ओर बाजुसे देखो तो, मनुष्य जीबनको घडण करनेमें दुःख ही मुख्य भाग कार्यान्वित कार्यकर है। जन्म के साथही मरण जोड दिया गया है। वैसे ही दुःख की साथमें सुख जोड दिया गया है। जो मृत्यु न होता तो पुनर्जन्म न होता। इसी रीतीसे दुःख न होवे तो सुख भी नही होता। वास्ते दुःखको केवल

दुश्मन न समजते हुये, न मानते हुये सुख शोधन करने के लियेः—आकर मिली हुयी एक महान तक समझकर इसका किस प्रकार लाभ फायदा लेना चाहिये। उसका विचार करना जरूरी है। जैसा अपन विवेक–विचार वैसे ही आनन्द एवं शान्ति से आचरण करोगे तो, जरुर एक दिन इसी विवेक–विचारमें से सुखका जन्म होगा।

सुखकी प्राप्ति के वास्तेः—इतना ही याद रखना जरुरी है की दुःखमें हिंमत, धैर्य रखकर अन्योन्य मुसिबतोका सामना करके यही दुःखमेंसे सुख के मार्गका शोधन कर सकते है।

१५ शिक्षक और शिक्षण

"शिक्षकका कर्तव्य—दो जाति के शिक्षक उनका कर्तव्य"

१. बेहोश (अध्येयवादी) २. बाहोश (ध्येयवादी)

बेहोश शिक्षक के लक्षण

१. बेहोश = अध्येयवादी—शिक्षक स्कूलमें जाते ही हाथमें बीडी या, सीगारेट होना ठीक है, नही तो एक हाथमें बोडी और दुसरे हाथमें पेन (कलम) पकडकर समय पत्रक के साथ टाइम पूरा करना है, बिचमें एकाद पिरीयड (पाठ) अगर उसिसे भी जादा समय निरर्थक गप्पाओंमें निकालते है।

२. अभ्यास–क्रमका जीनको भान भी रहता नही, और विशेषमें कहो तो; अभ्यास–क्रम पत्रकका जिन्होंने दर्शन भी न किया हो, तो भी भरती की गाडी के समान स्वयं मन–स्वि–पणा से शिक्षणकी गाडीको जबर दस्ती से हकाले हो जाते है।

३. व्यसनः—चाय और बीडी को चालू कलास (वर्ग) में विद्यार्थी के समक्ष छडे–चोक उपयोग करते है। इतना ही नही; परन्तु अधिकारीयोंके भेटमें भी अकस्मात झडपमें आते है, फिर भी नही शरमते।

४. जिनके पोशाखमें. रहन–सहनमें कुछ ठिकाना ही नही है। देखावा भी कदाच बेढंगा हो, वाणीमें कर्कशता है, नंतर चारित्रहिन है। शिक्षणकी जिसको पडी ही नही। फिर अैसी देश–सेवा किस कामकी?

५ समाजमें जो शुद्र-धूर्त गिनाये जाते है। भावी पिढिका नाक कट जाय, तो भी उस शिक्षकको न कुछ लेना है और न कुछ देना है।

६. शिक्षक निरुत्साही है, जो कीः—स्वयं स्वतः की कार्यमें भी पिछेहट करता है। और शिक्षणकी तरफ जिस किसी शिक्षकको अभाव है, बेदरकारी है. स्वमानको जो कुछ समजता हि नही। जो देशकी तरफ बेवफादार है, भावी पिढी के कल्याण के लिये जो शिक्षक सोता है, ऐसा शिक्षक स्वयं-स्वतः के दुःख को जहां-तहां जिस-किसी के भी सामने रोने ही रोनेका गीत गाता है।

७. भावना जिसको सिखानेको हो, वह पैसे की पैदाश करनेमें कदाच समजदार हो, परन्तु जिसका अव्यवस्थित खर्चीला जीवन अगर तो, जीसको आवक-जावकका भान न हो।

नोटः—यह लक्षण स्कूलमें पढाई करते समय-चालू कलासमें भी हो सकते है।

बाहोश (ध्येयवादी) शिक्षक के लक्षण

१. बाहोश = ध्येयवादी शिक्षक स्कूलमें नियमित जाते है। और आते है।

२. स्कूलमें जाकर समय-पत्रक बरहुकम प्रमाणे स्वतः के कलास (वर्ग) में शिक्षणका काम चालू करते है।

३. नियमित अभ्यास-क्रम प्रमाणे पूर्व तैयारी करके शिक्षण देते समय उत्साह निर्मित होते है।

४. शिक्षकचाय, बीडो पिने के व्यसनाधिन होते हुवे भी शिस्त पालन करते हैं।

५. हमेशा स जागृत रहते है। शिक्षकः—शिक्षण जैसे पवित्र धन्धेको शोभे वैसा पोशाख-देखाव; वाणी, शीलता, जिसका चारित्र्य आदर्श हो। शिक्षणकी कार्यमें जो हमेशा मश-गुल है। जिस (शिक्षक) की रगरगमें देश-सेवाकी भावना भरी हुई हो। शिक्षक आनन्दित है। इन (शिक्षक) को इनके

पवित्र धःधेमें कार्य करनेकी धगश (हिंमत) हो । शिक्षक स्वाभिमानी होना चाहिए, इनको स्वतः की तरफ सुप्रुत की हुयी भावी पिढी के उत्कर्ष के लिये उन शिक्षक को तमन्ना होनी चाहिये ।

६. समाजमें स्वयं-स्वतः का वर्चस्व बढानेकी समजदारी किः—जिनमें हुन्नर और कला होनी चाहिये । उगती-उछरति भावी पिढी के कल्याण के लियेः—जिस शिक्षकको रख्याल (लक्ष) और प्रेम हो ।

७. भावना शील हो, पैसे की पैदाश करना । यह अैसा बुद्धिवादी हो, वैसे ही खर्चका भी हिसाब हो ।

शिक्षक की भावना

शिक्षककी भावनाः—बगिचे के 'फूल' समान जैसे मेरे हाथ की निचे शिक्षण लेने वाले बालको के जीवनमें मेरा संस्कार छिटकनेका यत्न-प्रयत्नमें अवश्य करते रहुंगा ! केवल टयुशन-लक्षी नही बनुंगा ।

फाजिल (रिकामे) समयमें मेरे मोहल्लेके आबाल-वृद्धो को जीवन-लक्षी शिक्षण देनेका ख्याल करते रहुंगा । और ऐसे ही आते हुये दिनकी नागरिको की पढाई-घडाईके कार्यमे मेरा नम्र फाला नोन्ध पात्र करुँगा !

माता-पिताका कर्तव्य पालन

पूज्य माता-पिताका कर्तव्य पालन और यही है बच्चोंको शिक्षण !

१. सबेरे के प्रहरमें उठकर शौच-अशौचका विचार करते हुयेः—विस्तार से अलग होना चाहिये, बाहर जंगल-दिशा जानेकी इच्छा न होते हुवे भी प्रथम प्रहरकी समयमें आरोग्य की दृष्टिसे शौचाचार करना जरुरी है । नंतर हाथ-मुह धोकर मन्जन जो हो उसीसे दांत घिसकर बादमे मुह हाथ पैर और स्नान से स्वच्छता साफ सुथरेपणासे घरके सभी छोटे-बडे व्यक्तिओं एक जगा मे इकट्ठा (संगठीत बैठक) होकर जिस

किसीको जितना समय मिले उतने ही समय उसी (हर एक व्यक्ति) ने वह परम कृपालु परमेश्वरकी आराधना-बन्दगी, भक्ति-प्रार्थना करना जरुरी है। यह देखकर छोटे छोटे बच्चे इसी संघठीत कार्य करनेमें सामिल होने लगते है, जुटते है।

२. उन (बच्चो) को हररोज परमेश्वर प्रार्थना-बन्दगी करनेके वास्ते शिक्षण देना मा-बापका प्रथम जरुरीयात आद्य-कर्तव्य है, इस बात पर मा-बापने जरुर ख्याल करना चाहिय कि:—प्रथम मा-बापने भी परमेश्वर प्रार्थना-बंदगी करनी चाहिये। मां-बापका ऐसा करने से छोटे बच्चे भी शिख पायेंगे और उन बच्चोकी इस बाबद्में अच्छी आदत पड जायेगी। परन्तु इस आदतमें लालच न हो।

३ बालक छोटासा होता है तभी से माताजी बच्चोंको दोनो हाथ जुडाकर उसीको स्वतः के पास गोद्में लेकर घुटने पर बिठाकर उनको वह परम जगतपिता परमेश्वरकी बोध-वचन सिखना चाहिये। बन सके तो सिधी-सादी और छोटी मोटी प्रार्थना-बन्दगी के कुछ वाक्योका उच्चार करने सिखाना, बोलने लगाना, और उसीका अर्थ-भावार्थ भी समझाते रहना चाहिये।

४. प्रार्थना-बन्दगी:—कुछ मुहसे बडबडाट करने जैसी नही है। परन्तु प्रथमत। समज के साथ सच्चे अन्तःकरण से प्रार्थना-बन्दगी करना याने, नहाना-धोना शरीर-कपडे सिर्फ स्वच्छ बनाना इतना ही नहो। परन्तु अन्तःकरणको भी साफ करना जरुरी है। बहुत सारे लोग प्रार्थना-बन्दगी करते करते रीत-रिवाज उपर लक्ष देते है, और वैसे ही प्रार्थना बन्दगी के समय में:—प्रार्थना-बन्दगी की जगह (ठिकाणे) पर ही से गाली बकवा करते हुवे अकस्मात; एकाएक नजर आते है। यह कुछ प्रार्थना बन्दगी नही कहेलाती है। परन्तु एक जातका निति-नियमोका शिस्त पालनका भंग करना है। ऐसी हालतमें वह उसी परम परमेश्वर परवर्दिगार को याद करना, याने-प्रार्थना-बंदगी पुजा-पाठ करना कैसा हो सकता है?

५. प्रार्थना-बन्दगीको तो एकान्त और एकचित्त की विशेष प्रमाणमें आवश्यकता होनी चाहिये। सच्चे अन्तःकरण से बच्चो के पास से प्रार्थना-बन्दगी करने करानेका सभी आधार माता-पिता उपर रहा हुवा है।

६. प्रार्थना-बन्दगी-शुरुआत करने के प्रथम जो गंभीर, शान्तचित्त बनकर बालकोको भी शान्तचित्त बनाना चाहिये। यह एसी कोशीस करोगे, तभी असरकारक प्रार्थना-बन्दगी होगी। और तभी धर्म-न्याय निति, विषयोंमें बच्चोको समज आती है। इसी रीत-रिवाजो से हर किसीकी आस्था बढेगी। और जब खात्री विश्वास भी होगा।

७. सबेरे उठते समय, भोजन करते समय, वैसे ही रात्रीको सोते समय, हरएक समय जरुर जरुर कुछ ना कुछ वह उस परम परमेश्वर परवर्दिगारको याद तो जरुर करना ही चाहिये। और आजका एक दिन खुशी-के साथ पसार हो गया इसी वास्ते उस परम परमेश्वर परवर्दिगारका बहुत भारी उपकार मानना चाहिये। हररोज नियमित रोज से और रितसर घरकाम-काज व्यवहारादि एवं परमेश्वर प्रार्थना बन्दगी करना जरुरी है। रात्रीको बहुत समय लेना न चाहिये। सबब कि:—रात्री को वह परम परमेश्वर-परवर्दिगार निमित सार्वजनिक संगठित यही सामुदायिक, स्नेह संमेलनमे विशेष समय होनेसे समय जादा लेने से बच्चोका सोनेका समय होता है। वास्ते समय-समय पर प्रथम-नंतर सदा सर्वदा?

१६ धर्म एवं दान

ॐ नमो जयश्री हरी ॐ

आजकल धर्मका नाम लेते ही नास्तिक लोग जबान पकडने लगते है। और धर्म पर अत्याचार तथा रक्तपात के दोष मढे जाते है। परन्तु यह सब बातें तर्कहीन और ना समजकी हैं। और धर्मको न समजने के कारण ही कही जाती है। यह कटुता तथा भेदभाव पैदा करनेवाली कोमवादरुप तथा हट-

वादिता मात्र है। धार्मीकता नही है। इस विषयमें एक विद्वान का मत प्रगट करना होगा कीः–मजहब सांप्रदाय तथा रिलिजनकी बातो पर वाद-विवाद ओर मतभेद हो सकता है। परन्तु धर्म तो नित्य है। वह अनित्य जीवनसे कही अधिक मुल्यवान है।

धर्म कहता है किः—स्वयं रहो तथा दुसरो को भी स्वयं रहने दो। मजहब तथा मतवादका नाम धर्म नही है।

धर्म तो वह वस्तु है कीः—धर्मेण हीणाः पशु भी समानः।

अर्थातः—जिसके बिना मनुष्य पशु बन जाता है।

मानव इस जगतका एक साधन संपन्न प्राणी है। परमात्माने मानव शरीरको ऐसे साधन प्रदान कोये हैं किः— जिनका सद्‌उपयोग करके वह "अभ्युदय ओर निःश्रेयस" दोनो प्राप्त कर सकता है। मानव जीवन वह चौराहा है, जहांसे देवलोक, ब्रह्मलोक, वैकुठधाम, गोकुळधाम अथवा मोक्षधामको भी जानेका मार्ग मिलता है। वही से भिषण नरक ओर कीट पतंग आदि योनियोकी ओर जानेका मार्ग भी सरलता से सुलभ होता है। उसके एक ओर सुखके साधनो से सम्पन्न समुन्नत शैल शिखर है, जिस पर प्रयत्न-पूर्वक उस उपर चढना चाहीये। ओर दुसरी ओर अत्यन्त गहरी खाई है, जिसमें तनिक-सी भुलसे गिरकर सर्व नाश के मुखमें पडने की प्रतिक्षण आशंका हैं। ऐसी स्थितिमेंमानवको बडी सावधानी के साथ अपने लक्षको चुनने ओर उसकी ओर पैर वढानेको आवश्यकता है, सबसे पहले उसे अपने आपको पतनसे वचाकर सुरक्षित रखना है। गिरने या उंचे चढने से पूर्व अपनी वर्तमान स्थितिको सुदढ करना है। अपने आपको धारण करने से ही हम पतनसे बचकर सुरक्षित रहना है। गिरने या ऊँचे चढने से पूर्व अपनी वर्तमान स्थिति को सुदढ करना है। अपने आपको धारण करने से ही हम पतन से बच सकते है, ओर उत्थानकी दिशामें अग्रसर हो सकते है। जगतको धारण करनेकी शक्ति केवल धर्ममें ही है। धारण करने से ही उसका नाम 'धर्म' हुवा है।

'धारणा द्धर्म मित्या हुधर्मोः धारयते प्रजाः' धर्म के वलसे

ही संसार टिका हुवा है: धर्मका आश्रय न होतो एक क्षण भी उसको सत्ता नही रह सकती। इसलिए:—विश्वंभर भगवान् विष्णु जब विश्वकी रक्षा के लियेः— अवतार ग्रहण करते हैं तब सबसे प्रथम धर्म संस्थापनाकी ओर ही ध्यान देते है।

धर्मका मुख्य अधिकारी मानव है। उसीका स्वयं शरीर ही "धर्म-क्षेत्र" और "कुरू-क्षेत्र" है। पशुओ और मनुष्योंमें कोई अन्तर है तो वह "धर्म" को लेकर ही है।

घृतिः क्षमा दमोऽस्तेय शौच मिन्द्रय निग्रहः।
धी विद्या सत्यमऽक्रोधो दशंक धर्म लक्षणम्॥

१ घृति-धैर्य २ क्षमा-सहनशिलता ३ दम-मनको वशमें रखना ४ अस्तेय-चोरी न करना ५ शौच-बाहर भितरकी पवित्रता ६ इन्द्रीय निग्रह-इन्द्रीओको वशमें रखना ७ धी-सात्वीक-बुद्धि ८ विद्या-सात्विकज्ञान ९ सत्य-सत्य बोलना १० अक्रोध-क्रोध न करना यह दश लक्षण धर्म के बताये गये हैं।

इन धर्म के दश लक्षणोमेंसे "सत्यान्नास्ति परोधर्म" सत्य से बढकर संसारमें दुसरा कोई अन्य धर्म नही है। सत्य ही परमेश्वर है वेद कहते है कीः—"सत्यम् वद्, धर्मचर" सत्य बोलना चाहीये, और धर्म से चलना चाहीये, सत्यान्न प्रमदितव्यम्-सत्यसे प्रमाद नही करना "असत्य न वदेत्" याने झुठ न बोले "एष वैदिक सनातनो धर्मः।" ऐसा वेदोक्त सनातन धर्म है।

सत्यव्रत पालन करनेसे धर्म के सभी लक्षण मनुष्यमें उसी प्रकार आकर मिलने लगते है, जैसे महानद् मे लघुसरितायें। अैहिक पारलौकिक सुखका मुल साधन "सत्य व्रत पालन्" ही है। आजकाल यह कठोण कलीकाल चल रहा है। यद्यपि मुक्ति एव भगवत-प्राप्ति के साधन पुराणोमें हर प्रकार से विधान वर्णित है। किन्तु यही कलीकालमे उनका पालन करना अत्यन्त कठीन है, अतः इन्हीं सारी कठीनाइयोंको देखते हुये कलीकालमे सत्य व्रतका विशेष महत्व है।

१७ धर्मोहि तेषामधिको विशेषः

सत्य व्रतके पालनसे मनुष्यमें मानवताका विकास होता है। और उसीके द्वारा अपना तथा जगतका संरक्षण होता है, उपर बताये हुये धर्म के जो दश लक्षण है, अतः यह मनुष्य मात्र के लिये अपरिहार्य आर्य (सनातन हिन्दु) धर्म है, इन सभीको हम गुणरुप धर्म कहेते हैं। हमे यहाँ क्रियात्मक धर्मोंमें से मुख्य धर्मको चुनना है। मनुने संपूर्ण वेद-स्मृति वेदज्ञ पुरुषो के शील सत्पुरुषों के आचार और विचार-मनको प्रसन्नता इन सबको धर्मका मुल बताया है। येही धर्मको लक्षित करानेवाले है। परन्तु इन सबमे वेद की ही प्रधानता है।

धर्म जिज्ञास मानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।

अतः हमे सबसे पहले वेदोमें ही यह ढूँढना है कि मनुष्यके लिये मुख्य धर्म क्या है। धर्मका लक्षण बतानेवाले आचार्योंने उसे:—अभ्युदय और निःश्रेयका साधन बताया है।

यतो अभ्युदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः।

दुसरे शब्दोमें लोक और परलोकका सुधार ही धर्मका लक्ष्य है। ईश्वर मनुष्य शरीरको परम दुर्लभ बताया गया है। "नरत्वं दुर्लभ लोके" वडे भाग्य से इसको प्राप्त होता है। अतः इसको अैसे धर्ममें लगाना चाहीये। जो इसकी प्रतिक्षा और प्रतिष्ठा अनुरुप और उसे सार्थकता बनानेवाला हो। यह तो निर्विवाद सिद्ध है कीः—मानव जन्मको सार्थकता तभी होगी जब वह मोक्ष या भगवत प्राप्तिकी साधनामे लगे। सबसे पहले हम वेद भगवानसे पुछते है किः—हमारा मुख्य धर्म क्या है। वे उत्तर देते हैं।

ईषा वास्यमिदं सर्व, यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथामां गृधः कस्य स्विद्धनम्॥
(य. स. अ. ४० मं.)

अखिल विश्व (ब्रह्माण्ड मे जो कुछ भी है यह चरा चरात्मक जगत तुम्हारे देखने-सुननेमे आ रहा है। यह सब सर्वात्मा परम परमेश्वर से व्याप्त है। उन परात्माको अपने साथ रखते

हुए तुम प्राप्त धन सम्पतिका त्यागपूर्वक उपभोग करो, जितना तुम्हारे निर्वाह मात्रके लिये आवश्यक है। उतने से अधिकको तो अपना मानो ही मत, वह भगवानको वस्तु है, उसे चराचर विश्वमें व्याप्त भगवानकी सेवामें लगा दो। निर्वाह मात्र के लिये जितना आवश्यक समझते हो, उससे भी पन्च यज्ञादिके द्वारा त्याग पूर्वक प्रसाद रुपसे अपने उपयोगमें लावो। निर्वाह से अधिक धनकी आकांक्षा या लोभ न करो। भला धन किसका है? किसीका भी नहि। धनके स्वामीतो एक मात्र लक्ष्मीपति भगवान है। श्री भागवतमें तो यहां तक कहा गया है कि:—

यावद् भ्रियेत जठरं तावत्स्वत्वं हि देहोनाम्।
अधिक योऽभि मन्येत स स्तेनो दण्ड मर्हति॥

जितने से पेट भरे उतने से ही अन्न=धन पर देहधारिका अधिकार है। उसे अधिक जो अपना मानता है वह चोर है। उसे दंड मिलना चाहिये।

उपर्युक्त वेद मन्त्रसे परमात्मा चिन्तन और त्याग इन दो बातों की आज्ञा मिली है, उसी अध्यायके दुसरे मन्त्रमे यह बताया गया है कि:—उन परमेश्वरकी पुजाको निमित्त शास्त्र नियत कर्तव्य कर्मोका आचरण करते हुए ही सो वर्ष तक जीनेकी इच्छा करो।

कुर्वन्नेवेह कर्मांणी जिजी विषेच्छत हूं समाः।
एवं स्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कम लिप्यते नरे॥ (इश. २)

इस प्रकार परमेश्वर के लिये त्याग भावसे किये जानेवाले कर्म तुम जैसे मनुष्यमें लिप्त नही होगे। तुम्हें बंधनमे नही डालेगे। कर्म करते हुए कर्म से लिप्त न होनेका यही एक मार्ग हैं दुसरा नही।

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
ताऽस्ते प्रेत्याभि गच्छन्ति एके चात्महनो जनाः॥

वेद भगवान कहते है कि:—जो त्यागपूर्वक परमात्मा चिन्तन अथवा कर्तव्य-कर्मोके पालन द्वारा भगवानकी आराधना करके इस संसार सागरमेंसे मुक्त होने या भगवानको पानेका प्रयत्न नही करते, उन्हें विवेकी पुरुषोने आत्महत्यारा कहां है। ऐसे आत्महत्यारेको मृत्युके पश्चात घोर अंधकारमय नर्ककी प्राप्ति होती है।

इन मन्त्रोकी अलोचना से यह निष्कर्ष निकला है कि:— मनुष्य मनसे परमात्माका चिन्तन तथा शरीर से उस सर्व व्यापी परमेश्वरको आराधना के लिये शास्त्रविहित कर्म करे. वेद के पूर्वोक्त मन्त्रसे जिस त्याग की ओर संकेत किया है। उसका बहुत बड़ा महत्व है। उसे परमात्माकी प्राप्तिका साक्षात साधन बताया गया है। त्याग से इच्छा असक्ति मोह ममता और अहंकार के त्यागका प्रदिपादन तो होता ही है। उसके द्वारा दान धर्मकी महिमा पर भी प्रकाश पडता है। अनेक स्थलोमें "त्याग और दान" पर्याय वाची माने गये है। मनुष्य स्वभावसे ही धन के उपार्जन और संग्रहका प्रेमी होता है। कुछ लोग तो चमड़ी जाय पण दमडी ना जाय। याने चमडी देकर भी दमडी नही देते। दमडो देना नही चाहते। ऐसे लोगोकी दान के द्वारा ही त्यागमें प्रवृत्ति होती है। इसोलिये वेद शास्त्रोमें दान धर्मकी बड़ी महिमा बताई गई है। दान-वीरोकी यशो गाथाओसे हमारे इतिहास पुराण भरे पडे है। देवता मनुष्य और असुर जब प्रजापति के पास कर्तव्यका उपदेश लेनेके लिये गये, तब उन्होंने तिनों के लिये एक ही उपदेश किया "द" इस "द" का अर्थ देवताओने इन्द्रिय दमन ऐसा समझे असुरोने दया माना, और मनुष्योने उस 'द' को अपने लिये दानकी प्रेरणा समझी (देखीये बृहदारण्यक ५-२, १-३) इसी तरह प्रजापतिकी ओर से मनुष्यको सर्व प्रथम दान धर्मका उपदेश प्राप्त हुआ हैं। दान कैसे देना चाहिये इसकी शिक्षा तैतिरीय उपनिषद के द्वारा प्राप्त होती है।

श्रद्धया देयम्,. अश्रद्धयाऽदेयम्, मीया देयम ! भयां देय
ह्रिदेयम, भिया देयम, सविंदो देयम् !

१ जो कुछ भी दिया जाय वह श्रद्धापूर्वक देना चाहिये।

२ अश्रद्धापूर्वक नही देना. क्यों कि:—बिना श्रद्धा के दिये हुए दान आदि कर्म असत माने गये है।

३ अश्रद्धा हुतं दतं (श्री गीताजी)।

४ जो देना ही हो तो वह लज्जापूर्वक देना चाहिये. अर्थात सारा धन श्री भगवानका है। इसे मैने अपना समझकर उनका अपराध किया है। इसे सब प्राणीओ के हृदयमें स्थित रहे हुए भगवानकी सेवामें ही लगाना उचीत था, मैने ऐसा नही किया, मै जो कुछ दे रहा हूं। वह भी बहुत कम है, ऐसा सोचकर संकोचका अनुभव करते हुए देना चाहिये। मन, मे दानीपनके अभिमानको नही आने देना चाहिये, सर्वज्ञ और सबमें भगवान है। अतः दान लेनेवाले भी भगवान ही है। उनकी बडी कृपा है किः—वह मेरा दान स्वीकार कर रहे है। यो विचार कर भगवान से भय मानते हुए दान देना चाहिये। हम किसीके उपर उपकार कर रहे है। ऐसी भावना मनमें लाकर अभिमान या अविनय प्रगट करना चाहिये नही। परन्तु जो कुछ दिया जाय, वह विवेकपूर्वक उसके परीणामको समझकर निष्काम भावसे कर्तव्य—"कर्मण्येवाधिकारः" समजकर देना चाहिये इस प्रकारका दिया हुआ दान भगवानकी प्रितिका और अपने कल्याणका साधन हो सकता है। वही अवश्यपूर्ण फलका देनेवाला है।

देवता लोग जब राजा नळके पास याचक बनकर आये तब उन्हें उस रुपमें आते देखकर नळ सोचने लगेः—"अहो ! ये आप क्या चाहते हैं, यह मुजे कैसा मालुम हो। और उसे इनके मांगने से पहले ही कैसे इनको सेवामें समर्पित कर दूं। (यदि कीसी तरह मालुम हो जाता तो मैं इन्हें मांगनेका अवसर नही देता) उस दाताको धिक्कार है, जो याचकको इच्छाको जानकर भी उसके मागनेकी प्रतिक्षा करता है। (बिना मागे ही नही दे देता)।

प्रतिदिन प्रातःकाल भगबान श्री सुर्यनारायण अपनी स्वर्णमयी किरणोसे भुतल पर उन्नत सुवर्ण राशीकी वर्षा करते है।

जगत के जीवोको नूतन जागरण, नयी चेतना, नवीन प्रेरणा, देकर सबके लिये नित्यप्रति दान-धर्मका उपदेश करते रहते है। शीतरश्मि सुधाकर अपने कमनीय करो से वसुंधरा पर सुधा उंडेलते और महीतल के ही तलको शीतलता प्रदान करते है, पृथ्वी हमे रहने के लिये स्थान, जल, तृप्ति, अग्नि, उष्णता, वायु, प्राणशक्ति और आकाश अवकाश देकर सबके सब समस्त संसारको भगवत प्रित्यर्थ दान यज्ञका शाश्वत सन्देश दे रहे है। भगवदस्मरण चिन्तन और "त्याग" पूर्वक दान ही मानव के लिये मुख्य धर्म है।

महेन्द्री

स्वधर्मे निधनम श्रेयः

१८ प्रार्थना मन मंदिरमें

निरंजन निराकार निर्विकल्प निर्विकार नैसर्गिक परमात्मा का चिन्तवन सार।

जय जय सुर नायक, जन सुखदायक प्रनत पाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी, जय असुरारि, सिन्धुसुता प्रियकंता॥
पालनसुर धरणी, अद्भुत करणी, मरम न जानई कोई।
जो सहज कृपाला, दीन दयाला, करउ अनुग्रह सोई॥

हे देवताओ के स्वामि भक्तोको सुख देनेवाले, शरणांगतोका पालन करनेवाले, भगवान आपको जय हो। हे गो ब्राह्मणो के हितकारी असूर के वेरी, लक्ष्मी के प्रिय स्वामी आपका जय हो। देवताओकी और पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले आपकी लीला अनोखी है। जिसका भेद कोई नही जानता। अैसे स्वभावसे ही सहज कृपालु और दीन दयालु भगवान हमारे पर कृपा करो।

जय जय अविनाशी, सब घटवासी, व्यापक परमानंदा।
अविगत गोतितं, चरित पुनीतं, माया रहीत मुकुन्दा॥
जेहि लागी विरागी, अति अनुरागी, विगत मोही मुनीवृन्दा।
निसी बासर ध्यावही, गुन गान गावहि, जयति सच्चीदां नंदा॥

हे अविनाशी अंतर्यामी सर्व व्यापक परम आनंद स्वरुप अजेय इन्द्रीयोंसे परे, पवित्र चरित्र माया रहीत भगवान वैराग्य-वान् मुनीगण अत्यंत प्रीति के साथ रात दिन जिनका ध्यान करते है ऐसे सच्चिदानंदकी जय हो ।

जेही सृष्टी उपाई, त्रिविद बनाई, संग सहाय न दुजा ।
सो करउ अघारी चिन्त हमारी, जानिय भगति न पुजा ॥
जो भव भय भंजन, मुनि मनरंजन, गंजन विपति बरू था ।
मन वच क्रम बानी, छांडी सयानी, सरन सकल सुरजूथा ॥

जिसने अकेले ही सृष्टी सत रज तम ऐसे तीनो प्रकारकी उत्पन्न की है. हे पापनाशक प्रभु हमारी शुद्ध के लिये हम भक्ति और पुजा नही जानते. जो संसारके भयको नाश करनेवाले भक्तजनोके मन आनंद देनेवाले. और विपत्ति के समुहको नष्ट करनेवाले हैं. मन वचन कर्मसे चतुराईको वाणी छोड़कर हम सब देवता गण आपकी शरणमें आये है ।

शारद सुनि शेष्या, रिषय असेषा, जाकहूं कोऊ नही जाना ।
जेही दीन पियारे, वेद पुकारे, द्रव सो श्री भगवाना ॥
भव वारींधि मन्दर, सब विधि सुन्दर, गुन मंदिर सुख पुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर, परमभयातुर, नमथ नाथ पदकंजा ॥

सरस्वती वेद शेष और सबऋषिओ आदिने भी उसको नहिजाना, जिन्हे दीन प्रिय है, ऐसा वेद पुकारकर कहते है, वेसे हम पर दया करे. सब प्रकारकी सुन्दर गुणो के मन्दीर और जो सुखके समुह है, हे नाथ मुनि सिद्ध एवं सब देवता बहुत ही भयातुर होकर, आपके चरणाविंदको प्रणाम करते है ।

जा नि सभय सुर, भुमी, सुनि, वचन समेत सनेह ।
गगन गीरा गंभीर भई हरनि शोक संदेह ॥

देवता और भुमिको भयभित जानकर और स्नेह सहित वचन सुनकर शोक और संदेहको हरनेवाली गंभोर आकाश-वाणी हुईः—

१९ सत्य बात यही है कीः—

हरी व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेमते प्रगट होई मै जाना ।
देशकाल दिशी विदिसिहु मांही, कहहूंसो कहां जहां प्रभु नाही ॥

श्री हरी सभी जगह समान व्यापक है, प्रेमसे प्रगट होते है, यह मैं जानता हूं देश समय दिशा और विदेशामें कहो वह स्थान कहां है जहां प्रभु नहीं है ? (तुलसीकृत)

" श्री राम मंदिर "

काम क्रोध मद मान न मोहा । लोभन क्षोभ न राग न द्रोहा ।
जिन्हके कपट दम्भ नही माया । तिन्दके हृदय बसहु रघुराया ॥

जिनके मनमें काम, क्रोध, घमंड, अहंकारा और मोह नही है । और न लोभ है । न क्षोभ है । न राग है । न संदेह है । न कपट है न दम्भ, व माया नही है, हे रामजी ! आप उनके मनमें वसिये ।

सब के प्रिय सबके हितकारी । दुःख सुख सरिश प्रशंशा गारी ।
कह ही सत्य प्रिय वचन विचारी । जागत सोवत शरण तुम्हारी ॥

जो सबको प्यारे सबका हित करनेवाले है दुःख और बडाई तथा गाली जिन्हे एक समान है जो सच्चे और प्रिय वचन विचार कर बोलते है, तथा जो सोते जागते आप ही की शरण है ।

तुम्ही छांडि गति दुसरी नाही । राम बसहु तिन्ह मन माही ।
जननी सम जान ही परनारी । धन परावु विषते विष भारी ॥

आपको छोडकर जिनको दुसरी गती नहि है । रामजी आप उनके हृदयमें वास कीजिये । जो पराई स्त्रीको माता तुल्य समजते है, तथा पराया धन विषसे भी भारी समजते है ।

जे हर्ष ही पर सम्पति देखि । दुखित होहि पर विपति विषेखी ।
जिन्ह ही राम, तुम्ह प्राण पिआरे, तिन्ह के मन शुभ सदन तुम्हारे ॥

जो दुसरे के ऐश्वर्य को देखकर प्रसन्न होते है, और दुसरे की विपत्ति देखकर दुःखी होते है। जिन्हें आप प्राणोके समान प्यारे है, हे! रामजी उनके मन आपके योग्य उत्तम स्थान है।

दोहाः- स्वामी सखा पिता माता गुरु, जिन्हके सब तुम तात।
मन मंदिर तिन्हके बसहु सीया सहीत दोहु भ्रात ॥

हे तात जिनके स्वामि सखा पिता माता गुरु सब कुछ आप ही हो, उनके मन मन्दीरमें सिता समेत आप दोनो भाई वास कीजिये।

प. पू. महाकवि परम सन्त स शिरोमणी तुलसी कृत
२० आगम (भविष्य) वाणी

भवतारण भगवन्त भज, धारण उर धर ध्यान।
यो धारण आगम यही, निह कलंक जेही नाम ॥१॥

प. पु. महाकवि तुलसीदासजी कहते है किः—हे मनुष्य जनम मृत्य के फेरेमे से छुडानेवाले भगवानकूं तुं भज, और उर (मन) में ध्यान धारण कर, कारणः—वह श्री निष्कलंकी भगवान का आगमन रुप है।

चौद तुरका दर्शही भुरका, जुलम करका, हजार बरका।
कसत कधरका, राज्यहि करका, मून करंदा दुःख आता ॥
किल किल हुंदा भुतानंन्दा, बगरंदा मदमाता।
मैं गुरु गुरु गातां उर उभराता, आगम आता दरशाता ॥

श्री मद्‌भागवत के स्कन्ध बारवा अध्याय १ पहलो प्रथम में भविष्यकी राजाओकी गीनती बताई है। उसीमें ८ यवन-पिछे होनेवाले १४ चौदह तुर्कोसे गिनते है कि—

चौदा तुर्क १० दस भुरा केशवाला याने गुरुण्ड (गोरा) नृपति होगे। वह १००० वर्ष तक राज्य करके प्रजाको पिडा देगे बहुतो को कैद करेंगे, बादमें मौन राजा बनेंगे, वह ३०० वर्ष राज्य करके प्रजाको दुःख देगे, नंतर

कलीकला नगरीमें भुतानन्द राजा होगे उसके बाद दुष्टके नंतर बंगोरी नामके दुष्ट मदोन्मत राजा होगा, वह सभीको असह्य दुःख देगा, इसी वास्ते मैं मेरे गुरुको याद करता हुं मेरा दिल उलट जाता है कारण कि:—आगम (भविष्य) में भयंकर कठीन समय आता हुवा समजमें आ रहा है।

ताका अनुजंन्दा हो शीशुनन्दा, ताका नंदा बरजन्दा।
प्रविरक हुन्दा शक वरतन्दा, राज्य करन्दा रन्जन्दा ॥
शक एक खटन्दा, वरस वितन्दा, बाल्हीक थिन्दा बतलाता।
में गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥३॥

उस बंगिरिका भाई शिशुनन्दा होगा, उसका यशोनन्दा होगा, वह भी लोकोको धर्म गुणोसे रोकेगा बाद प्रवीरक स्वयं स्वत: का शक चलाकर १०६ एकसो छ वर्ष तक जो वि:सं. १०९ गिनते है उसीको पुरा करेगा, नंतर बाल्हिक होगा ऐसा मैं आपको गुरु गुरु गुण गाता हूं और भविष्यमें जो आता है उसको बताता कहता हूं।

जग जुलुमन मिन्सा पाप न चिन्सा, क्षत्रीय जनका विध विनशा।
जग बहु पतईन्सा सुपत थिन्सा रजनी दिनसा कूहदिसा ॥
तो वर्णन किन्सा धरम न चिन्सा, कर्मन गिन्सा पर खाता।
मे गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दर साता ॥४॥

वह राजा लोग अपने स्वयं स्वत के अत्याचारको जगतमें जुलुम नहीं समजेगे, पापको नही पहेचानेंगे, उसी समय क्षत्रीयोंका भविष्य बिगडा हुआ होगा, सभी लोग वेद धर्मको छोड़कर अधर्म करने पर खुब राजी खुशीसे चाहने लगेगे इसीसे पापीष्ट राजा लोग रातको दिन और दिनको रात कहेंगे तो भी लोग मान लेंगे इसी पर से कहा जाता है कि:—लोग धर्मको नही मानेगे नही पहचानेगे वैदिक कर्मकान्डकी जो दुनियाको पापके अटकानेवाला और अन्तः करणको शुद्ध करनेवाला और पापाचारसे संकोचानेवाला ऐसे इस कर्मको श्रेष्ठ

न समझकर कुकर्म करने लग जायेगे. अैसा यह तो अभी से ही समझनेमें आने जैसा है, इससे मै दुःखी होकर गुरु गुरु गाता हूं और जो आगम-भविष्य की समज पडती है उसीको कहा करता हूं !

सब पापी परजा तामस तरजा, तुच्छ उमरजा यह सरजा ।
लोभी नरजा, मन मत गरजा, घर घरना शीर ताजा ।।
पुत मात मनुनी तात तनुनो, अनुजा अनुजही नही नाता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ।।५।।

सभी प्रजा पापी और तामसी होकर, अल्पायुषि बन जायगी उस लोभी पुरुषोको मन, बुद्धि तथा घरमें स्त्रियाँ सरदारी करेंगे । पुत्र मानिता माता-पिता, बहू, बेटी, भाई-बहेन इस सभीका सम्बन्ध रिश्ता-नातातुट जायगा और पति-पत्नी जैसा होनेसे लोगोमें बग, भग, भक्ति-सेवा प्रचलित हो जायगी । इसी वास्ते मैं गुरु गुरु गाता हूं और समजमें आता है वैसा भविष्य कहता हूं ।

परत अकाला, बहुत कराला, जग बेहाला, हर साला
वापी कूप ताला, नदी नद नाला, जल बिना ठाला, यह हाला ।
रतनागर जाता, बिगडा थातां, वारि विकातां, लिया जातां
मै गुरु गुरु गाता, उर उभराता, आगम आता दरशाता ।।६।।

अैसे विषय भोग परिस्थिति के कारणः— वारंवार हंमेशा दुष्काल पड़ता रहेगा, इससे हरएक सालो बादः—दुनिया बेहाल दुर्दशाग्रस्त होगी, वाव, तलाव, कुवा, नदीयाँ, बडी बडी और नाले यह सभी जलाशयो जलके बिना ठाला (निकम्मा) बिना काम काजके हो जायेगे, समुद्र भी सुक जायगा, और लोग जल (पाणी) के वास्ते सागर (समुद्र) में खाड़ा खदोचा खोदकर पाणो निकालेंगे उस समय पाणी भी बिका जायेगा मोल मिलेगा, पाणी बेचनेकी दुकाने लग जायेगी, अैसा समजमें (आगम-भविष्य) दिखता है वास्तेः—मैं गुरु गुरु स्मरण करता हूं ।

नागरवेला फुल फुलेला ऊखा, धाना जामेला ।
नाग करेला निरविष हेला, थोरे केला धेनुं जसहोला ॥
कागवा धोला कोयल वहुला, हंसा बगला बन जाता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥७॥

उस समय नागरवेलीमें फल फुल भी आयेगा, गन्नेमें धान्य, बीज, पैदा होगा, नागफणीवेल थोरसे कारेला पैदा होगा, हेला निर्बीज होगा थोरीया के झाड से केला पकेगा गाये (गउवे) होला जैसी छोटी छोटी होगी, काग सफेद होगा, और बगला एवं कोयल हंस सभी समान काले हो जायेगे वास्ते मैं गुरु स्मरण करता हूं और—

बीज सत्त बहूता, कसी सहूता, भगत सपूता दुःख होता ।
धेनु घर रोता, धीर धरूता, अरज करुता सब सूता ॥
प्रभु जब सुना पुकारा धरी अवतारा, अखंड चिलारा जाता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशांता ॥८॥

सन्त बीज जो कि:— महात्मा साधु, वैरागी, त्यागी, संन्यासी है उनके उपर बहुत हो खिचा सिच करके, सभी को बान्ध करके कैदमें डाल देगे, जो कोई सुपुत होगा भक्त होगा उसीको वहुत ही दुःख होगा, गौ (गाय) को पालनेवाला गोपालक बहुतही दुःखी होकर रडारड करेंगे, होते रहेगे और सभी रुदन करके वह श्री हरीको अरज करेगे जब प्रभु यह पुकार सुनेगे और अवतार धारण करके (करेगे) अखंड सनातन आर्य पवित्र धर्म मार्ग सतपंथ से ही ले जाते है वास्ते में गुरु स्मरण करते हुए जो समज भविष्य है वह कहता हुं—

गंगा तट गामा अति हि ललामा संम्भल नामा सो गामा ।
विष्णुं जशवाला मातंगी धामा, पुरण कामा घनश्यामा ॥
रवि शशी गुरु करही मकर ठर ही तब अवतारही जगत्राता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर ऊभराता आगम आता दरशाता ॥९॥

गंगा किनारे अति सुन्दर संभल नामे नगर है, वहां तट विष्णुयश अथवा धनीक रिख की पत्नी (स्त्री) मातंगी बाई के पेटसे घनश्याम प्रभु जो जैसे है, वह सूर्य चंद्र गुरु मकर कर्क राशोमें आयेगें उसी शुभ ग्रह समयमें अवतरेंगे—

पितु मातु सयाना स्वर्ग पठाना, आप धर पठान का बाना ।
साहिक जग जाना पीर कहाना, ज्ञान निधाना गुण खाणा ॥
तन घनः श्याम बरना भुज आजाना, चन्द्र समाना मुख भाता ॥
मै गुरु गुरु गाता उर ऊभराता आगम आता दरशाता ॥१०॥

श्री निष्कलंकी के सयाने हुशार पण्डित मातपिता स्वर्ग-वासी हो गये, तब आप पठाणका वेष पहन लिया, उनको आज वर्तमान जगत पीर, शाह नामसे पेछानते है, वह ज्ञान सागर गुण भंडार है, तनुं (शरीर) उनका घनःश्याम है, अथवा स्वयंम स्वतः श्री निष्कलंक भगवान है पावके घुटनो तक हाथ उनके लंबे है, चन्द्र समान मुख है, वास्ते मैं गुरु गुरु गाया करता हूं और समज पडती वह कहता हूं ।

सिरताज सुधारा बसन सिंगारा, खड्ग उघाडा त्री धारा ।
देवांगी स्वारा दुष्ट संहारा, करत उद्धारा संसारा ॥
नर कबर समाता ताही जगांता, लेत संगाता हर खाता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥११॥

शीर उपर ताज पहना हुआ है, वस्त्र भुषणसे श्रृंगार किया हुआ है, तीन धारवाली खुली तलवार (त्री धारु खड्ग) हाथमें है, देवदुत स्वर्गमें ले जाने वाला बुराख याने दुलदुल नामका घोडा स्वारीके लिये है, वह अवतार (श्री निष्कलंक) दुष्ट (अवतार पात्रके विरोधी) को संहारते और संसारका उद्धार करते है. जो नर–नारी कबर (जमीन) में दटाये दाटे हुए (भुमी दाह दिये हुए) है, उनको जीवत जगाया करके संगात (साथ) में लेकर हरखाते हुए देश पर्यटन करते है ।

दिल्ली जब आवत अमल फिरावत, कष्ट हरावत दूर बावत ।
सब भुप बोलावत धर्म शिखावत, धमकावत भड भाथा ॥
तब बाहा भरावत शपथ करावत, नियम करावत शुभ थाता ॥
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१२॥

जब दिल्हीमें आते है, और वहां पर स्वयं स्वयंका अमल हुकम चलाते है, तब हरेक कोई भी बाबत दुष्टोको हराते है, वहाँ पर सभी भुपो (राजाओ) को उनका धर्म (न्याय, नीति-कर्म) सिखाते है, बडे बडे भडवीरोको धमकाते है, सभीको मिलनसार बनाते है, शपथ–सौगन दिलाते है कि, जिसमें शुभ होता है।

जिने जंग बढाया मुद धराया, भाव सवाया उभराया ।
जो कपटी कहाया घाणी पीलाया, दीप जलाया हमकरीया ॥
जो निज जन आता निकट बुलाता, आदर पाता बिठलता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१३॥

जीस किसने श्री भगवान के साथ युद्ध किया उनको पकडकर उनके मगजमें रहुं (अग्नी) भरकर सवाया कष्ट देगे, जीस किसी कपटीने कपटी पांखंडो समज लिया हो उनको घाणोमें पिलाकर उनके तेलके दीपक जलाये (जलायेगे) जो कोई स्वयं-स्वतःका समझकर जो जनता सरणमें आती है, तो उनको अच्छी रीत–भात मानवता के साथ पासमें बुलाते है (बुलायेगे) और आदर के साथ आदरातिथ्य करते रहेगे पासमें बिठाते है (बिठायेगे) वास्ते में—गुरु०

तो देश गुजरीया तहा पर वरिया, सव जलभरीया है हरियाँ ।
कांकरीया देश तहां करीया कोष, सत्तरीया लशकरीया ॥
बाना जग धराया सिद्ध जबराया, नाथ समराया सुल वाता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१४॥

बादमें श्री निष्कलंकी (मियां) दिल्लीसे चले तो वह गुजरातमें आये, वहाँ गुजरातमें सुन्दर ऐसे जलाशयोमें सुशोभित

और रसाल वैसा ही सदा के लिये निलवर्ण रमणिय है, वहाँ (अमदावाद के पास) प्रसिद्ध कांकरीया तलाव के पासमें (पिराणा मुकाम पर) ७०००० (सीतेर हजार) लश्कर लेकर पडाव डाल दिया, और कितने एक संसारको स्वयं स्वतः का वेष पहनाकर जबरी सिद्धी बताकर लोकोको भूलो (गुन्हाओं) की याद देकर पिराणाधाम बनाया ।

जन सकल सुधारे कलंक उतारे, गढ जुनारे पद्धारे ।
भवनाथ निहारे देश डारे, लश्कर सारे सुखीयारे ॥
तहां गुरुदत आता नागलमाता, जमियल दाता संगाता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१५॥

बहुत सारी जनताका सुधार करके भुले चुके गुन्हाओंका कलंक उतारकर सनमार्ग लगाकर पिराना बनाया, तब वहाँ से जुनागढ आये, वहाँ शंकर भगवानको मन्दीर के पास स्वयं स्वतः का लश्कर उतार दिया, वहाँ पर वह बहुत सुखी हुए, वहाँ गुरुदत्त और नागाल माता आये, साथमें जमियल दाता भी थें, मैं तो गुरु गुरु गाता हुं कि मेरा दिल उभर आता है और आगम भविष्यकी बात करता हुं ।

नरसिद्ध कहावा कबर समावा, सबतर आवा एक साथा ।
वन्थली जावा लग्न धरावा, प्रणय बनावा सुर साथा ॥
मेघा पुत्री कहावा नकलंग बिहावा, सतजुग आता बर ताता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१६॥

नंतर निकलंकी भगवान (मिया) स्वरुप स्वय स्वतः की सिद्धी बताने के लिये कबर (समाधि) में समा गये, और एकही समयमें बहुत जगह पर जनताकी दृष्टिमें दृष्टिगोचर हुए, बादमें वणथली मुकाम पर जा:कर (एक सनातन हिन्दु) स्त्री के साथ प्रणय किया, वह स्त्रो मेघाबाई को पुत्रीथी मेघली उसका नाम था, उसी के हाथ पाणी ग्रहण किया, याने लग्न किया, बस्सं यही सतजुग आनेकी निशानी है, गुरु स्मरण और दिलकी उमंग के साथ मै आगम कहता हूं ।

भोजन मन भाता खूब खिलाता, दात हिलाता सुख पाता ।
जुने फीर आता नागलमाता कर, पोखाता हरखाता ॥
जग हुकम फिराता सत्य घरावता, कलौ दीखाता सबजाता ॥
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१७॥

मेघलीबाईको परणाकर तदनंतर नकलंक पीर नाम पाकर जुनागढ रहे, वहां पर नागलमाताने हर्ष के साथ उनकी सेवा करी खुब खिलाया-पिलाया वेदशास्त्राधीन चलकर जो कुछ सत्य है उसीको ही अमलमें लाकर सभीको देश पर्यटन करते हुए श्री सनातन आर्य सतपंथ धर्म, कर्म, न्याय, निंतिको समझाते हुए देश पर्यटन करते थे, कलियुग इन परिचयसे अब नष्ट होता हुआ दिखता है ।

जग जियाना भयेसयाना, गुण निधाना गुण खाना ।
आगम यही जाना पूर्ण प्रमाणा, सुनत सुजाना सुखमाना ॥
जय निकलंकी देवक भववल सेवक, "तुलसी" आनंद दाता ।
मैं गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१८॥

इसके बाद जगजिवन श्री. निकलंककीजी बडे शयाने हुशार समजदार हुए, गुणनिधान और गुण खान बने, भक्तराज कविश्री तुलसीदासजी कहते है कि मैं आपलोंगो को भविष्यमें आनेवाला समय होनेवाला धर्म, वेद, शास्त्रकी रीतभात न्याय नितिसर पूर्ण प्रमाण देकर, गतिविधिकी सुचना करी है, वह एक पूर्ण प्रमाण और सत्य आगम भविष्यवाणी है इस बातको सुनकर समजदार सज्जन मनुष्य सुख मानेंगे शोचेंगे और समझेंगे ।

हे जय श्री निष्कलंक देव आप भवजल से तारणहार हो आपका जय हो " तुलसी " सेवकको आनंद देनेवाले आपका जयहो, जयहो, जयहो, जयहो, जयहो ।

ॐ नमो जय श्री सच्चिदानन्द भगवान निष्कलंक नारायण देव की जय।

ॐ नमो श्री सनातन आर्य पवित्रोतम आदर्शयुक्त
सतपन्थ धर्म की जय " ।

श्री सतगोर पात्र ब्रह्म ईन्द्र ईमाम शाहजी की जय ।

(२१) सत साहित्य विचार सरणी

सत साहित्य अंतःकरण को उज्वल करता है
" " जेबमें रख्खा हुआ बाग है ।
" " ज्ञान प्रसारके लीये अमूल्य और सुगम साधन है ।
" " जीते जागते देवता है ।
" " मानव को दानव नहि, पण देवता बनाता है ।
" " का मूल्य रत्नो से भी अधिक है ।
" " मनुष्यका सच्चामित्र और मार्गदर्शक है सदा के लीये सबसे बडा मित्र है अच्छी पुस्तक सत साहित्य ।

सूचनाः—खराब चोपड़ी (पुस्तक) जैसा लूटारु दूसरा कोई नहि समयका और वैसे सद्गुणोका ।

स्वाध्याय विचार शीलताकी न्युव है ।
" शिक्षीतकी सर्व श्रेष्ठ आदत है ।
" ज्ञान संचय और आत्मविकासका सर्वोतम साधन है ।
" ज्ञान संपादनकी कुन्जी है ।

स्वाध्याय— मनन के विना बिचारो को स्फुर्त्ति नहि मिलती ।
" " मानसीक विकास नहि हो सकता ।

संसारमें जीतनीभी लिपिया है उन सबमें सबसे अधिक वैज्ञानिक लीपी है देवनागरी ।

यही इस देवनागरी लिपिको स्वीकार कर लिया जाय और समस्त स्वदेश भारतीय भाषाओंका साहित्य देवनागरी लिपिमें हो तो बहुतसी कठिनायीओंका और पूर्वाग्रहोका समाधान हो सकता है वास्ते—जनता सोचे और समझे ।

—पंडित नेहरू

अर्चना

तुम अपमान करो कितना भी ।
तुमको सब अधिकार है ॥
मुझे मांगने को भी बाकी ।
फकत तुम्हारा एक द्वार है ॥

जब याचक ही बन बेठा ।
फिर मेरी क्या पहिचान ? ॥
जिस विणाके तार छिन्न हो ।
क्या उसका लय गान ? ॥

मै कंगाल जन्म जन्मका ।
तुम कुबेर हो धनवान ॥
मेरे गुण अवगुण मत देखो ।
पारस खण्ड समान ॥

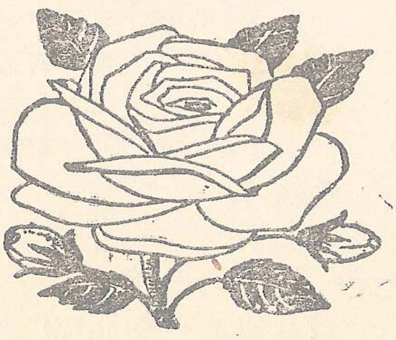
मैने आपा सोपा तुमको ।
बोलो क्या स्विकार है ? ॥
तुम अपना करो कितना भी ।
तुमको सब अधिकार है ॥१॥

अभी कामना शीतल ज्वरसे ।
अंग अंग काप रहा ॥
पूर्ति वस्त्र ढाको कितने भी ।
चढता ताप महां ॥

तिक्तौषधि साधन, यम, संयम ।
सेवन शक्ति कहां ? ॥
व्याधि निदान उसे मिलता है ।
जिसने चरण गहां ॥

महा वैद्य भव भिम रोग के ।
ज्ञात तुम्हे उपचार है ॥
तुम अपमान करो कितना भी ।
तुमको सब अधिकार है ॥२॥

यह जीवन उद्यान शुष्कसा ।
खिली न एक कली ॥
अनहद नाद भ्रमर न गुंजा ।
आभा भी न मिली ॥
मेरी मूक भावना यो ही ।
घूट घूट कर मचली ॥
बगीचा के माली बिन सुनो ।
मेरी गली गली ॥
कब बसन्त बरसेगा मुझ पर ?।
अब तक तो पत झार है ॥
तुम अपमान करो कितना भी ॥
तुमको सब अधिकार है ॥३॥
मेरी ओर न देखो दाता ।
तुम जग के हो धाता ॥
मेरे सब कुछ तुम्ही एक हो ।
गुरु, पितु, माता भ्राता ॥
युग युग से चलते आया है ।
नित्य निरन्तर नाता ॥
मेरा सर्वेश तन, मन जीवन ।
मंगल भाग्य विधाता ॥
फिर भी द्रवित न हो तुम पाये ।
यह प्रत्यक्ष प्रहार है ॥
तुम अपमान करो कितना भी ।
तुमको सब अधिकार है ॥४॥



I

ॐ नमो जय श्री तत्सत हरी ॐ

" वेदोऽखिलो धर्म मूलम् "

श्री सतपंथ ज्ञान साहित्य संगम
याने
गद्यपद्य सार संग्रह

आगम (भविष्य) वाणी

संकलन कर्ता
श्री. शंकरलालजी संपत अथर्व वेदी

संस्कृत—विभाग

2

संस्कृत (देव) भाषा

संस्कृत:—यह भारत वर्षकी सर्व प्रथम प्राचीन भाषा है। इसको देव-वाणी (देवताओकी भाषा) की नामसे पैछानते है। यह देव-भाषा संस्कृतमें से ही वेदोका प्रथम प्रसार और प्रचार हुवा है।

जिस किसीको पूर्व-प्राचीन साहित्योमे से कुछ संस्कृति देखना हो तो इस संस्कृत देवभाषाका ही सहारा लेना भाग पडता है, और जो पूर्व प्राचिन " संस्कृति " इस देव भाषा संस्कृतमें मिलती है; वह कोई भी अन्योन्य भाषा(ओ) मे नही मिलेगी।

वास्ते:—इस संस्कृत भाषाका मेरे को मेरे मनकी "इश्तिछाह=रितभात और रूचि; भावना प्रमाणे जो प्रेम है; वह यहाँ पर किसी अन्यको समझाने के लिये, मै मुंगा=मूक=तोतला जैसा है, अनपढ जैसा हैं।

फिर भी मेरे को " संस्कृत " भाषाकी रूचि; प्रेम; सद्‌भाव होने से यहाँ पर कलीयुगका कुछ भविष्यकारोका भविष्य एवं अन्योन्य कुछ विचार-विनिमय संस्कृत मे लेनेका था, वह इस साहित्यमें। फटे-तुटे कागदोमें से मिल आया, उसीका यहाँ पर संकलन रूपमें उपयोग मात्र किया है. फिर भी विचार करता हूं:-संस्कृत भाषा के साथ साथ अन्योन्य कोई भी प्राकृत भाषा(ओ) को मै गलत नही समझता कारण:—मेरे को तो अर्थ भावार्थ समझमे आवे उतना ही अच्छा. अब जादा क्या लिखुं? आप श्रोजो तो मेरे से ज्ञान-बुद्धिमें विशेष हो वास्ते:—माफी चाहता हूं. अस्तू।

संकलन कर्ता

• भूमिका •

—— o ——

अयि महानुभावा इच्छा एताहशी मनसि प्रभूतामे यदहं भवतां सम्मुखे विशेषां वेदान्तपद्धतौं विन्यस्तां कुर्याम, परं विद्वन्मण्डलीमुपस्थितां निरीक्ष्य प्रहर्षितोऽहं शिशुवदात्मानं विधाय शैलीं पठितां प्रकटितां कुर्वे, आशाञ्च दधे, त्रुटिं मे संशोधितां विधास्यन्ति भवन्तः । वेदान्तविषयस्तु गहनसागरः, किन्तु पारं सर्वै गन्तव्यमस्ति केवलं पारे गमनं न कर्तव्यं सर्वेषामापि तु तत्त्वमुक्तामयान्वेषणं प्रधानं कार्यं विद्यते ऽस्माकं ! वेदान्तविषये जगच्छून्यं दुःखागारं बाधोपेतं भवेत् परमेषारूढिः स्थूलतां निवारयन्ती सूक्ष्मविषये प्रसभं प्रक्षिपति चेतो मनुजानाम् । एतैन नित्यतां सर्वेषा बोधयति च । स्पष्टतयाऽतः कथ्यते, यदेतज्ज जगत् नाऽनित्यं, परं सत्यमेव । वयं चेतनधियो नित्याः सत्याश्च सम्भारा अप्यस्मांकं नित्याः क्रियाश्च सत्याः परं सूक्ष्मदृष्या । ऋतं च सत्यं चाऽभिधात्तपसोऽध्यजायतेति वेदोक्तिः । अनेनोपायेन मानवानामुत्साहो वर्धते, मानवाः प्रायो विचारभावं गवेषयन्ति, यदि दुखं बाधा कस्याऽपि सम्मुखमा याति, तर्हि शीघ्रमसौ चिन्तयति स्वात्मनो नित्यतां सौख्य भावं च । अनया प्रथयास्वविकारान् स्वयमेव जयति म दुखिमनुजः विकार शून्यता मधिगम्य ब्रह्मसादृश्य माप्नोति सर्वं खलु ब्रह्मेति तथ्या भवति वेदवाणिः । मनुजस्तु पुनः सर्वेषां हितायचिन्तयति लक्ष्यम् न द्वेषं कुरुते न रागञ्च केनाऽपि सह । न च निन्दां परेषाम् । सर्वान् स्वाऽत्मनः प्रभूतान् वा ऽत्मानस्तत्त्वंविदित्वा तत्सेवां विदधाति । सच्चरित्रधारामाप्नुवन् मुहुर्मुहु लौकपरलोकाऽधिपत्यमनुतिष्ठति । पुनर्वेदान्त प्रथैवसर्वेषां हृदयानि हरति माधुर्यात् तर्हि सुखमयं भवति जगत् । इदानीस्तु सच्चरित्रस्य महती वर्तत आवश्यकता, यदाऽधुनिका विविधबाधाभिर्हतोत्साहा न कर्मठ-

शक्ति पश्यन्ति न धारयन्ति धैर्यम । व्यसनपङ्कपतिता नात्मानं शुद्धं कुर्वन्ति केवलं यथा कथञ्चिज् जीवनं यांपयितुं विचारयन्ति यदि जीवने दुःख मापतेत्, तर्हि पशुवत् पराधीनाः स्व बलिदानं मोघमेव विदधति, निजात्मनो विशालतां नित्यतां न मन्वते । अतः पाश्चात्यशिक्षाशिक्षिता लोका भारतीयानां प्राचीनवेदान्तपद्धतीं कटुतयाविदन्ति । चरित्रह्रासे नात्मनि बलं भवति । अतो भारतीया वेदान्ततत्त्वं विस्मृत्य कार्यतश्थाऽन्वेषणपतिता अन्यान्नपि पातयन्ति । अत आत्मशुद्धि विना वेदान्ततत्त्वबोधः कथं जायते, यदिवयं स्थूलजगतः खण्डनं कुर्मः तर्हि कथनमेतदावश्यकीयं वर्तते, सूक्ष्म भावैः सत्तमेव जगत् स्थूलं जगत् नश्वरं, वयमपिसत्याः । अनेनोत्साहेन भौतिकोन्नतिं भारतीया न विस्मरिश्यन्ति । अतोवेदान्तविदां कथनं सत्यमेव । यह्लोकपरलोकोन्नतिरेव वेदान्ततत्त्वम् । यथा पूज्यपाद्योगीराजस्य कृष्णास्य चरित्रम् । तथा विदेहजनकस्य गाथा च दक्षिणाऽधिपतेः शिवस्य लीला, राजस्थानप्राणस्य राणाप्रतापस्य कृत्यमेव वेदान्ततत्त्वम् यदेते सदैव जीविता ब्रह्मरूपाः । वयं विदेश शिक्षाप्रभाविता न जानीमः स्वशास्त्रशिक्षाप्रभावन् । अतो वेदान्त भवैरेव सर्वनिषेधविधि न प्राप्नुयाम, यथा पतनाऽवस्थां दृष्ट्वाऽपि न परिबर्तनोपायं चिन्तयामः सर्वं नित्य मिति वेदान्त प्रथाया एतस्याः स्वामिरामतीर्थ विवेकानन्दाऽदिभिरेषां विचाराणां च प्रचारो- विहितः । अतोवच्मि सत्यम् । सर्वे भूता न सत्याः सर्वाणि वस्तूनि न नित्यानीति पद्धति रघुना न सफला भविष्यति वेदान्तप्रचारे । वयं भौतिकोन्नतिं विधायैव सूक्ष्म विचारेण सर्वस्मै दत्वाऽधिकारं सर्वेषांहितचिन्तका भूत्वा विदेशीयान्नपि वेदान्त भावैः शिक्षितान् करिष्यामः । प्रत्येको मनुजः सूक्ष्मदृष्ट्या पश्यन् स्थूले विश्वासं न कुर्वन् मर्यादां स्थिरां विधास्यति, मानवेभ्यो यथायोग्य मधिकारं ददानः परोपकार वृत्तिमयं वेदान्तं स्वयमेव ज्ञास्यति, सच्चक्षुषा सूक्ष्मविचार एव चरित्र निर्माणम् । अनेन चरित्र बलेन जगतां स्थूलभावान व पदार्थान्ने कत्रीकृत्य सूक्ष्मविचार मन्येभ्यो वितरन् मानवो ब्रह्मसादृश्यं प्राप्य वेदान्त तत्त्वस्य भूषणं जायते, दानेनैव मनुजो मानवता मधिगच्छति, यदि व्यसनी पतितचरित्रः कोऽपिवर्तते, नाऽसौ दातु मुत्सहते,

यत्तस्य पार्श्वे न विद्यते किञ्चिदपि, यस्याऽन्तिके ऽस्तिकिञ्चित्, स एव वितरति । सच्चरित्रं बिना न किमपि सूक्ष्मधनम् । यन्नित्यं स्थिरं भवेत् । अत एव चरित्रं निर्मातुं बालेभ्यः स्थिर-प्रज्ञाया आवश्यकीय उपदेशः । येनेदानींतना बाला । सोत्साहं सफलं कर्म कुर्वन्तः स्थिरां बुद्धिमाप्स्यन्ति, सर्वं एवं स्थिरं सुखं-चिकीर्षति, यदिसुखोपायः प्रकटितः स्याद् विद्वद्भिस्तर्हि सर्वे मनुजाः सरलतया तमनुसरिष्यन्ति, न परस्परं विरोधिनः प्रभविष्यन्ति अतः सूक्ष्म भावैर्जगत् सत्यमिति नियमस्य प्रचारो हितकरो वर्तते । जगत् सत्यं प्रकृतिरपि सत्या वयं सत्या अस्माकं क्रियाः सत्याः । एवं ज्ञानेनात्महत्यादिदोषं न विधास्यन्ति पापिनः अपितु स्वपापानि पुण्येषु परिवर्त्स्यन्ति । शृण्वन्तु विश्वेऽमृतस्य पुत्रा इति वेद वाक्यं तदैव सत्यं भवति, यदा जीवितानां ज्योति रधिगमिष्यन्ति मनुजाः । एतं भावमाश्रित्या-त्मज्योतिर्विरचिता मया । यदि का ऽपिस्यात् त्रुटि स्तर्हि संशो-धनीया बुधैः । यत्शिस्योऽहं विदुषाम् आत्मविदामिति ।

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महामण्डलेश्वराणां जूना पीठाऽधि पतीनां स्वामिपरमानन्दनाम्नां शिष्येण हरिहराश्रमस्थेनाचार्य स्वाम्यानन्द गरिणा प्रणीतेयं भूमिकाऽत्मज्योतेः—

ॐ

ॐ नमो जय श्री सत्सत् हरी ॐ

" इदम् सत्य सनातन श्री सतपन्थ की जय "

" ॐ नमो जय श्री हरी ॐ सत्सत् श्री गुरुकृपा हि केवलम् "

धर्मस्य तत्वम् निहितम् गुहायाम् "महाजनोयेन गतः सपन्था"

——:परम परमेश्वर पिताः——

प्रथमतः— वह निःसन्देह एक है।

स एष एक, एक वृद्केे एव ॥ २० ॥

सर्वे अस्मिन देवा, एकं वृत्तो भवन्ति ॥ २१ ॥ अ. १३–४

वह एक है। वह अकेला अखण्ड व्यापक है। निःसन्देह एक ही है। सभी अन्य देवो उसीमें एकरुप होते है।

वह परमेश्वर केवल एक ही है। निःसन्देह उसीके समान दुसरा कोई नही है।

——:सबका पिताः——

स नं पिता जंनिता स उत, बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा
वे देवानां नामध एकं एव, तम संप्रश्नं भुवना यन्ति सर्वा ॥५–१–

वह ईश्वर हम सबका पिता, उत्पादक और बन्धु है। वही सब स्थानो और भुवनोको यथावत जानता है। उसी अकेले ईश्वरको अन्य सम्पूर्ण देवो के नाम दिये जाते है, और संपूर्ण भुवन उसी प्रशंसनिय ईश्वरको प्राप्त करने के लिये घूम रहे है।

इसी वास्ते—अपनने भी उस जगतपालक जगत्पिताको एक क्षण के लिये भी भुलना नहि चाहिये, और अपने संसारिक सुख के लियेः—स्वयं भगवान से भी कुछ मांगनेमें "लज्जा, शर्म" का अनुभव करना चाहिये। परमेश्वर के उपर पूर्ण निर्भरता अथवा "तवककुल" के भावको सदाये बनाये रखना, वह अपना एक मात्र कर्तव्य समझना चाहिये, और कहना चाहिये किः—हे प्रभोः-

यदि मै तेरी प्रार्थना केवल नरक यंत्रणासे बचने के लिये करता होऊ तो; मुजे नरकमें डाल रख, और यदि स्वर्ग-सुख के लिये; आपकी प्रार्थना करता होऊँगा तो, भी तू मुजे वह स्वर्ग-सुख से सदा के लिये बन्चित रखाकर, किन्तु, यदि मै तेरी उपासना केवल तेरे लिये ही करता होगा तो, तू मेरे लिये अपने शाश्वत सौन्दर्य एवं माधुर्य प्रगट करनेमें कभी विलम्ब न कर ।

"तस्माच्छास्त्र प्रमाणम्—"कृष्णं वन्दे जगद्गुरु" गिताकार
"वेदशास्त्र कहे तेम करवुं सही" श्री सतपन्थ मार्गदर्शक ।
श्री सतगोरपात्र ब्रह्मा ईन्द्र ईमामशाह ।
श्री सतगोर शिखामण—सतपन्थ साहित्य (१००) किया ।

ॐ

परमां-मावाय ॐ नमो जय श्री तत्सत् हरी ॐ

प. पू. परमात्मायश् नमः, परम पिता परमेश्वरका अचिन्त्य स्वरूप—

अचिन्त्य व्यक्त रूपाय, निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्त जगदाधार मूर्तये, ब्रह्मणे नमो नमः ॥ १ ॥

अव्यक्तरूप जो कीः—निर्गुण (गुण न होते हुवे भी) सर्व गुणवाचक, गुणात्मा=परम+महान+आत्मा=परमात्मा जो किः—समस्त सृष्टिका आधार-स्थंभ, अव्यक्त-मूर्तिरूप ब्रह्मको नमस्कार।

—ःपरम परमात्माकी बद्धता और मुक्तताः—

बद्धो मुक्त इति व्याख्या, गुण तो मे न वस्तुतः ।
गुणस्य माया मूलत्वान्न, मोक्षो न मे बन्धनम् ॥ २ ॥

बद्ध अथवा मुक्त यह शब्द गुणोको ही लागु पडते है । मेरे (प्रभू के) ब्रह्म स्वरूपको लागु पडते नही ।

भाग्यशाली ?

वेदान्त वाक्येषु सदा रमन्ता, भिक्षान्न मात्रेण च तृष्टि मन्ता ।
अशोकमन्तः करणे चरन्ताः, कौपिनवन्तु खलु भाग्यवन्ता ॥ ३ ॥

वेद–वेदान्त की चर्चामें सदा रमते है, भिक्षासे मिले हुये अन्न उपर सदा सर्वदा सन्तुष्ट (संन्तोष) मानते है, और शोक रहित शुद्ध अन्तःकरण से पृथ्वी पर रमत (भ्रमण) करते है ऐसे कौपिनधारी साधु संन्यासि सत्य (खरेखर) भाग्यशाली है, स. धन्यवाद !

सावधान माधुर्यमय जीवन

मधोरस्मि मधुत्तरो, मधुवान्मधुमत्तर ॥ ४ ॥

मामित्किलं त्वं, व. ना, शाखा मधुगति मिव, अथर्व वेद १–३४–४

वास्तवमें मै मध से भी विशेष मधुर हूं, जो पदार्थ के अंग–प्रत्यंगोमें मध से व्याप्त हो रहे है, उसीसे भी मै मघुर हूं ऐसी शुभ मंगल भावना करने से मनुष्य स्वयं स्वत के विचारोमें और मन वचन कर्मोमें मधुर होता है। स्वयं स्वतः के अवयवो कोः––ऐसे मधुर बनाना चाहिये किः—जैसी मध से भरी हुयी शाखामे प्रत्येक अवयव हो।

शुभ मंगलं सावधान

युवैब धर्म शील स्यात, अनित्य खलु जिबितं ।
को. हि. जानाति कस्याद्य, मृत्युकालो भविष्यति ॥ ५ ॥

जीवनकी अनित्यताका विचार करके मनुष्यने (स्वयं) युवावस्थामें ही धर्मशील होना चाहिये। कारण, कोण जाणे कहां? देहपांत (मृत्मु) होगा। यह भविष्यमें कोण कह सकता है?

––ःख्याल रहे–लक्ष रहे किः––

न जातु कामात्, न भयात्, न लोभात्
धर्म त्यजेत्, जिवित स्यापि हे तो।
धर्मो नित्य, सुख–दुःखेत्वनित्ये
जीवो नित्यः हेतुरअस्य त्वनित्ये ॥ ६ ॥

अपनी किसी भी इच्छाकी तृप्ति के लियेः—या तो भयसे, लोभसे या प्राणोकी रक्षा करने के विचारसे भी धर्म न छोडना

चाहिये। क्यों कि-धर्म नित्य है। और सुख-दुःख थोडे समय के लिये है। आत्मा नित्य है (परन्तु उसे बन्धनमें डालनेवाला) शरीर अनित्य नश्वर है।

—:वेद शास्त्रध्ययनका महिमा:—

स्वाध्यायायोग मासित, योगात्स्वाध्यायमामनेत।

स्वाध्याय योग सम्पत्त्या, परमात्मा प्रकाशते ॥ ७ ॥

स्वाध्याय से योगकी उपासना करो, और योगसे स्वाध्याय का अभ्यास करो। योग और स्वाध्याय की सम्पत्ति से परमात्माका साक्षात्कार होता है।

हंसवृत्ति

अन्योन्य शास्त्रसे सार ग्रहण करने के वास्ते-हंस बनो।

असंख्य शास्त्र बहुत्लाश्वविद्या

अल्पस्य कालो बहु विघ्नताच।

यत्सारभूत तदूपासनिय

हंसो यथा क्षिर मिवाम्बू मध्यात् ॥ ८ ॥

शास्त्र असंख्य है, और जानने-समझने जैसा बहुत है। परन्तु आयुष्य अल्प है, और विघ्न बहुत है। इसी वास्ते:— हंस जैसा जल मिश्रित दुधमें से दुध को ही ग्रहण करता है वैसे ही अपनने भी अनावश्यक को छोडकर, सार वस्तू विचारो को ही ग्रहण करना चाहिये।

—:भाषाओकी तांगड धिन्ना बाबद:—

भाषा भेदांश्च वर्तन्ते, एको न संशयः।

पात्र द्वयं एको खाद्य, स्वाद भेदो न विद्यते ॥ ९ ॥

भाषाओमें भेद (अन्तर) हो सकता है। इसमें संशय नही परन्तु, वास्तवमें जैसे पात्र दो अथवा अधिक होते हुये भी, खाने की चीज एक ही रहती है। फिर भी खाद्यका स्वाद नही बदलता। वैसे ही भाषा कोई भी हो, तो अर्थमें भेद (अन्तर) हो सकता नही।

—: वास्ते—आत्मज्ञानकी जरूरियात :—

पटेल लोकी

नानाशास्त्रे पठेल्लोको, नाना दैवत पूजनम् ।
आत्म ज्ञान विनापार्थ, सर्व कर्म निरर्थकम् ॥ १० ॥

कितने भी शास्त्रोका पठण करो, और कितने भी देवताओका पूजन करो, परन्तु; जब तक आत्मज्ञान नहि होता, तब तक दुनिया के सभी कर्म निरर्थक, व्यर्थ है ।

नहि ज्ञानेन सदृष्यं, पवित्र मह विद्यते ॥ ११ ॥

ज्ञान के मुताबिक पवित्र अन्य कुछ भी नही । वास्ते भाषाओमें वहेम और शंका निर्माण करना महान भूल है । यही अज्ञानता है, भाषाओके साथ इर्षा अभाव प्रगट होने से साहित्य संशोधकको कुछ भी नही मिलेगा । सत्य वस्तूसे वह सदा के लिये वंचित और दूर रहेगा ।

परम परमात्माका वास्तव्य

नाहं वसामि वैकुंठे, योगि नाहं हृदये रवौ ।
मद्भक्त यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद ॥ ११ ॥

वैकुंठ मे मेरा (प्रभुका) रहना नही है । वैसे ही बडे बडे तपश्चर्यावाले योगियोके हृदयमें भी मेरा वासा नहि है । परन्तू जीस जगह पर मेरे भक्त जहां जहां मेरे नाम से भजन, पूजन, अर्चन वगेरे विधि-संघठण यज्ञ करते है तहां तहां हमेश के लिये मै तत्पर खडा हूं । "तस्माच्छास्त्र प्रमाणं कृष्णं वन्दे जगद्गुरू"

यज्ञ संघठण विधी

जैसे झरणा नदीको मिलने के बाद झरणा नाम वहां मिट जाता है । वैसे ही नदी सागर को मिलनेके बाद नदी नाम वहां मिट जाता है । वैसे ही जहा पर जातिय (कोमिवाद) विवाद नष्ट होकर स्वयं स जाति मनुष्य और मनुष्यताका स्वात्मानुभव होने लगता है या अगर अनुभव होता है वहां पर उस जाति गंगा नाम नदी (कोमिवाद) मिटकर ज्ञान-गति पाता है वहां पर उसीको "गतगंगा" कहते है । जहां पर जाति-गंगा

(कोमिवाद) विवादरूपी मैली विचार सारिणी शुद्ध और पवित्र होती है । उसीको ज्ञान-गंगा अगर गतगंगा कहते है ।

पापनाशक तिर्थक्षेत्र गतगंगा

अन्य क्षेत्रे कृत्तपापं, तिर्थक्षेत्र विनश्यति ।
तिर्थक्षेत्रे कृतपापं, वज्रलेपा भविष्यति ॥१२॥

अन्योन्य क्षेत्र--स्थानमें किया पाप, तिर्थ-क्षेत्र गतगंगा मे नष्ट (नाहिसा) हो जाता है, परन्तु ख्याल रहे कि:--तिर्थ स्थानमें (गतगंगा) मे किया हुवा पाप भविष्य के लिये कठीण वज्र (लोहा) लेपन जैसा पकरूप होता है, और फिर मनुष्य भविष्य के लिये दुखोका भागी होता है । वैसे ही--

अनेक जन्म संसिद्धस्ततो, यान्ति परांगतिम्

अनेक जन्म के नंतर सुकृत्योकी फलसे महापुरूषोका दर्शन लाभ होता, और फिर वह जिवात्मा परमगतिको प्राप्त होता है ।

पूर्व जनमनो भाग हमारो, संचय पहले कि: उस दिन गुरूब्रह्मा० ।

अज्ञान और मूर्खता

(क) मै जब आप लोगोका यह श्रद्धां समारोह देखता हूं तो, एक ही साथ मेरा दो बातो पर ध्यान चला जाता है कि यह शरीर "अमृत" की यात्रा करनेमें साधन बनता हैं । इसि लिये इसीकी जयन्ति मनाना ठीक है। किन्तु साथ ही यह भी सोचता हूं कि--जो यह समझता है कि, मैं आत्माको जान गया, मैंने भगवानको पा लिया । वह अवश्य ही अज्ञान और मुर्खतामें पडा है । क्यों कि:--" अविज्ञातं विजानताम् " जिन्हें उसका साक्षात अनुभव है । वे जानते है वह कितनी अज्ञात वस्तु है ।

(ख) जीस पर प्रभुकी कृपा हो जाती है, उसे अपना अज्ञात और अपनी मूर्खता पहले दिखाई देती है । उसे इतने वडे प्रकाशका अनुभव होता है कि:—वह अपने ज्ञान और

अपनी विद्याको सदा अज्ञान और अविद्या समझा करता है। यही उसके विनय और दैन्यका कारण होता है।

(ग) जब तक मनुष्यको अज्ञानका अनुभव नही होता, तब तक सच्चे ज्ञानका उदय नही होता, यह व्यवहार और भगवत भजन इस दोनो क्षेत्रोका अनुभव तत्व है।

निन्दा और अहिंसा

व्यवहार पुरुष और साधक इन दोनो को निन्दासे लाभ होता है। निन्दा को प्रेमसे सुनने से और हृदयमें शान्ति रखकर शीतल वाणी बोलने से मनुष्य "अहिंसा" का सच्चा अभ्यास करता है।

"अहिंसा' का व्रति सदा सत्यकी खोज करता है। अतः निन्दा सुनते ही वह दो सत्योका अनुभव करता है। (१) एक तो मेरे जीवनमें कोनसा गुण अथवा दोष है? जिसने ईस निन्दा को जन्म दिया है। और (२) दुसरा वह यह भी समझता है की निन्दा करनेवाला और कुछ नही कर सकता, केवल मुहं ही चला सकता है। अत: उससे कोई भी भय नही है।

आत्मदोष स्विकृति

मै जब भारतके अनेक नगरो और ग्रामोमें धूमता हूं तो, देखता हूं कि:—व्यवहार के सभी झगडे और झंझोटाका कारण एक ही है कि:—"पर छिद्रान्वेषण" जब मै भारत के आश्रमो और साधना गृहो को देखता हूं तो वहाँ के विकास और वैभवका कारण आत्मदोषोका स्वीकार और सुधार है। मै सदा सर्वदा प्रभुसे यही मनाता हूं कि:—हमारे भोले भारतीयोको आश्रमोका यह प्रसाद मिल जाय कि वे "पर छिद्रान्वेषण" छोडकर "आत्मदोष दर्शन" करने लगेगें। आपसे आप उन्हे मेल और शान्तिका मार्ग मिल जायगा।

ॐ

ॐ नमो जय श्री तत्सत हरी ॐ

सर्व साक्षीभूत देवनू शरण

ॐ यो ब्रह्माणं विध धाति पूर्वं, यो व वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तं ह देव मात्म बुद्धि प्रकाश, मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥ २ ॥

जे (परमात्मा सृष्टिनी) आदिमां ब्रह्माने उत्पन्न करे छे अने जे तेमने प्रसिद्ध वेदो आपे छे ते स्वबुद्धिना साक्षि देवनुज हूं मोक्षार्थी (थयोछतो) ज शरणे जाऊ छुं ।

प्रथमत:—एक एव पुरावेदः, पूर्वं प्रथम समयमां वेद एकज हतो, श्रीमद्भागवतम ९–११–४८

ॐ सत्यं ज्ञानमनन्त यन्निष्कलं निष्क्रीयं परम ।
अद्वितिय निर्षिशेषं ब्रह्म तत्समुपास्महे ॥ १ ॥

अर्थातः—त्रणे कालमां एकजरूप रहेनारा, अनन्त, ज्ञाननिधि कला तेमने क्रिया भी रहित होवा छताय सकल सृष्टिना एक मात्र अधिष्ठान अनुपमेय अने अद्वितीय अखिल ब्रह्मांड ने समावी राखनारा प्रणव परमात्मा श्री नारायण देवने प्रारंभमांज उपासना आर्जव वि. वि. वि. करू छुं के ते बहुत जाणे छे ।

शुभ मंगलाचरण

ॐकार विन्दु सयुक्तं, नित्य ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षद चैव, ॐकाराय नमो नमः ॥ १ ॥

कामनाओनी सिद्धि तथा मोक्षदाता बिन्दु (०) सहित (जे) ॐकारनु योगीयो नित्य ध्यान धरे छे ते ॐकारने वारंवार नमस्कार ।

ॐ नमस्ते ते सते जगत कारणाय, नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैत तत्वाय मुक्ति प्रदाथ, नमो ब्रह्मणे स्थापिने शाश्वताय ॥२॥

जगतना कारणरूप अने सत स्वरूप, हे परमेश्वर तमने

हूं नमस्कार करु छु । अने सर्व व्यापक सनातन ब्रह्माने हूं नमस्कार करू छुं ।

ॐ त्वमेकं शरण्यं, त्वमेकं, वरेण्य, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशं ।
त्वमेकं जगत्कर्तृपातृ प्रहर्तु, त्वमेकं परम निश्चिलं निर्विकल्पम् ॥३॥

तमेज एक शरण लेवा योग्य छो। तमे एक इच्छवा लायक अथवा स्विकारवा जेवा छो, तमेज एक जगतना पालक, अने पोतानाज प्रकाशथीज प्रकाशमान छो । अने तमे ज एक सर्वथी पर अचल अने विकल्प रहित छो ।

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञान मुर्तिम् ।
द्वान्द्वातीतं गगन सदृशं, तत्व मस्यादि लक्ष्यम ॥
एकं नित्यं विमल मचलं, सर्वाधि साक्षिभूतम् ।
भावातितं त्रीगुण रहितं, सद्गुरू तं नमामि ॥ ४ ॥

ब्रह्मज जेनो आनन्द छे । मोक्ष सुख आपनार केवल आत्म-स्वरूप ज्ञानना मुर्तिरूप, सुख-दुःखादि जोडकाथी मुक्त, आकाश जेवा निर्लेप अने गंभीर "तत्वमसि" आदि मंत्रोना लक्ष्यार्थरूप एक नित्य, निर्मल, अचल, सर्व प्राणी मात्रना बुद्धिना साक्षिरूप (हूं, मारु एवां) सर्वे भावोथी अतीत अने त्रणे गुणोथी रहित एवा ते श्री सतगुरूने हूं नमन करु छु ।

ॐ शान्ताकारं भुजंग शयनम् , पद्म नाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन सदृशं, मेघवर्ण शुभांगम् ॥
लक्ष्मिकान्तं कमल नयनं, योगिभि ध्यान गम्यम् ।
वन्दे विष्णु भव भय हरं, सर्व लोकैक नाथम् ॥ ५ ॥

शान्त आकृतिवाला, शेषनाग पर शयन करनारा, जेनी नाभी कमलमांथी कमल निकळ्यु छे एवा देवोना पण ईश्वर, जगतना आधार, आकाश पेठे व्यापक, मेघना जेवां श्याम वर्ण-वाला, सुन्दर अंगवाला, लक्ष्मिजीना स्वामि, कमल जेवां नेत्र-वाला, योगियोने ध्यान द्वारा प्राप्त थनारा, संसारनो भय हर-

नारा, अने सर्व लोकोना पंकज नाथ श्री विष्णू भगवानने हूं नमस्कार करू छुं ।

ॐ वन्दे देव मुमापति सुर गुरू, वन्दे जगत्कारणायं ।
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं, वन्दे पशुनां पतिम् ॥
वन्दे सूर्य शशांक वन्हि नयनं, वन्दे मुकुन्दं प्रियम् ।
वन्दे भक्तजनाश्रयंच वरदं, वन्दे शिवम् शंकरम् ॥ ६ ॥

उमापति, सूरगुरू, देवने हूं नमस्कार करु छुं । जगतना कारणरूपने नमस्कार, सर्पना आभूषणवाला, मृगधारी पशुपतिने हूं नमस्कार करु छुं । सूर्य, चन्द्र अने अग्नि नेत्रवालाने हूं नमस्कार करु छुं । मुकुन्द (विष्णु) जेने प्रिय छे एवा शंकरने नमस्कार । भक्तजनोना आश्रयरूप अने वर (आशिर्वाद) आपनारने नमस्कार अने कल्याण स्वरूप एवा भगवान शंकरने हुं वन्दु छुं ।

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुर प्रियाय ।
लम्बोदराय सकलायं, जगद्धिताय ॥
नागा ननाय श्रुतियज्ञ विभुषिताय ।
गौरी सुताय गणनाथ, नमो नमस्ते ॥ ७ ॥

विघ्नोने दूर करनारा, वरदान आपनारा, देवोने प्रिय, मोटा पेटवाला सर्वस्व, रूप, जगतनु हित करनारा हाथीना जेवा मुखवाला, वेद अने यज्ञना शणगाररूप, श्री पार्वतिजीना पुत्र हे श्री गणपति देव तमने वारंवार नमस्कार हो ।

जगत चक्षु सूर्यनारायणनी स्तुति

ॐ नमो सवित्रे जगदेक चक्षुषा ।
जगत्प्रसुति स्थिति नाश हेतवे ॥
त्रयी ममाय त्रिगुणात्म धारिणे ।
विरंची नारायण शंकरात्मने ॥ ८ ॥

जगतनी एक आंख रुप जगतनी उत्पति स्थिती अने लयना

हेतुरुप त्रण वेद रुप त्रिगुणात्मक ब्रह्म, विष्णु अने शीवरुप श्री सूर्य नारायणने हुं नमस्कार करु छुं ।

परम परमेश्वरी विद्या देवीनी स्तुति

ॐ शुकलां ब्रह्म विचार सार, परमाद्या जगद् व्यापीनीम् ।
वीना पुस्तक धारीणी, भयदा जाड्यान्ध कारां पहाम ॥
हस्ते स्फटिक मालिकां, विदधति पद्मासने संस्थिताम ।
वन्दे तां परमेश्वरी भगवती बुद्धि प्रदाम सारदाम ॥ ९ ॥

श्वेत ईश्वरना विचार साररुप श्रेष्ठ आद्य जगतमां व्यापेला विणा अने पुस्तक धारण करनारा । अभय आपनारा । अज्ञानरुप अंधकारने टालनारा । हाथमां स्फटिक मणोनी माला धारण करनारा । पद्मासन उपर बीराजेला अने बुद्धि आपनारा । हे परमेश्वरी भगवती देवी शारदाने हुं वंदन करु छुं ।

गुरु प्रणाम

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानान्जन शलाकया ।
चक्षुरु न्मीलित येन, तस्मै श्री गुरु वे नमः ॥ १ ॥

अज्ञानरुप तिमिर रोगथी आंधळा थयेला मनुष्योना जेमणे ज्ञानरुप अंजन आंजवा शरी वडे ज्ञान नेत्रो उघाडया छे । ते विज्ञाननी शोभायुक्त श्री गुरुदेवने मारा नमस्कार हो ।

ॐ अखंडा मन्डलाकारं, व्याप्त येन चरा चरम ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ २ ॥

अखंड मंडलाकार स्थावर जंगमात्मक सर्व दृश्य प्रपंच जेना वडे व्याप्त छे अर्थात समग्र विश्वमां जे व्यापि रहेला छे ते सच्चिदानंद स्वयं ज्योति पद जेमणे देखाडयु छे. ते श्री गुरुदेवने मारा नमस्कार हो ।

ॐ ध्यान मूलं गुरुमूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदम् ।
मंत्र मूलं गुरु वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरु कृपा ॥ ३ ॥

ध्याननुं मूल (ध्यान करवा योग्य) गुरुनी मूर्ति छे अने

पुजानुं मूल (पूजा करवा योग्य) गुरुनां चरण कमळ छे। मंत्रनुं मूल (विचार करवा योग्य) गुरुनां वाक्य छे। तेमज गुरुनी कृपाज मोक्षनुं मूळ (कारण) छे।

ॐ गुरु र्ब्रह्मा गुरु र्विष्णु, गुरु र्देवो महेश्वरा।
गुरु रेंव परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ ४ ॥

गुरु ब्रह्मरुप छे। गुरु विष्णुरुप छे। गुरु सदाशिव रुप छे। अने गुरु परब्रह्म छे। (एवा शब्द गुरु अने परब्रह्मनो अभेद निश्चय करावे छे) एवा परमात्मा स्वरुप श्री सद्‌गुरुने मारा नमस्कार हो।

ॐ सर्व श्रुति शिरो रत्न, बिराजित पदाम्बुत।
वेदान्त पद्म सुर्याय, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ ५ ॥

महा वाक्योनी सुशोभित करनार चरण कमळवाळा अर्थात् जे वेदना तत्वमस्यादि वाक्योनो उपदेश करनारा छे। ते वेदान्तरुप कमळने प्रफुल्ल करनार सूर्यरुप श्री सद्‌गुरु देवने मारा नमस्कार हो।

ॐ चैतन्य शाश्वतं शान्त, व्योमातितं निरंजनम।
नाद बिन्दु कलातितं, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ ६ ॥

जे चैतन्य स्वरुप नित्य अविनाशी शान्त आकाशादि सूर्य, प्रपंचथी रहित शुद्ध निर्लेप तथा बिन्दुनाद अने कलाथी रहित छे। ते सद्‌गुरु देवने मारा नमस्कार हो।

ॐ नित्यं, शुद्धं निराभासं, निराकारं निरंजनम।
नित्य बोध चिदानन्द, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ ७ ॥

त्रण काळमां नाश न पामे एवा अविनाशी, माया (अज्ञान) रुपी मलीनताथी रहित, जीव ईश्वरादिक भेदना आभास रहित अथवा निरंतर अखंड, दिप्तीमान निराकार, निर्लेप, नित्य, अखंडित. ज्ञान स्वरुप, चित्त अने आनंद स्वरुप एवा श्री सद्‌गुरुने मारा नमस्कार हो।

ॐ अहंमेव परंब्रह्म, मयी सर्व प्रकल्पितम ।
ज्ञानं यत्कृपया, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ ८ ॥

हुं परब्रह्म ज छुं । (आ नामरुप) सकल (संसार) मारामां कल्पित छे । एवुं जेमना कृपा वडे जाण्युं ते श्री सद्गुरुने मारा नमस्कार हो ।

ॐ अहं ब्रह्मेति विज्ञानं, जातं यस्य प्रसादत्तः ।
दत्तं एना भयंदानं, ब्रह्मानंद नमो नमस्तुते ॥ ९ ॥

हुं ब्रह्म छुं एवी विज्ञान जेमनी कृपाथी थयुं, अने जेमणे अभयदान आप्युं तेवा हे ब्रह्मानन्दजी ! तमने नमस्कार हो ।

ॐ अखंडानंद बोधाय, शिष्य संताप हारिणे ।
सच्चिदानंद रुपाय, योगानंद नमो नमः ॥ १० ॥

अखंडानंद तथा बोध स्वरुप शिष्यना (जन्म मरणना) संताप अने क्लेशने हरवावाळा सत, चित, आनंद, स्वरुप एवा हे योगानन्दजी ! आपने वारंवार नमस्कार हो ।

—: देव-गुरु-पूजन समये :—

नमोऽस्त्वनन्ताय, सहस्त्र मूर्तेये
सहस्त्र पादाक्षि, शिरोरु बाहवे ।
सहस्त्र नामने, पुरुषाय शाश्वते
सहस्त्र कोटी, युग धारिणे नमः ॥ १ ॥

हजारो स्वरुपवाळा, हजारो पग, आंखो, मस्तक, जांगा, तथा हाथवाळा अनंत स्वरुपने नमस्कार हो । हजारो नामवाळा सनातन पुरुष, हजारो प्रकारना शरीरोने धारण करनार (परब्रह्म) ने नमस्कार ।

ॐ नमो कमळनाभाय, नमस्ते जल शायिने ।
नमस्ते केशवानन्त, वासुदेव नमोस्तुते ॥ २ ॥

जेमनी नाभीमां कमळ छे एवा भगवानने नमस्कार । जळमां

शयन करवावाळा तमने नमस्कार । हे केशव तमने नमस्कार । हे अनंत, हे वासुदेव, तमने नमस्कार ।

वासनाद्वासुदेवस्य, वासितं भुवन क्षयं ।
सर्व भूतनिवासीऽसि, वासुदेव नमोस्तुते ॥ ३ ॥

वासुदेवनी वासना (भावना संकल्प) थी त्रणे लोक वसेला त्रणे लोकनी स्थिती छे । हे वासुदेव ! सर्व भूतोनुं तमे निवास स्थान छो । एवा तमने नमस्कार ।

ईश्वरो गुरु रात्मेति, मूर्ति भेद विभागीनी ।
व्योम पद, व्याप्त देहाय, दक्षिणा मूर्तये नमः ॥ ४ ॥

ईश्वर गुरु अने आत्मा एम मूर्तिना भेदथी जेमना रुपमां भेद भासे छे एवा महाकाशनी पेठे व्यापक एवा देहधारी श्री दक्षिणामूर्तिने नमस्कार. ।

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सार भुजगेन्द्र हारं ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामिः ॥ ५ ॥

कपूरना जेवा श्वेत वर्णवाळा करुणाना अवतार संसारना साररुप उत्तम भूजंग (सर्प) ना जेमने हार छे एवा तथा सर्वदा हृदय कमळमां विराजमान भवानी सहित सदाशीवने हुं नमस्कार करु छुं ।

निधये सर्व विद्यानाम, भिषजं भव रोगिणाम ।
गुरुवे सर्व लोकानाम दक्षिणा मूर्तये नमः ॥ ६ ॥

सर्व विद्याना भंडार संसार (जन्म मरण) वाळा रोगीओने औषधिरुप अने सर्वे (चौद) लोकोना गुरु स्वरुप श्री दक्षिणा-मूर्तिने हुं नमस्कार करु छुं ।

असित गिरि समं, स्यात्क ज्जलं सिन्धु पात्रे
सुर तरुवर शाखा, लेखीनी पत्र भूर्वि ।
लिखती यदि सारदा, गृहित्वा सर्व कालं
तदपि तव गुणा नामिशं, पारं न याति ॥ ७ ॥

महासागर जेवा खडीयामां नीलगीरी पर्वत जेटली साही नाखी श्रेष्ठ देवताई झाडनी कलम लई, पृथ्वीना पड जेवडा कागळ उपर (सर्वथी श्रेष्ठ लखवावाळी) सारदा (सरस्वती) आखी जिंदगी लख्या करे तो पण हे ईश्वर तारा गुणोनो पार आवे तेम नथी ।

सर्वदा सर्व कार्येषु, नास्ति तेषां मंगलम ।
येषां हृदिस्थो भगवान, मंगलायतनो हरि ॥ ८ ॥

जेमना हृदयमां सर्व मंगलना धामरुप भगवान श्री हरि बिराजमान होय छे, तेमनुं सर्व कार्यमां सदा सर्वदा मंगल ज थाय छे । अमंगल थतुं नथी।

विपदो नैव विपदः, संपदो नैव संपदाः ।
विपदं विस्मरणं विष्णोः संपत नारायण स्मृतिः ॥ ९ ॥

विपतिओ साची विपत्तिओ नथी । अने धन दोलत साची संपति नथी । विष्णु विस्मरण ज साची विपति छे । अने नारायणनुं स्मरण ज साची संपति छे ।

सर्वत्र सुखिना सन्तुः, सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मां कश्चिद् दुःख माप्नुयात ॥ १० ॥

आ जगतमां सर्व प्राणी सुखी थावो । सर्वे कोई निरामय दुःख रहित निर्विकार थाओ । सर्वनुं कल्याण थाओ । सर्व लाभकारक हितकारक अवसर जुओ । अने कोई पण प्राणीने किन्चित मात्र पण दुःख ना थाओ ।

ॐ सहना व वतुं, सहनो भुनक्तु ।
सह वीर्यं करवा वहै, तेजस्विना वधि तमस्तु ॥ ११ ॥
मां विद्विषां वहै ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ।

ते (परमेश्वर) हमो बन्ने (श्रोता वक्ता) नुं निश्चय रक्षण करो । ते (परमेश्वर) हमो बन्नेने (विद्याना फळनो) भोग करावो हमो बन्ने विद्यानी प्राप्ति माटे सामर्थ्य प्राप्त करीए हमारा बन्नेनुं भणेलुं तेजस्वी थाओ । हमो बन्ने पर द्वेष न करीए ।

श्रीमद् भागवत की आगम (भविष्य) वाणी

स्कन्ध १२ अध्याय—१

पांच हजार वर्ष पहेले प. पू. श्री वेद–व्यासजीने श्रीमद–भागवतमें जो भरत–खण्डका भविष्य आंकित किया हुवा है। वह आज सत्य होता हुवा आया है, ऐसा प्रतित हो गया है और जो शेष बाकी होनेवाला है। वह भी होकर रहेगा ऐसा माननेमें कुछ भी बान्धा नहीं।

अनु गंगा मां प्रयागं, गुप्ता मोक्ष्यन्ति मेदीनीम्।
सौराष्ट व्रान्त्या मीराश्च शुद्रा अर्बुद मालवान्॥

व्रात्या द्विजा भविष्यन्ति शुद्र प्रायह जनाधिपाः।
सिन्धो स्तठ चन्द्रभागा कौन्ती काश्मीर मण्डलम्॥

मोक्ष्यंति शुद्रा व्रात्याश्च म्लेन्च्छाश्चा ब्रह्मवर्चसः।
तुल्यकाला इमे राजन् म्लेन्च्छ प्रायाश्च भूमृतः॥

एतेऽधर्मा नृत पराः फल्गुवास्तीव मन्यवः।
स्त्री–बाल गो द्विज ध्नाश्च परदाह धना हताः॥

उदितास्त मित प्राया अल्पस्त्वाल्पकायुष्यः।
अ सस्कृतः क्रिया हिना रजसा तमसा वृत्ताः॥

प्रजास्ते भक्षयिष्यन्ति म्लेन्च्छा राजन्य वेषिणः।
उदितास्तमित प्राया, हर्ष शोकाद विव्हलाः॥

तत्रस्थास्ते जनपदाच्तच्छाला सार वादिनः।
अन्योन्यतो राजभिश्च क्षयं यास्यन्ति पीडिताः॥

अर्थः—पूर्व गंगासे लेकर प्रयाग तक सौराष्ट, मध्य–भारत, मारवाड संयुक्त प्रदेश माळवा, महाराष्ट्र वगैरे प्रदेशो के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र एव अति शुद्र अन्त्यज (चोखा मेलाकी एक उपजाति) जैसे हो जायेगे।

और प्रजा के अधिपतियो राजा, महाराजाओ और राज कर्तायि शुद्र पतित जैसे हो जायेंगे ।

सिंधु नदी किनारे के देश, सिन्धु-चंद्रभागा चीनाव नदी पन्जाव, काश्मिर वगेरे ब्रह्म तेजसे हीन होकर शुद्र सरीखे। द्विज अन्त्यज और मुसलमान राज्य करेंगे । यह सभी कलीयुग को अनुसारतः आचरण वाले राजकर्ता ये म्लेन्च्छ जैसे हो जायेंगे । वह सभी धर्महीन होयेंगे । धर्मको नही मानेंगे, झुटा ही झुटा बोलेंगे । प्रजाके पाससे जादा लेंगे और कमती देंगे। उनके क्रोध, गुस्सा बहोत रहेगा । वह स्त्री बालकोंकी कतल करेंगे । गऊओंकी कत्तल करेंगे । ब्राह्मणोको मारेंगे । परायी स्त्रीयोंका और पराया धनका अपहरण करेंगे । वह सत्ता स्थान उपर आने के बादः--थोडे ही समयमें साथीयोंसे सत्ता जमाकर बेठेंगे । वैसेही अस्तमन हो जायेंगे ।

वह शारीरिक-मानसिक बलसे कमी होगे । वह अल्पायुषी होगे । वह कोई भी जात के संस्कारको शास्त्राधिनतासे मानेगे नही । मर्यादाहीन होयेंगे । वह कोई भी शास्त्र के विधि-विधान नित्य-नैमित्यकी धार्मिक क्रिया कर्म करेंगे नही । और रजोगुण तथा तमोगुण से भरे हुये रहेंगे । राज्यशासन-सत्ता स्वय-स्वतः के हाथमें लेकर राज्य चलावेंगे । उसमें प्रजाका सर्वस्व हक छीनकर खा जायेंगे । इस म्लेन्च्छो और राज कर्ताओंका वेष-धारण करनेवाले प्रजाको धर्महीन-सत्ताहीन पराक्रमहीन बना देंगे, उनका स्वभाव घडी पकमां राजी-खुशी और घडी पकमां क्रोधी होगा । उनकी प्रजा भी उन राजकर्ताओंकी जैसे ही "यथाः राजा तथाः प्रजा" जैसे ही स्वभाव वालो होगी । और वैसे ही आचरण करने वाली भी होयगी । थोडे ही समयमें उनका पतन हो जायेगा । सत्ता के उपर आये हुये वह अन्दरो अन्दर (यादवो जैसा यादवस्थली करके) लड मरेंगे । नंतर थोडे ही दिनोमें धर्म राज्य स्थापित होगा और प्रजा वर्णाश्रम धर्ममें प्रवृत्त होगी । यज्ञ-यागादि धर्म, धार्मिक कार्य होते रहेंगे, और प्रजा सुख समृद्धि शाली होगी ।

भविष्य पुराणकी आगम (भविष्य) वाणी

ब्रह्मा पुत्रो विश्वकर्मा, तस्य पुत्रो मयासुरा: ॥
तस्य पुत्रा गौर मुखा, द्विपास्तरे निवासिनः ॥ १ ॥
शिल्प शास्त्रेषु कुशला, नाना चातुर्य सयुता ॥
करिष्यान्त कलौ सार्वभौम, क्व तिचनै सभैः ॥ २ ॥
सु-मेरू सन्धिजा देशो देशा, रोमर्त्यजा पराः ॥
तदंन्तरे च ये देशास्तन्त्र, राज्य भविष्यति ॥ ३ ॥
स्वानागेषु तान्स स्थाप्य दिगार व्यवहार कृत ॥
वर्षाप्य शौति राजस्य, तपश्चा दुद्विग्नता व्रजेत ॥ ४ ॥
उत्तराधिश नृपतिः, क्षय नामाख्यवत्सरे ॥
आपत्य सुमाहाविरैः सह युद्धं भविष्यति ॥ ५ ॥
पताका भस्म काष्ठाद्यान्कृत्वा म्लेन्च्छान्हनिष्यंति ।
ब्रह्माद्यणांश्च तुवर्णान् स्थास्वाचारे करिष्यति ॥ ६ ॥
यज्ञा यागादिक सुप्त सर्व तत्प सरिष्यति ॥
शत वर्षान्तरं राज्यं, निष्कलंक करिष्यति ॥ ७ ॥
पश्चात्त हलाहल युगे कलावाच्छांदये न्मेही ॥
चतुर्वर्णैक वर्ण स्यात्प शुवत्कामलालसा ॥ ८ ॥

सूतार्थ—ब्रह्माका पुत्र विश्वकर्मा, उनका पुत्र मयासुर था। उनका पुत्र गौर मुह-चेहरेवाले और दुसरे एक बेट (द्विप) में रहनेवाले शिल्प-यन्त्र कला-कौशल्यमें कुशल कारीगर होंगे। वह कलीयुगमें सार्वभौम राज्य करेंगे। वह सुमेरू पर्वतकी आस पास के देशो उपर भरत-खण्ड वगेरे। पूर्व के, भूमध्य समुद्र के युरोप के बहोत देशो पर राज्य करेंगे। इन लोगोका चक्रवर्ति राज्य ८० ऐसी वर्ष टिकेंगा। उसके बाद:—कितने कवर्ष क्षय और नन्द नाम के संवत्सरमें उत्तर देश के राजा बडे मोठे

ऐसे लश्कर के साथ भरत-खण्डमें आकर म्लेच्छो को मारकर धर्म-राज्यकी स्थापना करेंगे, और ब्राह्मण वगैरे चारे वर्णको स्वयं-स्वतः के वर्णाश्रम धर्ममें प्रभावित करेंगे। और बन्द हुवे जो यज्ञ यागादि फिरसे चालू करेंगे। उनका राज्य सो १०० वर्ष तक टिकेगा। नंतरः—हळाहळ कलीयुगमें चारे वर्ण मिट-कर एक ही थड, एक जात, मुद्राचारको प्राप्त ऐसे पशु जीवन के जैसे काम-विलास, वैभवमें लोक पड़ेंगे उसी ऐसे रीतिसे जनता, मनुष्य मनुत्व को गुम कर देगा।

हसो यथा पाठक-गणो वाचको सर्व वर्तमान पुस्तक पढ-कर एक निर्णय पर आवे कि:—कलियुग के अद्‌भूत भविष्य वेत्ता कोण? प्रथम वांचे और नंतर विचार करे।

धूम्र—पान

मानो के ना पण मानो! सोचो के ना पण सोचो शुद्र-त्वकी टोच (शिखर) मर्यादा उपर जाने के लियेः—

यही प्रथम श्री गणेशाय नमः है। यानेः—कलीयुगका साथी है।

धूम्र—पान

इसी फन्दमें आनेवाले ब्राह्मण हो के शुद्र हो, हिन्दु हो के मुसलमान हो सभी एक जातके है। जहाँ एक मत है वहाँ एक जात है एक ही धर्म है, धर्म के अनेक अनेक अर्थ-भावार्थ हो सकते है। उस साथ धर्मका अर्थ "स्वभाव" भी होता है, और जहा "स्वभाव" बदल गया, वहाँ धर्म बदल गया। जात बदल गयो, फिर बाकी क्या रहा?

थोबो, वाचो, विचारो, सोचो और समझो।

ॐ

ॐ नमो जय श्री सत्सत् हरी ॐ

धर्मस्य तत्व निहितम गुहायाम, महाजन्ते येन गतः सपन्थाः ।
ईदम सत्य सनातन आर्य, पवित्रोत्तम आदर्श युक्तम् ॥

श्री सतपन्थ धर्म की जय

पद्म—पुराण

धुम्रपानं रतं विप्रदानं, कुत्वेतियो नरः ।
दातारो नरकं यान्ति, ब्राह्मणो ग्राम शुभकाराः ॥ १ ॥

सूत्रार्थः—तंमाखु सेवन करनेवाला जो ब्राह्मण हो और उसको दान (देनेवाला) देता है वह नर्कमें जाता है और वह ब्राह्मण गायका शुक्कर, भुण्ड, सूव्वर का जन्म लेता है:—

स्कन्द—पुराण

ब्रह्मा उवाच—नारद को कहते है किः—हे नारद !

घोर कलि—कलि युगे प्राप्ते, सर्वे वर्णाश्रमानराः ।
निरयेषु पतिण्यंन्ति, तमाखुं कल्प रुपतः ॥ २ ॥

सूत्रार्थः—घोर कलियुग प्राप्त होते ही । सभी वर्णाश्रम के नर (चारोवर्ण और चारो आश्रमवासी) तंमाखु के उपयोग करने से नर्कमें पडेंगे ।

स्नातानि येषु तिर्थाणि, प्रयागादिनाम कोटिशः ।
वृथैवतानि सर्वाणि भृंगी पानाश्च नारदः ॥ ३ ॥

सूत्रार्थः— हे नारद, मनुष्य प्रयागादि अडसठ तिर्थोमें स्नान किया हो, तो भी भांग पिने से सभी व्यर्थ होता है ।

उपासते तमाखु वे कली नारद ये नराः ।
क्षीण पुण्याः पतिश्यन्ति महारौरव सज्ञके ॥ ४ ॥

सूत्रार्थ—हे नारद! मनुष्य मात्र तमाखुका सेवन करनेसे उनका पुण्य प्राय नष्ट हो जाता है, और अन्ते वह रौरव नर्कमें पडते है।

पीतायेन तमाखु वै नरेण भूवि नारद।
तत्पापेन भवेत पापी म्लेन्च्छाद पिचसोऽधमाः ॥ ५ ॥

सूत्रार्थ—हे नारद, पृथ्वी के अन्दर जीस मानवीने तमाखुका सेवन किया हो तो, उसी तमाखु पिनेकी पाप से पाप करनेवाला होता है, और वह म्लेन्च्छ से भी विशेष निच पात्र–कुपात्र होता है।

व्रतानि नियमा, सर्वे यमाश्चैवं महा मुने।
वृथैवताणि सर्वाणि तमाखु पान मात्र ॥ ६ ॥

सूत्रार्थः—तमाखु के सेवन (खाना–पिना, सूंघना अथवा अन्योन्य तरीके उपयोग करनार वगेरे) से उनके व्रत नियम सभी फोगट व्यर्थ ही होता है।

किंच योगेन ज्ञानेन, वेदेन पितृ दैवतैः।
किंच वैविक्त मात्रेण तमाखु चेत्पिवेन्नराः ॥ ७ ॥

सूत्रार्थः—जो पुरुष तमाखु पीता है, उसे योग प्राप्ति से ज्ञान सम्पादन करनेसे, वेदाभ्यास करनेसे, एकान्तवास करनेसे, क्या फल प्राप्ति होनेवाली है? कुछ भी होनेवाला नही है, वह सभी मिथ्या ही है।

टीपः—सभी धर्म के धर्मशास्त्र तमाखुका खंडण करते है फिर भी मनुष्य सैतानियतसे उसको विशेष करके ज्यादा वपराश करने लगता है। वास्ते—श्री सतपन्थ धर्म जिज्ञासूओने उसको जरुर छोडना ही चाहिये। और जो उसका सेवन करता होगा तो ऐसे व्यक्तिका साथ, सोबत, संग कदापि न करना चाहिये। उसीका विश्वास और भरोसा तो कदापि न करना चाहिये।

जो चीज मनुष्य के लिये:—नर्कमें ले जानेवाली है ऐसी रीतिसे हरएक धर्म के धर्मशास्त्र पुकार पुकार के कहते है, तो

फिर उस नर्कमे जानेवाले की याने नर्क को मन्जूर करनेवाले की बुद्धि कैसी होगी ? और अैसेका जो विश्वास-भरोसा करो तो वह मनुष्य भी कैसा होगा ?

भागवत पुराण स्कन्ध ३ अध्याय २९ श्लोक २१-२२

अहं सर्वेषु भुतेषु, भूतात्मावस्थितःसदा ।
तमवज्ञायमां मर्त्यः कुरुतेर्चा विडंबना ॥ २१ ॥
योमां सर्वेषु भुतेषु, सन्तात्मात्मा नमीश्वरम् ॥
हित्वार्चा भजते मौढयाद् भस्मन्ये वज्जु होतासः ॥ २२ ॥

सूत्रार्थः—सभी प्राणी मात्रमे मै अन्तर्यामि रूपसे हरहमेशा वस्ती (वसाहत) करके बैठा रहा हूं, उसकी मनुष्यने अवज्ञा करके मूर्तिका जो पूजन करता है, वह मेरी (सर्वान्तर्यामि की) निरर्थक केवल विटंम्बनाही रहता है । वह परम-पिता परमेश्वर सभी समयमें और सभो के हृदय और सभो ठिकाणे निवास करके बैठा है । उसीको छोडकरके जो कल्याण के लिये मूर्ति पूजा किया करते है, वह मूर्खलोक भस्मके (रक्षोली) में घी होमने जैसा ही किया करते है ।

मतलबः - जबतक मनुष्य मनुष्य के साथ सहिष्णुताका परस्परं भावयन्ताका बोधपाठ लेने-देनेका दैवनन्वदिन नही करेगा तबतक सभी दुनियाकी साधना झुठी ।

ज्या लगी आत्म तत्व चीन्ह्यो नही,
त्या लगी साधना सर्व झुठी ।

—भगत श्री नरसैया

ओ है सभी ठिकाणे, घट घटकी बात जाने ।
उसको जो दूर माने, वह मूरख है घने रे ॥

—ब्रह्मानन्दजी

मनुष्य ही परमात्माका साक्षात सर्वोच्च मन्दिर, मस्जिद एव गिरजाघर आदि है इसलिये:—साकार देवताकी पूजा करो और वह इसी कहे हुये विचार से ही करो याने मनुष्य के

साथ मनुष्यने सख्यत्व सम्बन्ध स्थापित करना यही तो मानवता है । और यह असे मानवता के आधार से वह मानव है अन्यथा "निर्वैर सर्वे भुतेषु" की भावना न हो तो वह मानव–मानव नहीं है, परन्तु मानवकी रूपमें दानव मात्र है ।

—स्वामी श्री विवेकानन्दजी

पंडित किसको कहते है

आनंदो ब्रह्मणो विद्वान, न बिमेति कदाचन ॥ श्रुति ॥

जो विद्वान ब्रह्मानन्दको पहिचानता है, वह कभी किसीसे डरता नहीं, याने शंकाशिल होता नही, कारण ॥
संशयी आत्मा विनश्यति ॥

पठका पाठकाश्चैव ये चान्धे शास्त्र चिन्तकः ॥
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाय, क्रियावान्स पंडित ॥ १ ॥

पढनेवाला, पढानेबाला, सुननेवाला के अगर सुनानेवाला और दूसरे अन्योन्य शास्त्रोंका चिन्तवन, मनन करनेवाले यह सभी व्यसनी ही है (अर्थात—पढने सुननेमें ही खुशी रहना यह तो एक आदत ही पड गई है) यह सभी मूर्ख है, परन्तु जिसने जितना समज लीया है, उतना उसीने कार्य किया हो, तो वह पंडित है, कर्मको करनेवाला पंडित है, परन्तु पुस्तकोका खाली–निकम्मा वगैर विचार से पढनेवाला और पढनेमें ही कार्यकी सफलता, सम्पूर्णता माननेवाला, समझनेवाला तो मुर्खता ही करता है ।

(१) पाप हो अैसा कमाना नही । (२) लडाई होवे वैसा बोलना नहीं । (३) बीमारी आवे वैसा खाना नहीं. (४) देवादार होवे वैसा खर्चना नहीं ।

यस्य सर्वे समारंभा, काम संकल्प वर्जित्तः ॥
ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणं, तमाहु पंडितं बुधा– गिता ॥७॥

जीसके सभी उद्योग, वासना और संकल्प याने " मै करता

हुं" यह ऐसा इससे अभिमान रहीत और जीनके कर्म ज्ञानरुपी अग्निसे भस्म हो गये है ऐसे पुरुषको लोक पंडित कहते है ।

विद्या–विनय सम्पन्ने, ब्राह्मणे गवि हस्तिनी ॥
शुनि श्वैव श्वपाकेच, पन्डिता समदर्शितः–गिता ॥ ८ ॥

विद्या और विनययुक्त ब्राह्मणमें तथा गौ, हाथी, कुत्ते और चान्डालमें भी समभावसे देखनेवाले ही पंडित होते है । जैसे मनुष्य अपने मस्तक हाथ पैर और गुछादिके साथ ब्राह्मण, वैश्य, शुद्र और म्लेच्छादिकोंकासा वर्ताव करता हुआ भी उनमे आत्मभाव अर्थात् अपनापन समान होनेसे सुख और दुःखको समान ही देखता है, वैसे ही सब भूतोंमें देखना अपनी "सादृश्यता से" सम देखता है ।

(४) जीसके विचार और नक्की किये हुए कार्य प्रथम कोई समझता नहीं, परन्तु वह कार्य पूर्ण होने के बाद––उसकी सभीको खबर होवे उसीको पंडित कहते है ।

(५) जो स्वयं स्वतः का समय व्यर्थ गमाता नहीं, और जीसका मन काबुमें है उसको पंडित कहते है ।

(६) मनइच्छाको तजकर जो ईश्वरिइच्छाको अनुसरता हैं, वही पंडित कहलाता है ।

—: अैक्यं षटकम् :––

नाहं हिन्दु मेहमदीयो न वापि,
बौद्धो नाहं ख्रिस्तीओ वापिनाहं ।
जैनो नाहं पारसी को न वापी
राष्ट्रोन्नत्यै सनातन आर्य सतपंथी
भारतियो ऽहमास्मि...॥ ध्रुव ॥ १ ॥

शिखो नाहं नाप्यहं वा यहुदीः
शैवो नाहं वैष्णवो वापि नाहं ।

आपन्नाया व्यापहं मातृभूमै
उन्न त्यर्थ सनातन आर्य सतपन्थी
भारतियो ऽहमास्मि ॥ २ ॥

स्पृश्या, स्पृश्य ब्राह्मणा ब्राह्मणाद्याः
भेदां जातां प्राक्तनेऽतीव काले ।
नै ते रोद्धु भ्रात् भाव समर्था
राष्ट्रो ध्द्वारो भेद् भावान्न सिध्दोत्
सनातन आर्य सतपन्थी, भारतियोऽहमास्मि ॥ ३ ॥

एकस्मिश्चेत्सज्ञानी प्राप्ति वासा,
काम क्रोध स्वार्थ वैरादि मग्नाः ।
भूत्वा भूत्वा नाशयान्ति स्वगेहं
मौर्ख्य कीमस्यान्न् नम स्मा त्वरवै
सनातन आर्य सतपन्थी, भारतियोऽहमास्मि ॥ ४ ॥

देशोन्नत्यैं स्वार्थ यज्ञं करोष्ये
देशोन्नत्यैं दीर्घ कष्टं सहिष्ये
देशोन्नत्यैं कर्मयोग विधास्ये
देशोन्न त्यायर्प यिष्यामि देहं
सनातन आर्य सतपन्थी, भारतियोऽहमास्मि ॥ ५ ॥

द्वेष, क्रोध, हिंसा, देशोन्नेत्यै
सदा परिहरिष्ये ।
स्नेह, स्वार्थ, त्याग वितती योगं
तथा च वितनिष्ये
सनातन आर्य सतपन्थी, भारतियो ऽहमास्मि ॥ ६ ॥

ॐ नमो जय श्री हरी ॐ

इति मंगलम् क्षमा प्रार्थना

मंत्रहिनं, क्रियाहिनं, भक्तिहिनं सुरेश्वरा ।।
यत्पुजीतं मयादेव, परिपुर्ण तदस्तुते ।। १ ।।

हे देवोनो पण नियंता देव; मंत्र विना, क्रिया विना के भक्ति विना में जे पूजा कर्म कर्युं होय, ते मारु कर्म (आप श्रीजीनी कृपा वडे) पूर्ण थाओ ।

यदक्षरं पद्भ्रष्टं, मात्रा हीनं च यद्भवेत ।।
तत्सर्वं क्षम्यतां, देव प्रसीद ! परमेश्वर ।। २ ।।

हे देव, अक्षरो के पदोमां कई भूल थई होय अने मात्रा विनानुं जे कंई बोलायुं होय ते तमे सर्व सहन करी क्षमा करो, मने माफी आपो. अने हे परमेश्वर तमे प्रसन्न थाओ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधु श्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।। ३ ।।

हे देवोना देव, मारे माता पण आप छो अने पिता पण आप छो, बंधु पण आप छो अने मित्र पण आप छो, विद्या पण आप छो अने द्रव्य पण आप छो । टूंकमां—हे सर्वेश्वर, म्हारु तो सर्व कांई एक आपज छो ।

काये न वाचा मनसेन्द्रियैर्वा, बुध्ध्यात्मनावा प्रकृते स्वभावात् ।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि ।। ४ ।।

काया वडे, वाणी वडे, मन वडे, इन्द्रीयो वडे, चित्त वडे, अहंकार वडे अथवा प्रकृति स्वभावथी हुं जे कंई करुं छुं, ते सर्व हे परब्रह्म नारायण, आपना चरण कमलमां समर्पण करुं छु ।

सर्वत्र सुखिन सन्तु, सर्व सन्तु निरामयाः ।।
सर्वे भद्राणी पश्यन्तुमां कश्चिद, दुःख माप्नुयात् ।। ५ ।।

आ जगतमां सर्व प्राणीओ सुखी थाओ, सर्व कोई निरामय दुःख रहित, निर्विकार थाओ, सर्वनुं कल्याण थाओ, सर्वे लाभकारक, हितकारक अवसर जुओ अने कोई पण प्राणीने किंचीत् मात्र पण दुःख न थावो ।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णा पूर्त्णं मुदच्यते ॥
पूर्णस्य पूर्ण मादाय, पूर्ण मेवाव शिष्य ते ॥ ६ ॥

ते (सर्व व्यापक, निरुपाधिक, परब्रह्म) पूर्ण छे. आ दृश्य मात्र नामरुप वालु (जगत) पूर्ण छे । पूर्णथी (कारण ब्रह्मामांथी) पूर्ण (कार्यब्रह्म) प्रकाश पामे छे पूर्ण (कार्यात्मक ब्रह्म) नी ब्रह्मता, पूर्णता (एक रसतां) ने लेवा छतांय पण पूर्णज (प्रज्ञान घन पर ब्रह्म स्वरुपज) अवशेष (बाकी) रहे छे ।

श्री

शुद्धिपत्र

हिन्दी–विभाग

पान	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
२	८	प्रथमोद्धर्म	प्रभवोद्धर्म
२	१०	विध्यते	विद्यते
१०	२४	पहिचाहु	पहुचावे
५०	२७	मजदान	यजदान

सँस्कृत–विभाग

पान	ओळ	अशुद्ध	शुद्ध
१३	२५	निर्णिशेषं	निर्विशेषं
१३	२५	मुक्तिप्रदाथ	मुक्तिप्रदाय
१६	१४	शलाकथा	शलाकया

॥ सा विद्या या विमुक्तये ॥

શ્રી સતપંથ જ્ઞાન સાહિત્ય સંગમ

યાને

ટુંકા ટુંકા ગદ્ય-પદ્ય સાર સંગ્રહ

આગમ (ભવિષ્ય) વાણી

: સંકલન કર્તા :
શ્રી શંકરલાલ સંપત અથર્વવેદી

ગુજરાતી વિભાગ

સમય સંજોગે એક આશાવાદ.

વર્તમાન સ્વદેશ ભારતીય માનવ સમાજમાં પ. પૂ. મહાત્મા ગાંધીજી જેવા ધર્મ ન્યાય નિતિના કર્મવીર પ્રગતિના પાવર હાઉસની ગરજ સારે છે. પરન્તુ પાવર હાઉસમાં ગમે તેટલી ઇલેકટ્રીક પેદા થાય, પણ એને દૂર દૂર સુધી પહોચાડનાર વિજળીના દોરડા અને તેના બીજા સાધનો ન હોય, ત્યાં સુધી તેનું અજવાળું સમાજમાં ફેલાતું નથી.

એજ પ્રમાણે—ઇદમ સત્ય સનાતન આર્ય—પવિત્રોત્તમ આદર્શ યુક્તમ; શ્રી સતપંથ ધર્મ જીજ્ઞાસુ માનવ મિત્રોએ સમજવાનું છે કે—

"પાવર હાઉસ, યાને શ્રી સતપંથ ધર્મ નિતિ દર્શક ધર્મ-સંસ્થા અને તેને લાગતા વળગતા દોરડા એટલે—પ. પૂ. શ્રી સાધુઓ, મુખીઓ, મુસાફરો તથા અન્યોન્ય સમજદારો બન્ધુઓ અને ભગિનિયો આછે અન્યોન્ય સાધનો જેવાજ આપણે બધાય છે પણ કયારે ?

શ્રી સતપંથ સનાતન આર્ય પવિત્ર આદર્શ યુક્ત સદવિચારોનું જ્ઞાનરુપી અજવાળુ "ઇમાનસરીખા દીવડો અને અજવાળો ગુરૂજીના પાય" એવા યોગ્ય રીતે કરવાયોગ્ય કર્મ કરવાની ધગશ હિંમત રાખીશું ત્યારે ?

આશા સેવાય છે કે—વર્તમાન યુગના નવયુવકો માનવ અને માનવતાના જ્ઞાન પ્રસારક માનવ મિત્રો આપણે સ્વદેશ ભૂમિ ભારતવર્ષના ધર્મ કર્મ વીર બનવા, કલૈ માસ્મગમઃ પ્રમાણે નહીં પણ, કર્મણ્યેવાધિકારાઃ પ્રમાણે એક માનવ ફરજ બજાવવા ભાગ્યશાળી થશે, હાલ એજ. (અપૂર્ણાંક)

આપ શ્રીમાનજીનો એક
સત્ય શોધક એવં સતપંથ પ્રચારક

ૐ નમો જયશ્રી તત્સત્ હરિ ૐ

ધર્મસ્ય તત્વમ્ નિહિતં ગુહાયામ્ઃ
મહાજનો યેન ગતઃ સ પંથાઃ ॥

ઇદમ્ સત્ય સનાતનાર્ય શ્રી સતપંથ કી જય
પવિત્રોત્તમ આદર્શયુક્ત સ્વધર્મ નિધનમ્ શ્રેયસ ॥

卐

—ઃ આત્મશ્લાઘા, અથવા આપવખાણ ઃ—

ચાલુ જમાનામાં જેટલાં પુસ્તકો પ્રગટ થાય છે, તે દરેક પુસ્તકોની યાદીમાં ભૂમિકા ઉપોદ્ઘાત, પ્રસ્તાવના, સૂચના, વાચકોને બે બોલ, પ્રવેશિકા કે પ્રયોજન લખવામાં આવે છે. આ પુસ્તકમાં માત્ર ટુંકે ટુંકું ગદ્ય–પદ્ય સાર–સંગ્રહ હોવાથી ઉપરના કોઈપણ વિશેષણ અથવા નામ આપી શકાય તેમ નથી. તેમ વર્તમાન કાળના ચાલતા પ્રવાહ પ્રમાણે કંઈપણ લખ્યા વિના રહી શકાય એમ નથી. એટલા માટે બીજો કોઈ શબ્દ ન લખતાં..."આત્મ-શ્લાઘા" ના મથાળા હેઠળ બે બોલ લખવા ધારું છું, કારણકે મારું કામ બીજાને પસંદ પડે કે ન પડે અને તેથી તેના વખાણ કોઈ કરે, અથવા ન કરે તેની વાટ જોવા કરતાં મારાં વખાણ મારી જાતે કરવાં એજ વધારે મને તો પ્રિય લાગે છે. કારણકે મનુષ્ય માત્રનો સ્વભાવ છે કે, કોઈપણ કામ પોતાને પસંદ પડ્યા વિના કોઇ પણ માણસ કરતો નથી. તેમ પોતે પોતાનું કામ પૂરું કર્યા પછી, મારું કામ ખામી ભરેલું છે એમ કોઈ માનતું નથી. જેમ....

એક બાદશાહે પોતાના કાળા હબશી ગુલામને એક ફરમાન કર્યું કે :—સારામાં સારો, રુપાળામાં રુપાળો, દેખાવડામાં દેખાવડો એક છોકરો શોધી લાવ. તે હબશીએ આખા શહેરમાં ગરીબ અને તવંગર, અમીર અને ઉમરાવ ઊંચ અને નીચ. બલવાન નિર્બળ તથા ધનવાન અને નિર્ધનના હજારો છોકરા જોયા. પરંતુ જેવી રીતના ગુણ, કર્મ, સ્વભાવ કે અંગોપાંગ કે આકાર વાળો છોકરો લાવવાનું બાદશાહનું ફરમાન હતું. તેવો એક પણ છોકરો તેની નજરમાં આવ્યો જ નહીં, પરંતુ, સકળ ગુણ સંપન્ન, રૂપાળો અને દેખાવડો તેને પોતાનો જ પુત્ર લાગ્યો, એટલે પોતાના પુત્રને બાદશાહ આગળ રજૂ કર્યો અને તેના વખાણ સંપૂર્ણ રીતે કર્યાં. તેમ આ મારા ગદ્ય-પદ્ય, સાર, સંગ્રહમાં ગમે તેટલી ખામી હોય. મારા શુદ્ધ આલેખનમાં ગમે તેટલા દોષ હોય, મારા માનેલા સાર સિદ્ધાંતમાં ગમે તેટલી ભૂલ હોય, તો પણ આ મારા ગદ્ય—પદ્ય, સાર—સંગ્રહ જેટલો મને નિર્દોષ લાગે એટલો બીજાને લાગે નહિ, એ સ્વાભાવિક છે, અને તેથી જ આ પ્રસ્તાવનાનું નામ "આત્મશ્લાઘા" રાખવામાં આવ્યું છે.

સાયન્સનો એક સિધાન્ત છે કે, એક રબરના દડાને જેટલા જોરથી ફેંકવામાં આવે એટલા જોરથી સામી ભીંતે અથડાઈને પાછો આવે, પણ દડા જેવડા ગોળ પથ્થરને કે લોખંડના ગોળાને ગોફણમાં કે ગલોલે ચઢાવી ફેંકવામાં આવે તો તે જ્યાં જાય ત્યાંથી અથડાઈને પાછો આવે નહીં.

પણ ત્યાં ખાડો પાડી ને આખર સુધીની યાદગીરી કાયમ રાખે, બીજાને ભલે મારે આ ગદ્ય—પદ્ય સાર—સંગ્રહ રબરની દડા જેવા લાગે પરંતુ મારા વિચાર પ્રમાણે એ ગદ્ય—પદ્ય, સાર—સંગ્રહ ગલોલથી ફેંકેલા લોખંડના ગોળા બરાબર અસર ઉત્પન કરશે જ !

જગતની ઉત્પતિથી માંડીને આજ સુધીમાં અનેક વિદ્વાનોએ અનેક ભાષામાં પોત પોતાના સિદ્ધાંતને પ્રતિપાદન કરીને ધર્મ શાસ્ત્રના નામથી પુસ્તકો લખ્યાં છે. અથવા ગ્રંથો બનાવ્યા છે. પણ તેવો ઈશ્વર, પ્રકૃતિ અને આત્મા સિવાય બીજાનું પ્રતિ પાદન કરી શકયા નથી, તે આત્મા ત્રણ ગુણ સહિત પરા, પશ્યતિ, મધ્યમા, અને વૈખરી વાણી વાળો છે. તે આત્મા જાગૃત, સ્વપ્ન, સુષુપ્તિ અને તુર્યાવસ્થા વાળો છે, તે આત્મા સ્થૂળ, સૂક્ષ્મ અને કારણ શરીર વાળો હોઈને મહા કારણરૂપે રહેલો છે. તે આત્મા મન બુદ્ધિ, ચિત્ત અને અહંકાર તથા શબ્દ, સ્પર્શ, રૂપ રસ અને ગંધ એવી પાંચ તન્માત્રા સાથે નવ તત્વના લિંગ રૂપ સૂક્ષ્મ શરીરમાં રહીને જન્મ, જરા અને મરણના સુખ દુઃખ ભોગવતો ચોર્યાસી લાખ જીવયો-નીમાં પોતાના કર્મ પ્રવાહથી વહ્યા કરે છે. તેનું તારણ કરવા માટે આખા જગતમાં મહાત્માઓએ, વિદ્વાનોએ નહીં ગણી શકાય એટ-લા ધર્મગ્રંથો લખેલા છે અને તે ધર્મગ્રંથોને ન્યાયવત્ તપાસતાં જણાઈ આવે છે કે, દરેક મહાત્માએ, અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય, બ્રહ્મચર્ય અને અપરિગ્રહ પાંચ વસ્તુમાં ધર્મનો સમાવેશ કર્યો છે. મતલબ કે હિંસા કરનાર,જૂઠું બોલનાર,ચોરી કરનાર,અને વ્યભિચાર કરનાર, પરિગ્રહ એટલે લોભથી વસ્તુઓનો સંગ્રહ કરનારાઓ, આસુરી પ્રકૃતિના, અધર્મી અને પાપી હોવાથી તેને નર્કના અધિ-કારી માનેલા છે. અને હિંસા નહીં કરનાર, જૂઠું નહિ બોલનાર, ચોરી નહિ કરનાર, વ્યભિચાર નહિ કરનાર, તથા લોભની વસ્તુમાં નિર્મોહી રહેનાર, દૈવી પ્રકૃતિના, ધર્મીષ્ટ અને સ્વર્ગના અધિકારી માનેલા છે એવી રીતે આખી દુનિયામાં દુનિયાના ધર્મ–ગુરૂઓએ જગતને સ્વર્ગે અથવા મોક્ષે જવા માટેનો સરલ, સીધો અને નિર્ભય માર્ગ બતાવવાથી જગત તેની પાછળ પડેલું દેખાય છે પણ તેને અનુગામી થયેલું દેખાતું નથી.

જેમ એક મનુષ્યની આંખમાં વિકાર હોવાથી તે એક વસ્તુને બે વસ્તુ દેખે છે અને પોતાના હાથે બેઉ વસ્તુને પકડવા પ્રયત્ન

કરે છે જેથી એકે વસ્તુ હાથમાં આવતી નથી. તેમ જગતની દૃષ્ટિમાં વિકાર હોવાથી તેની આંખે ધર્મ ગુરૂઓએ બતાવેલા સીધા માર્ગના બે ફાંટા દેખાય છે એટલે સત્ય માર્ગથી ચૂકી જઇ અસત્ય માર્ગે હરખાતા હરખાતા દોડતા ચાલ્યા જાય છે. તેને ઉલટે માર્ગે જતાં જોઈને ધર્મ ગુરૂઓ તેને પાછા વાળવાના સતત્ પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે પરંતુ પ્રવાહમાં પડેલા ઉન્માર્ગ ગામીઓ કોઈની વાત સાંભળતા નથી. એટલે જેમ મહાત્માઓ, મહર્ષિઓ ધર્મગુરૂઓ અને તત્વજ્ઞાનીઓએ અનુભવેલા, જોયેલા, વિચારેલા, અને અનુમાનથી સિદ્ધ કરેલા સુખના સાધનો તેઓના રચેલા ગ્રંથોમાં જ રહી ગયા છે તેમ મારા આ ગદ્ય—પદ્ય સાર—સંગ્રહમાં લખાયેલા અને ગોઠવાયેલા વિચારો આ પુસ્તકમાં જ રહી જાય તો તેથી મારે આશ્ચર્ય પામવાનું કારણ નથી, પરંતુ એક પ્રશ્ન ખડો થાય છે. કે જ્યારે જગતમાં લખવાનું હોય પણ તે વાત સાંભળવાને અથવા સમજવાને જગતને રુચતું નથી. અને તે ઉપરાંત તે બાબત ધર્મ શાસ્ત્રમાં એવી રીતે લખેલી છે કે જેમાં સુધારાને સ્થાન નથી, તો પછી આ ગદ્ય–પદ્ય; સારસંગ્રહ પુસ્તકથી વધારે શું લાભ થવાનો છે? તેના જવાબમાં મારે કહેવું જોઈએ કે, સાયન્સના સિદ્ધાન્ત પ્રમાણે શબ્દનો લય થતો નથી એટલે વૈખરી–વાણીએ ઉચ્ચાર થયેલા શબ્દોનો આકાશમાં લય થતો દેખાય છે પણ તે શબ્દો નાશ પામતા નથી. જેમ પાણીથી ભરેલા સરોવરમાં એક પથ્થર નાખીએ તો પાણીમાં તરંગ ઉત્પન્ન થાય છે તે ઉપરથી કુંડાળાં દેખાય છે. તે પાણી પાછું સ્થિર રૂપને પકડે છે. તેમાં ઉપરથી જોનાર ને નાખેલા પથ્થર દષ્ટિએ પડશે નહિ, એ ખરૂ છે પણ પાણીમાં પડેલો પથ્થર નાશ પામતો નથી. તેમ વૈખરી વાણીમાં બોલાયેલા શબ્દો મહા પ્રાણના સરોવરમાં ધ્રૂજારી ઉત્પન કરીને સમાઈ જાય છે. પરંતુ તેનો નાશ થતો નથી. એટલે જેમ જેમ મનુષ્યોના વિચાર અને ચારિત્ર્ય બદલાતા જાય, તેમ તેમ મનુષ્યોને સત્યને માર્ગે ચઢાવવા

માટે જૂના ગ્રંથો કરતાં તેના સાર રૂપ વિચારોને ગ્રહણ કરી ગદ્ય-પદ્ય રૂપમાં ગોઠવી જગતની વૈખરી વાણી દ્વારા એ મહા પ્રમાણમાં સૂજારી ઉત્પન્ન કરાવી, શબ્દ સમૂહમાં વધારો કરવો જ જોઇએ; એવુ મારૂ માનવું હોવાથી આ મારા ગદ્ય—પદ્ય સાર સંગ્રહને નિરર્થક કે અરણ્યરૂદનવત હું માનતો નથી.

મારા આ ગદ્ય—પદ્ય, સાર-સંગ્રહમાં કોઈપણ નિશ્ચિત એક શાસ્ત્રનાં પ્રમાણ આપીને વિષયનું પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું નથી, પણ માત્ર અનુવાદ અને યુક્તિથી વિષયનું સ્વરૂપ રચવામાં આવ્યું છે. કારણ કે જો શબ્દવાદમાં ઉતરું તો શબ્દના અનેક અર્થ હોવાથી શબ્દની મારા મારી થાય. જો શાસ્ત્રના પ્રમાણ આપુ તો; તે પ્રમાણુથી ઉલટા પ્રમાણ વાળા શાસ્ત્રોનો અપવાદ આવે, જેમ બ્રાહ્મણ શબ્દ લઈને બ્રાહ્મણ વર્ણનું સ્થાપન કરી તેની પુષ્ટી માટે વેદ આદિ શાસ્ત્રોનો પ્રમાણ આપવામાં આવ્યા હોય તો વેદ આદિ શાસ્ત્રોને નહિ માનનારાઓ તેને પ્રમાણ માને નહિં. એટલે આદિ શાસ્ત્રો પ્રમાણે બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, અને શુદ્ર એ ચાર વર્ણની વ્યવસ્થા ગોઠવવા માટે દરેક દેશમાં ઉત્પન્ન થતા જ્ઞાનવાન, બલવાન, શ્રીમાન અને બુદ્ધિમાન, એવા ચાર વર્ગ પાડવામાં આવ્યા કે જેથી વર્ણાશ્રમનો વિષય દરેક મનુષ્યને ઉપયોગી થાય, અને તેથી જ મારા તમામ આ ગદ્ય-પદ્ય, સાર સંગ્રહનો યુક્તિવાદ અને તર્કવાદ ઉપર લખાયેલા છે અથવા કહેવાયેલા છે. જેમ ઈતિહાસના લખનારાઓના હાથમાં તામ્ર પત્ર અથવા એક શિલાલેખ અથવા થોડાક જુના સિક્કાઓ આવે, કોઈ શહેરના જુના ખંડેરો જોવામાં આવે કે તે ઉપરથી તર્ક કરી તે તર્ક ઉપર યુક્તિ ચઢાવી, તે યુક્તિ પ્રમાણે પ્રત્યક્ષમાં ઈતિહાસ બનેલો હોય, તેવા રૂપમાં તેઓ તરફથી આખો ઇતિ-હાસ તૈયાર કરવામાં આવે છે. તેમ વેદ ધર્મને શિલાલેખ જેવો, ઉપનિષદોને તામ્રપત્ર જેવા દર્શન શાસ્ત્રોને જુના સિક્કાઓ ધર્મને અને ચાલતા પૌરાણિક ધર્મ ઉપરથી વિકાસ પામીને જન

સમાજની કૃતિમાં આવીને, ધર્મના ઉપર બલવાન થઈને જે રૂઢીરૂપે મોટા મોટા ખંડેરો જોવામાં આવે છે. તેની બનાવટ; અને તેની ગોઠવણી તેની આકૃતિ અને તેના દૃઢ થઈ ગયેલા રિવાજ ઉપર કલ્પના કરીને મેં મારા આ ગદ્ય–પદ્ય, સાર–સંગ્રહની ગોઠવણ કરી છે. અને તે કલ્પનાનું ખંડન કરે એવો કોઈ વાદી મળશે કે ઉત્પન્ન થશે નહીં. અને કદાચ ઉત્પન્ન થાય તો મારા વિરુદ્ધ મારા જેવી સચોટ કલ્પના કરી શકશે નહીં એવી મારી દૃઢ માન્યતા છે.

મનુષ્ય ગમે તેવો હોય, પણ તેને માથે દેવઋણ. પિતૃઋણ અને ઋષિઋણ અદા કરવાનું હોય છે. તે પ્રમાણે દેવઋણ, પિતૃઋણ કરતાં વર્તમાન સમયે આ પુસ્તકમાં "સત્યનું શોધન, કરતાં સમજવામાં આવ્યું છે કે, વેદ–માનવ–ધર્મ સનાતન–માર્ગ નિતીક–રૂપ જે–સતપંથ–સાહિત્યમાં ભૂત–વર્તમાન અને ભવિષ્યનું ચિત્ર રૂબરૂ આપણા સમક્ષ શ્રી સતગોર પાત્રબ્રહ્મા ઈન્દ્ર ઈમામ શાહે તથા અન્યોન્ય વિભૂતિઓ એ ઊભુ કર્યું છે. અને તે સાહિત્ય–પદ્ય રૂપ માતૃભાષા ગુજરાતીમાં હોવાથી તેમ કરતાં અનેકને સમજવામાં આવે માટે સરલ હિન્દી–દેવ નાગરી લીપીમાં વર્તમાન સમયની ભાવી પેઢી માટે કે તે આજે હિન્દી ભાષાનો અભ્યાસ કરી રહેલ છે. તેમને માટે સતપંથ શું છે ? સમજવા માટે આ વર્તમાન પુસ્તકમાં હિન્દી, ગુજરાતી, મરાઠી ભાષાઓ સાથે ગદ્ય–પદ્ય રૂપ વાચન–પાઠ અને કાવ્ય રૂપ કે જેમાં સત્યનું મંડન કરેલું છે. પણ અસત્યનું ખંડન કર્યું નથી. ધર્મનું મંડન કરેલું છે, પણ અધર્મનું ખંડન કર્યું નથી. પરંતુ શુદ્ધ સનાતન આર્ય (પવિત્ર) વૈદિક ધર્મથી આપણે કેટલા વેગળા ગયા છીએ. અને ધર્મ રૂપ માતાના પ્રેમને ભૂલીને રૂઢી રુપ અપરમાતાના કેવા ગુલામ બન્યા છીએ. તે બતાવીને સદરહુ પુસ્તક—શ્રી સનાતન આર્ય (પવિત્ર) ધર્મ માર્ગ શ્રી સતપંથ—સમાજને ભેટ આપી હું આજે ઋષિઋણથી મુક્ત થાઉં છું.

કોઈપણ જાતનું પુસ્તક કોઈપણ તરફથી પ્રગટ કરવામાં આવે કે રચવામાં આવે તેના ત્રણ વર્ગ પાડી શકાય છે જે પુસ્તકમાં સર્વ વિદ્યાનાં મૂળ–તત્ત્વો હોય છે. દુનિયામાં ગમે તેવી વિદ્યાંની શોધ થાય તો પણ તેનું મૂળ તે પુસ્તકમાં હોય જ, તેવાં પુસ્તકને સર્વજ્ઞ ઇશ્વર નિર્મિત માનવામાં આવે છે. ટૂંકમાં કહીએ તો આખી દુનિયાના ગ્રંથકારોએ જેનો આશ્રય લીધો હોય. પરંતુ તે પુસ્તકે કોઈનો પણ આશ્રય ન લીધો હોય એવા પુસ્તકને ઈશ્વરી પુસ્તક માનવાં પડે છે. અને તેવાં પુસ્તકમાં આર્ય સમાજે તથા સનાતન વેદને માનભરી પ્રજાએ અપૌરુષ્ય બોધ એવાં વેદને જ માનેલ છે એટલે સિવાય કોઈપણ પુસ્તક પ્રાચીન કે ઈશ્વરકૃત કહી શકાતું નથી.

બીજા વર્ગમાં ઋષિકૃત પુસ્તકોનો સમાવેશ થાય છે એટલે જે પુસ્તકમાં કોઈનો પણ સ્વાર્થ વિના, કોઈપણ જાતના પક્ષપાત વિના માત્ર મનુષ્યને ધર્મ–અર્થ કામ અને મોક્ષનું જ્ઞાન મળે અને તે જ્ઞાન કોઈપણ દેશના, કોઈપણ વર્ણના, કોઈપણ ધર્મના કોઈપણ મનુષ્યને પ્રતિકૂળ પડે નહિ એવું જ્ઞાન જે પુસ્તકોમાં લખેલું હોય તે પુસ્તકને ઋષિકૃત માનવામાં આવે છે. પરંતુ જે પુસ્તકમાં એકનું સ્થાપન અને બીજાનું ઉત્થાપન હોય, બીજાના સુખને ભોગે એકને સુખ મળવાના સાધન હોય અથવા કહો કે જે પુસ્તકોમાં પરસ્પર વિરોધી વાતો લખાઈને માન-બડાઈ અને ઈર્ષ્યાનું સ્થાપન હોય અને મારામારી, કાપાકાપી, લૂંટફાટ, છલકપટ, પ્રપંચ, કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, લજ્જા, ભય, શોક અને માયાની જાળ બીછાવેલી હોય તે પુસ્તકો મનુષ્યકૃત કહેવાય છે, જેથી આ મારા ગદ્ય-પદ્ય, સાર–સંગ્રહના પુસ્તકને હું ઋષિકોટીમાં ગણાવું તો તેમાં કંઈ ખોટું કહેવાય નહિ.

વર્તમાન કાળમાં કોઈપણ મત–પંથ સંપ્રદાય, તરફથી જન સમૂહને ઉપદેશ આપવા માટે પુસ્તક પ્રગટ કરવામાં આવ્યું

હોય છે અથવા ઉપયોગી કે નિરુપયોગી કથા વાર્તા કે નોવેલ કે રાગ રાગણી, ગીત કે રાસડાના જે જે પુસ્તકો પ્રગટ થાય તે દરેક પુસ્તક ઉપર પહેલેજ પાને લખેલું જોવામાં આવે છે કે આ પુસ્તકના સર્વ હક્ક સ્વાધીન રાખ્યા છે. આ પુસ્તકનો કોપી રાઇટ બીજાને નથી, આ પુસ્તક ૧૮૬૭ના ૨૪માં એકટ પ્રમાણે રજીસ્ટર કરાવેલું છે. તે વાંચીને મને આશ્ચર્ય થાય છે, કે જે પુસ્તક વાર્તાના કે નોવેલના હોય ગરબી ભજન ના હોય, હુન્નર વિદ્યાની કળા ના હોય, મતલબ કે જે પુસ્તકમાં એકજ મનુષ્યનો લાભ સમાયેલો હોય અથવા એકજ મનુષ્યનો સ્વાર્થ સમાયેલો હોય તે પુસ્તકના હક્કો ભલે સ્વાધીન રાખે, પરંતુ જે પુસ્તકો ધર્મ સંબંધી હોય. પુસ્તક લખનારનો હેતુ પોતાના ધર્મને આખી દુનિયામાં ફેલાવવાનો હોય તેવા વિસ્તૃત હેતુવાળા પુસ્તકનો સર્વ હક્ક સ્વાધીન રાખીને તેનો ફેલાવો થતો અટકાવવો એ શું વ્યાજબી ગણાય ? તેમાં વળી સનાતન ધર્મ સમાજ અને આર્ય સમાજ કે સત પંથ કે જે વેદને ભણવા ભણાવવાનો મનુષ્ય માત્રનો હક્ક સાબિત કરે છે. અને વેદ ધર્મ આખી દુનિયામાં ફેલાવવાનો દાવો કરે છે. તે સમાજ પોતાના પુસ્તકના કોપીરાઇટ રાખીને પોતાનું અંતિમ લક્ષ બિંદુ શી રીતે સિદ્ધ કરશે ? તે સમજી શકાતું નથી !!! દુનિયામાં ચાલતા તમામ ધર્મ મત પંથ સંપ્રદાયો "વસુધવં કુટુંબકમ્" એવો દાવો કરે છે એટલે આખી દુનિયામાં મારૂં કુટુંબ છે એમ માન્યા પછી પોતા તરફથી પ્રગટ થયેલા પુસ્તકને રજીસ્ટર કરાવો તેનો ફેલાવો થતો કે પ્રચાર થતો અટકાવીને પોતાના કુટુંબીઓમાં જ વૈમનસ્યતા ઉત્પન્ન કરે છે એ શું વ્યાજબી ગણાય ? આ પ્રશ્નનો જ. સનાતન સમાજ શ્રી. આર્ય સમાજ, શ્રી. સતપંથ સમાજ કે અન્યોન્ય સમાજના નેતા અને આગેવાન ગણાતાં વિદ્વાન મનુષ્યો એવા જવાબ આપે છે કે જો રજીસ્ટર કરવામાં ન આવ્યું હોય, તો તે પુસ્તકોનું અસ્તિત્વ અખંડિત પણે જળવાઈ શકે નહિ. પરંતુ

એવું કહેનારા ભૂલે છે કે, મુંબઈ શહેરના સદ્‌ગત શ્રી શેઠ પ્રયાગજી ઠાકરશી મુળજી જેણે અથાગ પરિશ્રમ કરીને અનેક શાસ્ત્રોનું દોહન કરીને "પ્રમાણ સહસ્રી" નામનું પુસ્તક લખી આ ગ્રંથ કંઈપણ ફેરફાર વગર છાપવાની તથા તેનું ભાષાન્તર કરવાની સર્વને છૂટ છે, એવી છૂટ આપીને તે પુસ્તકની કિંમત રૂા. ૨–૫૦ પૈસા રાખી વાચનના શોખીન અને અધિકારીને ભેટ આપવા ઠરાવેલ છે. અને એ પ્રમાણે તેની પાંચમી [આજે વર્તમાન સમયે વિશેષ વધારાની] આવૃત્તિ ઈ. સ. ૧૯૦૬માં બહાર પાડવામાં આવી હતી છતાં તે પુસ્તકને છપાવવાની આજે કોઈની હિંમત ચાલતી નથી. જો ગ્રંથકર્તા નિઃસ્વાર્થ પણે પોતાનું પુસ્તક છપાવે અને નફાની આશા રાખ્યા સિવાય તે પુસ્તકની કિંમત ઠરાવે તો કોઈપણ વેપારી તે પુસ્તકને છપાવવાની હિંમત કરી શકે નહીં, તે પ્રમાણે નહિ કરતાં જેવો પોતાનો સ્વાર્થ સાધવા માટે નફો ચઢાવીને પુસ્તકનું કોપીરાઈટ રાખે છે, તેવો પોતાનું તથા સમાજને કેટલું નુકસાન કરે છે તે નીચેનાં એક જ દાખલાથી સમજાશે.

જ્યારે વેદનો અધિકાર પોતાને માટે રાખ્યો અને ત્રણ વર્ણને વેદશાખા રહિત બનાવી, જેથી વેદનું અખૂટ જ્ઞાન સંકુચિત દશામાં આવી ગયું. અને ત્રણ વર્ણના લોકો પુરાણ ધર્મ તરફ વળી જઈને, વેદોનાં નામ સુદ્ધાં પણ ભૂલી ગયા. અને વેદને નામે વેદથી અજ્ઞાત લોકોમાં સ્વાર્થી અને પાખંડી—મત-પંથ અને સંપ્રદાયોનો એટલો પ્રચાર થઈ ગયો કે કેટલાક બ્રાહ્મણોને પોતાનો સ્વાર્થ સાધવા માટે અથવા પોતાનો નિર્વાહ ચલાવવા માટે પોતાનો સ્માર્તધર્મ—સ્વાર્થ—સાધવા માટે ધર્મ મૂકીને પોતાને તે તે સંપ્રદાયની કંઠી બંધાવવી પડી અને બ્રાહ્મણેત્તર જાતિના અથવા બ્રાહ્મણ સમાજથી બહિસ્કૃત થયેલા ધર્મગુરૂઓને પોતાના ગુરૂ માનવાની ફરજ પડી. જો બ્રાહ્મણોએ વેદનો કોપીરાઈટ પોતાની પાસે ન રાખ્યો હોત, અને વેદ ધર્મ

પ્રમાણે વર્ણાશ્રમ ધર્મ ચાલુ રાખ્યો હોત તો આજે આપણો ધર્મ પરદેશીઓથી પદચલિત થઈ રહ્યો છે તેવી દશા પામ્યો હોત નહિ. બ્રાહ્મણોએ ગુરૂપણું મૂકીને ગોરપણું લેવાનો વખત આવવાનું કારણ એ જ કે સર્વહક્કસ્વાધિનનું ફળ મારી નજરે દેખાય છે અને એટલા જ માટે મારી આ ગદ્ય-પદ્ય સંગ્રહનો મેં કોપી રાઈટ રાખ્યો નથી. અને આશા રાખું છું કે ધર્મને ફેલાવવાની આશા રાખતી ધર્મ સંસ્થાઓએ પોતાના ધર્મનો ફેલાવો કરવાની આશા રાખનારાઓએ પોતાના ધર્મગ્રંથોનો અથવા પોતાના કર્મ ગ્રંથોનો અથવા પોતાના મર્મ-ગ્રંથોનો ફેલાવો કરવા માટે દુનિયાને પોતાનું કુટુંબ જાણી સર્વને પોતાનો હક્ક આપી દેવો અથવા દુનિયા મારું કુટુંબ છે એવું પીછું પોતાના માથામાં ઘાલીને ફરવા કરતાં "પૈસા મારા પરમેશ્વર અને બૈરી મારી ગુરુ, છૈયાં છોકરાં શાલીગ્રામ, ત્યાં સેવા કોની કરું ?" એ કહેવત પ્રમાણે પોતાનું ખરું સ્વરૂપ પ્રગટ કરી, દુનિયા મારું કુટુંબ છે એવું પીછું કાઢીને ફેંકી દેવું એવી મારી સર્વેને આગ્રહપૂર્વક ભલામણ છે. કારણ કે જ્યાં સુધી મનમાં ભય છે. ત્યાં સુધી ત્યાં ધર્મજ નથી એમ મારું માનવું છે. અને તે જ સત્ય છે.

હું ભણેલો નથી, પણ વિદ્વાન છું. કારણ કે વિદ્યા અને અવિદ્યાને ઓળખી શકું છું. હું પ્રખ્યાત નથી, પણ પંડિત છું. કારણ કે કોઈ પણ વાતનો પરિચ્છેદ કરી શકું છું. હું સંસ્કૃત ભણેલો નથી, પરંતુ શાસ્ત્રી છું, કારણ કે શાસ્ત્રનું રહસ્ય સમ-જાવી શકું છું, મારી ભાષા ઉત્તમ પ્રકારની નથી, છતાં હું વાદી છું કારણ કે હું કોઈપણ વિષય પર વ્યાખ્યાન આપી શકું છું. હું લેખક નથી. પણ સાક્ષર છું. હું ધનવાન નથી-પણ ઉદાર છું કારણ કે જિન્દગીની જરૂરીઆત કરતાં વધારે પૈસા એકઠા થવા દેતો નથી એટલે ? આજિવિકાને માટે જે ધંધો ચલાવું છું. તે ધંધા-

માંથી જેટલા પૈસા ફાજલ પડે તેનો સંગ્રહ નહીં કરતા ફાટેલું લુગડું–કપડું પહેરું છું પણ સ્વધર્મ–સંગ્રહ–સાહિત્ય ખરીદી કરી ધર્મ મંથન, સ્વધર્મ કર્મ ઉપાસનાદિનું મન્થન કરું છું તેમજ સહચારી મિત્રોને પણ તેમ કરવા સમજાવું છું, ઉપરથી કોઈને એમ લાગે છે, કે હવે તે આત્મશ્લાઘા અથવા આપ વખાણ, કે બડાઈની હદ થઈ ગઈ કેમકે શ્રી કવિશ્વર દલપતરામ ડાહ્યાભાઈએ એક ઠેકાણે લખ્યું છે કે, "આપ વડાઈ આપ મુખ ગાંડુ લોકો ગાય, એટલે ગાંડુ લોકો હોય તેજ સ્વયં આપ બડાઈ કરે છે. પણ હવે હું પૂછું છું કે આ જગતમાં આપ બડાઈ કોણ કરતું નથી ? સત્યનો ફાંકો રાખનાર જગતને મિથ્યા માનનાર હું અહં બ્રહ્માસ્મિ છું એમ કહી પોતે બ્રહ્મ બની જાય છે ! ! એ શું આપ બડાઈ નથી ?

જેનામાં બ્રાહ્મણ પણાનો છાંટો નથી અને જેઓ શેઠિયાઓના રસોડામાં ચા બનાવવાનું કામ કરે છતાં કહે છે કે હું બ્રાહ્મણ છું એ શું આપ બડાઈ નથી ?

પારકી આશા પર જિવનાર, પારકા ભયથી થરથરનારા, કુતરાં અને બિલાડાં જેવા પ્રાણીથી બીનારા પોતાનાં નામ પહાડસિંહ–પર્વતસિંહ–ભીમસીંહ, અર્જુનસિંહ રાખીને કહે કે અમે ક્ષત્રિય છીએ. એ શું આપ બડાઈ નથી ?

વેપારીઓ પોતાના માલનાં વખાણ કરે, શરાફો પોતાના આંટને વખાણે, ન્યાતના શેઠીઆઓ ચત્તાનું ઉંધું, ખરાનું ખોટું કરી એક કુટુંબને દુઃખના દરિયામાં ડુબાવી પોતે સત્યવાદી અને ન્યાયી પણાનો ડોળ બતાવે એ શું આપ બડાઈ નથી ? પોતાનામાં કે પોતાની વસ્તુમાં કોઈપણ પ્રકારનો ગુણ ન હોવા છતાં વર્તમાન પત્રોમાં મૂર્ખાઓને મુગ્ધ કરનારી, લોભિયાઓને લલચાવનારી, અનુત્સાહીઓને આશા આપનારી મોટી મોટી જાહેર ખબરો આપીને પોતાની તથા પોતાની વસ્તુની બડાઈ મારે છે.

તે શું આપ બડાઈ નથી ? અર્થાત એકંદરે જોતાં આખી દુનિયા આજકાલ "આત્મશ્લાઘા એટલે આપ બડાઈની પાછળ જ લાગેલી છે તો પછી મારા જેવો એક માણસ આપ બડાઈ કરે તેમાં આશ્ચર્ય શું ? કારણ કે બીજાઓની આપ બડાઈ તે લોકોને ગાવા માટે છે ત્યારે મારી "આત્મ શ્લાઘા" લોકોના કલ્યાણ માટે છે કારણ કે આજદિન સુધીમાં મોટા મોટા પંડિતો મોટા મોટા શાસ્ત્રીઓ મોટા મોટા વકતાઓ અને મોટા મોટા ધનવાન શેઠીઆઓ જે કામ કરી શકયા નથી તે કામ મારા જેવા વગર ભણેલા એક પણ ભાષાનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન વિનાના, એક પણ શાસ્ત્રનું સંપૂર્ણ અધ્યયન કર્યા વિનાના પૈસાની મારા મારીમાં દારિદ્ર અવસ્થા ભોગવતાં છતાં કોઈની મદદ લીધા વિના જે કામ કર્યું છે, કરું છું અને મારે હાથે થશે. પણ જેટલી ઉતાવળ કરશો, તેટલું મોડું થશે, છતાં એ કોઈ સહજ વાત નથી તો પછી આ મિથ્યાભિમાનના જમાનામાં હું અભિમાની બની જાઉં, આ માન, બડાઈ અને ઈર્ષાના જમાનામાં મારામાં માન કે બડાઈ ઉત્પન્ન થાય. આ પ્રવૃતિના જમાનામાં હું નિવૃતિને નહી પામું આ એકલ પેટા જમાનામાં મારામાં ઉદારતા નહીં આવે આ સ્વાર્થી જમાનામાં મારામાં નિસ્વાર્થીપણું નહિ આવે તે છતાં હું "આત્મશ્લાઘા કે આપ બડાઈનો દોષ મારામાં વ્હોરી લઉં તેથી કંઈ દોષને પાત્ર કે ગંડકની ઉપમાલાયક થઈ શકું નહીં.

આ ગદ્ય–પદ્ય, સાર–સંગ્રહ માળાનું સંપૂર્ણ અવલોકન કરતાં આપને સમજાશે કે સમસ્ત ધર્મ શાસ્ત્રોનાં સિદ્ધાંતનું પ્રતિપાદન કરતાં જેનાથી પાંચ યમનું જેમ જેમ પાલન થતું જાય તેમ તેમ તે મનુષ્યત્વને પામતો જાય હું પોતે પણ સંપૂર્ણ મનુષ્ય ગણવાને લાયક છું. એમ મારું મન કહેતું નથી, પરંતુ માત્ર મનુષ્ય થવાનો પ્રયત્ન કરું છું. એટલું મારું મન કબૂલ કરે છે. ઇશ્વરની કૃપાથી અને પૂર્વ જન્મના સંસ્કારથી ધંધો જે હાથ લાગ્યો છે. તે ધંધો એવા રૂપમાં ગોઠવી મનેચ્છા

થયા કરે છે કે જેમાં પાંચે યમનું સંપૂર્ણ પાલન થઇ શકે, તો જોકે સ્થૂલરૂપ પાંચે યમમાં પૂર્ણતા મેળવી શકાય; પરંતુ એમાં મનેચ્છાને બદલે હરિચ્છા બલવાન છે. આ અનુભવ સાથે હરિચ્છા અનુસાર સ્થૂલરૂપે પાંચે યમમાં પૂર્ણતા મેળવી શકાશે પણ સૂક્ષ્મ રૂપમાં એટલે લિંગ શરીરથી પાંચે યમ પાળવાનું હરિચ્છાનુસાર અશકય છે, શકય નથી. અને તે યમની પૂર્ણતા થયા વિના હું જરયુજ ખાણનો મનુષ્યાકૃતિનો એક પ્રાણી છું. પરંતુ મનુષ્યના ગુણ, કર્મ, સ્વભાવ, પ્રમાણેનો મનુષ્ય કહેવડાવવાને અધિકારી હજી થયો નથી, અને તેથી હું મારા વખાણ મારા મોંઢે કરું તેમાં દોષને પાત્ર ગણાઈ શકું તેમ નથી.

આ મારું પુસ્તક દુનિયાને ભેટ આપવાનું હોવાથી બીજા પુસ્તકોની પેઠે 'અર્પણ પત્રિકા', લખવામાં આવી નથી, તેમ મેં મારા આત્મ બલથી ઉપાર્જન કરેલા દ્રવ્યનો વ્યય કર્યો છે. જેથી કોઈ ધનવાનનો ઉપકાર માનવામાં આવ્યો નથી, પરંતુ જેના તેજથી હું પ્રકાશમાન થયેલો છું. જેની વિદ્યાના પ્રકાશથી હું વિદ્વાન બનેલો છું, જેના નિષ્પાપ અંતઃકરણના વિચારથી મારું અંતઃકરણ દેશનું જે છે તે તમામ મારું છે. તેમ જ મારું જીવન તમામ મારા દેશ માટે છે અને આખા દેશની વિભૂતિ મારા માટે છે.

એવું તત્ત્વ મારામાં ઉમેરાયું તે શ્રી સત પંથ સનાતનાર્ય પવિત્ર માર્ગ દર્શક શ્રી સતગોર પાત્ર બ્રહ્મા ઈન્દ્ર ઇમામશાહજી કે જેઓએ વર્તમાન ચતુર્થ કલજુગ સંઘે

एक सद्‌विद्या बहुधा वदन्ती, स एष एकं वृद्धेक,
आचारे प्रभवो धर्म, तस्माच्छास्त्रो प्रमाणम् ॥

સર્વોપનિષદો ગાવો વગેરે પ્રમાણે વેદઉપનિષદોનું ભૂત, વર્તમાન અને ભવિષ્યનું ચિત્ર ચીતરી દીધું તે વન્દે મહા પુરુષાય ચરણાવિંન્દ એવાં આ ત્રીકાલજ્ઞાની શ્રી સત્‌ગોરે, વેદ-

ઉપવેદની સાગર-સરીતા અને ઝરણાઓનું દર્શન માતૃભાષા (સંસ્કૃતમાંથી-પ્રાકૃત) ગુજરાતીમાં 'હંસોયથા' પ્રમાણે સાર અસાર બતાવી દીધું છે. પરંતુ તે આ વાણીને લાભ સહિષ્ણુતાથી અમે નહીં લઈએ. તો વાંક કોનો ?

જે છે તે સત્ય છે. જેના તરફથી આ ગદ્ય-પદ્ય, સાર-સંગ્રહ કરવાની બુદ્ધિ મળી છે. તે શ્રી સત્ગોર પાત્રના એક શ્રી શુભવરદ્હસ્ત એટલે વર્તમાન શ્રી મહંત સતપંથી આચાર્ય કાકાશ્રી. રામજી લક્ષ્મણજીના પ્રેમમાં પ્રેરાઈને તેમના સ્વરૂપનું ચિત્ર આ પુસ્તકના પ્રથમ પૃષ્ઠે મૂકીને પુસ્તકને શોભાવ્યું છે.

વર્તમાન કાળમાં આખું જગત જરાક ભૂલમાં ગોથાં ખાઈ રહ્યું છે. અને દરેકના મુખથી એવું સાંભળવામાં આવે છે કે, "જરાક ભૂલ થઈ ગઈ એ એટલી ભૂલ ન થઈ હોતતો હું આટલું કામ કરી શકત, પરંતુ દુનિયા તે જરાક ભૂલ તરફ ધ્યાન નહિ આપતાં તે ભૂલને આંખ આડા કાન કરી નીભાવી લે છે. તેવી રીતે આ પુસ્તકમાં બોલનારની, લખનારની, ટાઈપ ગોઠવણારની કે પ્રુફ સુધારનારની જરાક ભૂલ થઈ ગઇ હોય અને તે ભૂલ જેની દૃષ્ટિએ દેખાય તેને જે સુધારીને વાંચશે તેઓને ધન્યવાદ આપું છું. એટલું લખ્યા પછી હું મારી 'આત્મા શ્લાઘા, અથવા આપ વખાણને લંબાવીને વાંચક વર્ગને કંટાળો આપવા ઇચ્છતો નથી, જેથી વિરામ પામી તે પરમકૃપાળુ, અખંડાનંદ, સર્વજ્ઞ, સચ્ચિદાનંદ, **સર્વાન્તર યામિ** અને સર્વ શક્તિમાન પરમાત્મા પાસે એટલી યાચના (ગુન્હા) કરું છું કે, મારામાં મનુષ્યત્વને ઠેકાણે જ્યાં જ્યાં જેટલી જેટલી પાશવવૃત્તિ રહેલી હોય તેને, તથા મનુષ્ય માત્રમાં જ્યાં જ્યાં પશુવૃત્તિ રહેલી હોય તેને તારા સર્વ શક્તિમાન ગુણે કરી. વિરામ પમાડી જગતના તમામ મનુષ્યો પોતાના ગુણ કર્મ સ્વભાવથી મનુષ્યપણાને પામે અથવા મનુષ્યતા ધારણ કરી, એક સંપથી, એક દિલથી જેમ

હાથ પગ, આંખ શરીરને અથવા તમામ શરીરના જુદા જુદા આકારવાળી, જુદાં જુદાં ગુણ કર્મ સ્વભાવવાળી, જુદાં જુદાં કામ કરનારી ઈન્દ્રિયો જ્યારે જ્યારે જરૂર પડે ત્યારે ત્યારે એક બીજાને સહાય કરવા દોડી જાય છે અને એક બીજાને સુખે સુખી અને દુઃખે દુઃખી જણાઈને કોઈપણ જાતના સ્વાર્થ વિના એક બીજાના રક્ષણ કરે છે. તેવી રીતે મનુષ્ય માત્રમાં તેવો ગુણ–કર્મ સ્વભાવ પ્રકટ થાય એટલી પ્રાર્થના કરી હું વિરામ પામું છું તથાસ્તુ.

.. ... લેખ સંગ્રાહક એવં પ્રકાશક......

શ્રી માન્યવર પંડિતો, શાસ્ત્રીઓ સદ્ધર્મ સંતપંથ પ્રચારક ધર્મગુરૂઓ, ઉપદેશકો, સાક્ષરો, વકતાઓ, અને લેખકો મુનિઓવગેરેના દાસાનું દાસ

પંડિત શ્રી શંકરલાલજી સંમ્પત અથર્વવેદી
ખાનદેશ (કાહુરખેડે) વાલા
મુ. પો. હરતાલા તા. ભુસાવળ (E. K)
હું છું પોતે એક આપશ્રીનો,

હે સનાતનાર્ય સતપંથ ધર્મ–પ્રેમી માનવ— મિત્રો :— મારા વિશેની તમારી ચિન્તા આખરી ફરીથી તાજી થઈ છે. તેને લીધે હું પ્રભુમાં ઘણો આનંદ કરું છું. તે બાબતમાં તમે ચિન્તા રાખતા હતા, પણ તમને આવો પ્રસંગ મળ્યો ન હતો, હું કાંઈ તંગાસને લીધે બોલું છું એમ નહીં, એમ હું કહી શકું છું કે નહિ :—તેની મને શંકા નહીં કેમ કે :—જે અવસ્થામાં હું છું તેમાં સન્તોષથી રહેવાને હું શીખ્યો છું. ગરીબ થવું હું જાણું છું તથા ભરપૂર હોઉં એ પણ જાણું છું. હર પ્રકારે તથા સર્વ બાબતમાં તૃપ્ત થવાને, તથા ભૂખ્યો રહેવાને હું શીખ્યો છું તેમજ પુષ્કળ પામવાને, અને તંગીમાં રહેવાનું હું શીખ્યો છું. બહુમાન મળવાને, તેમજ અપમાન સહન કરવાને

૨

હું શીખ્યો છું. સન્માન થતાં હું ફુલાતો નથી, અને અપમાન થતાં હું કરમાતો નથી. વિગેરે એવી મારી "સત્ અને સબુરી" ના આધારે, તેમજ જાતે અને પોતે સ્વાનુભવોથી દેશ પર્યટન અદશ્ય રૂપાંતરમાં કેળવણી મને મારા :—પ. પૂ. શ્રી સતગોર સનાતન આર્ય (પવિત્ર) ધર્મ પાત્ર ઈન્દ્ર ઈમામશાહજીના વેદ–ઉપવેદ [શાસ્ત્ર પુરાણ–કુરાન બાઈબલાદિ] વાણી કે જેને શ્રી. સતપંથ સાહિત્ય યજ્ઞ વિધિ, ગોરવાણી ભવિષ્યવાણી સો–૧૦૦ ક્રિયા તેમજ સૌ ક્રિયા કર્મ—કર્માન્તર સાહિત્ય કે જેને "કૃષ્ણં વન્દે જગદ્ ગુરુ" શ્રી દ્વાપરયુગનું "મય્યા અદયક્ષેન" પણ થી તથા "નમો સ્તુતે વ્યાસ વિશાલ બુદ્ધે" એવા મહાન પરમ પૂજ્ય અવતાર, વેદ પાત્ર ગોરનરના વાણી [વિલાસ]થી જે કંઈ "યોગઃ કર્મસુ કૌશલમ્," "સંભવામિ યુગે યુગે ગુહ્યાદગુહ્ય" નાશ પામી ગયેલ ફરીથી સમજાવ્યું. મળી ગયું એમ જણાય છે. દેશ પર્યટન કરતી વખતે કુદરતના ખુલ્લા બોધપાઠો મારી સામે તરવરે છે. તે આ છે. (૧) સૃષ્ટિ સૌંદર્ય (૨) સૃષ્ટિ નિરિક્ષણ (૩) સૃષ્ટિ જ્ઞાન આ ત્રણ સાહિત્યો બોધપાઠોમાંથી જ હું જે કાંઈ કહું છું તે :—સર્વે "શ્રી. સતગુરુ કૃપા હી કેવલમ્" યાને સત અને સબુરી" તેમજ દેશાટન કારણે :—સ્વાનુભવેલા સ્વાનુભવો છે. જે મને "હરી તે હરિજન અને હરિજન તે હરિ" રૂપે સામર્થ્ય આપે છે. તેની સહાયતાથી હું બધુંય કરી શકું છું જેમ બધાય કરનારાઓ કરે છે તેમ "તો પણ તમે મ્હારા સંકટમાં ભાગીદારી કરો છો તે સારું જ છે. અને તે જે કંઈ તમે કરો છો તે સારાના માટે જ કરો છો.

આ મ્હારા વિચારો પ. પૂ. શ્રી. સનાતન આર્યધર્મના મહા માર્ગ માનવતા રૂપંરૂપ કલીયુગે (સમ્ભવામિ યુગે યુગે) પ્રમાણે શ્રી સતગોર–નર પાત્રનો બતાવેલ શ્રી સતપંથાશ્રય થી સત્ય છે. આ મારો અભિમાન કે ગર્વ નથી પણ તેઓ તો "સ્વધર્મ નિધનમ શ્રેયસ અને "સ્વે સ્વ કર્મણ્યે વાભિરતઃ" યાને શાસ્ત્રાધ્યયનના

એટલે "તસ્માચ્છાસ્ત્ર" પ્રમાણે સ્વાભિમાન છે. માત્ર આરંભમાં જયારે હું પ્રથમ પ્રવાસે નિકળ્યો છું ત્યારે આપવા–લેવાની બાબતમાં એકલા તમારા વિના બીજા કોઈપણ મંડળીએ મારા સુખ અને દુઃખમાં સંપૂર્ણ રૂપે ભાગ લીધો ન હતો, તેમજ મારે અનેકવાર જે જે જોઈતું હતું તે બધુય તમે મોકલી આપ્યુ છે હું આજે (સુધી ભૂતકાળમાં પણ) કંઈ દાન માગતો હતો કે માગુ છું એવું નહિ સમજતાં, પણ તમારા આપણા લાભમાં ઘણું ફળ થાય એવું સમજીને માગું છું. આપની દયાથી હું ભરપૂર છું

અન્યોન્ય મિત્રો

તમો કેવા છો ? એ જાણવા હું તમારી મુલાકાત નહિ લઉં. એતો તમારા મિત્રો –સ્નેહિઓ કેવા છે ? એ બધુય જાણી લઈશ. એટલે આપોઆપ સમજાઈ જશે. ખ્યાલ આવી જશે.

સૂર્ય એ કેવો છે ? તે તેની તેજસ્વીતા પરથી ખ્યાલ આવે છે.
ચંદ્ર કેવો છે ? એ તેની શીતલતાથી ખ્યાલ આવે છે......

એમ તમે કેવા છો ? એ તમારી આસપાસના વાતાવરણથી ખ્યાલ આવશે. કાં તો તમે એ વાતાવરણને, રંગી નાખ્યું છે. કાં તો એ વાતાવરણમાં તમો રંગાઈ ચૂકયા છો. અને એક વાત એ આપને કહી દઉં......? આપ વાતાવરણથી રંગાયા હો.—છો. તે આપની એ નિર્બળતા જ સૂચવે છે...... અને આપેજ વાતાવરણને રંગી નાખ્યુ હોય–છે તે પરથી આપણી શકિતનો, સામર્થ્યનો ખ્યાલ આવે છે. અને લોકો એને જ માને છે જે વાતારણમાં રંગાયા નહિ અને નવું જ વાતાવરણ ઉત્પન્ન કરે આપ સહુ એવી શકિતને પ્રાપ્ત કરો, એ જ્ઞાનને પ્રકાશને પ્રાપ્ત કરો, એજ સદ્ભાવના સાથે અર્પણ.

★

ૐ

ૐ નમો જયશ્રી તત્સત હરિ ૐ

એક વિનમ્ર નિવેદન સહ વિજ્ઞાપ્તિ

આત્મ શ્લાઘામા અતિશયોક્તિ જણાતી હોય એટલા માટે :—

ધર્મસ્ય તત્ત્વ નિહિતમ, ગુહાયામ । મહાજનો યેન ગતઃ સ પન્થાઃ
સ્વધર્મ નિધનમ શ્રેયઃ સ સ્વેસ્વ કર્મણ્યેવાભિ રતઃ
ઈદમ સત્ય સનાતન આર્ય પવિત્ર આદર્શયુક્ત ધર્મજ્ઞાન માર્ગક્ષેત્ર

—: શ્રી સંતપંથ કી જય :—

આપ શ્રી માન્યવર સતપંથ જીજ્ઞાસુ બંધુ ભગીનીઓ આપ માન્યવર શ્રી જીઓની સમક્ષ કાંઈક વિચારો રજૂ કરવાની મારી મહત્ત્વાકાંક્ષા અને કાંઈક અંશે કહો કે અથવા પૂર્ણઅંશે કહો પ. પૂ. શ્રી. સતગોર પાત્ર (લાયક) બ્રહ્માવતાર ઈન્દ્ર ઈમામ-શાહજીના વાયરલેશ જેવા ગુહયાદ ગુહય વિચારો અને વીલ (શક્તિ)ના પ્રોત્સાહનના પરિણામે આ ટૂકે-ટૂકે ગદ્ય પદ્ય સાર સંતપંથ જ્ઞાન—સાહિત્ય સંગમ લખવાની યોજના કોઈપણ ભાષાનું વ્યાકરણ ન આવડતું હોવા છતાં પ. પૂ. મહાત્માઓની પવિત્ર વાણીનું સંકલન કરવાના વિચારોથી શરૂ થઈ. પરન્તુ છપાવવા માટે શું ? આવા વિચારો અનેકાનેક ઉદ્ભવવા લાગ્યા. ઉદ્દભવેજને ? કારણ તે નારાયણ વિષ્ણુ ભગવાન પ્રત્યે ગાઢ પ્રેમ ધરાવનાર માણસોને શ્રી લક્ષ્મી માતા બહુ પ્રેમાળ દૃષ્ટિએ નિહાળતાં નથી. એ તો સામાન્ય અનુભવ છે. પરન્તુ તે નારાયણ વિષ્ણુ ભગવાનના નામે વિચરનાર મૂઢ પ્રાણી માટે પણ તેને કેટલાક કાર્યો છેવટ પોતાની આબરૂ ખાતર પણ કરવાં

પડે છે. પોતાના પતિદેવની લાજ રાખવા ખાતર કહો કે પોતાના વાત્સલ્યથી પ્રેરાઈને કહો પણ છેવટે શ્રી. લક્ષ્મી માતા પધાર્યા ત્યારે નિમિત્ત માત્રં:—ભવ, તરીકે પ. પૂ. શ્રી. કાનજીબાપુના

તરફથી આ પુસ્તક સાહિત્ય છપાવવાના પૈસા વગર વ્યાજે મળ્યા...એમનો અપૂર્વ ઉત્સાહ અને ઉત્તેજન ન હોત તો આમારા હસ્ત લેખિત સાહિત્ય, સંગ્રહ મારી પાસે હજીએ પણ ઘણા વરસો સુધી પડયા જ રહેત માટે એમની અદ્ભૂત શ્રદ્ધાની સાથે એ કામ પાર પડયું એટલે સાભાર સ્વિકાર.

પ્રથમ તો સાહિત્યની અમુક એટલીજ પ્રતો છપાવી સમાજ સમક્ષ રજૂ કરવાનો વિચાર હતો. પરન્તુ એવા મોટા ગ્રન્થ જેવા ન હોવા છતાં તેની નજીવી પુસ્તકની ભારે કિંમત ન હોવા છતાં આપણા ધનીક વર્ગ શ્રી સતપંથ જીજ્ઞાસુઓમાં પણ કોઇ નહીં આપી શકે? છતાં એવા જ કેટલાક આત્મવત, આત્મપ્રેમી, સુવિચારી, મિત્રોના અભિપ્રાયથી પ્રેરાઈને સંસ્કૃત, હિન્દી; મરાઠી, ગુજરાતી એવા ચાર ભાષામાં લખાણ આપવાનું ઠીક જણાયું છે. વળી છુટક ખંડની બાંધણી પણ વધારે ટકાઉ થવાનું સંભવ છે. તથા વાંચનારને વધારે સગવડ મળે તે પણ બનવા જોગ છે. એમ હોવા છતાં આપના શ્રી સતપંથ જીજ્ઞાસુ ધનિક વર્ગમાં આવા વિષયો પ્રત્યે તથા આવા પુસ્તકોને વેચાતા લઈ યોજનાને ઉત્તેજન આપવા વિષે ઉદાસીનતા છે, એ ઘણો શોકજનક છે. સંસ્કારિતા, સદવિદ્યા, કલા તથા લોકહિતના કર્મોમાં ધનનો ઉપયોગ ન થાય તો પછી કેવળ સુવર્ણના સંચયમાં જ શી મહત્તા રહી છે?

વિના સહકાર; નહિ ઉદ્ધાર, આ મંત્રને ખ્યાલમાં લઇને જેમણે આ વર્તમાન સાહિત્યને ઉત્તેજન આપ્યું છે. તેમનો અહીં અંતઃકરણ પૂર્વક ઉપકાર માનવાની તક લઉ છું. અને ખાસ કરીને આ સાહિત્યના કારણે પ. પૂ. શ્રી. કાનજીબાપુના

તરફથી નાણાં છુટા ન થયા હોત તો આ સાહિત્ય આટલું જલદી છપાવી શકાત નહિ.

વિશ્વની ઉપાધિ મૂળ સૂક્ષ્મ બીજમાંથી ક્રમે ક્રમે વિસ્તરે છે. તે પ્રમાણે આ પુસ્તક છપાવવા સંબંધે પણ થયું. અમુક પ્રતો છપાવવાના વિચારો પછી અનુભવી સલાહકારોએ સૂચના કરી કે હજાર પ્રત કઢાવવામાં આવે તો પુસ્તક કંઈક સસ્તું પડશે. શ્રીલક્ષ્મી માતા પ્રત્યે તો મારી યાચના હંમેશની ઉભેલી જ છે.

તેમાં વળી ઉમેરો કરી તેઓ જે થોડો ઘણો પણ અનુગ્રહ કરતા હોય તે પાછો વાળી દેવાનો ભય તો હજી પણ મને છે કારણ મેં તો મારા પોતાની "આત્મ શ્લાઘા"માં ઉમેરી દીધો છે કે—હું ફાટલા, ટુટલાં કપડાં પહેરૂ છું તેમજ આપશ્રીના તરફથી વગર માગે મળેલી રકમ રૂપિયા નાણું ગમે તે સત્સાહિત્યમાં ખર્ચ પેટે મૂક્યા કરૂ છું, અને વળી વધારાની જ્યારે જરૂર પડે એટલે જ આપશ્રીજીની પાસે ફરીવાર માગવા માટે હાથ પસારકર્યા કરૂં છું. તે પણ આપશ્રીમાનજીની ભલાઈ માટે જ છે.

પરન્તુ આપ શ્રીમાનજી એવું કંઈક માની લેશો નહીં કે આ વ્યક્તિ કોઈ ભિક્ષુક હશે, અને કદાચ માનતા હો તો પણ એટલો—વધારાનો સમજી સોચી લેવાની કૃપા મહેર કરશો તો બહુજ સારૂ થશે કે—

ભિક્ષુક ન ફરે ભિખવા: ફરે જ દેવાજ્ઞાન
જુવો આ મારી દશા: મેં કદિયે ન દીધું દાન

એમ છતાં તો પણ મારા સ્વભાવના લીધે સુલભ દઢતાથી મેં તો જંપલાવ્યું. આ ઉપરની બધી વાતો મારા એક હવાઇ કિલ્લામાંથી ઉપજાવેલ જેવી ન હોવાં છતાં તેવી જ છે. એટલે જ મેં આ સંગ્રહને શ્રી સતપંથ જ્ઞાન સાહિત્ય સંગમ સ્થાન તરીકે નામ આપી, અપનાવ્યું છે.

આ વર્તમાન સાહિત્ય સંગમ છપાવતાં અમુક ભૂલો કદાચ

રહી ગઈ હોય એમ જણાતું હોય તો તે આ સાહિત્ય સંગ્રાહકની જ માનવી. નહિ કે મુળ લેખક અથવા કવિશ્રીજીઓની

—: વિજ્ઞપ્તિ :—

આ પુસ્તકમાં છપાવતાં મારા આત્મપ્રિય સ્નેહી ગુરૂબંધું અને સહકાર સહકાર્ય કરનાર શ્રી જે અમૂલ્ય સૂચનાઓ કરી સમય સંજોગોનો સહાય કરી છે તે માટે તેમનો અત્રે આભાર માનવાની તક લઉછું. તેમજ આ સાહિત્ય છપાવામાં પ્રેસના માલિક અને મેનેજર સાહેબે જે ઝહેમત ઉઠાવીછે, અને ત્વરા બતાવી છે તથા જે સંતોષકારક કામ કરી બતાવ્યુ છે તે માટે તેમનો પણ અહીં ઉપકાર માનુછું. તેમજ બીજા પણ કેટલાક અજ્ઞાત હાથોએ અને અપરીચીત વ્યકિતઓએ આ સાહિત્ય છપાવવામાં સીધી કે આડકતરી રીતે જે મદદ કરી છે તે માટે તેમના નામો ગણાવ્યા વીનાજ તેમનો અનહદ ઉપકાર માની વિરમૂછું. તેમનો પરિશ્રમ પણ તે પરમપુરૂષોત્તમ પ્રભુ વર્તમાન કલીયુગા ધ્યક્ષ શ્રી નિષ્કળંકી નારાયણ જનાર્દનને ચરણે અર્પણ થાઓ.

આ વર્તમાન શ્રી સતપંથ જ્ઞાન સાહિત્ય સંગમ નામક સાહિત્ય પુસ્તક ઈદમ સત્ય સનાતન આર્ય પ્રવિત્ર સ્વધર્મ નિધનમ શ્રેયઃ સ, સતપંથ માર્ગદર્શક “ સનાતન સત્વ પુરૂષો મતોમે” “ શ્રી સતગોર પાત્ર (લાયક) બ્રહ્માવતાર શ્રી ઈન્દ્ર ઈમામશાહજીના શુભ વરદ હસ્ત કે, કાકાશ્રી રામજી લખમણજી સતપંથાચાર્ય મહન્તજીના ભાવભિની યાદગીરી માટે તેમજ સ્વદેશ ભારતના પ. પૂ. રાષ્ટ્ર પિતા મહાત્મા ગાંધીજીની જન્મ શતાબ્દિ નિમિત શ્રધ્ધાંજલી સહ તેમને એક નિમિત્ત બનાવી શ્રી સતપંથ જીજ્ઞાસુ જગત-જનાર્દનની કર કમલમાં અર્પણ કરવામાં આવી છે. પ્રેમ અને મૂર્ખાઇ અનન્ત હોય છે. એકમાં ભાવની અંનતતા અને બીજામાં જ્ઞાનના અભાવની અનંતતા હોય છે એટલોજ ફેર, તેમજ એમનુજ પુસ્તક એમનેજ અર્પણ કર્યું એ પણ એક બનાવજ છે અનંતતાનેજ તે આભારી છે.

ૐ નમો જયશ્રી તત્સત્ હરિ ૐ

ઈદમ્ સત્ય સનાતનાર્ય પવિત્રોત્તમ આદર્શયુક્ત

—ઃ શ્રી સતપંથકી જય ઃ—

卐

પરમ પૂજ્ય શ્રી ઈન્દ્રઈમામ શાહ અને પરમ પૂજ્ય શ્રી રાષ્ટ્રપિતા ગાંધીજી.

દીન–ધર્મના ધાર્મિક નેતાઓએ ધર્માધિકારી સાધુ, સંત, મહંત, આચાર્ય, સંન્યાસી, ફકીરો, પીર, ગુરૂ, બ્રાહ્મણો વગેરે ધર્મના નામે થતો રક્તપાત અટકાવી શકે તો તેઓએ તેમનું ધ્યેય સિદ્ધ કરેલું ગણાશે.

વિશ્વમાં ધર્મના નામે ઘણુંય લોહી રેડાયું છે. માટે, વિશ્વના ધાર્મિક નેતાઓએ ધિક્કારને પાત્ર અને સંકુચિત મનોવૃત્તિઓને નાબૂદ કરવાનો અને પ્રજામાં શાંતિ અને એખલાસ સ્થાપવાનો પડકાર ઝીલી લેવાનો અનુરોધ કર્યા કરવો તેમ જ સ્વયં પોતે પણ ન્યાય–નીતિના માર્ગે આ બાબતમાં સંડોવાઈ રહેવું જોઈએ.

આજથી ૫૦૦–૬૦૦ વર્ષ પહેલાંની આ વાત છે કે જ્યારે સ્વદેશ ભારતમાં હિન્દુ–ઈસ્લામ આ બે કોમો ધાર્મિક બાબત–ધર્મના નામે વાઘ બકરી જેટલી જ દુશ્મનાવટ કરતી હતી. અને સમય આવતાં તેમની નાગી સમસેરો શ્રાવણ–ભાદરવાના ગડ–ગડાડ અવાજ કરતાં આકાશનાં વાદળા જેવી, તેમ જ વાદળામાં ચમકારો કરતી વિજળી સમાન રણાંગણોમાં ધૂમ મચાવતી

હતી. અને એકબીજાના જાન–પ્રાણ લેવામાં આધી પાછી ન કરતાં તાત્કાલિક ફેંસલો કરતા હતા.

તે સમયની આ વાત છે કે પરમ પૂજ્ય શ્રી સતગોરપાત્ર (લાયક) બ્રહ્મા ઈન્દ્ર ઈમામ શાહજી તે એકબીજા પ્રતિ મહાન દુશ્મનાવટ કરતી, હિંદુ–ઈસ્લામ આ બે કોમ વચ્ચે કોઈ પણ પ્રકારનો પક્ષપાત ન કરતાં, પક્ષપાત રહિત તેમ જ વર્તમાન સમયના પરમ પૂજ્ય ગાંધીજીએ જેમ સત્ય, અહિંસા અને પ્રેમ, સત અને સબૂરી, ધીરજ, અપકારને બદલે ઉપકાર, દયા, ક્ષમા, શાંતિના માર્ગે એટલો જ ઇદમ સત્ય સનાતન આર્ય પવિત્રોત્તમ આદર્શયુક્ત શ્રી સતપંથનુસાર પોતાનો જીવ, પ્રાણ ગુમાવી, પ્રથમ આત્મોદ્ધાર અને જગદ્ધિતાયચ પંથ ઉપર જીવનયાત્રા સંપૂર્ણ કરી છે, તે આ પ્રમાણે જ પ. પૂ. શ્રી સદગોર પાત્ર (લાયક) બ્રહ્મા ઈન્દ્ર ઈમામ શાહજીએ સુદ્ધા–

સતપંથ સદા યહ હૈ, સચ રાહ સિખા દેના;
કહ કહકે સુના દેના, કર કરકે દિખા દેના—આમુતાબિક
જીવનયાત્રા પૂર્ણાત્ પૂર્ણ કરી છે અને સાથે સાથે :

ધર્મસ્ય તત્ત્વ નિહિતમ્ ગુહાયામ, મહાજનો યેન ગતઃ સત્પન્થાઃ આં-સૂત્રાર્થ, ગુહ્યાત્ ગુહ્ય સંક્ષિપ્ત, ટુંકામાં ઘણાં સાર એવા સ્વરૂપમાં સમજાવી આત્મનિર્ભર, આત્મવિશ્વાસુ, આત્મશ્રદ્ધાળુ, નિસ્વાર્થી, ઈમાની, સદ–વિવેકી, સદવિચારી માનવી–મિત્ર.

શ્રી સતપંથ સનાતનાર્ય, પવિત્રાત્તમ ધર્મ જિજ્ઞાસુઓને વેદ, શાસ્ત્ર, શ્રુતિ–સ્મૃતિ, પુરાણ, કુરાન, બાઈબલ આદિ ઈત્યાદિ દુનિયાભરના સત્સાહિત્યનો ધાર્મિક ધર્મ્યામૃતમિદં, રસામૃત પાન કરાવ્યું. તે પણ ભૂત, વર્તમાન અને ભવિષ્ય યુગાયુગનું સર્વ સાધારણ પ્રમાણયુકત ધર્મ જ્ઞાન તત્ત્વસાર સાહિત્ય સુગમ સંગમ કરી.

શાસ્ત્ર સુણીને સારનો, કરીએ સંગ્રહ કેમ ?
રજકણમાંથી શોધીને, જેમ સંગ્રહે હેમ.
સાર શોધીને સંગ્રહ કરે, ધીમન્તા નર ધીર;
હંસ જેમ હુંશિયારીથી, પીચે ક્ષીર; તજે નીર.

આ પ્રમાણે :–સત્સાહિત્ય, "નિર્વૈર સર્વ ભુતેષુ;" અનુકૂળ ગોઠવી જ્ઞાન સાહિત્ય અને ધર્મ સંસ્થા :—

ધર્મ સંસ્થાપનાર્થાયમ....સંભવામિ યુગે યુગે—પ્રમાણે ગોઠવી છે કે જેનો ઉપભોગ માનવ–મિત્રતા સહિષ્ણુતાના માર્ગે ધર્મનો અભ્યાસ કરનારને સુલભ થાય અને એટલા માટે જ એમ સમજી વિચારી જનકલ્યાણાર્થે, જનહિતાર્થે—આ એક

"શ્રી સતપંથ જ્ઞાન સાર સાહિત્ય સંગમ નામે સાહિત્ય 'આગમ ભવિષ્ય–વાણી.' ગદ્ય–પદ્ય સહ સમજુતી પાઠ. તે પરમપિતા પરમેશ્વરના ગુણાનુવાદ ગાતા–ગવાતા ગુણ–મંગલ સ્તુતિ મંગલાચરણ આરતિઓ અને સર્વ. 'સ્વધર્મ નિધનમ શ્રેય.' સંયુક્ત પ. પૂ. શ્રી સાધુસન્ત, મહન્તોના પરમ સુ. વિખ્યાત વાણી પ્રવચનો સહ. આ પ્રકાશન પ્રકાશિત જાહેર કરવામાં આવ્યું છે. માટે :—

વાચક વૃન્દ....હંસ વૃત્તિથી કાંઈક મોતિજેવી જેટલી વાણી હશે તેટલી ગ્રહણ જ કરશે એવી શુભ ચિંતના–ત્મક આશા સેવાય છે. અસ્તુ.

વિશેષ : નિર્વૈર સર્વ ભૂતેષુ મહાજનો યેન ગતઃ સત્પંથાઃ

ॐ

ॐ નમો, જય શ્રી, તત્સત્ હરી ॐ

શ્રી સનાતન આર્ય (પવિત્ર) સતપંથોપદેશમાલા

હે પરમપ્રિય આત્મવત્, સતપંથ, પ્રેમીબન્ધુ અને ભગિની પ્રતિ :—તમારો સઘળાનો કાંઇક એવો નિશ્ચય થયેલો છે કે પોતાની પ્રાપંચિક સામાજિક, રાજકીય અને ધાર્મિક એ ચારેય સ્થિતિ ઉત્તમ થઇ ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ એ ચારેયની પણ સ્થિતિ અને સિધ્ધી અલ્પ કાળમાં થવાનું મુખ્ય સાધન બ્રહ્મવિદ્યાના સનાતનાર્ય (પવિત્ર) સતપંથ ધર્મની મર્યાદામાં રહી સર્વકાર્યમાં પ્રાણી માત્ર ઉપર કરૂણાદષ્ટિ રાખી સઘળા મનુષ્યો સાથે નિષ્કામ, સત્ય, પ્રેમથી માતૃ–ભાવની દઢતા કરી તેમની સાથે એકતાથી વર્તવાનો અભ્યાસ કરવો, એ જ છે કે, કેમ ?

તે માટે જે પ્રમાણે વિદ્યાર્થીઓને વ્યવહારિક સામાન્યજ્ઞાન સમજવાની શક્તિ જે પ્રમાણે હોય તે પ્રમાણે તેમણે શિક્ષણ આપવામાં યોગ્ય અભ્યાસના ધોરણો ઉત્તમ માનસિક જ્ઞાનવાળા વિદ્વાનોએ બાંધેલા છે. તે પ્રમાણે સાંપ્રત સ્થિતિમાં કેવળ નિષ્કામ વૃત્તિથી અધ્યાત્મજ્ઞાન, નિત્યત્વમની પ્રાપ્તિ પોતે કરી લઇ બીજા યોગ્ય જણાવેલા પાત્રોને તે જ્ઞાન કેવળ પરમાર્થ વૃત્તિમાં આપવાની ઇચ્છા રાખનારા આગ્રહી શ્રદ્ધાવાળા ધર્મજિજ્ઞાસુઓ સારું તેને અનુકૂળ આવે તેવા શિક્ષણની અગત્યતા છે.

આધ્યાત્મ વિદ્યાનું મહા અદ્‌ભૂત અખૂટ જ્ઞાન ઘણું કરી આ પૃથ્વી ઉપરના મુખ્ય ૧. સનાતન હિંદુ–આર્યધર્મ, ૨. જર-

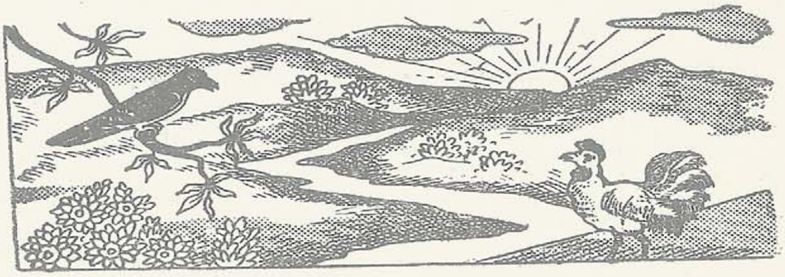
થોસ્તિ–પારસીધર્મ ૩. વિશ્વાસી–ક્રિશ્ચિયન ધર્મ અને ૪. મહમદી–ઈસ્લામ ધર્મ એમુખ્ય ચારસિવાય બીજા સનાતન હિંદુ ધર્મના ફાંટાઓ જો કે—બૌદ્ધ ધર્મ, જૈન ધર્મ, નાનકનો શીખ ધર્મ એ સાતેમાં છે તેમાંથી અતિપ્રાચીન સનાતન (હિંદુ) આર્ય ધર્મમાં તેને અનેક વિપત્તિઓ આવ્યા છતાંય તેનો અખૂટ ભંડાર ગુપ્ત અદ્દભૂત પ્રેરણાથી હજીએ રહેલો છે. બીજામાં તો કાળે કરી ફેરફાર થઈ કેટલી એક સત્યતાનો નાશ થયેલો જણાય છે. એ સઘળું છતાંય કોઈપણ ધર્મમાં સાંપ્રતકાળની ઉછળતી માનસિક જ્ઞાનની પ્રજા સારૂં આધ્યાત્મવિદ્યાનું અખંડ અને અવિનાશી જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવા સારું પ્રથમ શિક્ષણ માટે તેના નિયમસર ધોરણો બાંધેલા જણાતા નથી. તેથી તેમાં પ્રથમ પ્રવેશ કરનારા આગ્રહી વિદ્યાર્થી (જિજ્ઞાસુ)ઓને તેનું સંપૂર્ણ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવા સારુ અતિ આગ્રહ કરવા છતાંય આ ચાલુ જન્મમાં જલ્દી તે જ્ઞાન મળી શકતું નથી.

હે શ્રી સતપંથ પ્રેમી બંધુઓ અને ભગિનીઓ; એ થવું ઘણું કઠણ છે, પણ તમે સઘળા તેને સારું જો દૃઢ શુભેચ્છા રાખશો તો તે આ સ્થૂળ દેહ દ્વારા યથાશક્તિ મળી શકવાનો સંભવ છે.

ધર્મ, એ શબ્દનો સાધારણ અર્થ—કર્તવ્ય, ફરજ એટલે કે કોઈપણ પ્રકારનું કાર્ય કરવાની 'અગત્ય' એવો થાય છે. હવે સઘળા મનુષ્ય પ્રાણીઓને કોઈપણ પ્રકારનું સુખ પ્રાપ્ત કરવા સારું તેને યોગ્ય કાર્યક્રમ એટલે સારામાં સારું કામ પદ્ધતિસર કરવાની અગત્ય છે તેમ છતાં ય જો તે કાર્ય પોતે યથાર્થ રીતે કરે નહિ; પરંતુ થોડું ઘણું કરે તો પણ તેના પ્રમાણમાં તેને લાભ ન્યુન્યાધિક થાય છે. એ કારણ માટે—

સઘળી પ્રજા સારૂં પ્રથમથી કેવળ પરોપકારી ગુપ્ત પ્રેમ પ્રેરણા તે પ. પૂજ્ય શ્રી સતગુરુ સમર્થ સર્વશ્રેષ્ઠ એવા બ્રહ્મ-

દેવમાંથી નીકળી મુખ્ય બે માર્ગરૂપ થયેલી જણાય છે. તેની અલ્પ સૂચના આ વર્તમાન સાહિત્યનાં ગદ્ય–પદ્ય શ્રી સનાતન આર્ય (પવિત્ર) સતપંથ જ્ઞાન સાર, ''સાહિત્યસંગમ'' પુસ્તકમાં કદાચ મળી રહેશે. એવી સંભાવના છે. તે માટે વાચક વર્ગે હંસવૃત્તિ પ્રાપ્ત કરી મોતીરૂપ ખાદ્ય [શ્રી. સતપંથ વાણી] નું સંશોધન કરવા કરાવવા તે પરમપિતા પરમેશ્વર પરમાત્મા અંશ જો કે—જેમની અદૃશ્યક્ષતામાં આ વર્તમાન ચતુર્થ યુગ કલીકાલ સંપૂર્ણ થવાનો છે. તે આપના શ્રી. સતપંથ જિજ્ઞાસુઓના 'પરમબ્રહ્મ પરમભગવાન' એવા શ્રી. નિષ્કલંકી નારાયણ જનાર્દનને વારેઘડી વિ. વિ. વિ. કે—તે મદદગાર થાય.



ૐ

ૐ નમો જય શ્રી, તત્સત્ હરિ ૐ

"ઈદમ સત્ય સનાતન શ્રી સતપંથ કી જય"

ધર્મ વિના માનવજીવનમાં—કોઈપણ નિયમન થઈ શકે નહિ. શિક્ષણમાં ધર્મ–હિંદુસ્તાનમાં વર્તમાન સમયે બિનસાંપ્રદાયિકતાની દૃષ્ટિના લીધેજ ધર્મને શિક્ષણમાં સ્થાન નથી મળતું. પણ ધર્મ વિના જીવનમાં નિયમન થતું નથી. અને નિયમન વિનાનો માનવી પશુ સમાન છે. બિનસાંપ્રદાયિકતાની દષ્ટિ પાછળ એવી સમજ છે કે—એક માણસ એક ધર્મ પાળશે એટલે બીજો માણસ બીજા ધર્મનો વિરોધ કરશે, અને તેમાંથી ઝઘડો ઊભો થશે. આ માન્યતામાં થોડુંઘણું તથ્યાંશ હશે, પણ ખરી રીતે વાત સાચી નથી, કારણ કે—ભારતનો એંસી ટકા વર્ગ ઉદાર ધર્મનીતિવાળો છે. હું મારી માતાને ચાહું એટલે—બીજાની માતા સાથે ઝઘડો કરૂં એવી માન્યતાવાળો હું નથી.

જો કુટુંબવાળા હોય તો એમાં લાગવગશાહી કદાચ ઉભી થાય એટલે શું પરણવું ન જોઈએ? પણ લાગવગશાહીના ભયથી કાંઈ આપણે પરણવાનું માંડી ન વાળીએ; તેમજ ઝઘડાના ભયથી ધર્મનું શિક્ષણ માંડી ન વળાય. કારણ કે ધર્મ હશે તો જ પ્રજામાં નીતિ, અને સદાચારની ભાવના હશે.

પ. પુ શ્રી સ્વામી વિવેકાનંદજીના વિચારો અને શ્રી સનાતન સતપન્થ શાસ્ત્રને લાગતી વળગતી આગમ (ભવિષ્ય) વાણીનું માત્ર એક જ વાકય પુરતું છે.

સર્વધર્મ સમન્વય યાને સર્વધર્મમાં સમાનભાવ રાખવો
સર્વધર્મ પરિષદ :– શિકાગો, અમેરિકા
તારીખ ૨૭ સપ્ટેંબર
ઈ. સ. ૧૮૮૩

[૧] અ... સર્વધર્મ પરિષદ આ આજે જગતમાં એક મૂર્તિમંત સત્ય ઘટના થઈ બેઠી છે. જો તેને સત્ય સૃષ્ટિમાં ઉતારવા માટે જંપ્યા તેઓને સહાય કરી તે કરૂણામય પ્રભુએ તેમના નિસ્વાર્થ કાર્યોપર યશનો કળશ ચઢાવ્યો છે.

[૨] બ... સર્વધર્મનો સમન્વયનો સામાન્ય અધિષ્ઠાન વિષે અહીં યથેચ્છ ઉહા–પોહ થઈ ગયો છે તત્સંબંધીમાં હમણાં જ મારો મત [સ્વમત] પ્રગટ કરવાનો મારો માનસ નથી, પરંતુ અહીં કોઈને જો એવી આશા લાગતી વળગતી હશે કે આ સર્વ ભિન્ન ભિન્ન ધર્મોમાંથી એકનો અભ્યુદય અને બીજાઓનો વિનાશ થઈને જ એવો સમન્વય પ્રસ્થાપિત થઈ શકશે, તો તેને મારું એટલું જ કહેવાનું છે કે હે પ્રિયબંધુ આ તારી આશા સફળ થવું બિલકુલ અશકય છે, ખ્રિસ્તી લોકોએ હિન્દુ થવું એવી કા મારી ઈચ્છા છે? ઈશ્વર કરે અને તેવૂ કદાપિ ન થાય હિંદુઓએ તથા બૌદ્ધોએ ખ્રિશ્ચન થવું એવી કા મારી ઈચ્છા છે?

બીજ જમીનમાં વેરાઈ જાય છે માટી હવા અને પાણી તેના આજુબાજુ રહે છે. ત્યારે તે બીજ કાં માટી અગર પાણી એમનામાંથી કોઈ એકમાં પરિણુત થતું જાય છે? નથી. તે બીજમાંથી છોડ (રોપ) ઉગે છે. તે ધીમે ધીમે આપણા સ્વભાવિક નિયમાધીન વધતું જાય છે અને માટી, હવા તથા પાણી એમણે

આત્મસાથ કરીને તેવા બધાય ઉપાદાનોથી સ્વયં પોતાની શાખા પ્રશાખાઓની બધુ વધતું થઈ જઈ તે વૃક્ષમાં પરિણુત થતું જાય છે.

[૩] क.... ધર્મ સંબંધમાં આવું જ ખ્રિસ્તી માણસને હિંદુ અથવા બૌદ્ધ થવાનું નથી, તેમજ હિંદુ અથવા બૌદ્ધોએ પણ ખ્રિશ્ચન બનવાનું પ્રયોજન નથી. ત્યારે હરકોઈએ દરેકને પોતાના વિશિષ્ઠ કાયમ (મુલતવી) રાખીને અન્યોન્ય ધર્મમાંહેનો સારભાગ ગ્રહણુ કરવો જોઈએ, અને તદ્દ દ્વારા પૃષ્ટ થઈ સ્વયં પોતાના પ્રકૃતિનુસાર વધારતા થઈ જવું જોઇએ.

[૪] ड.... આ સર્વધર્મ પરિષદે જો કશુંક દુનિયાના નિર્દેશનમાં લાવ્યું હશે, તો તે એજ તેને અત્યંત સુંદર રીતીથી એવું સિદ્ધ કરીને બતાવ્યું છે કે પાવિત્રીય, ચિત્તશુદ્ધિ દયા–દાક્ષિણ્યતા, વગેરે ગુણોનો કોન્ટ્રાકટ (મકતો) જગમાંથી કોઈપણુ એકાદ વિશિષ્ટ ધર્મ એ લીધેલો નથી. દરેક ધર્મમાં અતિ ઉદાત્ત ચારિત્ર્યના નર–નારીઓના જન્મ થયેલ છે. આ એવડો ભર–ભક્કમ પુરાવો દષ્ટિસામાં હોવા છતાંય, આપણો જ તેટલો ધર્મ અખેર–છેવટ જીવંત રહી અન્ય ધર્મ નષ્ટ થશે, એવો મનોરાજ્ય કોઇએ વતી રચાતો હશે, તો તે અભાગિની દયા જ આપણે કરવી જોઈએ તે બાપડાને હું બિલકુલ સ્પષ્ટ શબ્દોમાં બજાવી રાખું છું. કે તેના જેવા લોકોએ કેટલાય અડથડાઓ ઉભા કર્યા તો તે સર્વ ધ્વજાઓ ઉપર સ્કૃર્તિથી લખાઈ જશે કે સંઘર્ષ ન જોઇએ, એકબીજાને સહાય થાવ, આત્મસાથ કરો, વિનાશ કરવો નથી, કલહ ન જ જોઈએ. મિત્રતા જ જોઈએ. શાન્તિ જોઈએ.

સર્વમાન્ય શ્રી સ્વામી વિવેકાનંદજી

(બ) પ. પુ. સ્વામીશ્રી વિવેકાનંદજીની ભવિષ્યવાણી ?
અમેરિકા ગયા બાદ–સર્વધર્મ પરિષદ સભાનો સુપ્રસિદ્ધ ભાષણુ

પહેલાં ત્યાંના ન્યૂ ઇંગ્લેંડ વગેરે વસાહતો મધ્યે સ્વામીશ્રીજીના વ્યાખ્યાનો થયાં કે, સંપત્તિની લાલચ હાથ ધરીને જે પાશ્ચિમાત્ય રાષ્ટ્રો પૌર્વાત્ય રાષ્ટ્રોને ગુલામગીરીમાં ધકેલે છે, તેમને એનો પ્રાયશ્ચિત ભોગવવું પડશે.

હું બદલો લઈશ. આવું બાઈબલમાં કહેલું છે. અસંખ્ય લોકસંખ્યા વસેલો રશિયા અને ચીન આ દેશો વહેલા જાગૃત થવાના અને તમને તેવો સમુદ્રમાં ફગાવી દેવાના આશ્ચર્ય એવું થાય છે કે–ઈ. સ. ૧૮૯૩ માં એટલે આજે અંદાજે ૭૫ થી ૭૬ વર્ષ પહેલાં આવું ભાખીત તેમણે કર્યું હતું. તે આજે સાચું થતું જોવાય છે. પરંતુ એના આગળનું વાકય (ઉદ્દગાર) તો એના કરતાંય આશ્ચર્યકારક છે. તેઓ ઉચ્ચાર એવો છે, જો કદાકાલે અંગ્રેજોને હિંદુસ્તાન છોડી દેવાનો સમય આવે તો માત્ર હિંદુસ્તાન ઉપર ચીનની સ્વારી હોવાનો સંકટ ખરેખર ઉભુ રહેવાનું છે.

(મેરી લૂઈ બર્ક, એમણે સંશોધન પૂર્વક લખેલા પુસ્તકમાંના આવા ઉદ્દગારો છે.)

(क) સર્વધર્મમાં સમાન ભાવ રાખો :—

આપણે સમજીએ છીએ તે પ્રમાણે હિંદુધર્મ, ઈસ્લામ ધર્મ, જૈનધર્મ, બૌદ્ધધર્મ ખ્રિસ્તીધર્મ વગેરે એવો ધર્મનો સંકુચિત અર્થ નથી. પણ ધર્મ એ આકાશ અથવા પૃથ્વી પ્રમાણે છે. પૃથ્વી ઉપર જેમ જુદા જુદા ઘરો દેખાય છે તેમ સાધનરૂપે ધર્મના રૂપો થયેલા છે. છતાંય સર્વનો ધ્યેય એક જ છે. સાધન માત્ર જુદા જુદા છે. માટે–અમુક શ્રેષ્ઠ અને અમુક કનિષ્ઠ એવો ભેદ માનવાનું કાંઈ કારણ છે. ધર્મનો અર્થ સ્થિરતા આણવી. જગત સ્થિર નથી. ચંચળ નથી. તેમાં પ્રત્યેક ક્ષણે ફેરફાર થાય છે આને જગતનો નૈસર્ગિક સ્વભાવ તેના પ્રવાહને રોકી રાખે, તેમાં સ્થિરતા આણવી, તેને જ ધર્મ કહે છે. મનુષ્યના હૃદયમાં એક

સમતાની ભાવનાના જોર પર વિષમતાને રોકવી એને પણ ધર્મ કહેવાશે.

શાહ અબ્દુલ લતીફને મુસલમાન અનુયાયીએ પ્રશ્ન પૂછયો, હિંદુ અને મુસલમાન બન્ને ધર્મના અનુયાયીઓમાં શ્રેષ્ઠ શિષ્ય કોણ? તરત જ શાહ સાહેબે એક હાથમાં જમીન પરની માટી લીધી અને બીજા હાથમાં રાખ બન્ને સરખા જ છે. તો આ રાખ પ્રમાણે મારા હિંદુભાઈઓ બળીને ભસ્મ થવાના અને મુસલમાન ભાઈઓ દટાઈને માટી થવાના માટે આપણે સર્વે એક જ પરમેશ્વરના ખુદા પાક પરવરદિગારના બાળકો છીએ.

ૐ

ૐ નમો જય શ્રી તત્સત્, હરિ ૐ

સ્વાધ્યાય સાધનનો મહિમા

હે પરમ સુહૃદયી માનવ મિત્રો શ્રી. સતપંથ જિજ્ઞાસુઓ શરીર શકિત વધારવા ખાદ્યની જરૂરિયાત છે. તે પ્રમાણે જ મગજ [બુદ્ધિબળ] વધારવા માટે–સ્વાધ્યાય સાધન [વાચન પાઠ]ની જરૂરિયાત છે માટે—પ્રિય પાઠક [વાચક] વૃંદ વર્ગને અપીલ કરવામાં આવે છે કે—

આપણા આર્ષ તથા લૌકિક ગ્રંથમાં સ્વાધ્યાયનો મોટો મહિમા દર્શાવેલ છે. આ મહિમાનો ભિન્ન સ્થાનોમાં ભિન્ન વચનો દ્વારા પ્રગટ કરવામાં આવ્યો છે. વિસ્તાર ભયને લીધે અહીં સર્વતો નહીં, પણ કેટલાક પ્રમાણ પાઠકોના સમાધાન માટે ઉતારીએ છીએ.

૧ "તપઃ સ્વાધ્યાયેશ્વર પ્રાણીધાનાની ક્રિયાયોગ : [યો. ૨ ૧] આ યોગ સૂત્રમાં સ્વાધ્યાયને ક્રિયાયોગનું એક અંગ કહ્યું છે.

૨ "સ્વાધ્યાયા યોગમાસિત, યોગાત્સ્વાધ્યાય મામનેત્, ।
"સ્વાધ્યાયા યોગ સંમ્પત્યા, પરમાત્મા પ્રકાશતે. ।।

સ્વાધ્યાય વડે યોગની ઉપાસના કરો અને યોગથી સ્વાધ્યાયનો અભ્યાસ કરો. યોગ અને સ્વાધ્યાયની સંપત્તિથી પરમાત્માનો સાક્ષાત્કાર થાય છે.

૩. સ્વાધ્યાયાન્મા પ્રમદઃ (તૈતિરે) [યોગ ૧ ૨૮ વ્યાસ ભાષ્ય] સ્વાધ્યાયમાં કદી પ્રમાદ ન કરવો.

આપણા પૂર્વજોએ સ્વાધ્યાય ઉપર આટલો ભાર શા માટે આપ્યો ? મારી બુદ્ધિમાં તો એ જ આવે છે કે–એવાની દૃષ્ટિએ મનુષ્ય જીવનમાં સ્વાધ્યાયનું એ સ્થાન હતું. જે સ્થાન જહાજમાં સુકાન ચલાવનારનું હોય છે. કે–જે પ્રતિક્ષણ નિરખ્યા કરે છે જહાજ પોતાના ગંતવ્ય સ્થાનની માર્ગને રેખાથી સહજ પણ આમ તેમ ન થાય. એ જાણે છે કે–ગંતવ્ય સ્થાનના માર્ગને છોડીને જહાજ સહેજ પણ વાંકુચુકું થઈ જશે, તો પોતાના ગંતવ્ય સ્થાનથી હજારો માઈલ દૂર ચાલ્યો જશે અને ચિરકાલ સુધી એને ભટકવું પડશે, આથી એ પ્રતિક્ષણ ધ્રુવ દર્શક યંત્રની દ્વારા નિરખ્યા કરે છે. કે જહાજ ખરા માર્ગે ચાલી રહ્યું છે કે નહીં એજ કામ કર્તવ્ય સ્વધ્યાયનું છે.

આહાર નિંદ્રા ભય અને મૈથુનનો સમ્બંધ છે ત્યાં સુધી મનુષ્ય જીવન અને પશુજીવન એ બન્ને સમાન છે. પરંતુ મનુષ્ય જીવનમાં વિશેષતા એ છે કે–સ્વભાવત : અમરત્વને સમજવાની યોગ્યતા ધરાવે છે. અને તેને પ્રાપ્ત કરવાની ચાહના ચાહે છે. અમરત્વ એજ માનવજીવનનું લક્ષ છે. કારણ કે એમ જોવામાં આવે છે કે જે વસ્તુની આપણને ઈચ્છા થાય એ વસ્તુ કોઈક સ્થળે વિદ્યમાન હોય છે.

સેંકડો વર્ષપૂર્વે મનુષ્યમાં પક્ષીઓની માફક ઉડવાની ઈચ્છા પ્રગટી અને આજે આપણે જોઈએ છીએ કે પક્ષીઓથી પણ અધિક ઉતાવળી ગતિથી તેઓ ઉડે છે. એટલે નક્કી થાય છે કે અમરત્વને પ્રાપ્ત કરવું એ મનુષ્ય જીવનનો મુખ્ય ઉદ્દેશ છે. આપ કહી શકો છો કે હજારો મનુષ્ય એવા છે કે જેમને સ્વપ્નમાં પણ આ લક્ષનું ભાન નથી હોતું. તેઓ જાણતા જ નથી કે–ખાવો પીવો અને મોજ કરો, એ સિવાય પણ બીજું જીવન લક્ષ છે પણ વસ્તુત તેઓ મનુષ્ય નથી કારણ કે એવામાં પાશવી ભાવની પ્રબળતા છે. યથાર્થ રીતે મનુષ્ય એ જ છે જેના

મનમાં અમરત્વ પ્રાપ્તિની ભાવના જાગૃત છે અને જાગૃતિ જ મનુષ્યત્વ છે.

'દુર્લભં ત્રયમે વૈતદ દેવાનુંગ્રહ હેતુકમ્,,
મનુષ્યત્વં મુમુક્ષુતાં મહાપુરૂષ સંશ્રય ॥

આ ત્રણ વસ્તુઓ ઘણા કઠિનતાથી પ્રાપ્ત થાય છે. મનુષ્યત્વ મુમુક્ષુત્વ, અને મહાપુરુષોનો સંગ એટલે મનુષ્ય જીવન ઉદ્દેશ વિનાનું નથી. એનું એક લક્ષ છે. જેને પ્રાપ્ત કરવું એ જીવનનું ફળ છે. પરંતુ મનુષ્ય જીવન રૂપી જહાજને ખેડવું એ સહેલું નથી એના માર્ગમાં પદે પદે કઠિણતાઓ ઉપસ્થિત થાય છે. કદિ આપણે શારિરીક રોગથી પીડાતા હોઈએ છીએ, તો કદી માનસિક ચિંતાથી ગ્રસ્ત હોઇએ છીએ, આજે ઠંડી સતાવે છે, આવતી કાલે ગરમી, કદી પુત્ર જન્મોત્સવનો આનંદ હોય છે, તો કદી કોઈ પ્રિયજનના મૃત્યુનું દુઃસહ દુઃખ, આજે વ્યવસાય વૃદ્ધિના આનંદ છે તો, આવતી કાલે કાલે કાગડા ઉડે છે, આજે કોઇ પાડોશી સાથે સ્નેહ છે, તો આવતી કાલે એના જ સાથે દ્વેષ કદી બાળકોનો મોહ થાય છે. તો કદી તેમની જ ધૃણા કદી, ગરીબીનું દુઃખ હોય છે તો કદી અમીરીની માલેતુજારી, આજે યૌવનનો હર્ષજનક ઉલ્લાસ છે તો આવતી કાલે બુઢાપાનો ભિષણ ત્રાસ સારાંશ એ છે કે—જીવનમાં પદે પદે અડચણો અને કષ્ટો છે. કામ, ક્રોધ, લોભ, મદ, મોહ, અહંકાર, પુત્રૈષ્ણા. લોકૈષ્ણાદિ અનેક મનોવૃત્તિઓ જીવનના જહાજને નિરંતર ડામાડોળ કરતી રહે છે, અને વર્તમાન વ્યવસ્થાતો વળી વધારે બગડતી જાય છે. આપાણું જીવન એવું વિકૃત થઈ ગયું છે કે સાધારણ આવશ્કતાઓને પૂર્ણ કરવી પણ કઠિન છે. આજકાલ મનુષ્યનું જે અડધું જીવન સ્કુલ અને કોલેજમાં વ્યતિત થાય છે, તે આવશ્યકતાઓને વધારવામાં વપરાય છે, અને બાકીનું

અડધુ છે, તે નોકરી વ્યવસાય આદિમાં વ્યય થાય છે તે આવશ્યકતાઓને પૂર્ણ કરવામાં ખર્ચાઈ જાય છે.

જીવનનું લક્ષ્ય છે એના વિચાર માટે–અમારી દિનચર્યાના કાર્યક્રમમાં સ્થાન જ નથી.

બાલસ્વાવત ક્રીડાસકત, સ્તરૂણસ્તવત તરુનિરકત ।
વૃદ્ધિસ્તાવ, ચિન્તામગ્ન, પરમેશ્વબ્રહ્મણિકો, અપિલગ્ન ॥

એ પ્રકારે જેનું જીવનું અંધાધૂધિમાં વીતી રહ્યું છે, એને કદી ન કદી પસ્તાતા અને શિર ધુણાવતા ધુણાવતા કહેવું પડે છે કે:—

ભોગા ન ભોકતા, વયમેવ ભુકતા,
સ્તપા ન તપ્ત, વયમેવતપ્તા ।
કાલો ન યાતો, વયમેવયાતા,
સ્તૃષ્ણા ન જીર્ણા, વયમેવ જીર્ણા ॥

ચૌરાશી લાખ યોની ભોગવીને પ્રાપ્ત થયેલ આ મનુષ્ય જીવનમાં જો અમે નહીં ચેતીએ તો એથી વિશેષ–હાનિ કાંઇ ? એટલે સ્વાધ્યાય જ અમને જાગૃત કરનાર અને અમારા જીવન-પંથને–દર્શાવનાર તથા અમને સાચા માર્ગ ઉપર ચલાવનાર છે. હવે એ વિચાર કરવાનો છે કે "સ્વાધ્યાય" શબ્દના બે અર્થ થાય છે કે—'સ્વાધ્યાયત્મનોઽધ્યયનમ્' આપણી જાતનું અધ્યયન કરવું અને જોતા રહેવું કે–આપણું જીવન ઉન્મત થઈ રહ્યું છે કે નહિ, એ બિજો અર્થ છે, પ્રથમ અર્થ એ છે કે 'સ્વયમધ્યયનમ્" એટલેઅન્યોન્યની સહાય વિના સ્વયં અધ્યયન કરવું અથવા કરેલા અધ્યયનનું મનન અને નિદીધ્યાસન કરવું

પ્રત્યહં પ્રત્યવર્ક્ષેત, જનશ્ચરિતમાત્મનઃ ।
કિન્તુ મે પશુભી સ્તુત્વૈ, કિન્તું સત્પુરુષૈરિવ. ॥

પ્રતિક્ષણ અમારે એ જોતા રહેવું કે—અમારું જીવન પશુઓ સમાન છે કે સત્પુરુષના સમાન, આ ક્રિયાનું નામ અંત:પ્રેક્ષણ (ઇન્ટ્રોસ્પેક્શન) છે,

આ અભ્યાસથી "આત્મોન્નતિ" કરીને અનેક પુરુષ મહાત્મા મહાપુરુષ બની ગયા છે, સાધારણ રીતે લોક "સ્વાધ્યાય"નો અર્થ એમ સમજે છે કે-કોઈ ધર્મપુસ્તકનો "નિત્યપાઠ" કરી લેવો બસ એજ.

પરંતુ એટલાથી જ કામ ન બને, ઉચ્ચારણ માત્રથી પણ થોડો લાભ અવશ્ય થાય છે. અને એનો પ્રભાવ જીવન ઉપર પડે છે. પરંતુ આપણે સંપૂર્ણ લાભ ત્યારે જ ઉઠાવી શકીશું કે–સ્વાધ્યાય–નિયમ–આ પ્રમાણે છે.

(૧) એકાગ્રતા–જ્યારે આપણે સ્વાધ્યાય (પાઠ) કરી રહ્યા હોઈએ ત્યારે આપણું ધ્યાન ચારેબાજુથી હટાવીને પુસ્તકના શબ્દો અને અર્થ તરફ જ રાખવું જોઈએ. એ માટે આવશ્યક છે કે જે કંઈ મુખથી આપણે પાઠ કરીએ તે આપણા કાનેથી પણ ધ્યાન પૂર્વક સાંભળીએ. જિહવા તથા શ્રોત બે ઈન્દ્રિયો એક સાથે કામ કરે તો મન અવશ્ય એકાગ્ર થઈ જાય છે. પાઠ કરતી વખતે દરેક પંક્તિને થોભી થોભી બે વાર બોલવામાં આવે તો બહું સારું.

(૨) નૈરિન્તર્ય—ધ્યાન સ્વાધ્યાયમાં બને ત્યાં સુધી અંતર નહીં હોવું જોઇએ. થોડા ઘણા સ્વાધ્યાય નિત્ય–નિયમ પૂર્વક કરવો જોઈએ.

(૩) સાંસારિક—પદાર્થો અને ઇન્દ્રિયજન્ય સુખોમાં ઉપરામતા આપણે થિયેટરના એકટરની માફક વ્યવહાર કરતા જવું અને સાથે સાથે એ પણ યાદ રાખવું કે—આપણો ઉદ્દેશ સંસારિક જીવનથી ઉપર જવાનો છે

(૪) પ્રકાશગ્રહણ કરવાની ઉત્કંઠા સ્વાધ્યાય (પાઠ) કરતી વખતે મનમાં વિશ્વાસ હોવો જોઈએ કે–પાઠ દ્વારા આપણો અંતસ્થ

આત્મા આપણને પ્રકાશ પ્રદાન કરી રહ્યો છે. યદિ આપણે આ ચાર નિયમ સાથે સ્વાધ્યાય કરતા રહીશું તો આપણને અવશ્ય પૂર્ણ લાભ થશે. ઓછામાં ઓછા અડધો કલાક સ્વાધ્યાયમાં અવશ્ય ગાળવો જોઇએ. પરંતુ અંતર પાડવાની અપેક્ષાએ પંદર-વીસ મીનીટ પણ આ માટે રાખવી સારી છે.

સ્વાંધ્યાયનું સ્થાન—પવિત્ર શુદ્ધવાયુયુક્ત તથા શુદ્ધ વાતાવરણથી સંપન્ન ધુપાદિ સુગંધિત વસ્તુઓથી તથાં રમણીય મહાત્માઓ અને દેવતાઓના ચિત્રોથી સુશોભિત હોય તો બહું સારું. એવા વસ્તુઓથી મનની એકાગ્રતામાં સહાય મળે છે. આથી આપણી આંતર-ચિત્ત શકિતમાં એક વિશેષ પ્રકારની સ્ફૂર્તિ અથવા જાગૃત્તિ ઉત્પન્ન થાય છે.

જે સ્વાધ્યાય-સમ્બંધી વિચારોને જલ્દીથી ગ્રહણ કરી લે છે સ્વાધ્યાય દ્વારા મનમાં જે વિચાર ઉઠે એનો દિવસમાં એક બે વાર નિરંતર ચિંતન કરવું જોઈએ. અને એ પણ વિચારવું જોઈએ કે—કયા કયા વિચારોનું પ્રાબલ્ય તે દિવસે જીવનમાં રહ્યું છે કયા કયા સંકુચિત વાસનાઓએ આક્રમણ કર્યું છે અને કયા કયા પ્રલોભનો દુર્વ્યસનો અને દુઃસ્વભવાનો સામનો કરવો પડયો છે. યદિ એકવર્ષ સુધી નિરંતર આ અભ્યાસ કરવામાં આવે તો એનો પરિપાક થઇ જશે. અને પછી કદાચિત આ સાધનામાં કષ્ટના સાથે આનંદનો અનુભવ થવા માંડશે. એ યાદ રાખવું જોઇએ કે—જીવન એક મહાસંગ્રામ છે, અને એ એક બે દિવસનું કામ નથી ઉંમરભર કમરકસીને યુદ્ધ કરવાથી કામ બની જાય તો આપણને "ધન્ય" સમજવા જોઈ એ.

સ્વાધ્યાય માટે કયું પુસ્તક ઉત્તમ છે—એ પણ વિચારણીય છે. સર્વધર્મ ગ્રંથ સ્વાધ્યાય માટે સારા હોઈ શકે પરંતુ સાધકોની રૂચિ તેમની યોગ્યતા આદિ ઉપર તે નિરભર રહે છે, પરંતુ સામાન્યતઃ જે પુસ્તકો આપણા ગ્રહસ્થ જીવનનો સુધારણા, તથા

આપણી આતમિક સ્થિતિનો ઉદ્ધાર કરનારા છે અને સાધકને જેમા શ્રદ્ધા હોય તે જ પુસ્તકો સ્વાધ્યાયમાં ઉપયોગી થાય છે.

રામાયણુ, મહાભારત, ભાગવત, વિષ્ણુપુરાણુ, પદ્મપુરાણુ, મનુસ્મૃતિ, ગીતા, દર્શન, ઉપનિષદ, વેદ, ઇ. ધર્મગ્રંથ આમાંથી સાધકને પૂર્ણરીતે સમજાય એવું કોઈપણ પુસ્તક સ્વાધ્યાય માટે પસંદ કરી લેવું જોઇએ. જો આ ગ્રંથ ન સમજાય તો આધુનિક મહાત્માઓનું લખેલું કોઈપણ પુસ્તક લઈ અધ્યયન કરવું. પરંતુ સાથે આ નિશ્ચય અને નિયમ રાખવું જોઇએ કે વાંચવામાં આવે એ વ્યવહારમાં મૂકાય વ્યવહારમાં લાવ્યા વિના સ્વાધ્યાય ભાર માત્ર થઈ જાય છે. એમ પણુ બની શકે છે કે નિરંતર સર્વ ગ્રંથોનો પાઠ કરતા રહીએ અને વ્યવહાર માટે એક બે વાત ચૂંટી કાઢીએ.

જો આપ ગીતાનો પાઠ કરતા હો અને એની બધી બાબતો આચરણમાં મૂકી શકતા ન હો, તો એવું નથી કે જેટલી બાબતો વ્યવહારમાં મૂકી શકો, તેટલી જ બાબતોનો આપે સ્વાધ્યાય કરવો કિન્તુ જ્ઞાન માટે આખી ગીતાનો પાઠ કરવો પોતાની સ્થિતિને અનુકૂળ આચરણમાં લાવવા માટે બે–ચાર બાબતોને જુદી કાઢી લેવી.

હિંદુ જાતિના અધઃપતનનું કારણુ અનેક અંશે સ્વાધ્યાય શીલતાનો અભાવ જ છે. આપણી શિક્ષણુ પ્રણાલી ધર્મશૂન્ય છે. ઘરોમાં ધર્મના ભાવોનો અભાવ થઈ રહ્યો છે. ધર્મવિહીન જાતિનું અધઃપતન થાય એ નિશ્ચિત છે. એટલે જો આપણા મનમાં જાતિ સુધારણાની ઇચ્છા હોય તો પણ સ્વાધ્યાય શીલતા પરમ આવશ્યક છે. અમે પાઠકોને પ્રાર્થના કરીએ છીએ કે તેઓ આ લેખ વાંચ્યા પછી સ્વાધ્યાયની પ્રતિજ્ઞા લે એને જીવનનું વ્રત બનાવે પછી તો જીવન સ્વયં મધુર રસમય સુંદર અને રમણીય થઈ જશે. નહીં તો અંતમાં પસ્તાવું પડશે.

“ પશ્ય દેવસ્ય કાવ્ય ન મમાર ન જિર્યતિ ” અથર્વ. ૧૦/૮/૩૨

હાર્દિક અભિનંદન

પરમ માન્યવર સ્વદેશ ભારતના સર્વ ધર્મ અને સામ્પ્રદાય જીજ્ઞાસુઓને હાર્દિક અભિનંદન

પુણ્ય પાવન સ્વદેશ ભારતના સર્વધર્મ સંપ્રદાયોના મહાન પ. પુ. શ્રી સન્માનનિય માનવંત ધર્માધિકારી, ધર્માવલંબી, ધર્મજીજ્ઞાસુ, ધર્મસત્તાધિકારી અને વડાઓને વચનાધિન રહેનારા વેદ શાસ્ત્ર, શ્રુતિ, સ્મૃતિ, પુરાણ, કુરાન, બાઇબલાદિનું ભાષા ભેદ વગર અર્થ ભાવાર્થના "હંસોયથા," જે કાંઈ તમે વર્તમાનમાં વાંચતા હશો તે લેખન "ગદ્ય, પદ્ય સરોવરના હંસ થઈ, તેમાં ગ્રંથ, પુસ્તક, પાના, ચોપાનીયા, જે કંઈ હોય તે ગદ્ય પદ્ય, રૂપી સરોવરમાં વિખરાયેલી મોતીજેવી, વાણીને વીણી લઈ એટલે, અભ્યાસ સ્વાધ્યાયાભ્યાસ, મનન, કરી અમલમાં મૂકી આપના સ્વદેશ ભારતની સમ્પૂર્ણ સેવા સુશ્રુષા થાય એવી આશા રાખવી.

ૐ શાન્તિ, શાન્તિ, શાન્તિ. ને બલવતર બનાવવા માટેની માનવતાની લડતમાં તેની લાભકારક અસર થાય તેમ કરવું. વર્તવું જોઈએ. તેમ જ સંપુર્ણ અને સાર્વત્રીક નિઃશસ્ત્રીકરણ તથા સંસ્થાનવાદની આખરી નાબુદી જેવી આપણા આજના યુગની ખુબ જ અગત્ય ધરાવતી સમસ્યાઓના નીરાકરણ માટે પણ તેની શુભ અસર થાય તેમ વર્તીને શીખામણ આપલે- કરવી જોઇએ.

આપણા સ્વદેશ ભારતના સર્વધર્મ અને સામ્પ્રદાય વસા- હતના લોકો વચ્ચે તથા પડોશી દેશ વાસીઓની વચ્ચે બે બંધ શાહી જુઠ, ચોરી, કપટ, લાંચરૂશ્વત વગેરે ખોટી શંકાએ વહેમો નેસ્ત નાબુદ થાય અને આપસમાં હેતભાવ ભર્યો સહકાર સહાનુભૂતિ એટલે મીત્રતા પ્રગટ કરતા, તે વધુને વધુ વિકસો.

અને મજબુત બને એમ વર્તવું જોઈએ. પ્રથમતઃ આપણા સ્વદેશ ભારતની પ્રજા વચ્ચે જે અન્યોન્ય દેશો, ધર્મો સામ્પ્રદાયોની મૈત્રી સહકાર સહીષ્ણુંતાની જે સબંધો હસ્તી ધરાવે છે તે વધુ, વિશેષ, મજબુત બનો અને બનશે એમ વર્તવું જોઈએ. ભૂલવું નહીં એવો: ઈદમ, સત્ય, સનાતન, આર્ય, પવિત્ર સ્વધર્મ નિધનમ શ્રયસ સતપંથ જીજ્ઞાસુમિત્રો બંધુ ભાગિનીઓ એ જ પ્રમાણે સ્વમાનની ભાવનાઓને દ્રઢતા પૂર્વક જાળવી સાથ, સહકાર, સહાનુભૂતી, સમયોચીત સદા, સર્વદા, લેવા, દેવા, માટે જાગૃત રહેશો એજ.

—મારૂં શ્રી સત્પંથોદ્યાન એટલે બગીચો, ફૂલવાડી—

સહયોગી મિત્રોઃ– સતપંથધર્મ જીજ્ઞાસુઓ, વચ્ચે દર વરસે એક કાં, બે વખત હું મારા ચીર સ્મરણીય ઈદમ, સનાતન, પવિત્ર સુશોભિત સતપંથોદ્યાન એટલે—પરમ સુહૃદઈ શ્રી સતપંથ જીજ્ઞાસુઓના દેશમાં ફરવા જાઉં છું ત્યારે મને સ્વયં પોતાને જોઈએ તેવા મારા જેવા જ અનેકા અનેક મારા આત્મવત આત્મપ્રિય, શ્રી સતપંથ જીજ્ઞાસુ બંધુ ભાગિનિયાં, ધર્મના જીજ્ઞાસુ માતા પિતાઓ વિગેરે નાનાં મોટા સર્વ મારૂં સ્મિત અભિવાદન કરે છે. અમારે એક બીજા સાથે બોલવાની વિશેષ એવી જરૂર પડતી નથી. કારણ કે દરેકના ચહેરા ઉપરનો જે આનંદ ઉલ્લાસ છે તે જ મનની ભાવનાઓને આપોઆપ વ્યક્ત કરી દે છે.

માટે–અમે અમારા ઈદમ; સત્ય, સનાતન, આર્ય, પવિત્ર આદર્શયુક્ત એવો "સ્વધર્મ નિધનમ શ્રેયસ" સતપંથ જીજ્ઞાસુઓને સતપંથ હિતોપદેશ વાસીઓને સહપરિવાર સહકુટુંબ મિત્ર દોસ્ત મંડળી સહ સર્વદૈવી સુખ સમૃદ્ધિ શાલી અને સર્વ સુગુણ સાધન સંપન્ન જોવા ઈચ્છીએ છીએ એ જ યુગાત્મા શ્રી નિષ્કલંકી નારાયણ જનાર્દન ચરણે વિ. વિ. વિ. હાલ એ જ.

?

શું ? તો, તે, હું સ્વયં પોતે પ્રથમ શુભ વર્તમાન કાલે છે એક રખડી યાત, નવરા–ધુપ, ભામટા–ભુત.

ગુન્હા અને ગુન્હાઓની માફી–માંગું છું. માફી, માફ કરજો મારા ગુન્હા અને ગુન્હાઓને.

માત્ર માફ કરવા જેવા જે હોય તેજ, તેમજ માફ કરવું જ હોય તો કરજો તે માટે—આપશ્રીજી પુર્ણ તથા સ્વતંત્ર છો.

અજાણુપણે અકસ્માત જેવા ગુન્હા અને ગુન્હાઓ મારાથી કદાચ થયા હશે, કાંતો થશે, કાંતો થાય છે તે બદલ મને પૂર્ણ વિશ્વાસ શ્રદ્ધા અને ભરોસો છે કે— તે પ. પુ. ગોરનર પાત્ર (લાયક) જે છે તે તો મને માફી આપશે જ આપશે તેના માટે તો આપ પ. પુ. શ્રી સહજમાત ગતગંગા ભેદભાવ વગરની અને શુદ્ધ સાત્વિક "આચારે પ્રભવો ધર્મ" એવી આચાર વિચાર વિવેક બુદ્ધિશાળી ભાગ્યાવાન જાતી જનતા-જનાર્દનજ જવાબદાર છો. એટલે જ જાણી બુઝીને કરેલા ગુન્હા તેમ જ ગુન્હાઓની માફી આપવામાં આપશ્રીજી સહજમાત જનતાજનિમીત માત્ર જનાર્દન છો. ગુન્હાહએો એ છે કે હું સ્વયં પોતે એમ કહેવા માગુ છું કે– આ શુભ વર્તમાન સમયે કહેવાતા શ્રી સનાતન આર્ય પવિત્ર સતપંથીઓમાં મારા જેવો કોઈ અન્ય રખડીયાત, નવરા–ધુપ અથવા ભામટા–ભૂત જેવી વ્યક્તિ નથી.

અને તે આ મારા રખડીયાત પણામાં એક ગુણ અવગુણ ? સમાયલો છે અને તે ગુણ કે અવગુણ એટલે ઈદમ, સત્ય, સનાતન, આર્ય, પવિત્ર સ્વધર્મ નિધનમ શ્રેયસ સતપંથ જીજ્ઞાસુઓમાં ધંધા રોજગાર લોભ, સંસાર સ્વયં–સ્વાર્થ દુનિયાના

લોલુપતાર્થે દેશ પર્યટન કરનારા ઘણા હશે, પરંતુ કેળવણી શ્રી સનાતન આર્ય પવિત્ર સતપંથ શાસ્ત્રાભ્યાસ સંશોધન એટલે કે ફક્ત એક શાસ્ત્રગ્રંથ વાંચીને અક્ષર પરિચય કરવું એવું નથી. પરંતુ શંસોધક વૃત્તિ એટલે—

હંસો યથા ક્ષિર મિવામ્બુ મધ્યાત" એવા આ પદ્ધતીનો શુભ આશયથી દેશ પર્યટણ સાથે સ્વાધ્યાયોભ્યાસ અને અટક-મટક સતપંથ શાસ્ત્રવાણી પ્રચાર સતસંગ પરીચય કરનારા જે કોઈ હશે તો તે હુ સ્વયં પોતે પ્રથમ તઃ શુભ વર્તમાન કાળે એક રખડીઆત અથર્વવેદી માનવ ખોળીઉં શું સાચું છે ને?

મિત્રો

જે થતૂ આવ્યુ છે તે ભાવિના માટે જ
જે થાય છે તે ભાવિના માટે જ
જે થશે તે પણ ભાવિના માટે જ
એટલે જ ભાવિ પેઢીના માટે સમજી વિચારી,

જ્ઞાન, દાન, સત્ર

જ્ઞાન એટલે? સમજ, ટુંકામાં :– જ્ઞાન મળે સમજ આવે તો જ આપણે ભૂખ્યાને ભોજન, તરષ્યાને પાણી, નાગાને વસ્ત્ર, વગેરે આપીને મનુષ્ય અર્થ ફાયદો નફો એટલે ધર્મનિતિમતા માનવતા મેળવીએ છીએ.

એ આવુ જ્ઞાન સમજ કયાથી મેળવાય? તો કહો કે વેદ-શાસ્ત્ર શ્રૃતિસ્મૃતિ, પુરાણ કુરાન, બાઇબલાદી યુક્ત સદ સાહિત્ય, સારા પુસ્તકોમાંથી.

સત સાહિત્ય શાસ્ત્ર ન હોત તો મનુષ્ય મનુષ્ય નહી રહે તો પછી સ્વદેશ, સ્વધર્મ આદી નિતિઓને કયાંથી પહોંચી વળાય? માટે અન્યોન્ય સત સાહિત્યની જેમ આ વર્તમાન પુસ્તક સુદ્ધા એક સત શાસ્ત્ર યુકત સત સાહિત્ય છે અને તે રખડીયાત, નવરા–

ધુપ, ભામટો, ભૂત તરફથી "સદ ગુરૂ કૃપાહી કેવલં" થી નિમિત્ર માત્ર થઇ; આ તર્તમાન પુસ્તક એટલે ટુંકે ટુંકે ગદ્ય, પદ્ય સાર સંગ્રહ સતપંથ સનાતન આર્ય આદર્શતા સમજવા ભૂત, વર્તમાન, ભવિષ્ય, સુકત કર્તાયુગ, ત્રેતાયુગ દ્વાપરયુગ, તેમજ કલીયુગના એકં સદ્વાવિપ્રા બહુધા વદન્તિ, એવા એક જ પરમ પરમાત્માના અનેક સ્વરૂપો દશાવતાર સાથે.

"ૐ નમો જયશ્રી નિષ્કલંકી નારાયણ જનાર્દન નમઃ" નામે વિશેષ ગુણાનુંવાદ ગાતાં–ગવાતાં સોચતાં–સમજતાં શ્રી સનાતન આર્ય પવિત્ર સતપંથ ધર્મ જીજ્ઞાસુ જનતા જનાર્દનને યાદ કરતાં "સનાતનસ્તવં પુરૂષો મતો મેઃ" એવા પ. પુ. શ્રી સદગોર પાત્ર બ્રહ્માઅવતાર ઈન્દ્ર ઈમામશાહ જીના શુભ વરદ હસ્ત એટલે સનાતન આર્ય પવિત્ર સતપંથાચાર્ય, મહંન્ત ગાદી અધિપતિ સાહેબ કૈઃ કાકા શ્રી રામજી લક્ષ્મણજીને તથા પુન્ય પાવન ભૂમિ સ્વદેશ ભારતના પ. પુ. શ્રી. રાષ્ટપિતા મહાત્મા ગાંધીજીની જન્મ શતાબ્દિ નિમિત્ત જ્ઞાન. સાર. સાહિત્ય સંગમ બનાવી ભારત તથા ભારતના " બહુ રત્ના વસુંધરા " જેવા સ્વદેશ ભારતના હિતોપદેશ વાસીઓ વગેરે ગતાત્માઓને યાદ કરતા ભુલ્યા ચૂકયાની માફી માગતા વર્તમાન સતપંથ જ્ઞાન સાહિત્ય સંગમ નામે પુસ્તક જનતા જનાર્દન એટલે ભાવી પેઢી માટે વર્તમાન પ્રકાશન "સહ હૃદય સમર્પણ હાર્દિક અભિનંદન સહ" નિમિત



કહુ છુ કે

સમયની કિંમત સમજો
તડાકા મારવાનો કઈ અર્થ નથી.
મને મારુ કામ કરવા દો
તમે તમારુ કામ પતાવીને ચાલ્યા જાવો.

શું ? બિમાર છો ? શું બિમારી છે ? વહેમ છે ? તો પછી વહેમનું ઓસડ–દવા કહુ ? સિધુ અને સહેલ છે !

ગુસ્સો તો નહી આવે ને ? ગુસ્સો, લાજ, શરમ અને એવી બાબતોને સાથે લઈ ને આવ્યા હોય તો પછી તેવાઓને પ્રથમ પહેલા ને વહેલા ઘેર મુકી આવો જાવો.

કારણ કે બિમાર જોતા ને બિમારીનું નિદાન (તપાસ) કરતા બિમારની નાડી પરીક્ષા કરવા જતાં ડો. હકિમોને પાસે આપણે (તમે) ગુસ્સો, લાજ, શરમ વગેરે બાબતોને સાથ લઈ ને જાવો, તો પછી તે તમારી બીમારીની પરીક્ષા કરે કેવી રીતે ? અને પછી દવા ઔષધ આપે પણ કઈ રીતે ? એતો પછી ડો. હકીમોને જશ મેળવવાના માર્ગમાં દખલગીરી જેવું છે, અશુભ જેવું છે, અપશુકન જેવું છે.

કારણ ડો. હકીમોની પાસે લાજ રાખી, લજવાઈ જાવો, શરમ રાખી મુઝાઈ જાઓ, એ કામ નહી આવે. તમારી બીમારીની તપાસ કરવા સારૂ ડો. હકીમોને તમારા ગમે તેવા શરમજનક હોય, જેવો જે હોય તેવો, તો પણ હકીમોને તેની પરવા જરાયે પણ ન કરતો બે પરવા થઈ ને તેવા સાહેબો તમારા તે લાજવાળું શરમાળુ ગમે તે શરીરનો ભાગ હોય, ગમે તે અવયવો હોય

હકીમોની નજર શું ? પણ સમય આવતાં હાથ પણ ફેરવવો પડે; તપાસ કરવી પડે; જોવું પડે કે નહી ? અને કયાંય ડૉ. હકીમોની સામે તમે લજવાઈ જાવો, મુઝાઈ જાઓ, અને તમારી બીમારીને આમ ખુલ્લી રીતે અને ધગશથી નહી કહેશો પરીક્ષા નહી કરવા દેશો તો, તો પછી બીમારી નહી સુધારે હો કે ?

એટલા માટે જ હુ તમને કહુ છુ કે, ભલે, ભલે હી પછી તમે માનો કે ના માનો, તમે અહી આ વખતે લાજવાળા હો કે અથવા શરમવાળા હો પરન્તુ લગભગ ગુસ્સાવાળા, ક્રોધવાળા તો ન જ હોવા જોઈએ. ત્યારે જ તમારાં વહેમ જેવી બીમારીની દવા ઔષધ કહેવાને ઠીક પડશે સારું થશે કારણ કોઈ ભાગ્ય પુરુષે કહેલું છે કે વૈદ્ય ધન્વંરી મળ્યો એટલે ભગવાન મળ્યો.

આજે તો અમ્બર રંગિયા, અને ભલે મળ્યા ભગવાન.
કામે ક્રોધે લોભે જે નર ભૂલી ગયા, તેનો વ્યર્થ ગયો સંસારજી"

ચંદન પાસે એક લીમડો, તેમાં સુગંધ બહુ અપાર
તેને પાસે જ એક પોલો વાસડો, તેમાં સુગંધ નહિ લગારજી
એવા રે એવા તમે લોક છો બદા બેઈમાની ને વારો
ગોર–ગત–ગંગામાં જઇને, તારા, કિધા કર્તવ્ય ટાલોજી..."
વિગેરે વિગેરે....

એક ખુલાસો ટુંકમાં ખ્યાલમાં રાખશો કે હું કાંઈ ખાસ કરીને કોંઈ એક ડૉ. કે હકીમ તમને જેવા જોઈતા હોય તેવા બહુમતિ વાળો ડૉ. કે હકીમ હું નથી. છતાંય લઘુમતિવાળાઓને જોઈતો હોય તેવો હું કદાચ હોઇશ પણ ખરો. જેમ દુનિયામાં દુનિયાની સફરે જતાં અનેકો મુસાફરો એકબીજાને મળે છે, બોલે છે, ચાલે છે. હળી મળીને રહેવા માગે છે. સમયાનુસાર–કોઈ એકાદ મારા જેવો ભુલકણો હોય તો તેને કોઇને કાંઇ એક પૂછવાંનું હોય તો તે પુછ–પરછ પણ પ્રજાની

પ્રેમે કરજો તમે વધામણી સારી,
જપો જપોને તમે નકલંકી હરી, જપો૦
ભક્તવર ભક્તોને તારશે,
કરશે તે દુરીજનની ખુવારી રે–દુલદુલ–૧૮
તે સમયે પિંપળે ફૂલડાં આવશે,
તે ફૂલડાંના ગજરા ગુંથાશે, તે ફુલડાંના૦
તે ગજરા મારા નકલંકને ચઢશે,
ને આબુગઢ ગિરનાર તોરણ બાંધશે રે–દુલદુલ–૧૯
દેવાયત પંડિત આગમ વાણી ભાખીયારે
જુગ ચોથાની છે વાત રે, જુગ ચોથાની૦
સંવત્સર વર્ષ ચિલોતરમાં,
નકલંકી જાગશે રે–દુલદુલ–૨૦

જ્ઞાન–૩ કડવા ભગતની વાણી

કળયુગ આવ્યો રે સંતો જાગજો,
ઉંઘશો નહી રે જરાય
કાચા રે સુતર કેરે તાતણે,
મોટા હાથી રે બંધાય.–કળયુગ–૧
ધરા પતિ મદિરામાં મહાલશે,
ભૂલી ધણી કેરો ધર્મ.,
લાજ રે લુંટાશે અબળા જાતની,
એવાં આદર્શે કર્મ.–કળયુગ–૨
ગાયના પાલક ગોત્યા નહી જડે,
નહી હોવે દીલડે દયાય,
ક્ષત્રીય ધર્મ ભૂલે ભૂપતિ,
નહી હોવે દેવડીએ ન્યાય.–કળયુગ–૩

ભારત ભુમી રહેશે નામની,
વાયરો પશ્ચિમના વાય,
ભડરે વીરોની છૂટશે,
રજકણ ઓસરતા જાય.—કળયુગ—૪

ખેડૂતની કોઠીથી કણ ખુટશે,
ખાવા ધાશે ખળવાડ,
કડે ડાટી કણપતિ માંડશે,
નહી કોઈ સાંભળશે રાઢ.—કળયુગ—૫

વણીકના વેપાર જાયે વણસતા,
કુડની હાટડીઓ મંડાય,
ખેડુનાં ખેતરે ભેલે ટીટડાં,
કણને ખપેડીઓ ખાય.—કળયુગ—૬

ઋતુ રે વિના વરશે મેહુલા,
બોલે મધરાતે મોર,
લિલુડી વાડીએ ઊગશે ભંઠીયા,
રસમાં ધરાશે ચોર.—કળયુગ—૭

બાવા મંદિર બાંધી બેસશે,
કાઢી ને ભગવાં વેશ.
રાખોથી પિંડને લેપશે,
ભગત નામ દઈ લેશ.—કળયુગ—૮

બ્રાહ્મણો વિસારી મેલે વેદને,
નહીં બ્રાહ્મણ પણું જરાય.
ગાયત્રી ગાશે ફરતાં ગામમાં,
ચપટી લોટમાં મન જાય.—કળયુગ—૯

ભગતો તંબુરા જેવું રાખશે,
વાણી પરમાણી જુઠ
રહેણી કહેણી કહેશે રાગડે,
અને ગણશે સૌ ઠુઠ.—કળયુગ–૧૦

આડમ્બર કરશે સૌને આંજવા,
કરશે ભોગ અને વિલાસ.
પોથી પાણીમાં પધરાવશે,
થાશે ધરમનો નાશ.—કળયુગ–૧૧

દેવળે પુરાશે દેવ દેવીઓ,
ફરશે કોપેલ રૂપ,
પૂજારી પુજા કરશે દ્રવ્યની,
ધરશે ગાંજાની ધુપ.—કળયુગ–૧૨

મરદો મૂછો કાઢી નાંખશે,
સ્ત્રીઓ તજે અંબોડાય,
સુહાગણો એકલી ફરશે,
એ તો સુધરેલી ગણાય.—કળયુગ–૧૩

ભેદ ભૂલાઇ જશે ધર્મના,
નહી રહે ઊંચી નીચી જાત,
મરજીથી લગ્ન કરશે માનવી,
કરશે કામીની સંગાત.—કળયુગ–૧૪

જતિ સંતાસે ભોંય રે,
વહેશે પાતકનું પૂર.
સતિ જન ગોત્યાં નહી જડે,
નહી રહેશે હિન્દુપણાનું નૂર.—કળયુગ–૧૫

વીરલા બચશે આવા કાળથી,
ઉંઘતા ચારણાએ દળાય,
ઘંટી ઘરે રાટી મારે જુગની,
ગાળે પડેલા દળાય.–કળયુગ–૧૬

વડ વેડુ પડશે જ્યાં જ્યાં ધર્મની,
હિન્દુ ધર્મ ચાલ્યો જાય,
મીઠા રે મહર સુણજો માનવી,
કડવો ભગત સાચું રે ગાય.–કળયુગ–૧૭

જ્ઞાન ૪. પીર રામદેવની વાણી

પશ્ચિમ દિશાથી પીર પધાર્યા,
અને સાનમા સમજાવિયાજી,
પાયો પ્યાલો પ્રેમનો,
અલખને ઓળખાવિયાજી –ટેક
કુવારીકામાં મંડપ રચિયો,
શ્રી નિષ્કલંકીને પરણાવશે જી.
પાંચ, સાતને નવને આગળ
મોકલાવીયા, માંડવો રોપાવવાજી ॥૧॥

નુરત, સુરતના સિપાઇ તેડાવ્યા,
જ્ઞાનના બખ્તર પહેરાવાજી,
ધીરજની તમે ઢાલુ રે બાન્ધો,
કાલીંગાને ધીરજે મારવાને રે જી ॥૨॥
સહસ્રઘોડાઓલઇસાહેબઆવશે
સાથે હનુમાન લાવશે જી,
જતિ સતિ ભેળા થઈ મેળવે,
મળવા આવીઆ રે જી ॥૩॥

કુવારીકામા જગન રચાવીયો
રંગ પાંસા ઢાલવા રે જી.
એમ બોલ્યા પીર રામદેવ,
અલખને ઓળખાવિયા જી. ॥૪॥

જ્ઞાન પ. દાસ ધીરો કહે છે !

કલયુગ તો આવીયા રે,
દુનિયામાંથી ઘટી દયા.
મોટા મોટા મહાજનો રે,
લખપતિ લોભીયા થયા ॥૧॥

ધરતીમાંથી ધર્મ ગયો રે.
પાપનું વધ્યું પૂર
પર્જન્યતોપાંગળાથઇનેવરસે
મેદની થઈ ચકચુર ॥૨॥

કલજુગનું એવું કારણ રે,
દુનિયા લોભમાં લાગી જાય
ધરતીએ રસ ચોરીયા રે,
વાવ્યો કણ વણસિ જાય. ॥૩॥

શૂરાનું શૂરપણું ગયું,
ગયું સતીનું સત
વેદી ભેદી પંડિત પુરાણી
સહુની મટી ગઇ છે મત ॥૪॥

પુથ્વીમાં પાખંડ પુજાશે,
વિપ્ર કરે વહેવાર
સન્યાસી ધન સાચવવા લાગે
પતિવ્રતા હશે બિરલા નાર ॥૫॥

છત્રપતિ તો વાચા ન પાળે,
તે દુઃખ કોણે રે કહેવાય.
કથા તો કુપાત્રની સુણશે,
પ્રશ્ન તો ગરોડાને પુછાય, ॥૬॥
સત્ય તો ના મલે ગોત્યુ રે,
અસત્ય ના ઓથ થયાં.
દાસ ધીરો કહે છે રે,
અજ્ઞાની તો અન્ધ થયા ॥૭॥

જ્ઞાન ૬. સદ્‌ગુરૂ ઈમામશાહની વાણી

ભાઈ ! જ્યારે બારમી સદી આવશે
ત્યારે ધર્મ નહી રહેશે લગાર,
ધર્મ કરતાં ઓછું આવશે,
એવો આવશે કળીકાળ–જ્યારે–૧
ભાઇ ! સતિયાનાં સત જ્યારે છુટશે,
સતિયા નહી રહેશે કોય.
ન્યાત છોડીને પર ન્યાત પરણશે,
એવી વેળા આવશે સોચ–જ્યારે–૨
ભાઈ! ખાના માંહે ભુતખાનાં વ્યાપશે
એવો આવશે કળી કાળ.,
ટાઢી રે શીળી મુનિવર પાળશે.
તેતો બહોતેર ખાનાં બાળ્યાનું પાપ–જ્યારે–૩
ભાઈ ! ત્રીસીબત્રીસી એ પાપી જાગશે,
તે હશે મહા ચંડાળ.,
છત્રીસે છેતર પીંડી થાશે,
એમ તમે જાણો નિરાધાર.–જ્યારે–૪

ભાઇ ! પિસ્તાલીસે બારમી સદી પુરી થાશે,
ત્યારે જાગશે અજેપાળ
પચાસે બાવન બળ જાગશે,
તે કરશે એકાકાર, —જયારે-૫

ભાઈ ! સાઠ બાસઠે બળ પડશે,
તે તો પેસી જાશે પૈયાળ.,
સિત્તેર બહોતેર સંઘ ફિરશે,
અને ભેળાશે સંસાર —જયારે-૬

ભાઇ! પંચાસીએ પીરશામશા જાગશે,
મુનીવર થાઓ રે હોંશીયાર.,
ચોરાણું પંચાણુએ પશ્ચિમ ઉગશે,
અલી મહેદી થાશે સ્વાર—જયારે-૭

ભાઇ! નવાણુંએ સદી સંધી આવી પહોંચી
આગમ નિષકલંકી જાણુ.
જ્ઞાન બોલ્યા ગુરૂ ઇંદ્ર ઇમામશાહા,
મુનિવર સહી કરો પ્રમાણુ—જયારે-૮

જ્ઞાન ૭

ભાઇ ! આજે કળીમાં કાળીંગો આવશે,
એના પેલા એ છે એંધાણ.,
જે ઇનામ વિના ને અકલ હીણા,
એવા જીવ ભુલશે સારી જહાન —આજે-૧

ભાઈ! તે સાત પેઢીના સગા દેખાડશે,
અને દેખાડશે મા ને બાપ,
એની પેરે સર્વને પરમોદસે,
કાશી વિશ્વનાથ જપાવે જપ —આજે-૨

ભાઇ ! ચોવીસ લાખ ચેલા ચરપટ ચાળા કરતા આવશે,
મુખમાંથી બોલશે ભાંડ,
તે પાણી મંત્રીને ધૃત નિપાવશે,
વેળુ મંત્રી ને કરશે ખાંડ —આજે–૩

ભાઇ ! કાળીંગો અધ્ધર આસન કરી બેસશે,
પુરાવશે સૌ કોઇની આશ,
એણી પેરે સર્વનાં ઇમાન ડોલાવશે
પછી સર્વ કોઈ થાશે નિરાશ —આજે–૪

ભાઈ ! કાળીંગો છ માસ લગી હથી ચાર બાંધશે,
અને ત્યાં સુધી કરશે તે પેર
સુરજા રાણી, કમળા કુંવરને શિખામણ દેશે,
તેમને મેલશે પોતાને ઘેર —આજે–૫

ભાઈ ! કમળા કુંવરને રાજપાટ સર્વે સોંપશે,
અને તમે કરજો સઘળાં રે કાજ,
અર્થ, ગ્રંથ, ધર્મ ધન માલ સોંપશે,
સોંપશે મહાચીન નગરીનું રાજ —આજે–૬

ભાઈ ! કાળીંગો ચરપટ ચાળા કરતો આવશે,
તે નદી સરસ્વતીએ કરશે મેલાણ,
તે સતિ લોકોનાં સત ચુકાવશે,
એની પેરે સૌ કોઈનું લેશે ઇમાન —આજે–૭

ભાઈ ! આજ કલજુગની વખડી વેલા છે,
તેમાં તમે મુનિવર થાઓ હોંશિયાર,
તમે જે કાલ કરો તે આજે કરો,
પછી નિષ્કલંકી થાશે સ્વાર —આજે–૮

ભાઈ! જ્યારે સંવત્સર ચિલોતર પુરા થશે,
ચૈત્ર માસને ગુરૂવાર,
તે દાડે સ્વામીજીના સેન ચડશે,
ત્યારે ઈમામ મહેંદી બાંધે હથીઆર —આજે—૯
ભાઈ! વેળા પોતીને રૂતુ પાકી,
ને હેતના રે વરસે નૂર,
જ્યારે સો નિશાની પુરી હોશે,
ત્યારે પશ્ચિમ દિશાએ ઉગશે સૂર —આજે—૧૦
ભાઈ! ભણે ઇંદ્ર ઈમામશાહ સુનો મુનીવરો,
આજે જીવને કેમ નાખો જંજાળ,
ચેતી શકાય તો ચેતજો,
પછી તુટશે પુણ્યની પાળ —આજે—૧૧

જ્ઞાન ૮

ભાઇ ! આજે કળયુગ પુરણુ થાએ,
અને સાતિયા સત ન રાખે કોય,
તે તો મંદિરે મંદિરે આપણા,
અને ઘર ઘર ડાહયા રે હોય —આજે—૧
ભાઈ! ત્યારે લોક તે નિંદા બહુ કરશો,
તમે મુનીવર મુખમાંથી ન બોલો કાંઈ.,
તે તો તમને કરશો ઉજાળા,
પછી તેની કમાઈ જાશો ખોઇ —આજે—૨
ભાઇ ! એવી કસોટી કસાવીએ,
અને પુરા તે કસ કહેવાય.,
તે માંહે ખરા હશો તે ઘણુ ઝાલશો
બાકી ખોટા તે ભાંગી જાયે —આજે—૩

ભાઈ! ખોટા ભાંગ્યા રે સહુના દેખતાં,
અને તેનાથી મુકતા ફળ નહી લેવાય,
આ હરીજન. દુરીજન ને કારણે,
તે તો કડવા ઈંદ્રિ ફળ ખાય —આજે—૪
ભાઇ! હવે ક્ષેત્ર નથી રે પાંચમું,
તમે રોલો કરશો કયાં જાઈ.,
સર્વે સત ખોયું મૂર્ખ પાપીએ,
જેણે છોડી સદગોર પાત્રની બાંય—આજે—૫
ભાઈ! સતપંથ વોરી ગાંઠે ન બાંધીઆ,
અને મુર્ખે ન જાણ્યો મરમ.;
તેણે એક પલ સુખને કારણે,
મુર્ખે ખોયુ મુકતા ફલ ધરમ—આજે—૬
ભાઇ! તેમણે પોતે દોજક સંભારીએ,
અને તે બેહસ્ત ન આવે કોય.,
જેણે બે પીર કીધા તે દોજક પડીયા,
તેણે પોતે હાથે અમર ફલ ખોય —આજે—૭
ભાઇ! એ મુર્ખે જ્ઞાન વિચારી ના જોયું,
અને સતપંથથી નથી કોઇ પંથસાર.
એમ ભણે ગુરૂ ઈંદ્રિ ઇમામશાહા,
બે ઇમાની ખાશે દોજક માંહે માર —આજે—૮

જ્ઞાન ૯

ભાઈ! આજે કળયુગ પુરણ પરવર્યો,
અને સતીયુનાં ચુકાવશે રે સત
તે તો સાચાને જુઠા બોલાવશે.
તેની હરી લેશે રે મત --આજે—૧

ભાઈ! મુનીવર સબ કોઇ કહાવે,
અને મુનીવરના ભેદ ન જાણે કોઈ,
જે આપ પોતે ગળે ને ગોરની વાચા પાળે,
આજે સાચા મુનીવર સોય —આજે—૨

ભાઈ! મુનીવર મુનીવરની નિંદા કરશે,
અને માંહે માંહે કરશે યુદ્ધ,
તે તો કુટુંબ માહે કલહ કરશે,
ભાઈ એવો છે કળજુગનો ફંદ —આજે—૩

ભાઈ! જે માડી રે જાયા બાંધવા,
તે સગપણ માંહે કરશે વહેવાર.
જ્યારે મા—બાપની પ્રતિજ્ઞા નહી પાળે
ત્યારે કળજુગ માંહે વર્તાશે કહેર —આજે—૪

ભાઈ! જ્યારે પાપ છલકીને પૂર વહેશે,
ત્યારે સત ધર્મની નહી કરશે સંભાળ,
બંધુ બહેન વિરોધ બોલશે,
તે તો મા—બાપને દેશે ગાળ —આજે—૫

ભાઈ! આજે વખડી વેળા વહે છે ઉતાવળી,
અને તમે મુનીવરો થાવો હોંશીયાર
તમે કાલે પુજતાં આજે પુંજો,
પછી નિષ્કલંકી થાશે સ્વાર —આજે—૬

ભાઈ! મુનીવર સામલ લીજીએ
અને દીજે તે સદગોરને હાથ
ઇમાન સાચું તે ચાંદરણું,
ભાઇ ! જેમ પુનમની રે રાત —આજે—૭

ભાઈરહેણુી અજવાળીપુરણુ ચાંદસુ,
તેની સકળ કળા છે ભરપૂર,
જો ઇમાન સાચવી એ સાચસુ,
તો તહાં જીકરે વરસ સે નૂર —આજે–૮

ભાઈ! નુર વરસે તહાં હેત ઉપજે,
અને મહેર મહોબત રાખો રે આપ,
જે ઇમાન સાચો રે દિવડો,
જો માંહે પ્રગટે, ના કરે પાપ —આજે–૯

ભાઇ! ભણે ઇન્દ્ર ઇમામશાહ સુણો મુનીવરો
તમે કેમ નાખો જીવને જંજાળ,
તમે ચેતી શકો તો ચેતજો,
પછી ફૂટી જશે પુન્યની પાળ —આજે–૧૦

જ્ઞાન ૧૦

ભાઈ! મુનીવર મહાદન આવશે,
તમે હ્રદય વિચારીને જોય,
વખડી વેળા રે આવશે,
ત્યારે થરનાં રહેશે કોય, —મુનીવર–૧

ભાઇ! ત્યારે દહાડો દહાડા લોપશે,
અને વેળા વેળાના જુજવા ભાવ
કહે ગોર ઇમામશાહ અમે ભાખીયા,
જેમ નીર માંહે ડુબે નાવ —મુનીવર–૨

ભાઈ! નીર વિના રે નાંવ ડુબશે,
અને વહેશે તે પાપનાં પૂર,
તહાં સત શોધ્યા નહી મળે,
ત્યારે સાચા તે જાશે દૂર —મુનીવર–૩

ભાઈ! ત્યાં હાં હેત હિતાર્થ તુટશે,
અને ઉઠસે દયા અને ધર્મ,
જ્યારે ધર્મી ધર્મની નિન્દા કરશે,
ત્યારે ઉપજશે બહુ કર્મ —મુનીવર–૪

ભાઈ! માડી જાયા બે બંધવા,
અને માંહો માંહે દેશે ગાળ,
જ્યાં મા–બાપને બેટી ગાળ બોલશે,
ત્યાં પુરણ આવ્યો જાણો કળીકાળ —મુનીવર–૫

ભાઈ! જે સતપંથ લઈ બે ઈમાની થયા,
તે બોલે મકરની રે વાત.,
જે નિન્દા કરે ગોર નરની,
તે દોજક પડશે ઈકોતરસો સાથ —મુનીવર–૬

ભાઈ! એવી વખડી વેળા આવશે,
ત્યારે સાહબ થાશે સ્વાર,
તે તો કાફરોને જુગ માંહેથી ટાળશે,
અને કુલ દૈત્યોનો કરશે સંહાર —મુનીવર–૭

ભાઈ! ત્યારે નવી નવી કરશે પૃથ્વી,
અને કરશે તે જય જય કાર.,
જ્યારે દૈત્ય કાળીંગાને મારશે,
ત્યારે સાહબ પોતે કરશે રાજ —મુનીવર–૮

ભાઇ! ત્યારે નવખંડ સાહેબ પોતેરાજા,
ઓર દુજા નહી કોઈ.,
જ્યારે મુનીવરનેરિ દ્ધિ–સિદ્ધિ આપશે,
ત્યારે મૂર્ખ હાથ ઘસતા રોય —મુનીવર–૯

ભાઈ ! દત્ત વિના કયાંથી પામીએ,
અને પંડિત વિચારોને વેદ.,
તહાં પસ્તાવો કરશે ગાફલો,
એમ કહે આ સદગોર ભેદ —મુનીવર–૧૦

ભાઈ! ભણે ઇન્દ્ર ઇમામશાહ સુણો મુનીવરો,
તમે હૃદયમાં રાખો ધીર,
જે તમને નજીક દેખાડશે,
તે તો જાણો ઇંદ્ર ઇમામશાહ પીર-મુનીવર–૧૧

જ્ઞાન ૧૧

ભાઈ! સરોવરની પાળ તૂટી, નીર ઉલટયા,
નહીં કોઈ બાંધણુ હાર,
ગાયોને નહી કોઈ વાળશે,
નહી કોઈ ગતમાં ગોવાળ રે.
જુગમાં કળી કાળ વ્યાપીઓ,
વીરા ભાઈ કળજુગ આવીયો —ટેક

ભાઈ! જ્ઞાન, ધ્યાન, વેદ વાયકા,
નહીં કોઈ વાચન હાર.,
પાના પુસ્તક સર્વે હારવા,
વસ્તુ ગઈ છે વિસાર —જુગમાં–૧

ભાઈ! જીવ દયા ધર્મ જે કોઈ પાળતા,
તે નર નિશ્ચે થયા રે આરત.,
માતા એ મેલી માયા બાલકસુ,
સર્વે કોઈ થયા પેટ સ્વાર્થ —જુગમાં–૨

ભાઈ! તહાં હેત હિતાર્થ તૂટશે,
સગપણ થાશે બંધવ માહે વહેવાર,
નાનાઓ મોટાઓને માને નહી,
એવી વેલા આવે જાણો જાણુહાર -જુગમાહે–૩

ભાઇ! ગોરને જજમાન નહી કોઈ માનશે,
પ્રજા નહીં માને રાજાની આણ
સુ, કુલ નારીની લજ્જા લોપશે,
ખાપણ લાગ્યું ચારે રે ખાણ -જુગમાહે–૪

ભાઈ! રાજા રાક્ષસ રૂપે અવતરશે,
તેમ પ્રજા ચોર, ધૂતારી જાણ.,
દહાડો દહાડાને લોપશે,
વર્ષો વર્ષ પડશે દુકાળ -જુગમાહે–૫

ભાઇ! રાજા રાખણહારા લૂટશે,
ધણી દિલમાહે નહી કરે વિચાર.,
નવસો નવાણું નદીઓ ખૂટશે,
ધોરી છાંડશે પૃથ્વીનો ભાર -જુગમાહે–૬

ભાઇ! દૈત્યોએ દાવો માંડીઓ,
અને દેવતાઓ કરે છે વિચાર.,
ધર્મ માર્ગ કર્મ પંથ રૂંધીયા,
કરે ઘટ ઘટ દિલ માહે વિચાર -જુગમાહે–૭

ભાઈ! દેવતા કલીમાહેથી ઓસર્યા,
દૈત્યોએ કીધી ધરમ ક્રિયા ઉજડ.,
આણ ભાંગીને લોપીયુ,
પછી તે શું રાખે? ધરમની વાડ -જુગમાહે–૮

ભાઈ! ધરતી માંહે ધંધુકાર વ્યાપીઓ
તે થયો ને થશે હલ હલંકાર.,
નગર વસેલા ઉજ્જડ હોસે,
ચોદિશ થાશે અહંકાર –જુગમાહે–૯

ભાઇ પુન્યની પરબો કલીમાંહે ઓસરી
અને રસ કસ ગયો ગગન પાતાળ,
રિદ્ધિ સિદ્ધિ સર્વે ખુટશે,
સખાવંતદયાવંત માહે પડશે જંજાળ જુગમાહે-૧૦

ભાઈ! પેટ સ્વાર્થ આદર્યો જેણે,
તે કુળ ગૌત્ર માહે દેશે ગાળ.,
સ્ત્રી પેટના બાળકનો વધ કરશે,
ત્યારે પડશે વિકરાળ કાળ –જુગમાહે–૧૧

ભાઈ ! વિવાહ વાજીત્રો નોતરામાં,
તેડાવે એકને સહુ કુટુંબ જાય.,
રંગમાં જઇને ભંગ કરે,
પછી જુઠાઓ મળી દર દિવાને જાય –જુગમાહે–૧૨

ભાઇ ! વાદ વધ્યા ને વેર વધ્યું,
પછી કોઇ કેને ઘેર ન જાય.,
હિન્દુ મુસલમાનોની નાતમાં,
સમય આવતાં એકંકાર જો થાય –જુગમાહે–૧૩

ભાઇ ! વર વેવાઇ સાળા નોતરો,
કુળ ગોત્રમાં નહી પુછે એકવાર.,
માતા પિતા ગુરૂ આજ્ઞા લોપીયા,
ઘટ ઘટ દિલમાં થશે વિચાર –જુગમાહે–૧૪

ભાઈ! પુત્ર પિતાથી રે આગળો,
નરથી નારી ભલેરી કહેવાય.,
શેઠથી વણેતર વધીયા,
ગુરૂથી ચેલા વડેરા કહેવાય–જુગમાહે–૧૫

ભાઈ! અતિથી અભ્યાગતને સેવતાં,
તેની શુદ્ધ નહી રે લેવાય,
સાધુથી ચોર ઉતાવળા,
જુઠો પહેલો રાજ દિવાને જાય–જુગમાહે–૧૬

ભાઈ! અઢારે ભાર વનસ્પતિ,
તે તો ડાળ સમુળી રે જાય,
સુફળ વૃક્ષ સર્વે મુકસે,
બાકી રહે તેને કોઇ ન ખાય–જુગમાહે–૧૭

ભાઈ! અકલે ઇલિમ સુરા સતવાદી,
તે તો અભિમાને ચઢયા રે ગુસાઈ,
મઠ માંહે કરે રે અભિમાન,
એવા સાધુ સંતો રે ભાઇ,–જુગમાહે–૧૮

ભાઈ! ખરા નાણા તો સહુ કોઈ ખર્ચે,
ખોટા કોઇના હાથે ન સોહાય,
જપ અને તપ સર્વે હારવા,
નહી કળીની કળા સમજાય–જુગમાહે–૧૯

ભાઇ! હૃદય કમલ થકી ડોલીયો,
ગર્થે નહી આવે દોહેલો સંસાર,
ઠામ ઠેકાણે નહીં કોઈ ગુરૂ મુખી,
નહી કોઇને રહેશે ઇતબાર–જુગમાહે–૨૦

ભાઈ! સતપંથ માહે શુદ્ધ હોવે,
વિરલા કોઈ નર અને નાર,
સ્ત્રી માહે નહી રહેશે પતિવૃતા,
નરમાં ન કોઈ નર નિરવાણ—જુગમાહે—૨૧

ભાઈ ! નહીં કોઈ છઠી રાતના,
નહી કોઈ ધરે લજ્જા ય
નહીં કોઈ નર પોતે વેદિઆ,
નહી કોઇ પર દુઃખ ભંજન હાર—જુગમાહે—૨૨

ભાઇ ! ગુપ્તિ પ્રગટી નહી કોઇ જાણતા,
નહી રહે કોઈ દેવળ દેરામાં સાચ.,
નહી કોઈ સાચી કરામત દાખવે,
નહી કોઈ પાળે સાચી વાચ—જુગમાહે—૨૩

ભાઇ ! આઠ પહોર દિન રાતના,
નિદ્રામાં પડયા રે સંસાર.,
જે કોઈ ધર્મ માર્ગ નહિ જાણતાં,
તેઓને દેખીને ભૂલ્યો રે ગમાર—જુગમાહે—૨૪

ભાઇ! જાણી બુજીને ફલ જે કોઈ હારીયા
તે શું પાવે સાહેબનો દિદાર.,
સતી લોકો તમે સતપંથને સેવજો,
મુનીવરભાઈ તમે થાઓ હોંશીયાર.જુગમાહે—૨૫

ભાઇ ! ઈંદ્ર ઈમામશાહ જ્ઞાન બોલીયા,
મુનિવર તમે સાંભળો બ્રહ્મજ્ઞાન.,
ભક્તિ ભાવ શું કરો વિનંતી,
પરખો તમે એવા કળીના એંધાણ—જુગમાહે—૨૬

જ્ઞાન ૬૧

ભાઈ! મુનીવર મહાદન આવીઓ,
અને સાહેબ લેશે હિસાબ.,
ત્યારે કીધા કરતવ પૂછાશે,
ત્યાં તોલાશે પુન્યને પાપ ટેક-૧

ભાઈ! પુન્યને પાપ ત્રાજવે તોળાશે,
અને સાહેબ લેખા પૂછશે ત્યાંય.,
જો સદગોર સાથે સીધા ચાલીએ,
તે તો પકડશે આપણી બાય -૨

ભાઈ! અહી બાય પકડતાં ન આવે લાજ
અને વૈકુંઠમાં આપે તેને વાસ,
તેના ઈકોતેરસો આગળ કરી,
તે જઈને બેસે પિયજી ને પાસ -૩

ભાઈ! વૈકુંઠ માંહે એક વૃક્ષ છે,
તેણે સઘળી અમારાપુરી છાઇ,
તેનું નામ તો કલ્પવૃક્ષ છે,
તે તમે સુણો મુનીવર ભાઈ! -૪

ભાઇ! તહાં સવામણનો અહાર કરાવશે,
તહાં નાર નહીં રે હોય.,
તે માંહે રે બેઠા સુતા કોઈ નહીં,
તહાં તો જીકર કરે સર્વે કોઈ, -૫

ભાઇ! સોનાની ઈટે ઘર ચણાવશે,
અને તે માંહે ચણે કસ્તુરી ગાર.,
એવા મહેલ તમને આપશે,
તેના રૂપ તણા રે નહીં પાર -૬

ભાઈ! ત્યાં માણેક મોતી દડે કુંવર ખેલશે,
અને સુવર્ણ ગેડી છાજે તેને હાથ,
ત્યાં પાંચસો કુંવર ખેલાવશે,
ભાઈ એવા છે વૈકુંઠ નાથ– –૭
ભાઇ! લાખ એકમાં લખપતિ હોસે,
અને સો એક માંહે સુજાણ.,
અહીં સતપંથ જે કોઇ પુરા પાળશે,
તે તો પામશે નિરવાણ –૮
ભાઈ! ગુનેગાર ને ત્યાહાં મારશે,
ત્યારે તે કરે શોર બકોર
તેના હાથ પગ માંહે બેડી હોસે,
જાણો તે ઊભા દિસે ચોર –૯
ભાઈ! ત્યાં ઝાંખા મેઘા કિન્નાર દેખાશે,
અને દેખાશે પાંચ, સાત, નવ ને બાર
ત્યાં અનંત કરોડી દેવ મલશે,
પણ કોઇના કરે તેની સાર –૧૦
ભણે ઇંદ્ર ઇમામશાહ સુણો મુનીવરો,
સાચા સદગોર કહે તે સાચી વાત.,
સતી લોકો તમે સતપંથ સેવજો,
અને જીકર કરજો દિવસ અને રાત –૧૧

જ્ઞાન ૧૨

ભણે સુરજા રાણી, સાંભળો,
કમળા કુંવર કહું એક વાત રે,
મુજને સપનાત્તર લાધીયું,
પાછલી પુનમની રાત રે, –ભણે–૧

જાગો જાગો રે ભાઇ હુઈ છે વધાઈ
અને આવ્યા તે વૈકુંઠ નાથ રે.,
જાંબુદ્વિપ માંહે સ્વામી મારો પરવાર્યો
સૌ સૈન લાવ્યા સંગાથ રે, —ભણે—૨

નવાણું કરોડી ઝાંખા તારીયા,
છપન્ન કરોડી મેઘા રે.,
કિન્નર કરોડી બત્રીસ,
કરોડી તેત્રીસ સેવતા રે, —ભણે—૩

જેણે કરોડી તેત્રીસ તારીયા
અને તાર્યાં પાંચ, સાત, નવ, બાર રે,
ચારે જુગના ભક્ત તારીયા,
સહુ પાંડવ સુભા સાથ રે, —ભણે—૪

ત્યાં તો રણુઝણુ વાગે મેઘા ડમ્બર ગાજે,
ત્યાં તે સુરા ખમે ભાર રે.,
પશ્ચિમ થકી દળ ચાલ્યા આવશે,
તે તો ઉગમતા સહી પ્રભાત રે, —ભણે—૫

તે માંહે ભીમ ગદા લઈને ચડશે,
ત્યારે ધરતી થાશે કંપાયમાન રે,
એવા તે બેલી જોધા આવશે,
મારા સાહેબને દલ માંહે રે, —ભણે—૬

ચેતો ચેતો ભાઈ હુઈ રે વધાઈ,
તેને શિર બંધ શેલા બાંધશે રે.,
એણે માંડવે સ્વામી મારો આવશે,
કમળા કુંવર તૂં કાંકણુ બાંધ રે, —ભણે—૭

તારી ચીન નગરી માંહે ભંગાણુ પડશે,
ત્યાંહાં દૈત્ય કાળીંગાને મારશે રે.,
ઋષીવરોને ઘેર હર્ષ વધામણી,
મુનીવર ઘેર ઘેર મંગળ ગાશેરે, –ભણે–૮
તમે ભેગા મળો રે ભાઇ રૂખે સરો,
હાથમાં હાથ મેળવી કરોને કમાઈ.,
આજે કંચન કસણીએ જો કસાય,
તો તમે પામો વૈકુંઠમાં વધાઈ રે –ભણે–૯
એમ ઇંદ્ર ઇમામશાહ જ્ઞાન બોલીયા,
તમે ભેળા મળો ઋષિવર ભાઈ રે,
આજ ગોર મુખે દશાંશ આપશો,
તો તમે પામો મુક્ત દિદાર રે –ભણે–૧૦

જ્ઞાન ૧૩

હેજી—પશ્ચિમ દેશમાંહે ખંડ એરાકી,
અને સહસ્ત્રદ્વિપ જણાવું સાર જી.,
ગઢ શહેર વરજાના રંગ દોહેલા
તહાં રાજ કરે ધણી મારો જી
નાસ નાસ રે તૂ દૈત્ય કાળીંગા,
પશ્ચિમથી સ્વામી મારો આવશેજી
ક્ષોણી નવાણુ તારા ખરીને માંહે આવસે,
ત્યારે તુજને કોણ મેલાવશેજી –૧
હેજી—પશ્ચિમ દેશથી તબલ વાગશે,
અને સાથે તે ઘણા નિશાન જી
ત્રણ ભુવનમાં હાકલ દેવરાવશે,
ત્યારે સજાગ થાશે સુજાણજી –નાસ નાસ રે–૨

હેજી ! જેના ચંચલ ચાલે પવન રૂપી ઘોડલા,
એવા એરાક પતિનો શણગારજી
છત્રીસ આયુષ લઇ ચઢશે,
ત્યારે ત્રણ ભૂવન કરશે જયજયકાર —નાસનાસ—૩

હેજી ! નવ નાથ ને ચિદ્ધ ચોરાસી,
તહાં જોગણી કરશે જય જયકારજી
અજીયા વજીયા ચમર ઢોળશે,
કમળા કુંવર ઉપર છત્ર ધરાવેજી —નાસ નાસ રે—૪

હેજી ! જે નેત્ર કટે કોટને અન્દર ચાલે,
મારે દેવતા કરે કમાઈ જી.,
બારે મેઘ જેને ઘેર પાણી ભરે,
અને સુરજ તપે રે સોયજી —નાસ નાસરે—૫

હેજી ! હું તો રાણી મુંવા જીવાડું ને પ્રત્યક્ષપુજાવું,
મારા દલમાંહે ચડે કાષ્ટના ઘોડાજી
મારા દલમાંહે ક્ષોણી નવાણું,
તારા સ્વામીજીનું દલ છે, થોડું જી —નાસ નાસ રે—૬

હેજી ! રાયજી તમે મુવા જીવાડો પ્રત્યક્ષ પુજાઓ,
તો એ તમારો દલ છે કાચોરે.,
શાહનો મેળાવો, તે બાળી ભસ્મ કરશે,
નહી કોઇ ઉભો રહેશે સાચોરે-નાસનાસરે—૭

હેજી ! રાણી ખાઓ પીવો છો ધન ધાન અમારૂં,
અને અપશુકન કેમ વિચારોજી !
સ્વામી સ્વામી એમ કરો છો પુકાર, છે કોઈ
પંડિત જે કોઈ રાણી સુરજાને સમજાવેજી—નાસ.—૮

હેજી ! રાય તો સુરજા રાણીનું કહ્યું ના માને,
તે કુડા કર્મથી કાળીંગો ભાગશેજી.,
ત્રણ જુગની તમે વાત વિચારો, આજે ચોથે
શ્રી નિષ્કલંકી પાત્ર લેખુ માગશેજી–નાસનાસરે–૯
હેજી ! સીંગી શંખ ઘંટ નાદ વાગશે,
ને નવખંડ માંહે પડશે ભંગાણ રે
લાખ લાખ જોજન દલ સ્વામીનું ચાલશે,
સાહેબ એવા કરે પીયાણા રે –નાસ નાસ રે–૧૦
હેજી ! જાંબુદ્વિપે થાશે ગડમથલ,
અને ખબર પડશે ઉજ્જન નગરી મોજાર.,
ઇશ્વર ઉમૈયા દેવી કરશે પારણાં,
તે તો આજ કલીમાંહે દશમો અવતારજી-નાસનાસ-૧૧
હેજી ! ત્રાજવે તોલીને તપાસી લેશે !
ત્યાં ગોરબ્રહ્મા સાખ પુરાવશેજી–
નરને પ્રસાદે પીર શમ્મસ બોલ્યા,
ફલ, સાચાને શ્રી સદગોર દેશે રે–નાસનાસરે–૧૨

જ્ઞાન ૧૪

ભાઈ ! ચેત ચેત કળજુગ આવીયો,
અને આવી તે કઠણ વેળા રે.,
કળી કાળ કળજુગમાં વ્યાપીઓ,
સતિ જીવડા તમે શું ભૂલ્યા રે? –ચેત ચેત–૧
ભાઇ ! કળજુગ સંઘે જે કોઈ ભૂલ્યા,
સો તે તો નહી પાવે આરો રે,
એક પહોર સુખને કારણે,
તમે કેમ ખોવો જનમારો રે –ચેત ચેત–૨

ભાઈ! તમે મુનીવર થઇને સતે ચાલો,
અને મતમાંહે ચાલો અન રાહે.,
આગમ ચેતાવ્યા તોએ ના ચેત્યા,
તો પછી ફરો ચોરાસીના ફેરા રે —ચેત ચેત–૩

ભાઇ! મુનીવર થઇને હક્કથી તમે ચાલો
અને મત ચાલો અન રાહે,
ચેતી શકો તો ચેતી લેજો., નહીં તો
પડશે ચોરાશીના ફેરા રે —ચેત ચેત–૪

ભાઈ! મુનીવર થઇને ગાફલ જે સુતો,
અને વાત કુડી સો કહેવાય રે,
કઠણ વેળા મહાદિનની આવી,
શાહ તલતલનો લેખો લેશે રે, —ચેત ચેત–૫

ભાઈ! મુનીવર થઇને જે કોઈ વ્યાજ ખાશે,
અને સો ભી પરલે જાશે રે,
વહુ સાસુને નહીં રે માનશે,
અને બેટા માતાનું નહીં માને રે —ચેત ચેત–૬

ભાઈ! માતા પિતાનું માન ટળશે,
અને તે જોરૂના કહેવાથી ચાલે રે.,
દસ હી માસ માતાએ ગર્ભમાં રાખ્યો
તો પણ ચિત્તમાં નહી જાગ્યો રે —ચેત ચેત–૭

ભાઈ! કળયુગ આવ્યો કેમ કરી જાણો?
અને માન મોટાઓનું જાશે રે.,
છંદે ને ફંદે સૌ કોઈ ચાલશે,
ત્યાં એમ કરી પાખંડ વધશે રે, —ચેત ચેત–૮

ભાઇ! ત્યારે બેટા બાપની સંભાળ નહીં કરે,
અને એવો કળજુગ આવશે રે.,
પુરૂષ પોતાની મેલશે નારી,
અને બીજાની સંગાથે જાગે રે —ચેત ચેત—૯

ભાઈ! એવો રે કળજુગ વસમો આવે,
અને માન મોટાઓનું જાવે રે,
શીળવંતને નામજ નહીં,
અને કમશીલ રાજ કરશે રે —ચેત ચેત—૧૦

ભાઈ! ધીંગાઇ મસ્તી ખોટી જે કોઇ કરશે,
તેમનું નહીં હોશે ભલેરૂ રે,
તમે જાણો છો કે અમે ઠાલવી કાઢશું
તેમનો બેલી છે સરજન હારો રે- ચેત ચેત—૧૧

ભાઈ! મહાદન માંહે સાહેબજી ગુન્હા પૂછશે,
ત્યારે જવાબ કેમ દેશો રે?
પોતાની ધર્મપત્તિને મેલીને તમે,
પર સ્ત્રી સાથે પ્રેમ જ્યારે કરશો રે —ચેત ચેત—૧૨

ભાઈ! બેઉ બંધવા તે તો બહોત લડશે,
પછી કોઈ કોને ઘર નહીં જાશે રે,
તે તો માંહે માંહે અબોલા રાખશે,
એવો કળજુગ આવશે રે, —ચેત ચેત—૧૩

ભાઈ! જ્યારે આધ લાખ વરસનો એક દિન થાશે,
એવા સાડા ત્રણ દિવસ ભોગવશેરે,
ત્યારે સહસ્ત્ર કલાસુ સુરજ તપશે,
અગનનો મેહ વરસશે રે, —ચેત ચેત—૧૪

ભાઈ! ત્યાં તાંબા વરણી ધરતી હોસે,
અને તેના તાપે સહુ જલશે રે,
તહાં તે તાતલે થંભે બાંધશે,
શાહોજી ફરી ફરી લેખું લેશે, રે–ચેત ચેત–૧૫

ભાઈ! તહાં બુમો પાડીને જીવ દાજશે,
અને ખાલ સાણુસિયે તોડાવશે રે,
તે વેળા તમને દૌહેલી હોશે,
તહા ગોર–નર એહૂ આવશે રે–ચેત ચેત–૧૬

ભાઈ! જાપ જપોને ગોર નર નામનો,
અને ઘડી ઘડી વાર ન લગાડ શોરે.,
તે વેળા તમને દોહેલો નહી જાશે,
તબ ગોરનર કરશે મહેરબાની રે –ચેત ચેત–૧૭

ભાઈ! તમે ચેતી શકો તો ચેત જો,
કાલે સર્વે મરી મરી જાશે રે,
કાલે જે કહેતા તે તો દુર હોય છે.
બંદા ઘડી પૂરી નહી થાશે રે –ચેત ચેત–૧૮

ભાઈ! બહુત પાપ ત્યાં નહી લોપશે,
તમે જીકરે ફીકરે સાચ કમાવો રે,
તમે તરશો તો જ તરી જવાશે,
જો મહેર કરશે મારા હાજર શાહોજીરે–ચેત ચેત–૧૯

ભાઈ! મહેર કરશે મહેરબાન ઘણી આપણો,
અને તારશે તે આપણો શાહજી રે,
બંદા ચેતી શકો તો ચેતજો,
અહિ તમે દુજા ફેરા નહી પામો રે,–ચેત ચેત–૨૦

ભાઈ! માર પડશે ત્યારે તલ ફાઈ જશો તમે,
અને ઉત્તર કેમ કરી દેશો રે.,
પૂન્ય પાપ બેઉ ત્રાજવે તોલશે,
ત્યારે જીવડા બહુ જલશે રે, —ચેત ચેત—૨૧
ભાઈ! ત્યાં મારા મુનિવર એકઠા થાશે,
જ્યારે જાંબુદ્વિપમાં શાહોજી આવશે રે,
ગાફલ થઈ તમે નિન્દા કોઇની ના કરશો,
અને નીત નીત વાંચી જુઓ પુરાણ-ચેત ચેત—૨૨
ભાઇ! ભણે ઇન્દ્ર ઇમામશાહ સુણો મુનીવરો,
અને દિલમાંહે જ્ઞાન વિચારો રે,
આવી વાણી સુણી કરી તમે ચેતી ચાલો,
તમે કેમ ગુમાવો? મનખા જનમારો રે—ચેત ચેત—૨૩

જ્ઞાન—૧૫

ભાઈ! પશ્ચિમે પુનમ ચંદ્ર ઉગિયો,
અને અનંત કળા વર દાઈ.,
તે તો સ્વર્ગ મૃત્યુ પાતાળે પ્રકાશીયા,
તે ચૌદ ભુવન માંહે સોહી, —૧
ભાઇ! પોતે અલી મુર્તુઝા આવીયા,
અને અવર દુજા નહીં કોઇ.,
ઝુલ ફુકાર ખાંડુ કમરે બાંધીયા,
તે તો પોતે અલી રે સોહી —૨
ભાઈ! સવા લાખ રાજા જેણે મારીયા,
અને ઝુલ ફુકાર ફેરવી રે જાણ.,
તહાં ગોર નરનો જપાવ્યો રે જાપ,
કોણ હિન્દુ અને મુસલમાન ?, —૩

ભાઈ! તહાં વાજાં વાગે ને નોબત ગાજે,
અને ગરજે તે જમીન આસમાન.
વસમા કુંવારીને કોલ દીધો,
તે જાણો વિષ્ણું વરદાતા ઈમામ, –૪

ભાઈ! તહાં ઝાખાં મેઘા કિન્નર આવશે,
અને કરોડી પાંચ, સાત, નવ ને બાર.,
તહાં જય જય કારનો જગન વરતાવશે
ત્યારે નર નિષ્કલંકી થાશે સ્વાર –૫

ભાઈ! નુરાની વસ્ત્ર શાહો જી પહેરશે,
માથે મુગટ પર વાલ.,
હીરા જડંતર કેડે કંકણુ બાંધશે,
તહાં સર્વે દેવનો એક જ ઢાળ –૬

ભાઈ! ત્યારે તેજી પંખાલા પલાણુશે,
અને કોટે માણેક મોતીના જુંડા,
તેના પલાણે પાખેરે હીરા જડયા,
એવા પવન વેગી છે રે ઘોડા, –૭

ભાઈ! તહાં ચાલીસ ક્રિયાની પ્રણુ જોશે,
અને જેવા જેના રે આચાર.,
તેને તેવા ફલ શાહોજી આપશે,
સાહેબ પોતે કરશે ઉદ્ધાર –૮

ભાઇ ! સાચું બોલ્યા જે સદાયે કાલ,
જે જન્મમાં ન બોલ્યો રે જુઠ.,
તે નર જઈને બેસશે બેલડી,
અને તે રહેશે સાહેબને હજુર –૯

ભાઈ! જે નર જીકરે ફીકરે જાગીયા,
અને મન માહે લરજો રે જેહ.,
તેનો અરસ કુરસ ઉપર બેસણુા,
તેની સુરજ કળાની રે દેહ —૧૦

ભાઇ ! તે તો સાચા રે ખજાના મહાલશે,
અને કુદરતી ઉતરશે રે થાલ.,
તેને હેતે કરીને હાથે જમાડશે,
જેમ માતા ધવરાવે રે બાલ —૧૧

ભાઈ! તહાં ધોલ મંગલ ને અતી ઉત્સવ,
અને તહાં સતીયાં મંગલ ગાય.,
એવા પૂજાનાં ફલ તમે પામશો,
તેનો સુખ કહયો નવ જાય —૧૨

ભાઈ! ભણે ઈન્દ્ર ઈમામશાહ સુણો મુનીવરો
અને સાચા ઈમાની જે આજ રે.,
તે તો એવી સફાયેત પામશે,
તે અમરાપુરીમાં કરશે રાજ રે —૧૩

જ્ઞાન—૧૬

ભાઇ ! સોળ કળા લઈને ઉગીયા,
અને પુરણુ પુનમ ચંદ્ર જેવા.,
તે તો ભવને ભવને પ્રકાશીયા,
તેની અનંત કળાની રે દેહા, —૧

ભાઈ! તેની અકલ ગતનો પાર ન પાઇયે,
અને જહાં જોઈએ તહાં પાસ,
જીગર ચીરીને જેણે પદાર્થ બે કર્યા,
એક દિવસ અને બીજી રાત —૨

ભાઈ! રહેણી કરી તે રંગ ભોગવા,
દિવસ કર્યો રે પ્રકાશ.,
જેણે જેવા રે આરાધીયા,
ભાઈ તેને તેવા ફલ પાસ —૩

ભાઇ! જમીન આસમાન સાહેબે હેતે રચ્યા,
અને હેતે રચ્યાં ચૌદ ભૂવન.,
ચાંદો સુરજ બેઉ હેતે કર્યાં.
હેતે સરજ્યા પાણી પવન —૪

ભાઇ! એ ખાણી વાણી સાહેબે હેતે રચી,
અને હેતે ઉપાયા સર્વે રાય,
સાહેબે નવ લાખ તારા હેતે જડયા,
ભાઈ હેત વીના રે નહી કાંય —૫

ભાઈ! પોતે આરંભ હેતે કર્યો,
અને આદે ઉપન્યા રે હેત.,
આ વેદ કિતાબ હેતે રચીયા,
અને હેતે રચીયા બ્રહ્મ ખેત —૬

ભાઈ! સકળ વેદ સર્વે હેતે રચ્યા,
અને હેતે ઉપાયી સઘળી જહાન.,
એ કુદરત આપે પોતે રચી,
તે તમે જાણો શ્રીનકલંકી નાથ —૭

ભાઈ! પ્રત જુવો રે તમે પાછલી,
એણે શું શું કીધા રે કામ.,
તે વેદ વાળીને રતન તારીયાં,
તમે જાણો ગોર નર ઇમામ —૮

ભાઈ ! ટાઢો તે થંભ રાખીયો,
અને પ્રહલાદનાં કીધા રે કામ.,
દૈત્યને પાતાળે ચાપીયા,
તે તો જાણો પીર ઈમામ —૯

ભાઈ ! લંકાનો ગઢ જેણે તોડીયા,
અને સીતા વાળ્યા રે જહાં,
તે રણ માંહે રાવણ રોળીઓ,
દશ મસ્તક છેદયા રે ત્યાંય —૧૦

ભાઈ ! નન્દ ઘેર કાનજી વાલા રે જન્મ્યા,
અને માસી પુતના એ આપ્યો પાન,
તેને મુખમાંથી બોલવા ના દીધા,
તેના સોસી લીધા રે પ્રાણ —૧૧

ભાઈ ! કાનજીએ નાગ નાથી કમળ લાવીયા,
અને દેખંતા સારી રે જહાન,
મામા કંસના કપાળ જેણે ભાંગીયા,
તે તમે જાણો પીર ઈમામ, —૧૨

ભાઇ ! નવમે નારાયણ અવતર્યાં
અને બૌદ્ધ છે તેમનું રે નામ,
જેણે કૌરવ મારીને પાંડવ તાર્યાં
તે તમે જાણો પીર ઈમામ —૧૩

ભાઈ! પાંડવે સ્વામીજીનાં વચન શીર પર ધર્યાં,
જઈને હિમાળે ગળાવ્યાં હાડ,
નુરાની કાયા તેમની કરી,
પછી વૈકુંઠ લડાવ્યા રે લાડ—૧૪

ભણે ઈંદ્રિ ઇમામશાહ સુણો મુનીવરો,
માનો સત્ય કરી પ્રમાણ.,
જ્યારે દૈત્ય કળીંગાને મારશે,
ત્યારે નવખંડમાં હોશે રે જાણ -૧૫

જ્ઞાન ૧૭

ત્રણ જુગમાહે અવતાર નવ થયા જાણ,
આજે યુગ ચોથે અલખ વખાણ -૧
જ્યારે દશમો અવતાર જાંબુદ્વિપમાં ધરે,
ત્યારે જુગ પાંચમાં આવી પરવરે, -૨
દશમે અવતારે સ્વામીનું નકલંકી નામ
મન કરો આરસો અને દેવો રે દાન -૩
વખડી વેળામાં ન ડોલાવશો ચિત,
સ્થિર રહેશે સ્વામી છલકશે પંથ -૪
સ્વામી રાજા ઘોડે ચડે તેના આગમ જોએ,
સતિ માંહે રહેશે કોઇ કોઇ -૫
વખડી વેળા જયારે રવ, રવ, તાપે,
ત્યારે માતા પિતાથી પુત્ર છુપે, -૬
જે કોઈ પંથે ચડીને સતી કહેલાવે,
તેનામાં સહનશીલતા બહુત મુકાવે -૭
જ્યારે રાજપાટ દાનવનું રે થાએ,
ત્યારે દયા ધર્મ તે દિલમાં નહીં રહે -૮
તે દહાડે પાંડવ પ્રગટ થાશે,
તે તો રાજપાટ સિંહાસને બેસશે., -૯

એકાણુએ છમછર અને અસાડ માસ,
સ્વામીજી આપશે પશ્ચિમથી પ્રકાશ –૧૦

બાણુએ સંવત્સર અને શ્રાવણ માસ,
પાંડવ આવશે જાંબુદ્વિપ મોઝાર –૧૧

ત્રાણુએ સવંત્સર અને ભાદરવો માસ,
જગાડશે દુનિયાને સઘળો સંસાર –૧૨

ચોરાણુએ સંવત્સર અને આસો રે માસ,
ત્યારે દૈત્ય કાળીંગાની સ્વારી થાએ –૧૩

પંચાણુએ સંવત્સર અને કારતક માસ
ત્યારે સ્વામીરાજાતોરીંગપલાણેપ્રકાશ–૧૪

છન્નુએ સંવત્સર અને માગશર માસ,
અસત અને કુડ બહુ થાશે પ્રકાશ–૧૫

સતાણુએ સવંત્સર અને પોષ માસ,
આવશે હનુમાનને કરશે પ્રકાશ –૧૬

અઠ્ઠાણુએ સંવત્સર અને મહા માસ,
પ્રથમ આવે હરિશ્ચચંદ્ર અને પ્રહલાદ –૧૭

નવાણુએ સંવત્સર અને ફાગણ કેરો માસ,
પાત્ર નકલંકી કરશે રાજ –૧૮

સૌકાએ સંવત્સર અને ચૈત્રનો માસ,
ત્યારે ઘેર ઘેર વરતાશે રાજ, –૧૯

તેણે દાડે પશ્ચિમે ઉગશે ભાણ,
ત્યારે નવખંડ પૃથ્વીમાં હોશે રે જાણ –૨૦

વદે દેવી સુરજા રાણી, ગોર નરની રે કથા
આપણો સ્વામિજી આવે નમાવો માથા –૨૧

ચૌદ લોક જેનું ધ્યાન જ ધરે,
તે તો કેમ મારૂ અને તારૂ કરે ? -૨૧

ઉમ્મત દુનિયાને સઘળો સંસાર,
જે સ્વામીને સેવે તે ઉતરે પેલે પાર -૨૩

ઈંદ્ર ઈમામશાહે આગમ ભણ્યા,
ત્યારે રૂખેસર રહેશે વિરલા જાણ -૨૪

જ્ઞાન ૧૮

દેશ રે દેહલ્લમ અને શાહેર છે વરજા,
ત્યાં અવતર્યા શાહ અલી મુર્તુજા જાણ -૧

મુર્તુજા અલીનું નર નિષ્લંકી છે નામ,
તે પંચ નદી મુલસ્થાને કરશે મેલાણ-૨

વાત હમારી માનો કાલીંગા ધણી,
એમ મુખે વદે દેવી સુરજા રાણી -૩

એ સમર્થની સાથે નહી થાશે રે સંગ્રામ
મારશે કાળીંગા તને તમારો ફેડશે ઠામ-૪

સૈન્ય બહુ ચાલે નર નિકલંકી તણા,
જાંબુદ્વિપમાં સૈન્ય મળશે રે ઘણા -૫

દેશ પુર્વ ચીન નગરી હો જાણ,
ત્યાં અવતર્યો દૈત કાળીંગો નિરવાણ -૬

બહુ દળ ચાલે દૈત્ય કાળીંગા તણાં,
તે અભંગ સાથે યુદ્ધ કરશે ઘણા, -૭

કમળા કુંવર ને સુરજા દેવી રાણી,
અઢી કરોડ જીવ ચીનમાં રહેશે જાણી-૮

કૃતા, ત્રેતા જુગની સંધી ઉલ્લંઘી હો જાણુ,
દ્વાપાર જુગમાં દૈત્ય હણ્યા નિરવાણુ –૯

આજ કળજુગ માંહે સાચી સંધિ હો સાર,
તેતો દશમે છે હરી નિષ્કલંકી અવતાર –૧૦

એમનાં બહુ દલ મળશે ઘોર અંધાર,
અવર કેટલા? નહી અન્ત કે પાર –૧૧

અગલાને પાણી પાછલાને કાદવ પાવે,
એવો દલ ચાલે કળીંગા હો રાયે –૧૨

તેનો હમથી પાર નહીં રે લેવાયે,
છનું કરોડી તમારા મરશે જાએ, –૧૩

ઝીણી છે તોપ અને મારશે તીર તંમચી,
કહે સુરજા રાણી મારી વાણી સદા સાચી–૧૪

માથે મેઘા ડમ્બર અને સંગ્રામે રણ ગાડે,
તે દૈત કાળીંગો રણ સંગ્રામે ચડે–૧૫

શાહના સહસ્ત્ર ઘોડાને સહસ્ત્ર નિશાન,
ખાંડુત્રિધારૂ એવું શાહનું એંધાણ –૧૬

તે તો ઘોડે ચડશે ત્રિભોવનનો રાય,
તે તો દૈત્યોને શીર મેલશે રે ઘાય –૧૭

એમ મુખે વદે દેવી સુરજા હો રાણી
તમે મારી વાત માનોને કાળીંગા હો ધણી–૧૮

ત્યારે કોપ કરીને બોલશે કાળીંગો હો રાય,
હું ત્રિભોવન વાળુ એક ઘાય, –૧૯

અજાણી રે તુ સુરજા વાદ શુ કરવા કરે?
નવખંડ માંહે મારી આણ ફરે –૨૦

અમારા ઝાઝેરા જોધાને જોર સોર લડે,
આ દૈત્ય કાળીંગો પોતે સંગ્રામે ચડે —૨૧

કાળીંગાને મારીને શાહ એકાંતે મળે,
ત્યારે ચારે જુગની ભ્રાંત રે ટાળે —૨૨

સદગોર બ્રહ્માનો જાંબુદ્વિપ માંહે વાસ
અનંત જીવોની પુરશે રે આસ —૨૩

સદગોર ઈંદ્ર ઈમામશાહ બોલ્યા રે જ્ઞાન,
તમે ગત ગંગા રાખો સદક ઈમાન—૨૪

જ્ઞાન—૧૯

હેજી—અપરંપાર જ્યારે આવશે,
અને વસેલા ઉજાળશે.,

ઉજ્જડ ખેડાને સાહેબ ફરી વસાવશે,
અપરંપાર જ્યારે આવશે,

હરી હરી દેવ હવે કેને શરણે રહીએ?
કહો સાહેબજી હવે કોને શરણે રહીયે —ટેક

પાપ પરગટ ધરમ ગુપ્ત, ચંદા સુરજ ગ્રહ,
ગ્રહીયા એહ સંસાર, છલીયાં—હરી હરી—૨

ધરતી સર્વે ધમ ધમશે,
ત્યારે પાતાલે નાગ કંપશે.,

જ્યારે કળજુગ પ્રવેશે,
ત્યારે પાત્ર નકલંકી પધારશો—હરીહરી—૩

ખપ્પર ખન્ના ચાલશે,
ત્યારે ચરણા ચરણ વાગશે,

ઘણી દાનવને મારશે,
રાજ રૂષિઓને કરાવશે. –હરી હરી–૪

માહે તુરિંગ પલાણુશે,
ત્યારે ધરતી બધા ખળભળશે,
ચંદ્ર અને સુરજ તારા
સાહેબ, ક્ષણુ માંહે ઢંકાવશે–હરી હરી–૫

અપરંપાર જ્યારે આવશે,
સ્ત્રી રોતા બાળક મેલશે.,
એવી વખડી વેળા માંહે,
અઘોર પાપ વરતાવશે –હરી હરી–૬

અપરંપરા જ્યારે આવશે,
ગઢ ચિનવા નગરી ભાંગશે.,
આબુ, પાવાગઢ માંહે
સાહેબ તોરણુ બંધાવશે,–હરી હરી–૭

અપરંપાર જ્યારે આવશે,
ગૌ દાંતે તૃણુ નહી ધરે.,
ત્યારે ઝાડે સીકાં બાંધશે,
ત્યારે ડુંગરે દીવા બળશે –હરી હરી–૮

ત્યારે ઇમામપુર પીરાણા માંહે,
તુમા રોડ વરતાવશે.,
નદી સાબરમતી સરસ્વતી,
તે લોહીની પુર આવશે, –હરી હરી–૯

ભણે પીર ઇંદ્ર ઇમામશાહ,
તમે સુણો મુનીવરો,
પશ્ચિમથી દલ સાહેબનો,
તે માર માર કરતા આવશે, -હરી હરી-૧૦

જ્ઞાન ૨૦

વાર શુક્રવાર જાણીયો રે,
પુનમ પ્રગટે મોરાર - પુનમ,
અશ્વિની નક્ષત્રે સ્વામી મારો આવશે-૧

એરાવત હાથી શણગારસે રે,
ઉપર છતર મેઘા ડમ્મર-ઉપર છત,
ચમર ઉડાવે સદગુરૂ દિના નાથના-૨

કેડે કટીઆર અને બાકડો રે,
બાંધી કમર કટી આર - બાંધી.,
નવરંગ ટોપી સાહેબ શીર પર ધરે-૩

માથાના મુગટ નુરના રે,
માંહે સોળ કળા પ્રકાશ - માંહે.,
પિતામ્બર પહેરે સાહેબ હેમના -૪

સાહેબજીને પાંચે શોભતા રે,
પહેર્યાં પાંચે પોશાક, - પહેર્યાં..
જામા પહેરે સાહેબ હેમના -૫
જાન સ્વારી હેતની રે,
ઝાંખા કરોડી નવાણે સાથ. ઝાંખા.,
છપ્પન કરોડી મેઘા આવશે -૬

જાન સવારી હેતની રે,
કિન્નર કરોડી બત્રિસ સાથ- કિન્નર.,
તેત્રીસ કરોડી દેવતા આવશે –૭

પાંચસો પ્રહલાદ આવશે રે
સાત સુ હરિચંદ્રરાય-સાત સું,
નવસુ યુધિષ્ઠર આવશે –૮

બારસુ ગુરૂ સહદેવ આવશે રે,
જોઉ છું સદગુરૂની વાટ-જોઉ છું,
અનેક જોધા ત્યાં શણગારશે –૯

સાંજ પડી ને દિન આથમ્યા રે,
સદગોર નર પ્રગટ હોય-સદગોર,
સ્વામી પોતે ધરમ જગાડશે –૧૦

ગોરખ પહેરે મેખડી રે,
બરછી ભાલો છે હાથ- બરછી,
દલની આગળ સ્વારી ચાલશે –૧૧

આગમ ભાખીયા ઈન્દ્ર ઈમામ શાહજીરે,
મુનીવરો થાઓ હુશીયાર મુનિવર
સતપંથે સાચા નરને સેવીએ –૧૨

જ્ઞાન–૨૧

બાનાવળી સાચી સાહેબની,
આયા જમ્બુદ્વિપના સુલતાનજી,
તેડાઓની સાચા સાહેબની,
હોશે હલ હલંકાર જી –૧

પશ્ચિમથી દળ જ્યારે આવશે,
બાજે તબલ નિશાનજી —૨

સ્વામી રાજા ચડસે કટક સાથસું
પાંડવને કરશે આગેવાન જી —૩

ડેરા દિયા શાહ હુસેની તણા,
રાજા રૂખેસર ભાન જી —૪

ક્ષત્રિયોનાં ક્ષેત્ર ખુંચાવશે,
વાંચી જુઓ ને પુરાણ જી —૫

ખેડીયાં ખુરદડ જ્યાં વશે,
ગઢ ઉચે મુલસ્તાન જી —૬

ચીન નગરી ગઢ બાકડો,
દાનવ ઝુઝે રે ઝંઝાળ જી —૭

તલવારની ટાળી વાજશે,
ભાલા બરસે રે બરસાત જી —૮

ગોળા છુટે ખરા લોહા તણા
કાયા તજે રે પ્રાણ જી —૯

શમશેર ચમકે બીજલી,
ભાલા ઝુઝે રે ઝંઝાલ જી —૧૦

કાળીંગા દાનવ ઘાયલ કરશે,
શાહ બેઠેગે પુરે દિવાન જી —૧૧

નવ અવતાર નવ દાનવ છેદયા,
દશમે કાળીંગાની જાન જી —૧૨

દાનવ મારી ને દલ પલટશે,
ફરે મેહંદીની ઇમામની આણજી —૧૩

રૂષિવરને રાજ દેવડાવશે,
વાચી જુઓને પુરાણુજી —૧૪

એમ બોલ્યા ગુરુ સુદરદીન વિનંતી,
આવશે સોહી દિન જાન જી —૧૫

ગ્નાન ૨૨

એજી ! શાહની સેવા એ તમે જાગજો,
આવિયો તે કવલનો કરારીયા જી ૧
એજી ! આવશે નિષ્કલંકી પાત્ર મેહેન્દી,
શાહોજી કરશે દુલ દુલ સ્વારીયા જી ૨
એજી ! અદલ કરશે શાહ કરારીઆ,
હાથે લેશે તે ખાંડુ ત્રિ ધારીયા જી ૩
એજી! ચારે દિશાએ શાહ ચકકર ફરશે,
એજી ! મારશો કુડા કુફરા નિયા જી ૪
એજી ! કુડા કાજીને શાહ કાફર કરીને મારશે,
જેનરને પાસે ગોર વજીરીયા જી ૫
એજી ! નહી ત્યાહા ખાન અને મલેક
રાજા અને રંક એક સમાનિયા જી ૬
એજી ! ગફલંત દુર કરી જાગજો
સુતા તે સર્વે સંસારીયા જી ૭
એજી ! આપણુને ઉમ્મીદ છે સાહેબની
ભણે પીર શમ્મસ દાતારીયા જી ૮

જ્ઞાન ૨૩

એજી ! પાછમશી દલ આવશે
સેન શંખનું અન્ત નહિ પાર
ઘોડે ઘોડે શંખ વાગશે
એવા કંટક ચડે ખુરાશાન
એજી ! દિલ્લી નગરી ગઢ ભાંગશે
જ્યારે સાહેબ આવશે ટેક૦

એજી ! ભાંગશે ગઢ ઉંચે મુલસ્તાન
નગર ઉજાડશે અતિ ઘણા
હોશે નવખંડ વાસ
જ્યારે સાહેબ આવશે દિલ્લી–૧

એજી! મેરામણ પણીના સુકશે
વાય રે અડોડો જાય
ખડગ ખાઈ નર જીવશે
દડીયર દસમે માસજી દિલ્લી–૨

એજી! ત્યારે નાના મોટાને નહી માને
એવુ કલજુગ આવ્યો જોયજી
ન્યાત પર ન્યાતને પરણુશે
જીસ ઘેર સંપત હોય દિલ્લી–૩

એજી!માગસર માસની પુનમે
પ્રહર પાછલે વાય
આગળ દિસે ભાઈ બિહામણા
નહો હોય રાખયહારજી દિલ્હી–૪

એજી ! ત્યારે જલમાહે જીવે જેમ માછલી
તેઓ એઓરે સંસાર
નઉ વેળા સ્વામી મારો અવતર્યા
દસમે તે આવણુ હારજી૦ દિલ્હી–૫

એજી ! પાંચસો ગાંવ માહે એની પારણુ
સહસ્ત્ર સો ગામ માહે એની સીમ
નગર દિસે રળીયામણા
પીર બોલ્યા સદગુરૂ નૂરજી૦ દિલ્લી–૬

જ્ઞાન ૨૪

ભાઈ! પાપ ત્રાજવે તોળાશે
સતગુરૂ લઈ ચઢશે કટાર
ભાઈ પાછમથી દલ આવશે
ત્યારે કંપશે વરણ અઢાર ૧

ભાઈ! ઘેર ઘેર કંપશે મેદની
અને ધરતી ના ઝાલે ભાર
નાના બાળક જાપ બોલશે
તેનો કોઈ ન સમજે સાર ૨

આગમ એવું કલજુગ આવશે
અને દિલમાં કરીને વિચાર
સતીની પાલખીએ સ્વામીજી બેશશે
ત્યારે ધરમ ત્રાજવે તોળશે ૩

ભાઈ! ન્યાત પર ન્યાત ઇકઠાં થાશે
ત્યાહાં નહી વર્ણ વિચાર

ત્રણ કલ્પ આગળ થઈ ગયાં
અને ચોથે સર્જનહાર ૪

ભાઇ! ખરી એંધાણી સ્વામીજી માગશે,
અને કોઈ કોઈ પ્રગટ થાય
ભાઈ! આવી રમત સ્વામીજી માંડશે,
અને ખેલશે ચૌક મેદાન ૫

ભાઈ! દુનિયા જ્યારે ધુળ ઉડાડશે,
ત્યારે વર્ષશે નૂર અપાર
કાળીગા દાનવને સ્વામીજી મારશે,
ત્યારે નવ ખંડમાં હોશે જયજયકાર ૬

ભાઈ! ધરતીએ ધુમજાળ ઉડશે,
અને પાપી તે પરલે જાય રે
જુગ પાંચમે સ્વામી રાજા પર વરે,
અને ખાપણ જુગ ચાર ૭

ભાઈ! બોલ્યા સદગુરૂ શાહદેવ વિનંતિ,
અને નર ચઢશે નિરવાણ
ભાઈ ત્યારે સરવે દેવ ઋષિવર ચઢશે,
તેણે ક્ષણુ ના લાગે વાર ૮

જ્ઞાન ૨૫

કે, એક પુરુષ પશ્ચિમ થકી આવેશે,
કે. શાહ જમ્બુદ્વિપે આવશે હો જી ૧

કે, ઐરાવત હાથી સ્વાર,
કે, દુલદુલ તુરીંગ પલાણશે હો જી ૨

કે, હનુમાન વાન્દરાનું સૈન,
કે, સાથે ચલાવશે હો જી ૩

કે, પહાડને પર્વત એણે
કે, ફુંકે ઉડાડશે હો જી ૪

કે, નદિયોના નિર્મલ નીર,
કે, અધર ચલાવશે હો જી —૫

કે, ચીન નગરી, કરશે પલાન,
કે, પાછું ધરાવશે નામ હોજી —૬

કે, ચીન નગરી, મહા ચીન
કે, તહાં શીશ મુંડાવશે હો જી, —૭

કે, કમલા કુંવરને શીર ભરાવશે
કે, પીતા નહી જાણશે હોજી —૮

કે, સુરજા રાણીના હાથમાં દડુલો,
કે, દૈત્ય કાળીંગાને મારશે હોજી., —૯

કે, આજ કલીકાલે દશમો અવતાર,
સતીનો સણગાર અવતારશે હો જી —૧૦

કે, એમ ભણે પીર ઈમામશાહ,
કે, એવા દિન આવશે હો જી, —૧૧



ૐ શ્રી ઈન્દ્ર ઈમામશાહ બાવાની વાણી

જ્ઞાન ૨૬

વિરાભાઇ સાંભળો રુખેસરો ! ગુરૂ કહે,
નર ને નારાયણ દેવે, એમ કહ્યું !
વીરા મારા ભાઈ ! સંસાર સપનું કરી જાણજો
અને રહેજો આપણા સત ગુરૂજીને પાસ
જેવા રે થકી દિદાર પામીયા,
હોશે લીલા કે વલાસી –વિ૦ સાં૦–૧
,, આવા સતગુરૂનું કહ્યું નહીં કીજીએ,
તો સત ધરમ નહી આવે સાથ,
તલ એક સુખને કારણે,
આગળ હોસે રે હલાખ, –વિ૦ સાં૦–૨
,, આ દુનિયાની ગફલતે ના પડશો,
એવી ગફલતે ખોસો આપ,
ફરી ફરીને પસ્તાવશો હોજી,
જઈ પડશો લાખ ચોર્યાસી માહે વિ૦સાં૦–૩
,, અંતકાળનું સગુ તારૂ કોઈ નથી,
નહી તારા માઈ ને બાપ,
નહી તારાં છોરૂને વાછરૂ
નહી તારા કુટુંબ પરિવાર વિ૦ સાં૦–૪
,, શ્રી સત ગુરુ ઈંદ્ર ઇમામશાહજીએ
એમ ભાખીયું રાખજો આપનું આપ,
એ હો સતગુરૂ આપણા આગળ હોશે,
તે તો આપશે અમરાપુરમાં ઠામ વિ૦સાં૦–૫

શ્રી હાજરબેગ મહારાજની વાણી

જ્ઞાન ૨૭

સખી ! સોમે તે સર્જન હાર, સનમુખ રહેજો રે,
નર મહમદશાહ દાતાર, દર્શન દેજો રે —૧

સખી ! મંગળે મહાસુખ ધામ, પીરાણા જેવું રે
નવખંડ પૃથ્વીની માંહે, ના દિઠું એવું રે, —૨

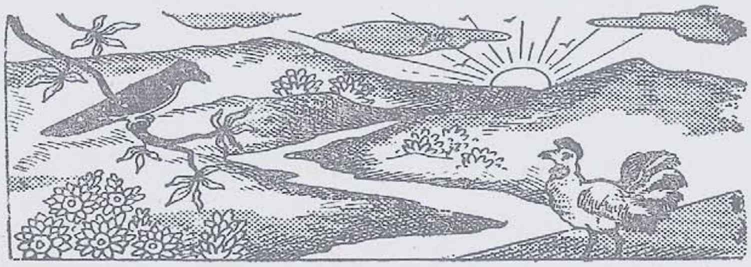
સખી ! બુધે તે સદબુધ, ગઈ, હું તો ભુલી રે,
લાગ્યો ઈમામશાહ સાથે રંગ, ખીલી મારી કલીયારે ૩

સખી ! ગુરુને ગોવીન્દ જાણો. અમને મળીયા રે
લાખ ચોર્યાસીના ફેરા. અમારા ટળીયા રે, —૪

સખી ! શુકરવારી બીજ, જે કોઈ કરશે રે,
તેમના કોડીક જન્મના પાપ, પલમાં પરલે થાશેરે—૫

સખી ! શનીના સત્ય વચન, તમે પાળ્યા રે,,
કાળના કાંટા હતા મનમાંય કાઢી નાખ્યા રે, —૬

સખી ! આદીત વારે આદ, નીરંજન આવ્યા રે,
સત ગુરૂ પ્રતાપે હજાર બેગ ગાય, દર્શન પાયા રે—૭



શ્રી સત આભાર, આત્મોદ્ગાર

પ. પૂ. શ્રી. ઈન્દ્ર ઈમામ પધારી,
સતગુરુજીએ કીધા અમને આભારી॥
એમણે હળીમળી નીત દર્શને આવો,
રંગ રંગની ખુબીઓ જમાવો,
થાય છે આનંદ ભારી–સતગુરૂજીએ કીધા–૧
"તત્વમસી"નો કીધો ઉપદેશ,
અજ્ઞાન અંધારુ રહ્યું નથી લેસ
તે મહીમા છે અંતી ભારી–સતગુરુજીએ કીધા–૨
સંઘ સર્વેમાં દર્શન દીધા,
અમીરસ પાન પીયાલો પીધા,
એવા સતમહંતની બલીહારી–સતગુરુજીએ કીધા–૩
દરસાવ્યો નીજ રુપ તમારુ
કામ, ક્રોધ, લોભ મોહને વાર્યું.
ભકતી દીધી છે બહુ સારી–સત ગુરુજીએ કીધા–૪
અતી ધન્ય ભાગ છે હમારા,
કહે સતપંથી સેવક તમારા.,
વારે વારે જાઉં બલીહારી–સતગુરુજીએ કીધા–૫

જ્ઞાન—૨૮

ત્રણ જુગના–જીવડા સ્વામી, ઘર જઈ પોતા,
તમે વેદ ઓળખીને ચાલોજી–૧
ચોથા જુગને કળજુગ કહીએ,
પ્રભૂ માણસ રુપ લઈ આવીયાજી–૨

ભાવ ધરો, મન ભક્તિ કરો,
ગુરુ બ્રહ્માજીનું નામ પિછાનો જી -૩
નામ પિછાનો તેની જીકર કરો,
તો જીકરીત જીવડા છુટશે જી -૪
તરના હોય તો તુમ્બા રાખો.
ભવ સાગર પાર ઉતરના જી -૫
રાત દિન તમે ગત-માંહે મળો,
આજે કલજુગ વેળા તેનો વારોજી -૬
ચેતન હારા તમે ચેતી સકો વીરા,
તારા વળતા જીવ પસ્તાશેજી -૭
દુનિયા રે કુનિયા ઉડકર જાશે,
દેખત દિન તારા આવશે જી. -૮
અનન્ત કરોડીનો ભરણો ભરાવશે,
તમે સર્વે મળી સાથે ચાલો જી. -૯
એમ બોલ્યા શ્રી સતગુરૂ બ્રહ્મા
તમે સાંભળો રુકેસર વીરાજી. -૧૦
તમે સહુ મળી જીકરે ફીકરે,
પીર-શાહ પીર-શાહ પુકારો જી. -૧૧

જ્ઞાન ૨૯

પ્રથમ પહેલા નામજી અપના, સાહેબજીનૂ લીજિએ
લોભ અને સ્વારથ, વિરા ભાઈ ન કિજિએ-૧
આવેંગે સ્વામિ રાજા, વાગેંગે તુરય્યાજી
વાગેંગે તબલ, ધમામ, ઉડેંગે નિશાણુજી -૨

રોવેગા બ્રાહ્મણ-જોશી વરત્યા વાચે વેદજી
રોવેગા કાજી મુલ્લા,, પઢે નહિ કુરાનજી -૩
રોવેગા સન્યાસિ સેવડા, પુજન્તા પાષાણજી
રોવેગા ભરડા ભોપા, જે ઠાલા ધુણાવે શીશજી -૪
રોવેગી આલમ દુનિયા, રોવેગા સકલ સંસારજી
એક ના રોવે મારા મુનિવર,
જેઓએ ગોર-નરને જાણ્યાજી -૫
શ્રી ગુરુ શહાદેવ ગિન્યાન બોલિયા,
સુનો મારા મુનિવર વીરજી
આગળ કથીને સંભળાવિયા, ચેતે તે ચેતનહારજી-૬

જ્ઞાન ૩૦

—હોળી હૈયાની—

જે મનુષ્યને બીજા અન્યોન્ય ઉપસ્થિત ધર્મ, સાંપ્રદાય-પંથ તરફ જોઇને બાહ્યાભ્યંતર ઘૃણા નિર્માણ થતી હોય તે મનુષ્યને—

કોઇ કરશો ન ક્રોધ જરાય, હોળી હૈયાની,
તેથી તન-મન તપી જાય, હોળી હૈયાની-કોઇ-૧
ક્રોધ અગ્નિ ભયંકર ભારી ભારી
સુખ શાંતિને નાખે બાળી બાળી,
લાય અંતરમાં લાગી જાય, હોળી હૈયાની-કોઈ-૨
કાળો કાળો એ ક્રોધ મહા જહરી જહરી
એ તો જીવ તણો મહા વેરી વેરી
એથી સાવધ રહેજો સદાય, હોળી હૈયાની કોઈ-૩

ક્રોધ આવેશમાં આવી ડોલે ડોલે
ભાન ભૂલીને જેમ તેમ બોલે બોલે
મહાહાની એનાથી થાય, હોળી હૈયાની–કોઈ –૩
દુષ્ટ દાનવે દાટ નાખ્યો વાળી વાળી
ગાય ગિતા માંહી ગીરીવર ધારી ધારી
નવ ક્રોધિને કોઈ ચહાય, હોળી હૈયાની–કોઈ –૪
જો પ્રગટે અંતરમાં આવી હોળી
ભક્તિગંગામાં નાખો બોળી બોળી
દાસ....પ્રેમથી ગાય, હોળી હૈયાની–કોઈ –૫

જ્ઞાન ૩૧

કુદરત

મયુરના પીંછની અંદર, વિવિધ રંગો પુર્યા કોણે?
મકાઈની મહી દાણા, વ્યવસ્થિત ગોઠવ્યા કોણે?
કુસુમની કાચી કલિયોમાં,
સુગંધી એ સિંચી કોણે? મયુર–૧
નથી ચક્ર, નથી ચાવી, પ્રતિક્ષણ બોલતી ટક ટક
જાણે જનના ઉરસ્થલમાં,
જડી ઘડીયાળ આ કોણે? મયુર–૨
મનોહર રંગની પ્યાલી, મહી બોળી સજવી પીછી.
પલકમાં વ્યોમ પટ ઉપર,
ધનુષ્ય એ ચિંતર્યું કોણે? મયુર–૩
હજારો ગાઉ છેટેથી, પરસ્પર ભેટવા તલસે
પ્રબલ ખેંચાણ પ્રેમીના,
હૃદયમાં એ મૂક્યું કોણે? મયુર–૪

અહર્નિશ તેજ દેનારા, લીધા વિણુ એક પણ પાઈ,
શશીને સૂર્ય બે દિવા,
ગગનમાં ચેતવ્યા કોણે? મયુર–પ

વિશ્વ વિધાતાની સ્તુતિ–૧

જય ગુરૂદેવ વિશ્વ વિધાતા,
અખિલ જગતમાં આપ પૂજાતા (૧)

આદ્ય પુરૂષ મમ–જીવન સ્વામિ
દીનબંધુ તું અંતરયામી,
નહીં જોઈ તારામાં ખામી,
ઓહો સુખ દાતા, જયગુરૂદેવ (૨)

સૃષ્ટિ સર્જી સર્વને પાળ્યા,
પરીબ્રહ્મ પરમેશ કહેવાયા,
જાંબુ દ્વિપે આવીને વસિયા,
હે જગત્રાતા..........જયગુરૂદેવ (૩)

પ્રથમ ગુરૂ બ્રહ્માજી આવ્યા,
તે સદ્દગોર ઇમામ કહેવાયા.
પીરશાહ નામના જાપ જપાવ્યા,
નિત્ય ગુણુ ગાતા...જયગુરુદેવ (૪)

ઓહો સ્વામી તું વ્યાપક જગમાં,
ભકત જનોના રહે છે તનમાં,
રાખો અમને તુજ ચરણુમાં
નિજ સુખ પાતા...જયગુરુદેવ (૫)

નાયા કાકા દીનને તાર્યા,
ભાભારામ મહારાજને મળ્યા,
કીકીબાઈને દર્શન આપ્યા,
નામ અમ્મર થાતા....જયગુરુદેવ (૬)
એવી રીતે રાખો અમને,
લક્ષ ચોર્યાસી તાળો ભયને,
પાયે લાગી કહું છું તમને,
સતપંથ દીખાતા...જયગુરૂદેવ (૭)
મમ મંદિરે આવો વહાલા
સેવક કરે કાલાવાલા,
એવા તમે છો દીનદયાળા,
ઓહો જુગદાતા, જયગુરુદેવ (૮)
જે ગાશે તમારા ગુણ,
તેનામાં તે સત્વ ગુણ,
બુદ્ધિ તેની છે નીરગુણ,
તુજને પરખતા,..........જયગુરુદેવ (૯)
દાસ કરે વિનંતી કરજોડ,
તું અવિનાશી અજોડ
નર નારાયણની છે જોડ,
તે તેજે ભવીતા................(૧૦)
જયગુરુદેવ વિશ્વ વિધાતા,
અખિલ જગતમાં આપ પૂજાતા....

અખંડ આનંદની સ્તુતિ–૨

જે જે જે જે અખંડાનંદ,
બેઉં કરજોડી કરુ હું વંદન–૧

જેનો મહિમા છે અગમ્ય અપાર,
ત્રણે લોગનું એ તત્વ જ સાધન–૨

જેને વંદ ગાયા ને તે ને તે કરી,
બતાવ્યું સત્ય ગુરુએ અહી–૩

લાગું તેને વારંવાર પાય,
જેનું નામ લેતામાં કર્મ કપાય–૪

અનામીના નામ પડયારે અપાર
અરુપીના રૂપ સીરો મનસાર–૫

નિર્ગુણીના ગુણ ગણ્યામાં ન આવે,
એવું તારું સામર્થદેવ કહવે–૬

છાના છુપી રહ્યા છોરે–બેપાઈ,
તારી ગતિ ગુપ્ત નારે લેખાઈ–૭

અછેદ અભેદ અનુપમરુપ,
અગમ્ય અપાર અનંત સ્વરુપ–૮

નિરંજન નિરાકાર નિર્મળ
એ નિર્ગુણ નાથ જાણું બળ બળ–૯

સચ્ચિદાનંદ સ્વરુપ અપાર.
સૂર્ય કોટી કલા રવિસાર–૧૦

નમું નમું તોયે કરું પ્રણામ,
શૂન્ય શિખરમાં છે જેનું ધામ–૧૧

એક તું એક તું વ્યાપક રામ,
તારા અંગે લેપે નહીં કાંઈ કામ–૧૨
અસંગ અમર અલક્ષ અજીત,
અવિનાશી અજન્મા હો નિત્ય–૧૩
પુરણ બ્રહ્મ પુરી રહ્યા છો પર,
જોતાં કાંઈ એ ન આવે ન કર–૧૪
અદ્દશ્ય એવા એ ચૈતન્યવર્ધન,
જોતાં કાંઈ પહોંચે ના બુદ્ધિ મન–૧૫
જેણે જોયું તે તો ત્રિગુણી માયા,
તે તો તેટલા માંહે અંધાયા–૧૬
દીઠું ઉપજેલું જે વનસાય,
તેનો અધિષ્ઠાતા તું ત્રિકમ રાય–૧૭
તને જોવા જાતા તે જોવાય,
જોનારો પોતે માંહે સમાય–૧૮
એવી અટપટી છે તમારી કલા,
સમજણ વિના ભૂલા પડયા ભલભલા–૧૯
તારી કૃપા હોય તો ભવ ટળી જાય,
આવ્યા શરણે રાખજો હો પ્રભૂ રાય–૨૦
મારા અવગુણ અનંત અપાર
તમે રખે જોતા ઓ સરજનહાર–૨૧
આવ્યા શરણે તેને ઉગારી લીજે,
તમો ખુદ પાળી પોતાનો કીજે–૨૨
આપો નિજ નામને ભક્તિ તમારી,
કહું છું કૃપાનીધી રે પોકારી–૨૩

ભુલવણીમાં ભુલે નહીં મમ ચીત્ત.
કહે જન ઘેલા આનંદ નિત્ય-૨૪
જે જે જે જે અખંડાનંદ, બેઉં કર જોડી કરું હું વંદન

પરમાત્માની સ્તુતિ—૩

વાણી અને મન વિચાર કર્યો ન પામે,
જ્યાં નેતિ નેતિ કરતાં શ્રુતિઓ વિરામે.
જેના વડે વિવિધ શાસ્ત્ર પવિત્ર ધામ.
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૧

કાલ સ્વભાવ મય સૌથી સ્વતંત્ર.
જેણે રચ્યું જગત વિચિત્ર યંત્ર.
જે શુદ્ધ બુદ્ધ સુખ કારણ પૂર્ણકામ,
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૨

જે બુદ્ધિ આદિ શુભ સાધન આપનાર,
જેની કલા કુશળતા પ્રગટી અપાર
જેને ન દોષ ગુણ રુપ ન નામ,
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૩

જેના ભયે પૃથ્વી ધારણ ધર્મ પાળે
જેના ભયે નહિ હુતાશન સંઘ બાળે.
જેના ભયે પવન વાય ન થાય ધામ
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૪

જે જીવ શીવ અને જગત સ્વરૂપ,
જે અચરાચર તણો અતિઉગ્રરૂપ
જે સૌનું અતી અતિ અલૌકિક એક ઠામ
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૫

પાસે છતાં અદૃશ્ય વસી રહે છે.
છેટે છતાં હૃદયમાં રમ્યા કરે છે
જેને જરાય અડે ન જડ હાડ ચામ
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૬

સિમા તજે ન સમુદ્ર સમર્થ તોય,
જેનો કદાપિ વિનાશ ન કરે કોય.
આકાશથી ન અવકાશ તજાય આમ
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૭

સત્તાવડે પૂર્ણ પોષણ કરે છે.
સત્તા વિધિ વડે વિવિધ અવતાર લે છે.
જેના વિષય પરાક્રમમાં સૌને વિરામ,
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ —૮

જેને વિરંચિ હરીને હર નામ આપી.
ભાવે કરે ભજન પુણ્ય વડે પ્રતાપી.
જીભે જપાય શ્રી નિષ્કલંકી નારાયણ,
તે પ્રાણબંધુ પરમેશ્વરને પ્રણામ ૯

સંતોની સ્તુતિ—૪

આજનો દિન તે આનંદકારી,
દર્શન દિધાં તે સન્ત પધારી — ધ્રુવ

સંત સન્મુખ પ્રેમથી જાય ચાલી,
જેણે પ્રેમ ભક્તિ હૃદયે વહાલી.
તેને દર્શન દે છે મુરારી
દર્શન દિધાં તે સન્ત પધારી —૧

સન્ત હરિજનનાં જો દર્શન થાયે.
તિર્થ અડસઠનો મહિમા પાયે.
એવા સંતોને બહુ આભારી.
દર્શન દિધાં તેં સન્ત પધારી —૨

સન્તને સેવા તો બ્રહ્મ લોકને પામે.
અમરા પુરીમાં મળશે ઠામો
તેં તો અચળ નામના વધારી.
દર્શન દીધાં તે સન્ત પધારી —૩

ઇયળ ભમરીનો જો ચટકો સહે.
તેતો આપ સમાન થઈ જાયે.
સતગુરૂની કૃપા થાય જરી,
દર્શન દિધાં તે સન્ત પધારી —૪

રતનની પરીક્ષા ઝવેરીને હોયે
મુર્ખ જોય ન જાણે કોય
તેં તો અંધારે અજવાળો પૂર્ણ કરી,
દર્શન દીધાં તે સન્ત પધારી —૫

મુનિવર શ્રદ્ધાથી પરખાયે
જેના દિલમાં સદા આનંદ હોયે
તે તો સુખ દુઃખમાં સમાન ધારી,
દર્શન દિધાં તેં સન્ત પધારી —૬

સતગોર ઇન્દ્ર ઇમામશાહની થઇ છે મહેર
તો દિલમાં આવી ગઇ છે લહેર
હમને સતગોરની ભકિત બહુ પ્યારી,
દર્શન દીધાં તે સન્ત પધારી —૭

૫—સતગોરની સ્તુતિ

પામર પર કૃપા કરી, પધારો શ્રી ગુરૂરાજ
શંકર જેવા દીનના, ઉઘાડો કિસ્મત આજ
અમારા સતગુરુ દેવા, વહેલા પધારજો રે
લેજો દાસલડાની, રોજ ઉઠી સંભાળ,
દાવાનળમાં બળતાં, આવીને ઉગારજો રે ટેક—૧

ભાગ્યોદય થતાં મળજો, શ્રી સતગુરૂ મહારાજ
પામર જનની ઝુંપડી, પાવન કરવા કાજ
અમારા પુર્વજન્મના, પુણ્ય પ્રભુજી જગાવજો રે
ઝાંઝવાના જળ જેવી લાગે, આ જગજંજાળ—દાવા-૨

બ્રહ્મા, વિષ્ણુ આપ છો, દેવ તણા પણ દેવ.
મોક્ષ પદારથ પામવા, કરીએ નિશિ—દિન સેવ
એવા અલખ નિરંજન, આત્માના આધારછોરે
અમને અંતર માંહી, પુર્ણ પ્રભુ વિશ્વાસ—દાવા—૩

તિરથ ધામો સર્વ છે, આપણાં ચરણુ મોઝાર
કલ્પતરૂ રૂપ આપ છે, સાચા સર્જન હાર.
અન્તઃપુરના પડદા, આપ પધારી ખોલજો રે.
નહિતર એ વિણ કદીયે, થાય ન જ્ઞાન પ્રકાશ—દા—૪

અમૃતથી પણ મીઠડા, લાગે આપણા વેણ.
ગાંડા ઘેલા થઈ ગયા, જોઈ નિર્મળ નેણ.
મંગલ મૂર્તિ પ્રભુની, મનમાંહી મ્હાલી રહી રે.
ઘડિયે વિસરે નહિ, વ્હાલા ગુરૂજીનો વ્હાલ—દાવા—૫

આપ અમારે એક છો, આપના લાખો કરોડ.
જોડ મળે નહી આપની, કોણ પુરે અમ કોડ.
માટે કરુણા કરીને, કોઈ દિવસ સંભાળજો રે.
અમે તો આપની આગળ, છઇએ નાના બાળ–દાવા–૬
આપ જતાં અમ આતમા, આવે આપની સાથ.
ખાલી પડતાં ખોળિયું, કોઈ ગ્રહે નહી હાત.
વસમાં વ્યાધિથી વસમો, ગુરૂજીનો વિયોગ છે રે.
એના કરતાં મૃત્યુ, લાગે મીઠી દ્રાખ–દાવા–૭
સુખે સિધાઓ આપશ્રી, કરવાને શુભ કાજ.
વિનય સહીત વન્દન કરે, આખો સતપંથ શિષ્યસમાજ
અમારા અંતરમાંથી, સ્થાન કદિ નવ છોડશો રે.
શંકર જેવા જોકે મળશે, આપને લાખો કરોડ–દાવ–૮

આરતિ એટલે ?

આરતી એટલે વિશેષ પ્રેમ, આરતી કરવી એટલે પ્રભુ પ્રત્યે હાર્દિક પ્રેમ વ્યક્ત કરવો. તે, આખો દિવસ પોતાના કામકાજમાં મસ્ત રહે અને કદાચ કામમાં ભગવાતને ય ભૂલી જાય, એટલે શાસ્ત્રમાં ત્રિકાળ સંધ્યા કરવાનું કહ્યું છે. પણ એના તેના બદલે શ્રી સનાતન સતપંથ ધર્મમાં શાસ્ત્રાધારે ચાર પ્રકારની સંધ્યા, રાત–દિવસ, સવાર–સાંજના પ્રાકૃતિકા સન્ધિ ટાણે જીવાત્માનું પરમાત્મા સાથે મિલન કરવું એ જ સંધ્યા, ભગવાન આપણું સર્વસ્વ છે. માતા–પિતા, બન્ધુ સખા, આદિ એવું સમજી.

–તવૈવ: વસ્તુ ગોવિન્દં, તુભ્યં મેવં સમર્પય:–

એટલે ભગવાનની વસ્તુ ભગવાનને સમર્પણ કરવાની અને તે જ આરતિ. જગત્પિતા પરમેશ્વરે મનુષ્યને કેટ–કેટલી વસ્તુઓની ભેટ આપી છે. એ બધી જ વસ્તુઓ તો તેને ભેટ કદાચ કરવી તે આપણને અઘરી અને અશક્ય છે તો પણ :—

૧—શ્રી સતગોરની આરતી

ૐ જયશ્રી સદગુરૂ સ્વામી, પ્રભુ જયશ્રી સદગુરૂ સ્વામી,
ઘટ ઘટ પુરણુ પોતે (૨) સર્વાન્તરયામિ...ૐ જય૦..ટેક૦
દયા સિંધુ સુખરૂપ અનહદ ઉપકારી-સ્વામી અનહદ
શી ઉપમા હુ અરપું (૨) જાય મતિ હારી..ૐ..જય-૧
જન્મ મરણુ જલ પુરણુ, સુખેદુઃખે મચ્છ રહ્યા-ગુરૂ સુખે
એવાં ભવથી તાર્યા (૨) ગુણુનવ જાય કહ્યા..ૐ...જય-૨
હવે થયો કૃત કૃત્ય, નિમગ્ન આત્મ પદે—ગુરૂ નિમગ્ન.
સ્વપ્ન તુલ્ય જગ જાણું (૨) બ્રહ્માનંદ પદે..ૐ..જય-૩
વેદ ગુરૂ ઈશ્વરને, પુનઃ પુનઃ પ્રણમું—ગુરૂ પુનઃ
આયુ લગી અનુચર થઇ(૨)હવે તવ ચરણે વિરમુ.ૐજય-૪
એ કરવું છે શક્ય. અન્ય અશક્ય ખરુ—ગુરૂ અન્ય.
આત્મજ્ઞાન તુલ્યે શું ? (૨) પ્રત્યુપકાર કરુ..ૐ..જય-૫
સમજી રહુ છું શાન્ત, આપ કૃપા બળથી—ગુરૂ આપ.
અધિકારીને ઉગાર્યા (૨) તાર્યા ભવજળથી..ૐ..જય-૬

૨—શ્રી જગદીશ્વરની આરતી

ૐ જય જગદીશ હરે, પ્રભુ જય જગદીશ હરે,
ભકત જનોકા સંકટ, ક્ષણુમેં દુર કરે...ૐ...ટેક૦
જો ધ્યાવે ફલ પાવે, દુઃખ વિનસે મનકા...પ્રભુ દુઃખ
સુખ સંપત્તિ ઘર આવે (૨) કષ્ટ મિટે તનકા..ૐ જય-૧
માતપિતા તુમ મેરે, શરણુ ગહુ઼ં કિસકી...પ્રભુ શરણુ
તુમ બિન ઔર ન દુજા, આશ કરું જીસકી..ૐ જય-૨

તુમ પુરણ પરમાત્મા, તુમ અંતર્યામિ..પ્રભુ તુમ૦
પરિબ્રહ્મ પરમેશ્વર (૨) તુમ સબકે સ્વામી.ૐ..જય–૩

તુમ કરુણા કે સાગર, તુમ પાલન કર્તા..પ્રભુ તુમ૦
મૈં મૂરખ ખલ કામી (૨) કૃપા કરો ભર્તા..ૐ..જય–૪

આપ હો એક અગોચર, સબકે પ્રાણ પતિ..પ્રભુ તુમ સબ૦
કિસ વિધ મિલુ ગુસાઈ (૨) તુમકો મૈં કુમતિ.ૐ.જય–૫

દિન બંધુ દુઃખ હર્તા ઠાકુર તુમ મેરે..પ્રભુ તુમ૦
અપને હાત ઉઠાઓ (૨) દ્વાર પડા હું તેરે..ૐ..જય–૬

વિષય વિકાર મિટાવો, પાપ હરો દેવા..પ્રભુ પાપ૦
શ્રદ્ધા ભકિત બઢાઓ (૨) સન્તનકી સેવા..ૐ..જય–૭

૩–જાહેરદેવની આરતી

જાહેરદેવ જમ્બુ દ્વિપમાં બેઠા,
ભાગ્ય જેહુના જેણે નજરે દીઠા
ખટ દર્શન માહે સુન પુજાએ,
સતપંથ ધરમકા કોઇ મર્મ નાહિ પાયે
હરે હરે આરતિ કીજીએ નિષ્કલંકી તમારી–૧

અનહદ વાજા વાજંત્રી વાજે,
અકળ સ્વરુપ દેખી દુનિયા લાજે
લાજ મત ધરો કોઈ હરીજન,
ભકિત કરો તમે સાચે તન–મન
હરે હરે આરતી કીજીએ નિષ્કલંકી તમારી–૨

સતપંથ ધરમકી રાહ બતાઈ,
તેહત્રીસ કરોડી દેવની હુઇ છે વધાઇ
અથર્વ-વેદનો વારા જો વહે,
દસમે દીન દયાલ પ્રભુ બેઠા જાયે
હરે હરે આરતિ કીજીએ નિષ્કલંકી તમારી-૩

જુગ પરમાણે જાપ શોધીને લઇએ,
તન-મન-ધન ગુરૂ ચરણે દઈએ
કૃતા, ત્રેતા, દ્વાપર, કલજુગ જોયા,
અજપા જાપ બિના મુગતિ ન પાયા,
હરે હરે આરતિ કીજીએ નિષ્કલંકી તમારી-૪

સતગુરૂ શાહા દેવે રાહ બતાઈ,
સતપંથ ધર્મકી હુઇ રે વધાઈ
સાંજ સવેરે તમે જપો મુનિવરભાઈ,
આરતિ નૂરે સતગુરુ એ ગાઇ
હરે હરે આરતિ કીજીએ નિષ્કલંકી તમારી-૫

૪-દશ અવતારની આરતી

જય જયદેવ જય સદગુરુ સ્વામી
મમ ગુરૂ જય સદગુરૂ સ્વામી
આરતી કીજે નકલંક દેવની,
અક્ષય પદ ધામી-જય ટેક
પ્રથમ મચ્છા અવતાર,
માર્યો શંખાસુર પાપી પ્રભુ માર્યો૦
ચાર વેદ લાવીને, (૨) બ્રહ્માને આપી..જય-૧

બીજે કચ્છ અવતાર
પર્વત, પીઠ ઉપર ધાર્યો, પ્રભુ પર્વત
સાત સમંદર મંથન કરીને, (૨)
ચૌદ રત્ન કાઢયા...જય—૨

ત્રીજે વરાહ અવતાર,
માર્યો હીરણ્યાક્ષ પાપી, પ્રભુ માર્યો
દાઢે ગૃહી લઈ આવ્યા વરાહ,(૨)
અવની ઉર સ્થાપી...જય—૩

ચોથે ચતુરા નરસિંહ અવતાર
માર્યો હીરણ્કશ્યપ પાપી, પ્રભુ માર્યો
નખે વધારી માર્યો નરહર,(૨)
ભક્તિ પ્રહલાદને આપી...જય —૪

પાંચમે બળી અવતાર,
દેખી સુરીનર કંપે, પ્રભુ દેખી..
વામન રુપ ધરીને, (૨)
બળીને પાતાળે ચાંપે...જય—૫

છઠે ફરસુરામ અવતાર,
ફરસી હાથોમાં લીધી, પ્રભુ ફરસી
સહસ્ત્રાર્જુન મારીને, (૨)
પૃથ્વી નક્ષત્રી કીધી...જય—૬

સાતમે દશરથ ઘર અવતાર,
આનંદ કૌશલ્યા પામી, પ્રભુ આનંદ
દશમુખ રાવણ માર્યો, (૨)
સીતાના સ્વામી...જય—૭

આઠમે મથુરામાં અવતાર,
ગોવીંદ ગોકુલ ગૌચારી, પ્રભુ ગોવિંદ
ગોપ ગોવાલણુ ટોળે મળીને, (૨)
ગોવરધન ધારી....જય--૮
નવમે બુદ્ધા અવતાર,
ભાર પૃથ્વીભર વાધ્યો, પ્રભુ ભાર
ધ્યાન ધરી ધરણી ધર બેઠા, (૨)
યોગ યુગત સાધ્યો--જય--(૯)
દશમે શ્રી નિકલંકી અવતાર,
પૃથ્વી નકલંકી કરશે, પ્રભુ પૃથ્વી
મલેચ્છને મારીને હરી, (૨)
સુધ સેવકની લેશે--જય--૧૦
દશ અવતારની આરતી
જે કોઇ ગાશે, પ્રભુ જે કોઈ ગાશે.
આરતી બોલ્યા સતગુરુ બ્રહ્મા, (૨)
મોક્ષ ગતિ થાશે...જય--૧૧

૫—આનંદમંગલની આરતી

આનંદ મંગળ કરુ છું આરતી,
હરી ગુરુ સંતની સેવા.
પ્રેમધરીને મંદીરે પધારશું.
સુંદીર સુખડા લેવા..આનંદ-૧
જેણે આંગણે તુલસીનો કયારો.
અયભ્યાગતની સેવા...આનંદ-૨
અડસઠ તીરથ સંતોને ચરણે.
ગંગા જમના રેવા..આનંદ.—૩

અધમ ઓધારણુ ભજવલ તારણુ.
કરીએ તમારી સેવા..આનંદ.-૪
સંત મળે તો બહુ સુખ પામું
ગુરૂ મળે તો મીઠા મેવા.આનંદ-૫
કહે પ્રિતમ એવા પ્રભુના પ્રેમી.
હરીના જન હરી જેવા..આનંદ-૬

૬—અન્નદેવની આરતી

જળ થકી ઉપન્યાંતે સંચરાચારી
રસોઇ બનાવે ત્યાં નરનેનારી.
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી-ટેક
જે થકી દેહ બની રે તમારી
તે થકી કાયા ખડી રે અમારી
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી-(૧)
બ્રહ્મા ને વિષ્ણુ મહેશ્વર દેવા.
ઉનકી કરત હે સબ કોઈ સેવા
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી-(૨)
સોનાની થાળીને રૂપાની ઝારી
માહે પધારો અન્નદેવ મોરારી
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી-(૩)
નવ નાથને સીદ્ધ ચોર્યાંસી.
સુરીનર મુનીવર અન્ન કે આહારી
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી-(૪)

દત્ત ગોરખને નારદમુની.
સુકદેવ જનકદેવ અન્ન કે આહારી
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી–(૫)
પીર પેગંબર બડા મઠધારી.
તેત્રીસ કરોડી દેવ અન્ન કે આહારી
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી–(૬)
જાંબુદ્વિપમાં ઇમામપુર ધામ,
અનંત કરોડી જીવોનાં કરશે કામ
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી–(૭)
આદે ઉનાદથી હુઈ રે વધાઈ
આરે આરતીનૂર સતગોરે આઈ
આરતી કીજે અન્નદેવ તમારી–(૮)

૭–ગોર નરની આરતિ

ગોરનરની આરતિ, ને ચમર ઢોળાવ
સ્વામીજીને ચમર ઢોળાય
ચંદનને કેશર કસ્તુરીનો, ચન્દન કેશર૦
ગોર નરને છાટણા છંટાવ, ગોરનર –॥ધ્રુવ૦॥
પહેલા તે કતા યુગ માંહે, સોનાનો છે પાટ.
સ્વામીજીનો સોનાનો છે ઘટ.
સોનાના સિંહાસન ઉપર બેઠા, સોનાના
શ્રી નરસિંહ ભગવાન ગોરનર૦ –૧
ગોર વેદ બ્રહ્માજીની આરતીને. ચમર ઢોળાય
સ્વામીજીને ચમર ઢોળાવ
ચન્દન કેશર કસ્તુરીના, ચંદન કેશર૦
ગોર નરને છાંટણા છંટાવ, –ગોરનર–૨

બીજા તે તેત્રા યુગમાંહે સોનાનો છે પાટ.
સ્વામીજીનો રુપાનો છે ઘટ.
રુપાનું સિંહાસન ઉપર બેઠા, રુપાનું૦
શ્રી રામ ચંદ્ર ભગવાન —ગોરનર—૩

ગોરવેદ વચિષ્ઠજીની આરતીને, ચમર ઢોળાય.
સ્વામીજીને ચમર ઢોળાય.
ચન્દન કેશર—કસ્તુરીના, ચન્દન કેશર૦
ગોર નરને છાંટણુ છંટાવ —ગોર નર—૪

ચોથા તે દવાપર યુગમાંહે તાંબાનો છે પાટ.
સ્વામીજીનો તાંબાનો છે ઘટ
તાંબાનું સિંહાસન ઉપર બેઠાં, તાંબાનુ૦
શ્રી કૃષ્ણુ ચંદ્ર ભગવાન —ગોર નર—૫

ગોર વેદ વ્યાસજીની આરતીને, ચમરઢોળાય.
સ્વામીજીને ચમર ઢોળાય.
ચન્દન—કેશર—કસ્તુરીના, ચન્દન કેશર૦
ગોર નરને છાંટણા છંટાવ —ગોર નર—૬

ચોથા કલીયુગ માંહે. માટીનો છે પાટ
સ્વામીજીનો મટીનો છે ઘટ
માટીનો સિંહાસન ઉપર બેસશે, માટીનુ૦
શ્રી નિષ્કલંકી ભગવાન, ગોર નર—૭

ગોર વેદ હાજરપાત્ર અવતારની આરતીને
ચમર ઢોળાય. સ્વામીજીને ચમર ઢોળાવ
ચન્દન—કેશર—કસ્તુરીનો, ચન્દન કેશર૦
ગોર નરને છાંટણા છંટાવ —ગોરનર—૮

એમ આરતી નુર સતગોર ગાય, નુર સતગોરગાય
સાચા સતપંથ મુનીવરનો, સંતપંથી મુનિવરનો
અમરાપુરમાં વાસો રે થાય —ગોર નર—૯

૮—નિષ્કલંકરૂપની આરતિ

ૐ શ્રી જયદેવ જયદેવ નિષ્કલંકરૂપા નિષ્કલંકરૂપા
મનોભાવે આરતિ ભાવાર્થે આરતિ,
તુજ વિશ્વરૂપા, જયદેવ૦ — ધ્રુવ૦
મચ્છ, કચ્છ, વારાહ, નરસિંહ,
અવતારા, નરસિંહ અવતારા,
દૈત્ય હરણાકશ્યપ દૈત્ય હરણાકશ્યપ,
નખજીને મારા —જયદેવ (૧)
વામન પરશુરામ શ્રી રામ હરી, શ્રી રામ હરી
દૈત્ય દશાશીર, દૈત્ય દશાશીર,
રાવણલા મારી —જયદેવ (૨)
શ્રી કૃષ્ણ, બૌદ્ધ, ગોવર્ધન ધારી, ગોવર્ધન ધારી
દૈત્ય કંસાસુર, દૈત્ય કંસાસુર,
દુર્યોધનાલા મારી —જયદેવ (૨)
દશવે અવતારી શ્રી નિષ્કલંકી હરી,
શ્રી નિષ્કલંકી હરી
દૈત્ય કાલિંગા વર, દૈત્ય કાલિંગા વર,
કરતીલ સ્વારી — જયદેવ (૪)
સાધુ જન ચેતી, ભક્ત જન ચેતી,
સાધુજન ચેતી, ભકતજન ચેતી,
ઓવાળી વસંભા, ઓવાળી વસંભા
દેવ નિષ્કલંકી હરી — જયદેવ (૫)

૯—મંગલ મૂર્તિની આરતિ

જય મંગલ મૂર્તિ, પ્રભુ જય મંગલ મૂર્તિ
દર્શન માત્ર મન, સ્મરણુ માત્ર મન
કામના પુર્તિ, જયદેવ જયદેવ–ધ્રુવ૦ (૧)
સુખ કર્તા, દુઃખહરતા, વાર્તા વિધનાચી, પ્રભૂ વારતા
નુરવી પુરવી પ્રેમ, નુરવી પુરવી પ્રેમ,
કૃપા જયાચી – જયદેવ (૨)
સર્વાંગે સીન્દુર, ઉટી સિન્દુ રાચી, પ્રભુ ઉટી૦
કંઠે શોભે હાર, કંઠે શોભે હાર,
મુકતા ફળાચ્યા – જયદેવ (૩)
ગજાનન્દાચી આરતિ જો કોણી બોલે, પ્રભુ જો૦
મ્હણે... સ્વામી. મ્હણે સ્વામી
સુખસંપત્ત ભેટે જય (૪)

—:૧૦—થાળ—પ્રસાદી—આમંત્રણા:—

આવો આવોને દીન દયાળ, દુખડા હરવાને.
મેં પ્રેમે પીરસ્યો થાળ, ભોજન કરવાને...(૧)
તમે જગત જીવાડવા નાથ, હેત ધરી આવો.
હું દુર્બળ જોડું હાથ, મુજ મન એ લ્હાયો...(૨)
તમે ભકત તણી સંભાળ, લ્યો છો હું જાણું રે.
છો રંકતણા પ્રતિપાળ, હું શું વખાણું રે...(૩)
તમે ભિલ્લેણ કેરાં બોર, હરી હેતે લીધાં રે.
ઋષિ કેરાં ઉત્તમ અન્ન, અમીકૃત નહિ કિધાં...(૪)

સુદામા તણા તન્દુલ, અમૃત સમ ગણીયા.
તેને રિદ્ધી સિદ્ધિ દીધા અનેક, કંચનઘર ચણીયા(૫)
પ્રભુ વિદુરજીને ઘેર, જમી આવ્યા ભાજી.
દુર્યોધન કેરા મિષ્ટાન, હરિ કીધાં ત્યાગી....(૬)
વળી કરમા બાઇનો ખીચ, જાણું તમે જમીયાં.
સબળ ઉપર નહિ ચીત્ત, નિજ જન-મન ગમિયાં.(૭)
એવા જોઈ એ દષ્ટાંત, મુજ મન રાચ્યું છું.
હું દુર્બળ કેરુ અન્ન, લે એ યાચું છું....(૮)
આ તો સૂક્ષ્મ છે રે પ્રસાદ, નહિ પડશે ભારી.
પુરો નિજજન કેરી આસ, સુણીલો વિનંતી મારી(૯)
જલ પાત્ર ધર્યો છે પાસ, પાન કરો પ્રિતે.
વળી તાંબૂલનો મુખવાસ, મેલ્યો જગરિતે....(૧૦)
પ્રભુ પ્રિતે કરુ સાષ્ટાંગ, મન માની લેજો,
પ્રભુ જાણી નિજ અંગ, દાન દયાનું દેજો....(૧૧)

શ્રી સતપંથ ધર્મ જિજ્ઞાસુઓ !

સંત તે તમે જાણજો, જે રહિત અભિમાન
હર્ષ, શોક ન સંભવે, દષ્ટિ સઘળે સમાન ॥૧॥
કૃપા કરે તે સર્વ ભૂતને, દ્રોહ ન કરે લગાર ।
ક્ષમા કરે મનને વિશે, ઉચ્ચરે સત્ય સાર ॥૨॥
કામ, ક્રોધ, ન, પર ભવે, તુષ્ણા મદનો ત્યાગ ।
જ્ઞાન-વિજ્ઞાન હૃદે ધરે; ભક્તિયોગ ને વૈરાગ ॥૩॥
બ્રહ્મા સુધારસ અનુભવે, ત્યજે વાદ-વિવાદ ।
સહજ માંહે રમે, સુણે શબ્દ અનાદ ॥૪॥

82

\- 20

2024

मानव–मित्रो

थोबो, वाचो अने विचारो

मानव ईंट पत्थर अथवा चुना–सिमेन्ट जेवी कोई भान विहोणी चीज वस्तु नथी । अने न तो कोई ये निर्जिव यंत्र छे के जे घसाई घसाईने खतम थई जाय छे। छतांय तेने पोताना मकसदनी खबर नथी होती. अने ये न कोई चणनारु के चरणारू, पक्षी के प्राणी छे के जे आ दुनियाने चणवानुं के चरवानुं मेदान समजे, बल्के मानवी एक सभान तथा बुद्धिमान व्यक्ति छे । गुह्यात–गुह्य एवी महान शक्ति छे। अने एज कारणः– ए जगतनी बधी रचनाओथी चढियातु छे । ए ज्ञान अने भाव वडे ज तेने जगतने अति रमणीय बनाव्युं छे । एटम जेवी शक्तिनो शोध करीने तेने पोताना उपयोग माटे ताबे करी लीधी छे। अने पृथ्वी उपर एक मन–मोहक संस्कार पैदा कर्या बादः—हवे तेनुं उडयन आकाश तरफ थयुं छे ।

खरेखर सत्य हकिकत ये छे केः—ईदम सत्य सनातनआर्य पवित्र सतपन्थ धर्म दर्शावोये जे रीते सतपन्थ शास्त्रोमां जे जे आजथी लगभग ५०० पांच सो वर्ष पहेला भविष्य वाणी भाखित करेल छे, ते तेवो समय आव्यो छे। अने जे बाकी हशे आववानो ते पण आवशे ज आवशे । एमां जरा पण शंकाने स्थान नथी। तेमज जाणवा जणाववामां अतिशयोकित पण नथी, नथी अने नथी ।

—: माटे :—

श्री मान्यवर सतपन्थ सनातन आर्य (पवित्र) धर्म जिज्ञासु वर्गाधिकारीओए पण ते प. पू. श्री सदगोर पात्र ब्रह्मा ईन्द्र-ईमामशाहजी ए जे आगम–भाखित कह्युं छे तेना उपर विश्वास लावी श्रद्धापूर्वक वेद शास्त्र अभ्यास करी, वाणी, विचार अने वर्तन सुधारी पुनर्भव थी मुक्त थवा आशावादी थवुं। हाल एज।

—संग्राहक अने प्रकाशक

आगम वाणी
तुलसीदासकृत आगमवाणी

ટીકાકાર પ્રણામી ધર્માચાર્ય શ્રી કૃષ્ણ પ્રિયાચાર્યજી મહારાજ સુરત

भव तारण भगवंत भज, धारण उर धर ध्यान ॥
यो धारण आगम एही, निहकलंक जेहि नाम ॥ १ ॥

ભગત તુલસીદાસ ભણે છે કે હે મનુષ્ય જન્મમરણથી છોડાવનાર ભગવંતને તું ભજ અને ઉરમાં ધ્યાન ધારણ કર, તે ધારણ શ્રી નિષ્કલંક ભગવાનનું આગમનરૂપ છે .. ૧

चौद तुरका दश हि मूरका जुल्म करका हजार बरका,
कसत कधरको राज्य हि करका मुन करंदा दुःख त्याता।
किल किल हुंदा भूतानंदा बगरंदा मदमातो
मैं गुरू गुरू गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१॥

શ્રી ભાગવતના ૧૨ સ્કંધ ૧ અધ્યાયમાં ભવિષ્યના રાજાઓની ગણત્રી બતાવી છે તેમાં ૮ યવન પછી થનારા ૧૪ તુરકોથી ગણે છે કે-૧૪ તુર્ક, ૧૦ ભુરા કેશવાળા એવા ગુરૂંડ નૃપતિ થશે તેઓ ૧૦૯૯ વર્ષ સુધી રાજ્ય કરી પ્રજા પીડશે, ઘણાને કેદ કરશે પછી મૌન રાજા થશે તેઓ ૩૦૦ વર્ષ રાજ્ય કરી પ્રજા પીડશે પછી કિલકિલા નગરીમાં ભુતાનંદ રાજા થશે, તે દુષ્ટ પછી બંગીરીનામ દુષ્ટ મદમાતો નૃપ થશે, જે સર્વ અસહ્ય દુઃખ દેશે તેથી હું મારા ગુરૂજીને યાદ કરી ગુણ ગાઉ છુ. મારૂ હૈયુ ભરાઈ જાય છે, કારણ કે ભયંકર આગમ આવનું જણાય છે....૧

ताको अनुजंदा है शिशुनंदा ताका नंदा बरजंदा,
प्रचरीक हुदा शक बरतंदा राज्य करदा रखंदा।
गत एक खटंदा बरस बितदा बाल्हिक थिंदा बतलाता,
मैं गुरु गुरु गाता उर उभदाता आगम आता दरशाता ॥२॥

ते બંગીરીનો ભાઈ શિશુનંદિ થશે, તેનો યજ્ઞાનંદ થશે તે પણ ધર્મથી લોકોને રોકશે. પછી પ્રવીરક પોતાનુ શક ચલાવી ૧૦૬ એકસો ૭ વર્ષ લગી પ્રજાને રંજાડતો રાજ્ય કરશે આ રીતે એકસો ૭ વર્ષ કે જે વિ સં ૧૧૦૯ ગણાય તે વિતાવશે, પછી વાલ્હિક થશે એવું હું તમોને બતાવુ છું ને ગુરૂ ગુરૂ એવું ગાઉ છું....૨

जग जुल्म न मिन्सा पाप न चिन्सा क्षत्रियजनका बिध विनशा
जग जुल्म पतइन्सा भूपन थिन्सा रजनी दिनसा कह हिंसा।
तो बरणन किन्सा धरम नचिन्सा धर्म न गिन्सा पश्चाता
मै गुरू गुरू गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥३॥

જે રાજાઓ પોતાના અત્યાચારને જગતના જુલ્મ તરીકે નહી માને, પાપને નહી ઓળખે, ને સમયે ક્ષત્રિયોનું ભવિષ્ય બગડેલુ હશે ત્યારે લોકો વેદ ધર્મ મુકી અધર્મ ઉપર ઝુક પડી જશે તેથીજ પાપી રાજાઓ રાત દિન. દિનને રાત કહી દેશે તોય લોકો માની બેસશે. તેથી જ કહ્યું છે કે લોકો ધર્મ નહી ઓળખે વૈદિક કર્મ કાંડ કે જે દુનીયાને પાપ કરતાં અટકાવનારને અંતઃકરણને શુદ્ધ કરનારને યથેચ્છાચારને સંકોચનાર છે તેને ઢોંગ તરીકે નગણી ધિક્કાર કરવા લાગશે. એવું અત્યારથીજ જણાય છે તેથી હું દુઃખી થઈ ગુરૂ ગુરૂ ગાઉ છું....૩

सब पापी परजा तामस तरजा तुच्छ उमरजा एह राजा,
लोभी नरजा मन मत गरजा घर घरना शिरताजा।
पूत मात मनूनी बात तनूनी अनुजा अनुजहि नहि नाता
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरशाता ।४।।

વળી પ્રજા પાપી અને મહાતામસી થઇ અલ્પાયુની બની જશે ? તે લોભી નરોના મન બુદ્ધિ તથા ઘર ઉપર સ્ત્રીઓ સરદારી કરશે પુત્ર માતા માનિની પિતા વડુ ભાઈ બહેન એ બંધનો સંબંધ તુટી જેવું ખસમનો નાનો થઈ જશે આમ થવાથી લોકોમાં ભગમૈયા પ્રચલિત થઈ પડશે....૪

परत अकाला बहुत कराला जग वेहाला हर साला,
पापी कुप ताला नदि नद नाला जल विन टाला ए हाला।
रतनाकर जाता विरहां धाता वारि विकोता लखाता,
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरशाता ।।५।।

આમ વિષયભોગ પરસ્ત્રીને લીધે વારંવાર કરાલ દુષ્કાળ પડશે. તેથી વર્ષો વર્ષ જગત બેહાલ દુર્દશાગ્રસ્ત થશે વાવ કુવા તળાવ નદી મોટી નદી નાળા એ બધા જળાશયો જળ વિનાના ઠાલા થઇ જશે, સમુદ્ર પણ સુકાઈ જશે ને લોકો જલાયે સાગરમાં ખાડા ખોદી પાણી કાઢશે તે સમયે પાણી વેચાશે ને તેની પણ દુકાનો હશે એવું જણાય છે તેથી હું તો ગુરુનું સ્મરણ કરું છું...૫

नागरवेला फुल फुलेला फला तोना जामेला,
नाग करैला निराफल हेला बारि फ़ला घनु जस हेला।
कागवा धोला कोयल कहुआ हंसा बगला बन जाता.
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरशाता ।।६।।

તે સમયે નાગરવેલમાં ફુલ ફલ પણ આવશે શેરડીમાં બીજ થશે અથવા શેરડીથી ડાંગ ધાન્ય પેદા થશે વા શેરડી બીજ ઉગશે નાગફણી વેલથી કારેલા પાકશે હેલા નિર્વિષ થશે. થોરના ઝાડમાં કેળા પાકશે ગાયો હોલા જેવી થઈ જશે. કાગડો ધોળો થઇ જશે. બગલા અને હંસ કોયલ સમાન કાળા બની જશે, તેથી હું તો ગુરુ ...૬

दीन संत बहुता कसी सहुप्ता भगत सपूता दुःख होता,
धेनुधर रोता धीर धरता अरज करता सब सूता।
प्रभु जब सुना पुकारा धरि अवतरा अखंड बिलाग जाता
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरशाता ।।७।।

સતબીજ જે મહાત્મા સાધુ વૈરાગી ત્યાગી સન્યાસી છે તેના ઉપર ઘણીજ ખીચાખીચ નાખી બધાને કૃપી કરી બાંધી નાખી કેદ કરશે જે કોઇ સપૂતા (સુપાત્ર) ભગત હશે તેને ઘણું દુઃખ પડશે, ગાયોને રાખનાર ગાયપાળક દુઃખી થઈ રડારડ કરશે, સર્વ રુદન કરી કરીને અરજ કરશે, જ્યારે પ્રભુએ પોકાર સુણી ત્યારે અવતાર ધર્યો ને અખંડ સનાતન મત ઉપર ચાલી દરેકો ને પવિત્ર કરી જાય છે...૭

गंगातट गामा अति हि ललमा संभल नाग सो गामा
विष्णु जसवामा मतंगी धामा पूरनकामा घनश्यामा।
रवि शशी गुरु करही मकर ठरहो तब अवतरही जगत्राता,
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरशाता ।।८।।

ગંગા કાંઠે અતિ સુંદર સંભલ નામ નગર છે ત્યાં વિષ્ણુ વરાની અથવા ધનકરિખની પત્ની માતંગી બાઈના ઉદરમાંથી ધનશ્યામ પ્રભુ જે છે તે સુર્ય ચંદ્ર ગુરૂ મકર કર્ક રાશિમા આવશે તે શુભ ગ્રહ વેળાએ અવતરશે....૮

पितु मातु सधाना स्वर्ग पठाना आप घर पठानका बाना,
साहिक जग जाना पीर कहाना ज्ञान निधाना गुनखाना ।
तन घनश्यामवरना भुज आजाना चंद्रसमाना मुज माता,
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरसाता ॥९॥

કલ્કીના શાણા માત પિતા સ્વર્ગવાસી થયા ત્યારે આપ પઠાણનો વેષ પહેરી લીધ. તેમને આજે જગત પીરશાહ એ નામે ઓળખે છે તેઓ જ્ઞાનસાગર ગુણ ભંડાર છે. તનુ ધનશ્યા છે અથવા પોતે ભગવાન છે, ઢીંચણ સુધી લાંબા હાથ છે, ચંદ્રસમાન મુખ છે...૯

शिरताज सुधारा वसन सिंगारा खड्ग उघाडा नीधारा,
देवांगी स्वारी दुष्ट संहारा करत उधारा संसारा ।
नर कबर समाता ताहि जगाता लेत संगाता हरखाता,
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरसाता ॥१०॥

શિર પર તાજ ધારેલું છે, વસ્ત્રો શણગારેલા છે, ઉઘાડી તલવાર હાથમાં છે, દેવદત્ત આ જીવરઈલનામ ઘોડા ઉપર અવતાર છે, દુષ્ટને વધારે છે સંસારનો ઉદ્ધાર કરે છે. જે નરનારી કબરમાં દાટેલા કે શમાયા છે, તેઓને જીવાડી સાથે લઈ હરખાતા ફિરે છે....૧૦

दिल्ली जब आवत अमल फिरावत दुष्ट हरावत दर बावत,
सब भूप बोलावत धर्म सिखावत धर्म कावत भटनाया ।
तह बांह भरावत शपथ करावत नियम करावत शुभ थाता,
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरसाता ॥११॥

જ્યારે દિલ્હીમાં આવે છે અને ત્યાં પોતાનો અમલ ચલાવે છે ત્યારે દરેક બાબતમાં દુષ્ટોને હરાવે છે ત્યાં બધા નૃપોને બોલાવી ધર્મ શીખવાડે છે. નાના મોટા ભાટ વીરોને ચમકાવે છે, બધાને બેટાવે છે શપથ લેવરાવે છે તેનાથી શુભ થાય છે....૧૧

जिन जंग चढाया युद्ध धराया भाव सवाया गतराया
जो कपटी कहाया गाणी पिलायी दीप जलाया हम करिया ।
तो निज जन आता निकट बुलाता आदर पाता बिठलाता,
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरसाता ॥१२॥

જે કોઈએ કલ્કી સાથે યુદ્ધ કર્યું તેને પકડી ભાઠ્ઠીમાં લઈ ભરી દીધા અને સવાયા કષ્ટમાં ઉતાર્યા, જેને પોતે કપટી પાખંડી સમજ્યાં હતા તેને ઘાણીમાં પીલી તેના તેલથી દીપક સળગાવ્યા, જે કોઈ પોતાનો જન આવે છે તેને સારી પેઠે પાસે બોલાવી આદર માનથી બેસાડે છે ...૧૨

तो देश गुजराया तहं परवरिया सवजल भरिया है दरिया,
फांकरिया देश तहां करिया कोष सतरिया लशकरिया ।
बाना जग धराया सिद्ध जवरमाया नाथ समराया सुल्ताना,
मैं गुरु गुरु गाता उर उमराता आगम आता दरसाता ॥१३॥

પછી નકલંક મિયા દિલ્હીથી ચાલ્યા તે ગુજરાતમાં આવ્યા. તે ગુજરાત સુંદર

આચાર્યોથી સુશોભિત અને રસાળ તથા સદા લીલવણીથી રમણીય છે. ત્યાં અમદાવાદના પ્રસિદ્ધ કાંકરિયા તળાવ સમીપે પીરાણા મુકામે સીત્તેર હજાર લશ્કર લઈ પડાવ નાખ્યો અને કેટલાક હિંદુ સંસારને પોતાનો વેશ પહેરાવ્યો; જ્યારી સિદ્ધિ બતાવી લોકોની ભુલો યાદ કરાવી ૧૧ ઘણુ જનોએ ઉતરાવી પીરાના બનાવ્યા, આવી દશા જોઈ મારૂં તો ઉર ઉભરાઈ જાય છે માટે હું તો ગુરુ ગુરૂ ગાઉ છું....૧૩

जन सकल सुधारे फलंक ऊतारे गढ जुनारे पद धारे,
भवनाथ निहारे देश द्वारे लश्कर मारे सुखीयारे ।
तहं गुरू दत्त आता नागल माता जमीयल दाता संगाता,
मै गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१४॥

घણા હિંદુઓને સુધારી હિંદુરૂપ કલંક ઉતારી પીરાના બનાવ્યા. પછી ત્યાંથી જુનાગઢ આવ્યા ત્યાં શંકરના મંદિર પાસે પોતનો લશ્કર ઉતાર્યો ત્યાં તે ઘણું સુખી થયા. ત્યાં ગુરૂદત્ત પાસે તથા નાગલ માતા પાસે ગયા જોડે જમિયલ દાતાર પણ હતો...૧૪

नर सिद्ध कहावा कबर समावा खबतर आवा एकसाथा,
वंथलि जावा लग्न धरावा प्रगट बनावा सुरसाथा ।
मेघा पुत्री कहावा नकलंक विहावा सतयुग आता बरताता
मैं गुरू गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१५॥

પછી નકલંક મિયાં પોતાની સીદ્ધિ દેખાડયા કબરમાં સમાઈ ગયા અને એકજ સમયમાં ઘણે ઠેકાણે જઈ દેખાયા પણ ખરા પછી વણથલી મુકામે જઈ હિંદુ સ્ત્રી સાથે પ્રતય કર્યું તે સ્ત્રી મેઘાભાઈના દીકરી હતી મેઘલી નામ હતુ તેને નકલંકે પરણી બસ એજ સતજુગ આવવાના નિશાની વરતાય છે માટે હું તો ગુરૂ ગુરૂ ગાઉ છું....૧૫

मोहन मन भाता खूब खिलाता दंत दिखाता सुखपाता
जूले फिर आता नागलमाता करपांखाता हरखाता ।
जग हुकम फिराता सत्य धरवाता कली खिजाता सब जाता,
मैं गुरु गुरू गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१६॥

તેને નકલંક નામનો પીર પરણીને જુનાગઢ ગયો ત્યાં નાગલ માતાએ હરખાઈને પોંખ્યા પછી પોતાના સેવકોથી જગમાં હુકમ ચલાવતા સત્યપંથ નામે મજહબ સર્વને પકડાવતા ફરતા હતા આ રીતે હવે કલીયુગ સર્વ નષ્ટ થતો દેખાય છે ૧૬

जगजीआना भये सयाना गूण निधाना गुणखाना,
आगम यही जाना पूर्ण प्रमाणा सुनत सुजाना सुखमाना ।
जय कलकी देवक भवजल सेतक "तुलसी" सेवक आनददाता,
मै गुरु गुरु गाता उर उभराता आगम आता दरशाता ॥१७॥

આ પછી જગજીવન નિષ્કલંકજી મોટા શાણા થયા. ગુણનિધાન અને ગુણખાણ બન્યા ભગત તુલસી કહે છે કે મેં પહેલાં જે આગમ આવવાનું સુચવ્યું છે તે એજ પુર્ણ અને સત્ય આગમ છે આ વાતને સુણી સુજાણ સુખ માનસે હે કલંકી દેવ આપ ભવજલથી તારણહાર છો આપનો જય થાવ હે તુલસી સેવકને આનંદ આપનાર આપનો જય થાય જય થાવ....૧૭

પ્રકાશક :- સતપંથ સેવા મંડળ